भोजपुरी लोक-गीत

[भाग १]

संग्रहकर्ता तथा सम्पादक

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

एम० ए०, पी० एच-डी०

भूमिका लेखक

पण्डित बलदेव उपाध्याय

एम० ए० साहित्याचार्य

रीडर, संस्कृत विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

२०११

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

द्वितीय संस्करण, १०००

मूल्य ६)

मुद्रक—रामप्रताप त्रिपाठी, सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय वक्तव्य

हमारे ग्राम-साहित्य मे, जो प्राय लिपिवद्ध नही है, हमारे देश की सस्कृति कितनी सुरक्षित है, इसका अनुमान शिक्षितवर्ग को अधिकाधिक होता जा रहा है। इस साहित्य मे कवित्व और रस भी थोडा नही है। यह हर्ष का विषय है कि पिछले कुछ वर्षो में हमारे कई उत्साही और प्रेमी साहित्यिको ने ग्रामगीतो के कई सग्रह प्रस्तुत किये है। इस वर्ष ही सम्मेलन से मैथिली तथा राजस्थानी लोकगीतो के सग्रह प्रकाशित हो चुके है। यह तीसरा भोजपुरी गीतो का सग्रह भी पाठको के सामने है। योग्य सपादक ने सुरुचिपूर्ण ढग से गीतो का सकलन किया है। श्री वलदेव उपाध्यायजी ने एक विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखकर पुस्तक का महत्त्व वढा दिया है। गीतो के सग्रह मे सपादक की पूजनीया माता श्री मूर्ति देवीजी ने सहायता दी है।

श्रीमान् वडौदा-नरेश स्वर्गीय सर सयाजी राव गायकवाड महोदय ने ववई सम्मेलन मे उपस्थित होकर पाँच सहस्र रूपये की सहायता सम्मेलन को प्रदान की थी। उस सहायता से सम्मेलन ने 'सुलभ साहित्यमाला' सचालित कर कई सुन्दर पुस्तको का प्रकाशन किया है। प्रस्तुत पुस्तक भी उसी पुस्तकमाला के अतर्गत प्रकाशित हो रही है।

रामचद्र टंडन
साहित्य मंत्री

विषय-सूची

[भूमिका भाग]

खण्ड १

खण्ड २

खण्ड ३

[संग्रह भाग]

सम्पादकीय निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक का प्रथम सस्करण स० २००० वि० मे भोजपुरी-ग्राम-गीत के नाम से प्रकाशित हुआ था। हमें यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि आज इस पुस्तक का दूसरा सस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। इससे ज्ञात होता है कि हिन्दी जनता की रुचि लोक-साहित्य के अध्ययन के प्रति दिन पर दिन बढती जा रही है। इस देश मे लोकवार्ता (फोकलोर) तथा लोकसाहित्य के अध्ययन एव उद्धार के प्रति जो अन्यमनस्कता एव उपेक्षिता दिखलाई जा रही है उसे देखकर बडा ही दुख होता है। अमेरिका तथा इंगलैण्ड मे वहाँ के लोकसाहित्य की रक्षा एव अध्ययन के लिए अनेक 'फोकलोर समितियाँ' स्थापित हैं। केवल अमेरिका में ही ऐसी समितियो की सख्या पचास से कम नही होगी। परन्तु इस महान् देश मे सरकारी अथवा गैरसरकारी कोई भी ऐसी उल्लेखनीय फोकलोर समिति नही है जो इस दिशा में कुछ विशेष कार्य कर रही हो। हमारी केन्द्रीय तथा राज्य सरकारे भी इस दिशा में अत्यन्त उदासीन हैं। भारतीय लोक-सस्कृति की रक्षा का कितना महत्त्व है यह सभवत बतलाने की आवश्यकता नही है। अतएव केन्द्रीय तथा राज्य सरकारो का यह कर्तव्य है कि वे भारत की इस लोकसस्कृति की रक्षा मे सक्रिय योगदान दें।

यह प्रसन्नता की बात है कि इधर कुछ वर्षो से कुछ विद्वानो का ध्यान इस दिशा की ओर आकर्षित हुआ है। लखनऊ विश्वविद्यालय के मानव-विज्ञानशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डा० मजुमदार ने 'लोकसस्कृति समिति' की स्थापना की है जिसका काम लोकसाहित्य का अध्ययन तथा प्रकाशन है। इस समिति की ओर से चार पाच पुस्तकें लोकगीतो के सग्रह के रूप मे प्रकाशित भी हो चुकी है। इस समिति की ओर से 'ईस्टर्न एन्थ्रोपोलाजिस्ट'

नामक एक पत्र भी प्रकाशित होता है। चूंकि इस सस्था के सभी प्रकाशन अग्रेजी में ही होते हैं अत जनसाधारण से इसका विशेष सबध नही है। अभी गत वर्ष में काशी में 'हिन्दी जनपदीय परिषद्' की स्थापना हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता मे हुई है। इस परिषद् की ओर से 'जनपद' नामक एक उच्चकोटि की त्रैमासिक पत्रिका भी प्रकाशित होती है। राजस्थान मे 'राजस्थान भारती' का प्रकाशन भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जा रहा है। मथुरा में 'ब्रजसाहित्य मण्डल' की स्थापना कुछ विद्वानो ने की है। 'मण्डल' की ओर से 'ब्रजभारती' का प्रकाशन हो रहा है जिसमे ब्रज के लोक-साहित्य का रसास्वादन करने को मिलता है।

इधर भारतीय विश्वविद्यालयो ने भी लोकसाहित्य के अध्ययन की ओर ध्यान दिया है जो एक शुभ लक्षण है। प्रयाग विश्वविद्यालय ने लोकसाहित्य को एम०ए० परीक्षा में स्थान दिया है। अनेक विद्वानो ने लोकसाहित्य को लेकर निबन्ध (थीसिस) प्रस्तुत किये है। डा० कृष्णदेव उपाध्याय एम०ए० को लखनऊ विश्वविद्यालय मे उनकी थीसिस 'भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन' पर पी०एच-डी० की उपाधि प्राप्त हुई है। इसी प्रकार आगरा विश्वविद्यालय ने डा० सत्येन्द्र को उनकी थीसिस 'ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन' के लिए पी०एच-डी० की उपाधि दी है। आजकल अनेक छात्र लोकसाहित्य को लेकर अनुसन्धान कर रहे है जो शुभ लक्षण है।

प्रथम सस्करण मे इस पुस्तक का नाम 'भोजपुरी ग्राम-गीत' था परन्तु प्रस्तुत द्वितीय सस्करण मे इसका नाम बदलकर 'भोजपुरी लोक-गीत' कर दिया गया है। मेरी ऐसी धारणा है कि गीतो का सबध सर्वसाधारण जनता से है, जनता-जनार्दन ही इसका उपास्यदेव है। इस जनता-जनार्दन का निवास गावो में भी हो सकता है और नगरो मे भी। बडे से बडे नगरो मे भी सर्वसाधारण जनता का मनोरजन इन्ही गीतो से होता है। अत इन्हे ग्राम-गीत की सज्ञा देकर उनके विस्तार क्षेत्र को सकुचित करना है।

मैं समझता हूँ कि लोक-गीतों का क्षेत्र अधिक विस्तृत है। क्या दुर्गम वन, क्या उत्तुंग पर्वतमाला और क्या धुआँधार फैक्टरियों से युक्त आधुनिक नगर, इन सभी स्थानों में निवास करनेवाले सामान्य जन-मन का अनुरंजन इन्हीं लोकगीतों से होता है। नगर में निवास करनेवाली स्त्रियाँ भी पर्व और संस्कार के उन्हीं गीतों को गाती हैं जिन्हें गाँवों में रहनेवाली उनकी बहिनें गाती हैं। ऐसी दशा में इन गीतों को ग्राम-गीत कहना अनुचित है। ये गीत नगर तथा गाँवों में निवास करनेवाली सामान्य जनता के समान रूप से 'साम्य' की सम्पत्ति हैं। इस प्रकार लोकगीतों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है और ग्राम-गीतों का बिल्कुल संकुचित। श्री सूर्यकरण 'पारीक' ने अपने राजस्थानी लोकगीत में इसी मत का समर्थन किया है। इसी लिए इस दूसरे संस्करण में इसका नाम 'भोजपुरी लोक-गीत' रखा गया है।

मैंने अपने भोजपुरी-ग्राम-गीत भाग २ (हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से प्रकाशित) के वक्तव्य में भोजपुरी लोक-साहित्य को निम्नांकित पाँच भागों में प्रकाशित करने का संकल्प प्रकट किया था—

(१) भोजपुरी-ग्रामगीत भाग १ भोजपुरी
(२) भोजपुरी-ग्रामगीत भाग २ लिरिक्स
(३) भोजपुरी-लोक-गाथा भोजपुरी बैलेड्स
(४) भोजपुरी लोक-कथा
(५) भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन

इनमें से प्रथम पुस्तक भोजपुरी लोक-गीत (भाग १) के नाम से आपके सामने प्रस्तुत है। द्वितीय पुस्तक का प्रकाशन 'सम्मेलन' द्वारा आज से लगभग पाँच वर्ष पूर्व किया जा चुका है। भोजपुरी लोक-कथाओं का संग्रह बिल्कुल तैयार है और वह शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है। इसका पाँचवा भाग 'भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन' मेरी पी० एच-डी० की थीसिस है जिसमें मैंने भोजपुरी लोक-साहित्य की समीक्षा प्रस्तुत की है। यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से प्रकाशित हो रहा है और आजकल प्रेस में है। भोजपुरी लोक-गाथाओं (बैलेड्स) का भी प्रकाशन शीघ्र ही

दृढ़ विश्वास है।

लोक-साहित्य के संग्रह करने तथा उसे प्रकाश में लाने में जितनी कठिनाइयों का सामना इस लेखक को करना पड़ रहा है उसका कुछ उल्लेख भोजपुरी-ग्राम-गीत भाग २ के सम्पादकीय वक्तव्य में किया जा चुका है। यहाँ पर केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि मुझे इस पथ पर अकेला ही चलना पड़ रहा है। न तो मुझे किसी धनकुबेर से ही कोई आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है और न केन्द्रीय अथवा प्रान्तीय सरकार ने ही मुझे किसी प्रकार का प्रोत्साहन दिया है। मैंने 'प्रेम का पंथ' समझकर ही इस कार्य को अपनाया है और सहायता तथा साधनहीन होने पर लोक-साहित्य की रक्षा के मार्ग पर एकाकी चलता चला जा रहा हूँ। परन्तु भवभूति

के इन शब्दो का स्मरण कर हृदय मे यह विश्वास होता है कि कभी तो कोई व्यक्ति इस कार्य की कद्र करनेवाला उत्पन्न होगा—

"उत्पत्स्यतेति भुवि कोऽपि समानधर्मा,
कालोह्यय निरवधिर्विपुला च पृथ्वी"

अन्त मे उन व्यक्तियो के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना आवश्यक समझता हूँ जिनकी प्रेरणा, आशीर्वाद तथा शुभकामना से लोक-गीतो के सग्रह का यह कार्य सम्पादित हुआ है। मेरी परम पूजनीया माता श्रीमती मूर्ति देवी जी—जिनके नाम के पहिले दिवगत विशेषण जोड़ते समय मेरा हृदय विह्वल हो उठता है—को अनन्त लोकगीत कठस्थ थे। इस सग्रह मे सस्कार सबधी जो लोकगीत दिये गये है वे सब उन्ही के मुख से सुनकर लिपिबद्ध किये गये है। मेरी छोटी बहन श्रीमती जानकी देवी जी ने इन गीतो को बडे परिश्रम से पूजनीया माताजी से सुनकर लिख लिया था। इस प्रकार माता जी और बहन की कृपा से ही इन गीतो का उद्धार हो सका है। मेरे पितृकल्प पूज्य ज्येष्ठ भ्राता प० बलदेव उपाध्याय एम०ए०, साहित्याचार्य, रीडर सस्कृत, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी ने इस ग्रन्थ की विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिख कर इसको गौरवान्वित किया है। मेरे साहित्यिक जीवन का निर्माण उन्ही की कृति है। पूज्य मध्यम भ्राता डा० वासुदेव उपाध्याय एम० ए० पी०एच-डी०, रीडर, प्राचीन भारतीय इतिहास एव सस्कृति विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, ने इस ग्रन्थ के सबध मे अनेक सुझाव उपस्थित किये है। अत मै इन सभी पूजनीय व्यक्तियो का आशीर्वाद का भाजन अपने को मानता हूँ। चिरजीव श्री हरिशकर उपाध्याय 'विशारद' ने इस ग्रन्थ के निर्माण मे अनेक प्रकार सहायता की है। इसके लिए वे मेरे आशीर्वाद के पात्र है। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती राजेश्वरी देवी जी ने अनेक गीतो के पाठ-सशोधन मे सहायता पहुचाई है। परन्तु इसके लिए उन्हे धन्यवाद देना कोरी विडम्बना या झूठा शिष्टाचार ही होगा।

१०९ लूकरगज, प्रयाग
विजया दशमी स० २०१०, १७।१०।५३ } कृष्णदेव उपाध्याय

गीतों के प्राप्तिस्थान

नीचे लिखे गीतो के प्रकार सम्पादक की पूजनीया माता श्रीमती मूर्ति देवी जी (गाँव सोनवर्सा, जिला वलिया) से सुनकर स० २००० वि० में लिपिवद्ध किये गये थे—

१ सोहर
२ खेलवना के गीत
३ जनेऊ ,, ,,
४ (क)—विवाह के गीत
(ख)—शिवजी के विवाह के गीत
५ वैवाहिक परिहास
६ गवना के गीत
७ जाँत के गीत (जँतसार)
८ छठी माता के गीत
९ शीतला माता के गीत
१० झूमर
११ कजली
१२ भजन
१३ चैता

बिहार राज्य के आरा जिला, गाँव मरयुआ के क्षत्रिय परिवार से प्राप्त

१४ बारहमासा

यह भी वही से प्राप्त

१५ बिरहा

उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के रेपुरा नामक गाँव के अहीरो से प्राप्त

नोट—इन सभी गीतो का सग्रह-काल स० २००० वि० है तथा ये सभी गीत बलिया एव आरा जिलो से सग्रहीत है।

प्रस्तावना

१

१—ग्राम-गीतों का परिचय तथा विशेषता

एक समय था जब ससार के समग्र देशो मे मनुष्य प्रकृति देवी का उपासक था, प्राकृतिक जीवन व्यतीत करता था। उस समय उसका आचार-विचार, रहन-सहन, सब सरल, सहज तथा स्वाभाविक थे। वह आडम्बर, दिखावा तथा कृत्रिमता से कोसो दूर रहता था। उसके कोश मे 'कृत्रिमता' शब्द का एकदम अभाव था। वह तो स्वाभाविकता की गोद में पला हुआ जीव था। उसके समस्त कार्य—उठना-बैठना, बोलना-चालना, हँसना-गाना, स्वाभाविकता में पगे रहते थे। कविता उस युग मे भी होती थी। चित्त के आह्लाद के निमित्त कविता की रचना उस समय भी होती थी और आज भी होती है, परन्तु दोनो युगो की कविताओ में जमीन आसमान का अन्तर है। आज की कविता नियम की पाबन्दी मे जकडी हुई है, छन्द की नपी तुली नालियो से प्रवाहित होती है, अलकार के बोझिल भार मे वह दबी हुई है, परन्तु जिस प्राचीन युग की चर्चा हम कर रहे है उस युग की कविता का प्रधान गुण था स्वाभाविकता, स्वच्छन्दता तथा सरलता। वह उतनी ही स्वाभाविक थी जितना जगल का फूल, उतनी ही स्वच्छन्द थी जितनी आकाश मे उडने वाली चिडिया, वैसी ही सरल थी जैसे गगा का प्रवाह। उस समय की कविता का जो अश आज अवशिष्ट रह गया है वही हमें ग्राम-साहित्य, लोककाव्य अथवा लोकगीत के रूप में उपलब्ध हो रहा है।

भारतवासियो का जीवन सदा से सगीतमय रहा है। शायद ही दूसरी कोई जाति होगी जिसके जीवन पर सगीत का इतना प्रचुर प्रभाव पडा हो।

प्रत्येक उत्सव, पर्व, त्योहार के अवसर पर समयोचित गीत गाकर चित्त-विनोद करना हमारी दिनचर्या का एक आवश्यक अंग है। पुत्र-जन्म, यज्ञोपवीत, विवाह, द्विरागमन आदि हमारे समस्त उत्सवों के अवसर पर स्त्रियाँ अपने कोमल कल-कण्ठों से रमणीय गीत गाकर अपना तथा उपस्थित मण्डली का पर्याप्त मनोरंजन किया करती हैं। यह प्रथा आधुनिक न होकर अत्यन्त प्राचीन है। वैदिक युग में भी इन पर्वों के अवसरों पर मनोहर 'गाथाओं' के गाने का निर्देश वैदिक ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। मैत्रायणी संहिता (३। ७। ३) में विवाह के अवसर पर गाथा गाने की विधि उल्लिखित है। पारस्कर गृह्यसूत्र (१ काण्ड, ७ कण्डिका) में विवाह के अवसर पर और आश्वलायन गृह्यसूत्र में सीमन्तोन्नयन के समय वीणा पर गाथा (गीत) गाने का प्रचलन निर्दिष्ट है। अतः विवाह के समय वैदिककाल में स्त्रियाँ सुन्दर गाथाएँ गाती थी और वह परम्परा आज भी अक्षुण्ण रीति से चल रही है।

वाल्मीकीय रामायण में रामजन्म के समय तथा श्रीमद्भागवत (दशम स्कन्ध) में कृष्ण जन्म के अवसर पर स्त्रियों के एकत्र होकर मनोरञ्जक सामयिक गीतों के गाने का स्पष्ट वर्णन मिलता है। इतना ही नहीं, मेहनत-मजदूरी करने के (चक्की पीसना, धान कूटना, ढेकी कूटना, खेती निराना आदि) समय जिस प्रकार स्त्रियाँ झुंड बाँध कर गीत गाकर अपनी थकावट हलकी किया करती हैं, प्राचीनकाल में भी ठीक इसी प्रकार होता था। प्रसिद्ध कवयित्री विज्जका (१२वीं सदी) ने धान कूटनेवालियों के गीत गाने का जो वर्णन किया है, वह बड़ा ही रोचक है। स्त्रियाँ धान कूट रही हैं और साथ-साथ गाना भी गा रही हैं। मूसल के उठाने और गिराने के कारण उनकी चूड़ियाँ झनझना रही हैं, उरःस्थल उनका हिल रहा है, मीठी हुंकार की आवाज तथा चूड़ियों के शब्द से मिलकर उनका गाना विचित्र आनन्द पैदा कर रहा है—

विलासमसृणोल्लसन्मुसल लोलदो. कन्दली-
परस्परपरिस्खलद्वलयनि स्वनोद्वन्धुरा. ॥

लसन्ति कलहुङ्कृति प्रसभकम्पिरोर स्थल-
त्रुटद्गमक संकुलाः कलभगण्डनी गीतयः ।।

इन लोकगीतो का लिखित गीतो मे पार्थक्य नितान्त स्पष्ट है। लिखित गीत किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा किसी अवसर को लक्ष्य मे रखकर निर्मित हुए हैं, वे छन्द की चहारदीवारी के भीतर बन्द होने की स्वच्छन्दता को विहीन हैं तथा रचयिता के मस्तिष्क की उपज होने से व्यक्तिगत भावो का दिग्दर्शन कराते हैं। परन्तु लोकगीतो की गति-विधि दूसरे ही ढंग की है। न तो वे लिपिबद्ध होते हैं, न उनके रचयिता का ही पता होता है। स्त्री-पुरुषो की जिह्वा ही उनकी आवासस्थली है। कृत्रिमता उनमें छूकर भी न मिलेगी। उनमें मिलेगी सरलता और स्वाभाविकता। जिन भावो म तनिक भी बनावटीपन नहीं है और जो मानव प्रकृति के साथ जन्मतः सम्बद्ध हैं उन्ही भावो का प्रकाश हमें इन गीतों में मिलता है। उनमे एक विचित्र मिठास मिलती है, जिसके कारण जो कोई उन्हें एक बार भी चख लेता है, वह उनके स्वाद को जन्म भर भूल नहीं सकता। वैयक्तिकता के स्थान पर उनमें सार्वजनीनता विद्यमान रहती है। गीतों में वर्णित भाव किसी एक व्यक्ति के हृदय के उच्छ्वास नहीं होते, प्रत्युत उनमें उस समाज के समस्त व्यक्तियो के हृद्गत भाव अभिव्यक्त होते हैं। यही कारण है कि उनमे हृदय में घर कर लेने का, मर्मस्थल को स्पर्श करने का विशेष गुण पाया जाता है। अलबत्ता लिखित कविता आँखों में चकाचौंध अवश्य पैदा कर देती है, परन्तु वह हृदय में वह भावना पैदा नहीं कर सकती जो लोक कविता अनायास उत्पादन कर सकती है। ये लोकगीत उसी प्रकार स्वाभाविक हैं जैसे जंगल के फूल, उसी भांति मीठे हैं जैसे पके आम का रस। [illegible] प्राकृत कविता ही जो [illegible] [illegible] में [illegible] और [illegible] है।

यद्योनि स्फुरत संस्कृतस्य, सुस्वादितानु यत्सोदने,
यत्र श्रोत्रपथावतारिणि कटुर्भाषाक्षराणां रसः।

गद्य चूर्णपद पद रतिपतेस्तत् प्राकृत यद्वच-
स्तान् लाटान् ललिताङ्गि ! पश्य नुदतो दृष्टेर्निमेषव्रतम् ॥
(वालरामायण—१० अंक, ७८ पद्य)

ठीक ! बहुत ठीक ! यदि एक बार भी इन ग्रमय लोकगीतों की अंगूरी शराब का मजा ले लिया जाय, तो क्या मजाल कि वह जीभ कृत्रिम गीतों की निबौरी की ओर तनिक भी लगे ! "जीभ निबौरी क्यों लगे बौरी चाखि अंगूर।"

२—लोक-गीत की भारतीय परम्परा

भारतीय साहित्य में लोकगीत की उत्पत्ति तथा विकास की कहानी बड़ी मनोरञ्जक है। किस प्रकार सुदूर प्राचीन काल में लोकगीत का प्रथम प्रचार हुआ और किस प्रकार वह भिन्न-भिन्न शताब्दियों में होकर वर्तमान अवस्था तक पहुँच गया है ? यह विषय नितान्त विचारणीय, माननीय तथा व्यापक है। इसके लिए अलग एक बड़े अध्ययन की जरूरत है। केवल प्रधान बातें पुरातत्त्व के प्रेमी पाठकों के सामने पेश की जा रही हैं।

प्राचीन साहित्य में जिन गाथाओं का उल्लेख स्थान-स्थान पर पाया जाता है, वे ही लोकगीत की पूर्व प्रतिनिधि हैं। 'गाथा' का अर्थ है पद्य या गीत और इस अर्थ में इसका व्यवहार ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में पाया जाता है (ऋग्वेद ८।३२।१ = कण्व इन्द्रस्य गाथया, ८।७१।१४; ८।९८।९, १०।९९।४)। गानेवाले के अर्थ में 'गाथिन्' शब्द का व्यवहार ऋग्वेद (१।७।१) में किया गया है (इन्द्रमिद गाथिनो बृहत्)। 'गाथा' का प्रयोग एक प्रकार के विशिष्ट साहित्य के अर्थ में ऋग्वेद (१०।८५।६) में ही किया गया है जहाँ इसे रैभी और नाराशसी से अलग निर्दिष्ट किया गया है। ब्राह्मण और आरण्यक में गाथाओं का विशिष्ट उल्लेख उपलब्ध होता है। ऐतरेय ब्राह्मण (७।१८) ने ऋक् और गाथा में पार्थक्य दिखलाया है—ऋक् दैवी होती थी और गाथा मानुषी अर्थात् गाथाओं की उत्पत्ति में मनुष्य का उद्योग ही प्रधान कारण होता था। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुशीलन

से यही प्रतीत होता है कि गाथाएँ ऋक्, यजु और साम से पृथक् होती थी, अर्थात् गाथाओ का व्यवहार मत्र के रूप में नही किया जाता था। अत प्राचीन काल मे किसी विशिष्ट राजा के किसी अवदान—सत्कृत्य—को लक्षित कर जो गीत लोक-समाज में प्रचलित रूप से गाये जाते थे वे ही 'गाथा' नाम से साहित्य का एक पृथक् अग माने जाते थे। निरुक्त (४। ६) में दुर्गाचार्य ने गाथा का यह अर्थ स्पष्ट रूप से दिखलाया है—स पुनरितिहास ऋग्बद्धो गाथा बद्धश्च। ऋक् प्रकार एव कश्चित् गाथेत्युच्यते गाथा शसति, नाराशसी शसति इति उक्त गाथाना कुर्वीतेति। आशय है कि वैदिक सूक्तो में कही-कही जो इतिहास उपलब्ध होता है, वह कही ऋचाओ के द्वारा और कही गाथाओ के द्वारा निबद्ध होता है। ऋचाओ के समान गाथा भी छन्दोबद्ध होती है।

वैदिक गाथाओ के नमूने शतपथ ब्राह्मण (१३। ५। ४, १३। ४। ३। ८) तथा ऐतरेय ब्राह्मण (८। ४) में उपलब्ध होते हैं जिनमें अश्वमेध याग करने वाले राजाओ के उदात्त चरित्र का सक्षिप्त वर्णन किया गया है। ऐतरेय ब्राह्मण में ये गाथाएँ कही केवल श्लोक नाम से निर्दिष्ट है और कही यज्ञ-गाथाएँ कही गई हैं। एक-दो गाथाओ का निरीक्षण कीजिए—

जन्मेजय के विषय में—

> आसन्दीवति धान्याद रुक्मिणं हरितस्रजम्।
> अश्व बबन्ध सारङ्गं देवेभ्यो जनमेजय ॥

दौष्यन्ति (दुष्यन्तपुत्र) भरत के विषय में—

> हिरण्येन परीवृतान् शुक्लान् कृष्णादतो मृगान्।
> मष्णारे भरतोऽददाच्छतं बद्धानि सप्त च ॥
> अष्टासप्तति भरतो दौष्यन्तिर्यमुनामनु।
> गङ्गायावृत्रघ्नेऽबध्नात् पञ्च पञ्चाशत हयान् ॥
> महाकर्म भारतस्य न पूर्वे नापरे जना।
> दिव मर्त्य इव हस्ताभ्या नोदापु पञ्च मानवा ॥

इन ऐतिहासिक गाथाओं की परम्परा महाभारत-काल में भी अक्षुण्ण दीख पड़ती है। इसी दुष्यन्त-पुत्र भरत के सम्बन्ध में अनेक अन्य गाथाएँ दी गई हैं जो नितान्त प्राचीन प्रतीत होती हैं (महाभारत आदि पर्व ७४।८० ११०—११३)। ऐतरेयवाली गाथाएँ ठीक इसी रूप में श्रीमद्भागवत के नवम स्कंध में भी उपलब्ध होती हैं।

ये गाथाएँ राजसूय के अवसर पर गाई जाती थीं, परन्तु विवाह के अवसर पर भी गाथा के गाने का विधान मैत्रायणी संहिता (३। ७। ३) में दिया गया है और इसी नियम के अनुसार पारस्कर ने गृह्यसूत्र में (१। ८) विवाह-विषयक दो गाथाएँ दी हैं —अथ गाथा गायति

सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति।
या त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रत. ॥
यस्या भूतं समभवद् यस्या विश्वमिदं जगत्।
तामद्य गाथा गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यश ॥

आश्वलायन गृह्यसूत्र (१ अ०, १४ खण्ड) में सीमन्तोन्नयन के अवसर पर गाथा गाने की चाल बतलाई गई है और सोम की प्रशंसा में यह गाथा दी गई है—सोमो नु राजावतु मानुषी प्रजा निविष्टचक्रासौ। इन समस्त उल्लेखों से यही प्रतीत होता है कि राजसूय, विवाह और सीमन्तोन्नयन के शुभ अवसरों पर ऐसी गाथाएँ गाई जाती थीं जो प्राचीन काल से परम्परागत रूप से चली आती थीं। राजसूय में ऐतिहासिक गाथाओं तथा विवाहादि के समय देवता-विषयक प्रचलित गाथाओं के गाने का नियम था, यह बात ऊपर दिये गये उदाहरणों से स्पष्ट ज्ञात होती है।

वैदिक गाथाओं के समान अवेस्ता में उपलब्ध गाथाएँ अवेस्ता के अन्य भागों की अपेक्षा अधिक प्राचीन स्वीकृत की गई हैं। इन गाथाओं में पारसी धर्म के मूल सिद्धान्त बड़ी ही सुन्दरता के साथ प्रतिपादित किये गए हैं। पाली जातकों के अनुशीलन से पाली भाषा में उपनिबद्ध गाथाओं का पता चलता है, जो प्राचीन काल से प्रचलित थीं और जिनमें उस काल की विख्यात

लौकिक कहानियो का साराश उपस्थित किया गया है। गौतम बुद्ध के प्राचीन जीवन से सम्बद्ध कथाएँ (जिन्हे 'जातक' के नाम से पुकारते है) इन्ही गाथाओ के पल्लवीकरण से आविर्भूत हुई है। ये गाथाएँ बुद्धभगवान् की समसामयिक प्रतीत होती है। सुप्रसिद्ध सिहचर्मजातक मे (जिसमे व्याघ्रचर्म से आच्छादित गर्दभ की मनोरञ्जक कहानी है) ये दो गाथाएँ दी गई है जिनसे कथा की मूल घटना की पर्याप्त सूचना मिलती है—

नेतं सीहस्स नदितं न व्यग्घस्स न दीपिनो
पारुतो सीहचम्मेन जम्मो नदति गद्रभो।
चिरं पि खो त खादेय्य गद्रभो हरितं यव
पारुतो सीसचम्मेन रवमानो च दूसयी ॥

विक्रम सवत् की तृतीय शताब्दी मे, जब प्राकृत भाषा का बोल-बाला था, लोकगीतो की उन्नति बडे जोर-शोर से हुई। राजा 'हाल' या 'शालिवाहन' के द्वारा सग्रहीत 'गाथा सप्तशती' से पता चलता है कि उस समय लोकगीतो के बनाने और गाने की धुन बहुत ही अधिक थी। करोड गाथाओ मे से केवल सात सौ गाथाएँ चुनकर इस कोश मे सग्रहीत कर दी गई है और काल के गाल से बचा ली गई है। ये गाथाएँ सरस गीति-काव्य के उत्कृष्ट नमूने है। रस से सनी इन गाथाओ को पढकर लोक-साहित्य की माधुरी का तनिक परिचय प्राप्त किया जा सकता है। रसोई बनाते समय सुन्दरी फूंक मारकर आग जलाना चाहती है, परन्तु आग जलती नही। इसका कितना रसमय हेतु इस गाथा मे खोजा गया है—

रन्धणकम्मणिउणिए मा जूरसु रत्तपाडलसुअन्धम्
मुहमारुअं पिअन्तो धूमाइ सिही ण पज्जलइ ॥

विरहिणी की भावना का कितना सुन्दर चित्र अंकित किया है इस भावमयी गाथा ने—

अज्ज गओत्ति अज्जं गओत्ति अज्जं गओत्ति गणिरीए
पढम च्चिअ दिअहद्धे कुड्डो रेहाहिं चित्तलिओ ॥(३।८)

वह आज गया है, आज गया है, आज गया है, इस प्रकार पति के जाने के दिनो को गिनने वाली विरहिणी ने दिन के पहले अर्ध भाग में ही दीवाल (कुड्य) को रेखा खींच कर चित्रित बना डाला है।

ललित-कलेवर ललना के सर्वाङ्गो की नुपमा आजतक किसी ने देखी ही नहीं। क्यो ? आँखें जहाँ गिरती है, वही चिपककर रह जाती है, आगे बढे, तब तो दूसरे भागो का सौन्दर्य देखे ! इस भाव की अभिव्यञ्जिका गाथा कितनी साफ-सुथरी, सीधी-सादी है—

जस्स जहिं च्चिअ पढमं तिस्सा अङ्गम्मि णिवडिआ दिट्ठी।
तस्स तहिं चेअ ठिआ, सव्वग केण वि न दिट्ठम् ॥

—३ शतक, ३४ गाथा

अपभ्रंश काल में भी लोकगीतो का ह्रास नही हुआ। उस समय के अनेक कथा-ग्रन्थो में नाना प्रकार की गाथाओ का उद्धरण दिया गया है। इस प्रकार लोकगीतो की भारतीय परम्परा बडी प्राचीन है। भारत के भिन्न-भिन्न प्रान्तो के आजकल उपलब्ध गीतो में पारस्परिक साम्य तो है ही, साथ ही साथ प्राचीन-काल की गाथाओं की भी छाया उनमें जानकारो को स्पष्ट दीख पडती है। इस आवश्यक विषय की छानबीन कभी फिर की जायगी।

३—लोकगीतों की पाश्चात्य परम्परा

पाश्चात्य जगत् में भी लोकगीतो का व्यापक प्रभाव है। वहाँ विद्वानो ने बड़े अध्यवसाय के साथ लोकगीतो की गहरी खोज कर उनका सूक्ष्म अध्ययन किया है। लोकगीतो को अंग्रेजी में बैलेड और जर्मन भाषा में 'फोल्क्सलीदर' कहते है। 'बैलेड' शब्द की व्युत्पत्ति नर्तनार्थक लैटिन 'बेलारे' धातु से मानी जाती है। अत इनका मूल अभिप्राय उस गीत से है जिसे किसी नर्तक मण्डली के लोग नाच के साथ-साथ कोरस में गाते हो। जर्मन शब्द 'फोल्क्सलीदर' का अक्षरश अनुवाद है—लोकगीत जिसे किसी कोरस-मण्डली ने लोगो के लिये बनाया किया हो, जो गतानुगतिक रूप से चला आता हो और जो शैलि, वर्णन तथा घटनाओं के विन्यास में भी यूरोप

और ससुर हमेशा 'वड़ैता' कहा गया है। यह बात होमर में भी उसी तरह पाई जाती है जैसे वाल्मीकि में। इस प्रकार भारतीय लोकगीतो तथा पाश्चात्य बैलेडो में विलक्षण साम्य है, परन्तु वैषम्य भी कम नही है। बैलेडो मे किसी परम्परागत आख्यान का छन्दोबद्ध वर्णन प्रस्तुत मिलता है, ये भिन्न-भिन्न लय और तालो के साथ गाये जाते है। अत वे संगीतमय भी है, परन्तु रसात्मक नही है। घटना का वर्णन इनका लक्ष्य है, मानव हृदय को स्पर्श करनेवाले कोमल भावो का व्यक्तीकरण नही। परन्तु भारतीय गीतो का मुख्य उद्देश्य श्रोताओ के हृदय मे रस सचार करना है, उन्हे अपने वर्णित भावो से भावित कर देना है। यही कारण है कि हमारी दृष्टि मे भारतीय लोकगीतो का साहित्यिक मूल्य बैलेडो से कही अधिक है। छन्दोबद्ध लोक-कथा के रूप में बैलेड लोकगीत के अन्तर्गत है परन्तु विषय तथा वर्णन दोनो दृष्टियो से हमारे लोकगीत कही अधिक व्यापक, सरस तथा मर्मस्पर्शी है।

परन्तु लोकगीतो का सत्कार करना हमे पाश्चात्यो से सीखना है। यूरोप के प्रत्येक देश के विद्वानो ने अपने लोकगीतो का सग्रह, समुचित सरक्षण तथा साहित्यिक समीक्षण कर उन्हे नष्ट हो जाने से ही नहीं बचाया है, बल्कि जातीय साहित्य की अभिवृद्धि पर उनका विशेष प्रभाव डाला है। जर्मन, अंग्रेज और अमेरिकन लोगो का प्रयत्न विशेष श्लाघनीय है। जर्मनी मे १८वी शताब्दी मे गेटे और ग्रिम ने इस ओर खूब ध्यान दिया था। ग्रिम का कार्य तो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। प्राचीन जर्मन भाषा मे उपलब्ध लोकगीतो और लोक-कथाओ का विशाल सग्रह कर उन्होंने इस विषय के अध्ययन की प्रतिष्ठा की। इङ्गलैंड मे १७६५ ई० में बिशप पर्सी ने प्राचीन बैलेडो का सग्रह प्रस्तुत किया। स्काटलैण्ड के लोकगीतो तथा आख्यानो को लोकप्रिय बनाने का काम औपन्यासिक सर वाल्टर स्काट ने किया, परन्तु हार्वर्ड के प्रोफेसर जेम्स चाइल्ड (१८२५-१८९६) ने जिस अध्यवसाय के साथ इङ्गलैण्ड और स्काटलैण्ड के प्रचलित लोकगीतो का ५ भागो मे सग्रह कर इस विषय को गाम्भीर्य और वैज्ञानिक रूप दिया है वह प्रसिद्ध

ही है। इस विषय के अध्ययन की शैली में भी अन्तर है। १८वीं और १९वीं शताब्दी के मध्यकाल तक लोकगीतों का अध्ययन केवल शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से ही किया जाता था और इसी कारण उनका प्रभाव हर्डर, गेटे और हाइने की जर्मन गीतिकाओं में और कोलरिज तथा वर्ड्सवर्थ की कविता में विशेष रूप से पड़ा। आजकल की विशेषता है लोकगीतों का बहुमुखी शास्त्रीय अध्ययन। यूरोप की भिन्न-भिन्न जातियों के लोकगीतों में अनेकांश में साम्य विद्यमान है। अत लोककथा के समान, जिन्हें अंग्रेजी में 'फेयरी टेल्स' और जर्मन भाषा में 'मेरकेन' कहते हैं, ये समग्र गीत समग्र यूरोपी जातियों की पैतृक सम्पत्ति हैं जो अति प्राचीनकाल से उनके हिस्से में चली आती हैं। पाश्चात्य विद्वानों की शैली का अनुसरण कर अपने लोकगीतों का सरक्षण तथा अध्ययन करना भारतीय विद्वानों का भी परम कर्तव्य है। सिजविक का यह कहना बिल्कुल ठीक है कि लिखित रूप में आने से ही लोकगीतों की मोहकता नष्ट हो जाती है, परन्तु सरक्षण के लिए वह जरूरी है ही। इसकी अवहेलना एक महान् जातीय अपराध है जिससे भारत के विद्वान् मुक्त नहीं माने जा सकते। आशा है साहित्य की नवीन जागृति के इस युग में लोकगीतों का समुचित सत्कार होगा, साहित्यिक समीक्षा कर उनके गुण-दोषों का पर्याप्त विवेचन सर्व-साधारण के सामने रखा जायगा।

४—ग्रामगीतों का महत्त्व

ग्राम-गीतों का सग्रह तथा अध्ययन अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। रसमय होने के कारण से ये गीत केवल हमारे जीवन को ही सरस तथा मधुर नहीं बनाते, इन गीतों के अध्ययन से पाठक केवल अपने दुःखों को भूल कर आनन्द सरोवर में डुबकियां ही लगाने नहीं लगता, प्रत्युत इनके अध्ययन से वह अनेक ज्ञातव्य विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकता है। इन गीतों का महत्त्व चार विभिन्न दृष्टियों से कूता जा सकता है—

(१) भाषा शास्त्र की दृष्टि से इन गीतों का महत्त्व बहुत अधिक है।

भारत की बहुत सी ऐसी प्रान्तीय बोलियाँ हैं जिनका लिखित साहित्य उपलब्ध नहीं है। उनके उदाहरण केवल इन गीतों से ही मिल सकते हैं। उदाहरण के लिये भोजपुरी बोली को ही लीजिए। इसका लिखित साहित्य नहीं के बराबर है। अतः इस बोली का यदि कोई विशेष अध्ययन करना चाहे तो ये ही गीत उसके अध्ययन की आधार-शिलायें होंगे। इन बोलियों में अनेक कहावतें तथा मुहावरे मिलते हैं जो साहित्यिक भाषा में उपलब्ध नहीं हैं। ये मुहावरे इतने उचित और अनूठे हैं कि उनका प्रयोग साहित्यिक भाषा में न करना एक महान् जातीय अपराध है। उदाहरण के लिये, 'हाथ में दही जमना' तथा 'तलवा में आग लग जाना' को लीजिए जिनका अर्थ पराक्रम न दिखलाना तथा क्रोध से अभिभूत हो जाना है। इन भावों को प्रकट करने के लिये इनके साहित्यिक भाषा में लिये जाने से हमारी भाषा की महती अभिवृद्धि होने की आशा है। कृषि तथा पशुपालन सम्बन्धी अनेक पदार्थों के वाचक शब्द इन भोजपुरी गीतों में मिलते हैं जिनका ठेठ हिन्दी में अत्यन्त अभाव है। बाँझ गाय के लिये 'बहिला' शब्द तथा गर्भघातिनी गाय के लिये 'लटाइल' शब्द इस कोटि के हैं। इनका हिन्दी में उपयुक्त पर्याय नहीं मिल सकता। व्यवसाय सम्बन्धी शब्दों की भी यही दशा है। इन शब्दों के ग्रहण करने से भाषा का भण्डार भरेगा इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

शब्दों की ऐतिहासिक परम्परा को जानने के लिए भी इन गीतों का अध्ययन उपादेय है। उदाहरण के लिए 'जुगवन' शब्द को लीजिए। इस शब्द का प्रयोग इन गीतों में खूब रखवारी करने के अर्थ में हुआ है। इसका सम्बन्ध संस्कृत के 'गुपू रक्षणे' धातु से है। भोजपुरी में सौभाग्यवती स्त्री के लिये प्रयुक्त 'सुहवा' शब्द संस्कृत 'सुभगा' से ही निकला है, यह बात भाषा शास्त्रवेत्ताओं से छिपी नहीं है।

(२) भौगोलिक ज्ञान की दृष्टि से भी इन गीतों के पढ़ने से हमें यह ज्ञात होता है कि किस देश तथा शहर में कौन सी विशिष्ट वस्तु पैदा होती या बनती थी, किस स्थान की कौन सी वस्तु प्रसिद्ध थी। इन गीतों में सहर का

पान, मिर्जापुर का पत्थर, पटने की भूल या गोरखपुर के हाथी प्रसिद्ध बतलाये गए है। आज भी कौन नही जानता कि 'मगहिया पान' स्वाद मे अपना सानी नही रखता तथा मिर्जापुर का पत्थर वडा ही मजबूत और टिकाऊ होता है। इस प्रकार इन गीतो से भारत के प्रादेशिक भूगोल का अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है।

(३) ऐतिहासिक दृष्टि से भी ये ग्राम-गीत उपेक्षणीय नही है। इनमे बहुत सी ऐतिहासिक सामग्री बिखरी पडी है जिनके सग्रह करने मे भारत का सच्चा, जीता-जागता इतिहास प्रस्तुत किया जा सकता है। इन गीतो मे कई स्थानो मे मुगलो के अत्याचार तथा उनकी परस्त्री-कामुकता का वर्णन है, जिससे पता चलता है कि उनके शासन काल में कितना अन्धेर था। किसी की बहूबेटी का सतीत्व सुरक्षित नही था। इसी प्रकार से कुँवर सिंह के अँग्रेजो से लडने के वर्णन से बहुत सी सच्ची ऐतिहासिक घटनाओं का पता चलता है।

(४) सामाजिक दृष्टि से भी ये ग्राम-गीत वडे उपयोगी है। चूँकि ये गीत विशेप कर सामाजिक उत्सवो—जनेऊ, विवाह, गौना और विदाई—पर ही गाये जाते है अतएव इन सस्कारो मे सबध रखनेवाली बहुत सी बातो का वर्णन इनमे पाया जाता है। जनेऊ के अवसर पर ब्रह्मचारी के भीख माँगने तथा काशी जाकर पढने का बडा अच्छा वर्णन है। कन्या के विवाह के लिए जब पिता वर खोजने के लिए जाता है तब पुत्री कहती है—ऐ पिता जी, मेरे लिए सयाना वर खोजना। इन गीतो मे दहेज-प्रथा का भी बडा ही मार्मिक चित्रण है। ननद तथा भौजाई का शाश्वत विरोध और झगडा, सास तथा बहू का दैनिक कलह, परदे की प्रथा का अभाव, विधवा स्त्री की दयनीय दशा, पुत्री के जन्म की निन्दा तथा उसके साथ अत्यन्त कटु-व्यवहार आदि विपयो की बाँकी झाँकी इन गीतो मे उपलब्ध होती है। इस प्रकार हम देखते है कि इन ग्राम-गीतो मे भोजपुरी समाज का बडा ही सजीव और जीता-जागता चित्र प्रस्तुत किया गया है।

(५) सास्कृतिक दृष्टि से भी ये गीत बडे काम की चीजे है। इन गीतो

ने भोजपुरी संस्कृति का जैसा सुन्दर चित्रण किया गया है वैसा अन्यत्र उपलब्ध नहीं। इन गीतों में स्त्रियों का चरित्र सदा ही उदात्त, शुद्ध तथा पवित्र दिखलाया गया है। स्त्री एक पतिव्रता, सती, साध्वी के रूप में चित्रित की गई है। एक स्त्री का देवर अपनी भावज से जब अनुचित प्रस्ताव करता है तब वह कहती है कि मैं तुम्हारे इस कुत्सित आचरण के कारण तुम्हारी बाहों को कटा दूँगी। स्त्रियों की तो बात ही क्या, एक हरिनी भी अपने पति की हड्डियों को लेकर सती होने को तैयार है। कितना उदात्त भाव है। एक मुगल आततायी के हाथों में कुसुमा देवी ने किस बहादुरी से अपने सतीत्व की रक्षा की इसका पता इन गीतों से ही लगता है। इस प्रकार भोजपुरी संस्कृति का बड़ा सुन्दर चित्रण इन गीतों में उपलब्ध है।

५—भारतीय भाषाओं में ग्राम-गीतों का संग्रह

भारत भूमि बड़ी विस्तृत है। इसमें भिन्न जातियां निवास करती हैं तथा भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं तथा बोलियों की संख्या बहुत अधिक है। प्रत्येक प्रान्त की एक अपनी भाषा है, जिसके भीतर अनेक बोलियाँ हैं। प्रत्येक प्रान्त में सामाजिक उत्सवों के अवसरों पर गाने योग्य अनेक गीत प्रचलित हैं। लोक-साहित्य की उपज के लिए भारतवर्ष के समान उर्वर देश शायद ही दूसरा मिले। भिन्न-भिन्न जातियों तथा भाषाओं की क्रीड़ास्थली इस भारत-भूमि में ग्राम-साहित्य का विकास जितना समृद्ध हो सका है उतना अन्यत्र मिलना नितान्त असंभव है। इस देश के हर एक प्रान्त में, प्रादेशिक बोलियों में, हजारों गीत आज भी प्रचलित मिलते हैं। परन्तु शिक्षित समाज की इनकी ओर इतनी उपेक्षा-बुद्धि है कि यह हमारी सम्पत्ति दिनोंदिन क्षीण होती चली जा रही है, और यह असम्भव नहीं दीखता कि वह एक दिन बिल्कुल ही लुप्त हो जावेगी। हमारी इस अमूल्य जातीय निधि का समुचित संरक्षण करना प्रत्येक शिक्षित भारतीय का कर्तव्य है।

हर्ष का विषय है कि इधर कुछ सालो से विद्वानो की दृष्टि इधर आकृष्ट हुई है। उन्होने कठिन परिश्रम को स्वीकार कर मजदूरो से, स्त्रियो से, तथा अनेक नीच जातियो के मुँह से सुन कर इन गीतो का सग्रह कर प्रकाशित किया है। इस दिशा मे कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा बगाली विद्वानो का प्रयत्न अत्यन्त सराहनीय है, क्योकि इनके प्रयत्न से पूर्व बगाल मे प्रचलित गीतो का बहुत ही सुन्दर, प्रामाणिक तथा सानुवाद सग्रह प्रकाशित हुआ है।

बँगला के विख्यात विद्वान् डाक्टर दिनेशचन्द्र सेन के सम्पादकत्व मे केवल मैमनसिंह जिले मे सग्रहीत लोकगीतो का सग्रह 'मैमनसिंह गीतिका' के नाम से एक भाग मे प्रकाशित किया गया है, तथा पूर्व बगाल के अन्य जिलो मे सग्रहीत गीतो का सग्रह तीन भागो मे 'पूर्व-बग-गीतिका' के नाम से कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुआ है। मूल बँगला गीतो का अग्रेजी मे प्रामाणिक अनुवाद चार वृहत् भागो मे भी प्रकाशित किया गया है।

गुजराती लोकगीतो के सग्रह, सरक्षण तथा प्रचारण मे झवेरचन्द मेघाणी का नाम सर्वश्रेष्ठ है। इन्होने गुजराती लोकगीतो का केवल सग्रह ही नही किया है, बल्कि लोक-साहित्य के महत्त्व की पर्याप्त समीक्षा भी प्रस्तुत की है। इनकी लिखी पुस्तको मे 'रढियाली रात', ३ भाग और 'लोक-साहित्य' प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त रणजीत राय मेहता का 'लोकगीत' और नर्वदाशकर लालशकर की 'नागर स्त्रियो माँ गवाता गीत' नामक पुस्तकें भी है।

मराठी लोकगीतो का विशाल सग्रह तथा समीक्षात्मक विवेचन श्रीमती अनुसूया बाई भागवत ने किया है जो 'महाराष्ट्र-साहित्य-पत्रिका' मे छप रहा है। इनमे से कई गीतो का अनुवाद जर्नल आफ बाम्बे यूनिवर्सिटी मे इधर प्रकाशित हुआ है।

राजस्थान मे भी लोक-गीतो की प्रचुरता है। परन्तु जिस प्रकार प्राचीन गीत विशुद्ध और साहित्यिक है उसी प्रकार नवीन गीत प्राय अश्लील तथा कुरुचिपूर्ण है। राजस्थानी गीतो के उद्धार का कार्य अनेक विद्वान्

कर रहे हैं जिनमें सूर्यकरण पारीक, एम०ए० का नाम उल्लेख योग्य है। आपने हिन्दुस्तानी पत्रिका (भाग ७ अंक २, पृष्ठ १५९ से २१०) में राजस्थानी लोकगीतों का बड़ा ही विस्तृत विवरण दिया है। आपका संग्रहीत राजस्थानी लोकगीत सम्मेलन द्वारा पुस्तकरूप में प्रकाशित हो चुका है।

हिन्दी भाषा-भाषियों के ग्राम-गीतों का संग्रह कर पं० रामनरेश त्रिपाठी ने बड़ा प्रशंसनीय कार्य किया है। आपने 'ग्राम-गीत' नाम से हिन्दी तथा हिन्दी से इतर भाषाओं के गीतों का संग्रह कविता-कौमुदी नामक ग्रन्थ में दो भागों (भाग ५, ६) में किया है। हम लोग उनके इस कार्य के लिए चिर ऋणी रहेंगे। परन्तु त्रिपाठी जी के इन संग्रहों में 'मिशनरी स्पिरिट' अधिक है, वैज्ञानिक दृष्टि बहुत ही कम। इन गीतों में पूर्वी तथा पश्चिमी हिन्दी के गीतों का ऐसा घपला किया गया है कि भाषा-शास्त्र की दृष्टि से उनका महत्त्व विशेष नहीं है। अतएव ऐसे संग्रहों की बड़ी आवश्यकता थी जो वैज्ञानिक दृष्टि से संग्रहीत केवल एक ही बोली के हों। बड़े सौभाग्य की बात है कि पं० अमरनाथ झा के सभापतित्व में हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इस कार्य को करने का बीड़ा उठाया है। अभी हाल ही में 'मैथिल लोकगीतों' का एक प्रामाणिक बहुमूल्य संग्रह सम्मेलन से प्रकाशित हुआ है। 'भोज-पुरी ग्राम-गीतों' का यह संग्रह भी अपने विषय का सर्वप्रथम प्रयत्न है। स्त्रियों के मुख से वे गाने जिस प्रकार से सुने गए हैं उसी प्रकार से लिपि-बद्ध किये गए हैं। संग्रहकर्ता ने इसे विशुद्ध तथा प्रामाणिक ढंग से संग्र-हीत किया है जिससे भोजपुरी के भाषाशास्त्र की दृष्टि से अध्ययन करनेवाले विद्यार्थियों के लिए यह एक अनमोल सामग्री है।

अन्त में, इस प्रसंग में श्री देवेन्द्र सत्यार्थी का नाम लिये बिना यह प्रकरण अधूरा ही रहेगा। इन्होंने भारत के विभिन्न प्रान्तों में घूम-घूमकर लोकगीतों का अमूल्य संग्रह किया है और 'माडर्न रिव्यू' में समय-समय पर आपने इन गीतों के अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित किए हैं। परन्तु इनके लोकगीत-सम्बन्धी लेखों की सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि उनमें मूल गीतों

का अभाव है। अत उन गीतो के अनुवाद म वह मजा नही आता जो मूल गीतो मे मिलता है।

२

१—भोजपुरी-भाषा

इस पुस्तक में सग्रहीत गीत भोजपुरी भाषा के है। सग्रहकर्ता की वडी इच्छा थी कि गीतो के प्रधान-प्रधान शब्दो के ऊपर भाषाशास्त्र विषयक टिप्पणियाँ लिखी जाएँ, परन्तु पुस्तक की कलेवर-वृद्धि होने के डर से वह इस इच्छा को पूर्ण नही कर सके। इन गीतो की सहायता से भोजपुरी के व्याकरण की छानवीन प्रामाणिक रूप से की जा सकती है। इस भाषा के विषय में छोटी-मोटी वाते सक्षप में दी जा रही है, जिससे पाठको को इन गीतो को भलीभाँति समझने में पूरी मदद मिलेगी।

भोजपुरिया का नामकरण विहार में वक्सर के समीप डुमराँवराज की पुरानी राजधानी, 'भोजपुर' के कारण है। वर्तमान भोजपुर आजकल एक सामान्य गाँव होने पर भी ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण है, क्योकि इसी भोजपुर भूमि को विख्यात वीर आल्हा तथा ऊदल की प्रसविनी भूमि होने का श्रेय प्राप्त है। पिछले समय में राजपूताने से आकर 'उज्जैन' राजपूतो ने यहाँ अपना विस्तृत राज्य स्थापित किया और 'भोजपुर' को प्रधान नगर वनाया। इस वोली के वोलनेवालो की सख्या अढाई करोड के लगभग कही गई है। यह वोली उन लोगो की मातृ वोली है, जिनकी नस-नस में वीर रस का सचार होता है, 'तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाण क्षार जल कापुरुषा पिवन्ति' के गर्हणीय सिद्धान्त का पूर्ण तिरस्कारकर जो अपने पराक्रमी भुजाओ का सहारा लेते है और सुदूर विदेशो मे भी अपने प्रवल प्रताप की पताका फहराते है, जो कूपमण्डूकत्व का वहिष्कार कर स्वतन्त्रता की पवित्र वायु के सेवन करने वाले है। भोजपुर मण्डल, शाहावाद, वलिया और गाजीपुर जिलो की भूमि वीरता के लिए इसी प्रकार विख्यात है, स्वतन्त्रता के नाम पर मर मिटनेवाले अपने सपूतो की वीर गाथाओ मे उसी प्रकार पवित्र है, जिस प्रकार भारत के भाल को ऊँचा

रनबाँका वीर पुरुष राजस्थान। भोजपुरियों के अक्खड़पन के विषय में यह कहावत समूचे बिहार में खूब मशहूर है—

भागलपुर का भगेलुआ भैया, कहलगाँव का ठग्ग।
जो पावै भोजपुरिया, तोड़ै दोनों का रग्ग॥

डाक्टर ग्रियर्सन का यह कहना बिल्कुल ठीक है—"भोजपुरी उस उत्साही जाति की व्यावहारिक भाषा है जो परिस्थिति के अनुरूप अपने को बदलने के लिए हमेशा तैयार रहती है और जिसका प्रभाव हिन्दुस्तान के हर एक भाग पर पड़ा है। हिन्दुस्तान में सभ्यता फैलाने का यश बंगालियों और भोजपुरियों को प्राप्त है। इस काम में बंगालियों ने अपने कलम से काम लिया है और वीर भोजपुरियों ने अपने डंडे से। भोजपुरियों की इस वीर प्रकृति में बिरहा, लोरकी आदि वीररस प्रधान लोकगीतों के उत्थान का रहस्य छिपा हुआ है। गिरिधर कविराय की निम्न रमणीय 'कुण्डलिया' को भोजपुर निवासियों का जातीय गान करार दिया जाय तो अनुचित न होगा। अक्खड़पन को जताने वाली 'लाठी' का यह वर्णन वास्तविक है—

लाठी में गुण बहुत है, सदा राखिए संग।
नदी नार अगाह जल, तहाँ बचावै अंग॥
तहाँ बचावै अंग, झपट कुत्तों को मारै।
दुश्मन दावागीर होइ, तिनहूँ को झारै॥
कह गिरिधर कविराय, बात बाँधा यह गाँठी।
सब हथियारन छाँड़ि, हाथ में राखा लाठी॥

भोजपुरिया बिहार की सब से पश्चिमी बोली है जिसका विस्तार बिहार के राँची, पलामू, शाहाबाद, सारन और चम्पारन जिलों में, और उत्तर प्रदेश के बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, आजमगढ़, फैजाबाद, गाजीपुर और बलिया जिलों में सर्वत्र है। आजकल हिंदी के सामान्य नाम से जो भाषा अभिहित की जाती है उसको भाषा-विज्ञान-वेत्ताओं ने तीन बड़े विभागों में बाँटा है—पश्चिमी हिन्दी (शौरसेन-अपभ्रंश से उत्पन्न), बिहारी

(मागध अपभ्रंश से उत्पन्न) तथा पूर्वी हिन्दी (अर्ध मागधी प्राकृत से उत्पन्न)। मागधी से उत्पन्न होने के हेतु भोजपुरी का सम्बन्ध बँगला के साथ जितना घनिष्ठ है, उतना पश्चिमी हिन्दी-ब्रजभाषा आदि से नहीं। ब्रजभाषा और बिहारी का भेद उनके क्रिया-पद पर दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाता है। संस्कृत के क्त प्रत्ययान्त भूतकालिक क्रिया पद 'मारित' का परिवर्तन दोनों भाषाओं में देखने से पारस्परिक पार्थक्य साफ दीखता है। शौरसेनी भाषा में 'मारित' का अपभ्रंश हुआ 'मारिदो', जो प्राकृत के नियमानुसार दकार के लोप होने से मारिओ' बन गया। इस से ब्रजभाषा का भूतकालिक पद 'मार्यो' तैयार होता है। यही कारण है कि शौरसेनी से उद्भूत समस्त भाषाओं तथा बोलियों में 'इओ' प्रत्यय भूतकाल की सूचना के लिये धातु के अन्त में प्रयुक्त होता है। उधर मागधी में तकार के स्थान पर लकार होने से 'मारित' 'मारिलो' के रूप में परिवर्तित हो गया है। मागधी से सम्भूत भाषाओं का भूतकाल इसी प्रकार 'ल' प्रत्यय के योग से बनता है।

एक बात और। ब्रजभाषा के भूतकालिक रूपों में पुरुष का निर्देश कथमपि नहीं होता। 'मार्यो' कहने से पता नहीं चलता कि किसने मारा? उसने, तूने या मैंने मारा? इस पुरुष-सम्बन्धी त्रुटि का मार्जन मागधी से उत्पन्न भाषाओं में स्पष्ट दीख पड़ता है। इनमें क्रिया के आगे पुरुष-वाचक सर्वनाम का संक्षिप्त रूप भी जुटा हुआ मिलता है। बँगला के 'मारिलाम' (मैंने मारा) पद के आगे 'आमि' (मैंने) देने की तनिक भी जरूरत नहीं है, क्योंकि उत्तम पुरुष का द्योतक सर्वनाम पद 'आम' के रूप में उसमें पहले से जोड़ा गया है। इसी प्रकार भोजपुरी के भूतकालिक रूप 'मारलों' में भूतकालिक 'ल' प्रत्यय के साथ उत्तम पुरुष का सूचक 'ओं' भी विद्यमान है। 'मारिलसि' और 'मारिलन' में प्रथम पुरुष के एक वचन और बहुवचन सूचक सर्वनाम पद क्रमश: रखे गए हैं।

भविष्यकाल में भी ठीक इसी प्रकार का विभेद है। ब्रजभाषा में जहाँ 'ह' प्रत्यय के योग से भविष्यकालिक रूप तैयार होता है, वहाँ बिहारी में 'ब' प्रत्यय ही उसका काम करता है। ब्रज का 'चलिहै' संस्कृत के 'चलिष्यति'

न बना हुआ है और गाम्भीर्य, [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] रूप में आया है, किन्तु भाषाओं का [illegible] [illegible] 'चलिअनि' में न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]—[illegible]—[illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के रूप में हमारा [illegible] प्रस्तुत है। परन्तु भोजपुरी में [illegible] [illegible] एक विचित्रता होती है। उत्तम और मध्यम पुरुष में [illegible] [illegible] ही लगता है, परन्तु प्रथम पुरुष में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लगता है।

	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	देख + ब + आ (देखबा)	देखलि
मध्यम	देखबे	देखब
प्रथम „	देखिहे (देखी)	देखिह या देखिहैं

इस प्रकार बिहारी का व्रज से पार्थक्य निम्नलिखित रूप से दृष्टिगोचर होता है।

बिहारी के अन्तर्गत तीन बोलियां मानी गयी हैं—मैथिली, मगही और भोजपुरी, परन्तु प्रथम दोनों बोलियों का आपस में इतना अधिक साम्य है और भोजपुरी में इतना अधिक वैषम्य है कि बिहारी को दो भागों में ही विभक्त करना अधिक उचित प्रतीत होता है—पूर्वी बिहारी (जो मैथिली और मगही भेद से द्विविध मानी जायगी) और पश्चिमी बिहारी (भोजपुरिया)। इन दोनों में उच्चारण तथा व्याकरण सम्बन्धी अनेक भेद दीख पड़ते हैं। मैथिली में विशेषतः, और मगही में सामान्यतः 'अकार' का उच्चारण बंगला के उच्चारण से मिलता जुलता है, क्योंकि 'अ' की ध्वनि ओकार के समान मुँह को गोलाकार बनाने से होती है, परन्तु भोजपुरिया में अकार का उच्चारण पश्चिमी हिन्दी के समान नितान्त सुस्पष्ट अकार ही होता है। भोजपुरी में अकार की एक विशिष्ट ध्वनि है, जो 'हवे' (है) शब्द में वर्तमान है। यह कुछ विचित्र है और कुछ ओकार के समान मुंह को अधिक गोल बनाने पर उच्चरित होती है। मध्यम पुरुष के लिए आदरार्थ मैथिली

और मगही मे वोलते है 'अपने', परन्तु भोजपुरिया में 'रउरे'। यह 'रउरे' तथा 'राउर' (आपका) का प्रयोग भोजपुरिया का स्पष्ट सकेत है। तुलसीदास ने 'मोहि लगत दुख रउरे लागा' और 'जो राउर अनुशासन पाऊँ', आदि चौपाइयो मे इन्ही भोजपुरिया शब्दो का प्रयोग किया है। सहायक क्रिया के रूप मे या सत्तार्थक धातु के लिए मैथिली मे प्रयोग करते है 'छइ' या 'अछि', मगही मे 'हड', परन्तु भोजपुरिया मे 'वाटी', 'वाडी' या 'वानी'। इन पदो के अतिरिक्त भोजपुरिया का व्याकरण यहाँ के निवासियो के स्वभावानुमार व्यावहारिक तथा सीधा है, वह मैथिली व्याकरण के समान जटिल तथा विपम नही है।

इस भोजपुरिया के भी तीन प्रधान भेद माने गए है —(१) आदर्श भोजपुरी, जो समग्र शाहावाद, छपरा, वलिया और गाजीपुर के पूरवी भाग में वोली जाती है। भोजपुर के समीप होने से इन स्थानो की वोली आदर्श (स्टैन्डर्ड) मानी गई है।[1] (२) पश्चिमी भोजपुरी जो आजमगढ, जौनपुर, वनारस, फैजावाद के पूर्वी भाग, मिर्जापुर और गाजीपुर के पश्चिमी भाग मे वोली जाती है। (३) नागपुरिया जो छोटा नागपुर मे वोली जाती है और राँची तक फैली हुई है। नागपुरिया के ऊपर पूरवी हिन्दी की छत्तीसगढी का प्रभाव अधिक पडा है। इन तीन वडे-वडे भेदो के अतिरिक्त दो छोटे-छोटे उपविभाग भी है—(१) मधेसी चम्पारन जिले मे। यह तिरहुत की मैथिली और गोरखपुर की भोजपुरी के वीच वाले स्थानो मे वोली जाती है। (२) थरुई भोजपुरी—जो नैपाल की तराई मे रहने वाले 'थारु' लोगो की वोली है। इन मब वोलियो में आदर्श भोजपुरी मे अधिक भेद नही है, परन्तु पश्चिमी भोजपुरी इससे कई वातो मे भिन्न दीखती है।[2]

---

[1] इस पुस्तक मे सग्रहीत अधिकाश गीत आदर्श भोजपुरी के है। इस वोली के व्याकरण के लिए देखिए प० उदयनारायण त्रिपाठी लिखित 'ए डायलेक्ट आफ भोजपुरी'।

[2] देखिए लिंग्विस्टिक सर्वे जि० ५, भा० २ पृष्ठ ४२-४४।

पश्चिमी भोजपुरी में करण कारक के लिए क्रिया के जो 'अन' प्रत्यय का प्रयोग दीख पड़ता है, जो आदर्श भोजपुरी में बिल्कुल ही नहीं है। पश्चिमी भोजपुरी में आदरसूचक के लिए 'रउरा' के स्थान पर 'तूँह' का प्रयोग दीख पड़ता है। दोनों बोलियों में सहायक क्रिया के दो रूप पाये जाते हैं— बानी और हवी। परन्तु पश्चिमी में 'हवी' का रूप 'हौंउँ' पाया जाता है। उच्चारण की विशेषता से भी अनेक प्रभेद दृष्टिगोचर होते हैं। बलिया की तरफ उत्तम पुरुष के रूपों के साथ कुछ अनुस्वार सा मिला रहता है, अतः उनके उच्चारण के लिए नाक की सहायता अवश्य ली जाती है; परन्तु पश्चिमी बोली में अनुनासिक का नाम तक नहीं है। "मैंने काम किया', इसके लिए हम लोग सानुनासिक बोलेंगे—"काम कइलीं' परन्तु बनारस के लोग बोलेंगे—"काम कइली'। उच्चारण का यह स्पष्ट भेद प्रत्येक मनुष्य को मालूम हो सकता है। अन्यपुरुष के बहुवचन के रूप में भी अन्तर पड़ता है। संज्ञा के रूपों में भी एक प्रसिद्ध विशेषता है। जहाँ आदर्श भोजपुरी में सम्बन्ध के लिए 'के' का प्रयोग करते हैं वहाँ पश्चिमी भोजपुरी में 'का' या 'कई' प्रयुक्त होता है। 'के' का परिवर्तन स्त्री० में 'का' बन जाता है परन्तु 'क' का 'कि' होता है। आदर्श भोजपुरी वाले 'ओह देस का एक सहर का रहवइया का पास' बोलेंगे परन्तु पश्चिमी भोजपुरी में 'ओह देस के एक सहर के रहवैये के पास' बोला जायेगा। सम्प्रदान कारक का 'परसर्ग' दोनों में भिन्न है—'लागि' आदर्श भोजपुरी में, पर बनारसी में 'कि बदे' या 'वास्ते' है। "तोहरा लागि उठवों जगात" और 'हिनरी है सजा लाव दुलारा तोरे बदे' में दोनों का पार्थक्य बिल्कुल स्पष्ट है। इस प्रकार नागपुरिया, मधेसी, भोजपुरी, सरवरिया (गोरखपुर तथा बस्ती के आसपास), थारू आदि के परस्पर भेद इतने महत्त्व के नहीं हैं जितने आदर्श भोजपुरी और पश्चिमी भोजपुरी के हैं। बलिया की बोली तथा बनारस की बोली[1] में उच्चारण तथा व्याकरण की विभिन्नता है कि—

---

[1] द्रष्टव्य बनारसी उपनाम, पृ० १० पर 'बनारसी बोली'।

एक वार सुनने पर भी विभेद स्पष्ट रूप से मालूम पड़ सकता है। एक उदाहरण से यह भेद स्पष्ट हो जावेगा—

(१) आदर्श भोजपुरी—

तलवा झुरइले कँवल कुम्हलइले,
हँस रोये विरह वियोग।
रोवत बाड़ी सरवन के माता,
के कावर ढोइहे मोर।

(२) बनारसी—

मौचूमि लेइला केहु सुन्नर जे पाइला।
हम उ हई जे ओठे पै तलवार उठाइला॥

× × ×

हम उनसे पूछलि, आँखी में सुरमा काहे बदे लगाइला।
ऊ हस के कहलन, छूरि पत्थर से चटाइला।

× × ×

हम खर-मिटाव कैली हा रहिला चबाय के।
भेवल धरल बा दूध में खाजा तोरे बदे॥१॥
अपने के लोई लेहली है कमरो भी बा धइल।
किनली है रजा, लाल दुसाला तोरे बदे॥२॥
पारस मिलल बा, बीच में गंगा के रामधे।
सजवा देइला सोने के बँगला तोरे बदे॥३॥
अत्तर तू मल के रोज नहायल कर, रजा।
बीसन भरल धयल बा कराया तोरे बदे॥४॥
जानीला आजकल में झनाझन चली रजा।
लाठी, लोहाँगी, खंजर और बिछुआ तोरे बदे॥५॥

बुलबुल, बटेर, लाल लड़ावैलें टुकड़हा।
हम काबुली मँगौली हैं मेंढ़ा तोरे बदे ॥६॥
कासी पराग द्वारिका, मथुरा और वृन्दावन।
धावल करैलें 'तेग', कन्हैया तोरे बदे ॥७॥
—तेग़ अली

भोजपुरी व्याकरण की बातें—भोजपुरी का व्याकरण जटिल नहीं है। शब्दरूपों के बनाने के नियम सीधे-सादे हैं।

संज्ञा—प्रत्येक संज्ञा-पद के तीन रूप होते हैं, लघु दीर्घ और दीर्घतम जैसे घोड़ा, घोड़वा और घोड़उअवा, बेटा, बेटवा, बेटउअवा, नाऊ नउआ, नउअवा। इनमें मूल या लघु रूप शब्द-कोश में स्थान पाता है, परन्तु दीर्घ और दीर्घतम रूप लोगों के मुख में। 'वा' स्वार्थिक प्रत्यय है, परन्तु कभी-कभी इसके योग से बने रूपों में अर्थ-भेद भी पाया जाता है। 'घोड़वा ले आव' से हमारा अभिप्राय किसी खास घोड़े से है। बहुवचन के लिए एकवचनान्त पद में नि, न्ह, या न जोड़ते हैं। कभी-कभी समूह-सूचक 'लोग' और 'सभ' शब्दों के योग से भी बहुवचन बनाया जाता है जैसे 'राजा लोग' और 'आदमी-सभ'। कारक बनाने के लिए अनेक प्रत्यय जोड़ने की व्यवस्था है, जैसे 'कें' (कर्मकारक), से, ते, सन्ते या कर्तें (करण कारक), 'खातिर', लाग या ला (सम्प्रदान), से, ले (अपादान), क, के, कई (सम्बन्ध) में, मो (अधिकरण)। इनके अतिरिक्त करण और अधिकरण के लिए 'एँ', 'ए' प्रत्यय शुद्ध कारक प्रत्यय हैं, जिसके पहले 'आ' का लोप हो जाता है, परन्तु अन्तिम 'ई' या 'ऊ' को ह्रस्व बना दिया जाता है। जैसे घोड़ें, घोड़े, माली से मलिएँ, मलिए।

क्रिया—उत्तम पुरुष का एक वचन का प्रयोग कविता को छोड़कर बोलचाल में बहुत कम होता है। उसकी जगह पर सदा बहुवचन का ही प्रयोग होता है। उसी प्रकार मध्यम पुरुष के एक वचन का प्रयोग तिरस्कार सूचित करता है (तू जाऽ)। इसलिए इसके लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। आदर-सूचक के लिए (रौरा शब्द के साथ) मध्यम पुरुष के स्थान पर

उत्तम के बहुवचन का प्रयोग किया जाता है ('रउरा आईं', परन्तु साधारण मध्यम पुरुष के लिये 'तूं लोग आव')।

सहायक क्रिया के लिए और सत्ता दिखलाने के वास्ते दो धातु हैं— बाड़, बाड़ी या बानी और हवी। वर्तमान काल में —

उत्तम	(बाड़ो)	बाड़ी, बानी	(हवो)	हवी
म०	बाट, बाड़े	बाट	हवे	हव
प्र०	बा, बाड़े	बाड़न	हा, हवे	हवन

भूतकाल में—	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	
एकवचन	व० व०	ए० व०	व० व०
उत्तम रहलों	रहलीं	×	रहल्यूं
मध्यम रहले, रहलस	रहल	रहली, रहलिस	रहलूं
अन्य रहल, रहले	रहलन	रहली	रहलिन

मुख्य क्रियाओं के रूप भी सीधे ढंग पर तैयार होते हैं। वर्तमान दो प्रकार का होता है। एक तो साधारण धातु से बनता है, परन्तु दूसरे प्रकार के लिए 'ल' प्रत्यय का योग आवश्यक है। यदि अन्य पुरुष का साधारण रूप देखे, देखनि, देखसु या देखन (ए० व०)—देखन या देखनि (व० व०) है, तो दूसरा रूप है देखला, देखेला (ए० व०)—देखले, देखलन, देखलनि या देखेले, देखेलन, देखेलनि (व०व०)। भूतकाल के लिए 'ल' प्रत्यय जोड़ा जाता है (जैसे देखले, देखलस या देखलसि = उसने देखा, देखलन या देखलनि = उन्होंने देखा)। भविष्यकाल का सूचक 'ब' प्रत्यय है उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष के लिए, परन्तु 'ह' अन्य पुरुष के लिए। रूप पहले ही दिया गया है।

क्रियाओं के परिवर्तन में कभी-कभी विषमता दीख पड़ती है—जैसे करल (करना), भ० का० करल या कइल,

मर (मरना) भू० का० मरल या मूअल,
जाइल (जाना) ,, ,, गइल,
देल (देना) ,, ,, दिहल, देल,
होइल (होना) ,, ,, भइल।

उत्साह तथा प्रतिभा के अभाव मे भोजपुरी साहित्य पनप न सका। यदि प्रतिभासम्पन्न कवि इसे मिल गया होता, तो स्वभावत सरस तथा मधुर होने के हेतु इसका भी साहित्य, रसिको के गले का हार बन गया होता। परन्तु इस सग्रह के गायनो को पढकर किसी सहृदय को सन्देह नही हो सकता कि भोजपुरी मे भी माधुर्य है, हृदय को बरबस अपनी ओर खीचने-वाले शब्दो और भावो का मधुमय सम्मिलन है, चित्त को आनन्द सागर मे विभोर बना देनेवाले रसो का शोभन परिपाक है।

भोजपुरी भाषा का प्रयोग काव्य-ग्रन्थो मे कुछ कम प्राचीन नही है। हिन्दी के अनेक महाकवियो ने इस भाषा के शब्दो को अपनी कविता मे स्थान दिया है। कबीरदास, जायसी तथा तुलसीदास की कविताओ मे इस भाषा के शब्द अनेक स्थानो पर बिखरे पडे है। कबीरदासजी भोजपुर प्रान्त के ही रहनेवाले थे। यद्यपि इनकी भाषा मे अनेक भाषाओ के शब्द पाये जाते है तो भी भोजपुरी का कुछ कम प्रयोग इन्होने नही किया है। इनकी भोजपुरी कविता के कुछ उदाहरण लीजिए—

(१) कनवा फराय जोगी जटवा बढ़वले,
दाढ़ी बढाय जोगी होइ गइले बकरा।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो,
जम दरवजवा बान्हल जैबे पकरा॥

(२) बाबा घर रहलौं बबुई कहवलौं।
सइयाँ घर चतुर सयान।
चेतब घरवा आपन रे॥

(३) का लेइ जैबो पितम घर अइबा,
गाँव के लोग जब पूछन लगिहे।
तब हम का रे बतइबों॥

(४) सुतल रहलौं माइ नींद भरिहो,, पिया दिहलें जगाय।
चरन कवल के अञ्जन हो, नैना लेलू लगाय॥

कबीर के अतिरिक्त हिन्दी के जायसी तथा तुलसीदास आदि महा-कवियों ने भी भोजपुरी शब्दों का अपने काव्यों में प्रचुर प्रयोग किया है। तुलसीदास की अपेक्षा जायसी ने भोजपुरी शब्दों का प्रयोग कम किया है परन्तु जिन शब्दों का उन्होंने व्यवहार किया है वे ठेठ भोजपुरी के हैं। जायसी का कार्यक्षेत्र अवध में ही सीमित रहा, अत उनके काव्य में भोज-पुरी शब्दों की कमी स्वाभाविक है। परन्तु तुलसीदास का क्षेत्र जायसी की अपेक्षा अधिक व्यापक था, वे काशी में अनेक वर्षों तक रह चुके थे, अतएव उनकी रचनाओं में भोजपुरी के शब्दों की प्रचुरता प्राकृतिक है। राम-चरितमानस में तो भोजपुरी के शब्दों की इतनी अधिकता है कि यदि उनका संग्रह किया जाय तो एक लम्बी लिस्ट तैयार हो सकती है। हम अब जायसी तथा तुलसी के ग्रन्थों में आये हुए कुछ भोजपुरी शब्दों को नमूने के तौर पर देते हैं।

जायसी (पद्मावत से)

साजि सबै चण्डोल चलाये, सुरग ओहार मोति बहु लाये।
छूंछि जो घरी. फेरि विधि भरी।
का पछिताव आउ जौ पूजी।
सबै कटक मिलि गोरेहिं छेका. गूँजत सिंह जाइ नहिं टेका।
सिंघ जियत नहिं आप धरावा, मुये पाछ कोई घिसियावा।
पहुँचा आइ सिंह असवारू जहाँ सिंह गोरा बरियारू।
कोई नियरें नहि आवै, सिंघ सदूरहि लागि।
भइ परलय अस सबही जाना काढ़ा खड़ग सरग नियराना।

तुलसीदास (रामायण से)

जो राउर अनुशासन पाऊं। कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊँ॥
रामु रामु रटि भोरु किय कहेउ न मरमु महीसु॥
जदपि धीर धरि समय विचारी। पूछी मधुर बचन महतारी॥
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी। बिनती सुनहु सदासिव मोरी॥

छुवत चढ़ी जनु सब तन बीछी ।
जिवन मूरि जिमि जुगवत रहेऊँ । दीप बाति नहिं टारन कहेऊँ ॥
आपन मोर नीक जो चहहू । बचन हमार मानि गृह रहहू ॥
जिमि गँव तिकइ किरात किशोरी ।
बार बार मृदु मूरति जोही । लागहि । ताति बयारि न मोही ॥
अलच होइ अहिवात तुम्हारा । जब लग गंग जमुन की धारा ॥
गुरु, पितु, मातु न जानौ काहू । कहौ सुभाउ नाथ पतिआहू ॥

(कवितावली से)

राजिव लोचन राम चले, तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं ।
पोंछि पसेउ बयारि करूँ, अरु पाँय पखारिहौं भूभुरि डाढ़े ।

तुलसीदासजी के अन्य ग्रन्थो से भोजपुरी शब्दो के प्रयोग के उदाहरण देकर इस भूमिका को मैं बढाना नही चाहता। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त है कि तुलसीदास ने कुछ ऐसे भोजपुरी शब्दो का प्रयोग किया है जो ठेठ भोजपुरी भाषा के शब्द है। उदाहरण के लिये 'जुगवत' शब्द को लीजिए, जिसका अर्थ भोजपुरी में किसी वस्तु की बडी सावधानी मे रक्षा करना है। यह शब्द भोजपुर प्रान्त मे ही बोला जाता है, अन्यत्र नही। दूसरा शब्द 'अहिवात' है, जिसका अर्थ सौभाग्य है। यह भी ठेठ भोजपुरी है, इसका प्रचलन अन्यत्र नही। तीसरा शब्द 'लूगा' है जिसका प्रयोग तुलसीदास ने 'विनय-पत्रिका' मे अनेक स्थानो पर किया है। भोजपुरी में 'लूगा' का अर्थ स्त्रियो के पहिनने का कपडा है। परन्तु भोजपुरी का ठेठ शब्द होने के कारण विनय पत्रिका के प्रसिद्ध टीकाकार प० रामेश्वर भट्ट ने भ्रमवश इसका अर्थ क्रियापद 'लूँगा' किया है, जो नितान्त अशुद्ध है। कहने का तात्पर्य केवल यही है कि तुलसीदासजी ने भोजपुरी के ठेठ शब्दो का प्रयोग किया है।

यद्यपि जायसी की भाषा अवधी है, परन्तु ऊपर के उदाहरण से यह सिद्ध होता है कि उनकी भाषा पर भी भोजपुरी की छाप अवश्य है।

अंग्रेजी अफसरों का ध्यान भोजपुरी के गीतों के संग्रह की ओर बहुत दिनों से है। आज से पचास-साठ साल पहले डाक्टर ग्रियर्सन का ध्यान मैथिली तथा भोजपुरी कविताओं को एकत्र करने की ओर आकृष्ट हुआ। विद्यापति की कविता का अंग्रेजी में अनुवाद कर उन्होंने मैथिली के छिपे जौहर को विद्वानों की मण्डली में लाकर उपस्थित किया। भोजपुरी के भी अनेक गीतों का संग्रह अंग्रेजी अनुवाद के साथ लंडन की रायल एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका (१६वीं तथा १८ वीं जिल्द) तथा इन्डियन एन्टिक्वेरी (१८८५ ई०) में प्रकाशित किया। भोजपुरी का व्याकरण भी उन्होंने 'सेविन ग्रामर्स आफ दि डाइलेक्ट्स एण्ड सब-डाइलेक्ट्स आफ दि बिहारी लैंग्वेज' (कलकत्ता, १८८४) नामक पुस्तक के द्वितीय भाग में विस्तार के साथ लिखा। इनके पहले भी डा० बीम्स, डा० हार्नली तथा सर कम्पबेल ने इस बोली की विशेषताओं तथा शब्दों के विषय में बहुत कुछ लिखा था, परन्तु ग्रियर्सन का प्रयत्न नितान्त श्लाघनीय था। उसी समय एतद्देशीय विद्वानों की भी दृष्टि भोजपुरी पर पड़ी, और उन लोगों ने इसके उदाहरण अपने ग्रन्थों में दिए। साहित्यप्रेमी लाला खड्ग बहादुर मल्ल ने 'सुधा बूंद' में ६० कजरियों का संग्रह किया (बाँकीपुर १८८४)। पण्डित रविदत्त शुक्ल ने 'देवाक्षर चरित' नामक नाटक के अनेक दृश्य भोजपुरी बोली में लिखे है (बनारस १८८४), तथा 'जाल में मगल' नामक पुस्तक में उस समय बलिया में घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन भोजपुरी में किया है (बनारस, १८८६)। पण्डित रामगरीब चौबे ने 'नागरी विलाप' में भोजपुरी का प्रयोग किया है (काशी, १८८६), परन्तु इन ग्रन्थों की रचना १८८६ ई० के आसपास की गई है। उसके अनन्तर भारत जीवन प्रेस के स्वामी स्वर्गीय बाबू रामकृष्ण वर्मा ने 'बिरहा नायिका भेद' लिखकर साहित्यिकों का विशेष मनोरञ्जन किया है। बलिया जिले के स्वर्गीय पं० दूधनाथ उपाध्याय द्वारा रचित भोजपुरी कविताओं का स्वाद उन लोगों को अवश्य ही मिला होगा, जिन्होंने इनकी 'गोविलाप छन्दावली' और 'भर्ती के गीत' पढ़ने का प्रयास किया होगा। सन् १८८८ ई० में तेग़अली का

'बदमाश दर्पण' बनारसी गुण्डों के विचित्र चरित्र का ही दर्पण नहीं है, प्रत्युत बनारसी में विरचित मनोहर कविताओं का कमनीय संग्रह है। पश्चिमी भोजपुरी की विशेषताओं के अध्ययन करने का इसमें महान् साधन उपलब्ध है। परन्तु विशुद्ध भोजपुरी के गीतों का इतना बड़ा संग्रह प्रस्तुत पुस्तक के पहले कहीं भी प्रकाशित नहीं था। यह पहला ही अवसर है कि परिश्रमी तथा विद्वान् सम्पादक ने साहित्य-प्रेमियों तथा भाषाविदों के काम की एक अपूर्व चीज तैयार की है। इस संग्रह के द्वारा भोजपुरी की कमनीयता का ही पता नहीं चलता, प्रत्युत उसे भाषाशास्त्र की दृष्टि से अध्ययन करने के लिए भी अनुपम सामग्री का यह अपूर्व भण्डार है।

इन गीतों के अध्ययन का यह सुचारु परिणाम होगा कि हिन्दी भाषा की शब्द-सम्पत्ति नितान्त समृद्ध होगी। हिन्दी की इतनी उन्नति होने पर भी जानकारों से यह बात छिपी नहीं है कि देहाती ग्रामीण विषयों पर भी लिखने के समय लेखक को शब्दों का टोटा होने लगता है। यह बात बेतरह सी दीखती है, परन्तु है सोलहो आने सच्ची कि अपने रोजमर्रे के परिचित विषयों के नाम से भी हम अनभिज्ञ ही हैं। विशेषकर खेती बारी के सम्बन्ध की चीजों में। उदाहरण के लिए कई जरूरी शब्दों को परखिए। जवान, बियाने लायक होने पर अनबियाई गाय को कहते हैं—'कलोर', गाय के नवोजात शिशु (वैदिक नाम—धरुण) को कहते हैं—लेरुआ। गर्भ-घातिनी गाय ('वेहद्') का नाम है 'लटायल गाय' तथा बाँझ गाय (वशा) को कहते हैं 'बहिला', जो भाषा-शास्त्र की दृष्टि से भी 'वशा' के अनुरूप ही है। इन पदार्थों के यथार्थत सूचक शब्दों का हिन्दी में सर्वथा अभाव ही है। इसी प्रकार हिन्दी में प्रयोग योग्य अन्य शब्द हैं—आसावती = गर्भिणी, उरेहना = चित्र खींचना, हँकार = बुलावा, चेलिक = छैला, युवक, मनुहारी = प्रार्थना, मनावा, सुहवा = सुभगा, दुलहिन, फोकट = मुफ्त, बोहनी-बटा = प्रातःकाल की पहली बिक्री, रमझल्ला = हल्ला-गुल्ला। ये शब्द इतने सार्थक तथा अर्थाभिव्यञ्जक हैं कि इनके अपनाने से हिन्दी में व्यापकता के साथ-साथ जीवन भी आवेगा। परन्तु

आजकल की हिन्दी-लेखकों का ढंग ही नया है। वे या तो अरबी-फारसी शब्दों की भरमार कर संस्कृत को दुर्बोध बनाने के आदी हैं अथवा संस्कृत के अप्रचलित कठिन शब्दों को ठूसठास कर अपनी विद्वत्ता दिखाने के लिये उद्यत रहते हैं। ये दोनों बातें उचित होने के कारण असंतोषजनक हैं। तद्भव शब्दों का तिरस्कार कदापि श्लाघनीय नहीं है।

ये ठेठ शब्द मुहावरों की जान हैं। इनमें से कुछ तो इतने अनूठे तथा मार्मिक हैं कि उनको व्यापक रूप देकर प्रयोग करने से हिन्दी का बहुत कल्याण होने की सम्भावना है। उन्हें प्रान्तीय और ग्रामीण कहकर तिरस्कार की दृष्टि से देखना किसी तरह भला नहीं जँचता। ये ग्राह्य हैं, त्याज्य नहीं। कुछ उदाहरण लीजिए—

३—भोजपुरी गीतों के गाने के ढंग

भोजपुरी गीतों के गाने के ढंग निराले हैं। उनमे अधिक गीत कामिनियों के कोमल कण्ठ के लिए उपयुक्त हैं, परन्तु कुछ गीत (जैसे चैता और बिरहा) पुरुषों के ही लिए है। इन गीतों को पढ़ने के समय याद रखना चाहिए कि ये गाने है, उनका आनन्द गाकर ही उठाया जा सकता है। ये काव्य नही है जिनका आनन्द पाठमात्र मे मिल सकता है। पिंगल के नियम का ये अक्षरशः पालन नहीं करते, परन्तु फिर भी इनमें छन्दोबद्धता है—लघुगुरु के नियम की पूरी पाबन्दी है। गान के सौन्दर्य के लिए कभी-कभी शब्दों को तोड़ने-मरोड़ने की भी जरूरत आ पड़ती है। यही कारण है कि 'निरमोहिया' 'निरवा मोहिया' के रूप में, और 'निरदरदी' 'निरवा दरदी' के रूप में परिणत पाये जाते है। कहीं-कहीं 'रे' 'हो' तथा 'ये' आदि सहायक अव्ययों की भी सहायता उपेक्षणीय नहीं होती, और कहीं-कही दीर्घ स्वर को ह्रस्व रूप मे ही पढ़ना पड़ता है। भोजपुरी गीतों मे अनेक स्थलो पर दीर्घ स्वर को बिना ह्रस्व पढ़े छन्दोभंग की भयानी आशंका बनी रहती है। यह दशा आ, ई तथा ऊ के ही विषय मे लागू नहीं है, बल्कि एकार तथा ओकार के विषय में भी (जिनके ह्रस्व की कल्पना संस्कृत व्याकरण के स्वप्न का भी विषय नही है)। इन गीतों के प्रत्येक पद्य के अन्तिम शब्द का उपान्त्य स्वर दीर्घकाल तक उच्चारित किया जाता है और अन्तिम स्वर बहुत ही हल्का। कुछ उदाहरण लीजिए—

गोरि के छतिया पर उठेला जोवनवा
हँसेला सहरिया के लोग।
लेबू गोरि दमवा, देबू हो जोवनवा
तोरा से जतनवा ना होई॥

इस बिरहा में के, उठेला में 'ठे', 'जोवनवा' मे 'जो', 'हँसेला' मे 'से', और 'के', ये समग्र स्वर ह्रस्वरूप है। तथा 'लोग' और 'होई' शब्दो का उपान्त्य स्वर—लो और हो—देर तक उच्चारण चाहता है। इसके अभाव

में विरहा का सारा मजा किरकिरा हो जायगा। सोहर, जँतसारि आदि अन्य गीतों में भी इस बात का ख्याल रखा जाता है। "साड़ी गोठी लवङ्ग पेहान", "भउजी नयनवों न लोर", "ननन ऊम समझौ"—इन पदों में उपान्त्य स्वर 'हा', 'लोर', 'र्'। को देर तक पढ़ने से ही छन्द की यथाविधि पूर्ति होती है।

३

१—भोजपुरी गीतों के प्रकार

भोजपुरी गीतों में अनेक प्रभेद हैं। हमारा जीवन नाना प्रकार के संस्कारों के द्वारा संस्कृत बनाया जाता है। हिन्दुओं के प्रधान १६ संस्कार हैं, परन्तु इनमें यज्ञोपवीत (जनेऊ) और विवाह की मुख्यता है। इन अवसरों पर ब्राह्मण पुरोहित वैदिक मन्त्रों का उच्चारण कर विधि-व्यवहार को सुसम्पन्न बनाता है, परन्तु स्त्रियाँ अवसर के अनुरूप नाना प्रकार की भावभङ्गियों से सकलित मनोहर गीत गाकर उन्हें मधुर तथा सगीतमय बनाती हैं। ऋतु परिवर्तन के कारण भी गीतों में अनेक भेद दीख पड़ते हैं। इन सब बातों को दृष्टि में रखकर इस संग्रह में संगृहीत गीतों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है—

(१) **सोहर**—पुत्र-जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीत 'सोहर' के नाम से प्रसिद्ध हैं। 'सोहिलो' तथा 'मगल' के अभिधान से इन्हींका संकेत किया जाता है। पुत्र-जन्म का अवसर सौभाग्यशाली पुरुष के ही जीवन में, कभी-कभी आया करता है। स्त्रियाँ पुत्र होने के लिए लाख मनौती मानती रहती हैं। अतः पुत्रजन्म भारतीय ललनाओं की ललित कामनाओं की चरम परिणति है, मानी गई मनौतियों का मनोरम परिणाम है। इस शुभ अवसर पर पास-पड़ोस की स्त्रियाँ, विशेषतः ग्रामगीतों की पण्डिता वृद्धाएँ, एकत्र होकर जच्चा के सूतिकागृह के दरवाजे पर बैठ जाती हैं और रमणीय गीतों को सुनाकर घर भर की स्त्रियों का, विशेषतः जच्चा का मनोरञ्जन किया करती हैं। 'सोहर' वस्तुतः हिन्दी कविता में गृहीत एक छन्द विशेष

है, जिसे तुलसीदास ने अपने 'रामलला-नहछू' में व्यवहृत किया है, परन्तु भोजपुरी सोहर किसी पिंगल के नियम से विरचित नहीं है, तथापि इनमें एक विचित्र प्रकार की लय रहती है जो सुनने वालों के हृदयों को बरबस खींच लेती है।

इन गीतों में आनन्द के उल्लास का विशद वर्णन होना स्वाभाविक है, परन्तु जच्चा के हृदय में गुदगुदी पैदा करने वाली मीठी हँसी की बाँकी झाँकी भी विद्यमान है। कहीं-कहीं सन्तानहीन बाँझ नारियों की करुण दशा का चित्र सहृदयों के हृदय में विशद सहानुभूति उत्पन्न करता है। गर्भ का जैसा सांगोपांग तथा विस्तृत वर्णन इन गीतों में उपलब्ध होता है उतना अन्यत्र मिलना विरल है। गर्भिणी का शरीर पिराने लगता है, तरह-तरह के भोजन करने की इच्छा (जिसे संस्कृत में दोहद कहते हैं) उत्पन्न होती है, जिसकी पूर्ति करने के लिए पति उसकी सखियों से कह देता है। प्रसव काल की वेदना को दूर करने के लिए नाना प्रकार के जतन किये जाते हैं। रानी की विषम वेदना से व्यथित-चित्त होकर राजा स्वयं ही धाय (धगडिनि) को बुलाने के लिए जाता है। धाय के घर का पता उसे मालूम नहीं है। इसलिए वह राहगीरों से पूछता चलता है। जब आधीरात के समय वह धाय के घर पहुँचता है, धाय मीठी नींद सो रही है। दरवाजे का खटखटाना सुनकर वह जगती है और इस अनुपयुक्त समय पर आनेवाले पुरुष का परिचय पाकर चलने के लिए तैयार हो जाती है, परन्तु अपने लिए लाल ओहार वाली पालकी पर चढ़ने की माँग पेश करती है। वह कहती है—

आपना के राजा हाथी करु अवरु घोडा करु रे।
ऐ राजा, हमारा लाल ओहार चढि हम जाइबि रे॥

यह वर्णन कितना स्वाभाविक है।

(२) **खेलवना**—यह भी सोहर के समान पुत्र-जन्म के सुखद अवसर पर गाया जाता है, परन्तु सोहर से इसमें कुछ भिन्नता रहती है। सोहर में

विशेष कर पुत्रजन्म की पूर्वपीठिका का वर्णन रहता है, 'बेलवना' में उत्तर पीठिका का। लड़के के लिए ललचनेवाली वनिता, गर्भ की वेदना से व्याकुल नारी, बहू के मंगल साधन में लगी सास, धाय को दौड़कर बुलानेवाले पति, बालक के उत्पन्न होने पर राजपाट माँगने वाली धाय—ये सोहर के प्रतिपाद्य विषय हैं परन्तु सद्योजात शिशु का रोदन, माता का आनन्द, सास की प्रसन्नता अपने कुलांकुर के पैदा होने से सर्वस्व लुटानेवाले पिता का हर्ष 'बेलवना' के मुख्य विषय हैं।

(३) **जनेऊ के गीत**—मुण्डन तथा यज्ञोपवीत के अवसर पर गाने योग्य गीत, जिनमें ब्रह्मचारी के साधनों तथा नियमों का विशेष उल्लेख रहता है।

(४) **विवाह के गीत**—भोजपुरी गावों में विवाह एक लम्बा व्यापार है। वर के प्रथम पूजन को 'वररक्षा' कहते हैं, जिसके बाद कन्यापक्ष वाले अनेक पात्र, पत्र-पुष्प तथा द्रव्य लेकर वर की विशेष पूजा करते हैं। इसे 'तिलक' कहते हैं। वर का विवाह के लिए जाते समय जो मांगलिक पूजन होता है उसे 'परीछन' के नाम से पुकारते हैं। कन्यापूजन का नाम 'गुरहथी' है। इनमें से हर एक अवसर के लिए भिन्न-भिन्न गीत तथा उनके विषय भी भिन्न-भिन्न हैं। विवाह के पहले शिव-पार्वती के विवाह विषयक गीत भी मंगलाचार के तौर पर गाये जाते हैं।

(५) **वैवाहिक परिहास के गीत**—जिनमें वर के साथ दुलहिन की सहेलियाँ नाना प्रकार की समयोचित हँसी की बातें कहती हैं। इनमें हास्य रस का अच्छा पुट रहता है।

(६) **गवना के गीत**—वधू के पतिगृह में प्रथम आगमन को 'गवना' कहते हैं। इस अवसर पर गीतों का ममतामयी माता, परिचित स्निग्ध बन्धुओं और प्रेमी पिता से बिछुड़ना प्रधान विषय रहता है। इन गीतों में बिछोह तथा करुणरस का निरन्तर संचार रहता है।

(७) **बारहमासा**—पति के परदेश जाने पर साल के बारहों मासों में नई-नई चीजों का होना तथा वधू के स्नेहमय जीवन का विशद वर्णन इन

गीतो में रहता है। इसी के भीतर सावन में झूला झूलने के समय के गीतो का समावेश समझना चाहिए।

(८) **जाँत के गीत**—जिनका भोजपुरी नाम है 'जँतसारि'। विषय वही प्रियतम-वियोग। जाँत पीसने के समय, विशेषत रात के तीसरे पहर, बिल्कुल सन्नाटा होने के कारण ये गीत दूर तक सुनाई देते हैं। गाने का ढग विचित्र होता है।

(९) **सोहनी के गीत**—बरसात के शुरू मे खेत मे उगे पौधो को नुकसान पहुँचाने वाले घासपात को निकाल बाहर करना सोहनी करना कहलाता है। इस काम के लिए नीच जाति की स्त्रियाँ रखी जाती है। आवश्यकतानुसार इन गीतो के पद छोटे-छोटे होते है।

(१०) **छठी माता**—सन्तान की कामना से कार्तिक शुक्ल षष्ठी को सूर्य की विशेष पूजा होती है। उस समय ये गीत गाये जाते है।

(११) **शीतला के गीत**—चेचक हो जानेपर शीतलादेवी की प्रसन्नता सम्पादन करने के लिए ये गीत गाये जाते हैं। इनमें शीतला की नाना प्रकार की क्रीडाओ तथा भक्तो के प्रति दया की कथाओं का विशेष वर्णन रहता है।

(१२) **झूमर**—ये गीत द्रुत लय से गाये जाते है। सब स्त्रियाँ खडी होकर एक साथ झूम-झूमकर स्वर में स्वर मिलाकर इन गीतो को गाती है, इसी कारण इन्हे 'झूमर' कहते हैं। विषयो मे एकता नही है। जब सुन्दरियाँ मस्ती में झूम-झूमकर अपने कलकण्ठ से झूमर गाती है, तब श्रोताओ के हृदय में एक विचित्र हर्ष का प्रादुर्भाव होता है। द्रुत लय मे होने के कारण इन गीतो मे एक विशेष ढग का प्रवाह है।

(१३) **चैता**—चैत के महीने मे (वसन्त के आरम्भ मे) ये गीत मर्दो के द्वारा गाये जाते है। इन्हे 'घाँटो' भी कहते हैं। इनकी लय बडी ही मनोमोहक होती है। लय विलम्बित होती है। गानेवाला अपनी मधुर श्लथ लय से चैत महीने की रुचिर वस्तुओ का सुन्दर वर्णन करता है और विरहिनो के चित्त को आश्वासन देता है। घाँटो के प्रसिद्धलेखक कोई 'बुलाकी दास' हो गये है जिनका नाम अनेक गीतो के अन्त मे आता है।

(१४) बिरहा—बड़े ढंग का मर्दाना गाना है। अहीर लोगों का तो यह जातीय गान है। किसी भी शुभ अवसर पर अहीर इन बिरहों को जरूर गावेगा। शादी के मौके पर तो बिरहा ही अहीरों के मनोरंजन का प्रधान साधन है। बिरहा का विशेषज्ञ पुरुष अहीर समाज में विशेष आदर तथा सत्कार पाता है। बिरहा एक प्रकार का छन्द है। विषय—कभी वीर, कभी श्रृंगार, कभी नीति और कभी अहीर-जीवन।

(१५) भजन—मेला तथा तीर्थयात्रा के समय अथवा सत्संगों के गाने की चाल है। स्त्रियों का झुंड एक साथ मिलकर भगवान की स्तुति, जीवन की क्षणभंगुरता, भजनकीर्तन की उपादेयता आदि विषयों पर रसीले गीत गाता है। बड़ा रस भरा है इन भजनों में, तथा रहस्यवाद की मधुर झाँकी मिलती है इन सामूहिक गीतों में।

२—गीतों की दुनिया

गीतों की दुनिया ही निराली है। इनमें जिस समाज का वर्णन किया गया है वह कितना स्वच्छ, कितना स्वाभाविक, कितना सुन्दर तथा कितना निर्मल है। गीतों में अभिव्यक्त गृहस्थी का चित्र कितना रँगीला दीख पड़ता है। गृहस्थी में खाने-पीने के लायक ही सामान प्राप्त है, वह समृद्धि में लोट-पोट नहीं करती, परन्तु इस जीवन में जिस सन्तोष, आन्तरिक शान्ति, बाह्य सौन्दर्य की झाँकी दीख पड़ती है वह किसी दिव्य लोक की प्रतीत होती है। कितनी कोमल कल्पना तथा मधुर भावुकता का राज्य है इस गीत-सुलभ जगत् में। परिचित वस्तुओं के लिए भी अनेक मधुर उपनामों की रमणीय कल्पना गीत-जगत् को संगीतमय बनाये डालती है। पतिदेव घर के मालिक होने की हैसियत से 'भानु जी' कहलाते हैं, रँगरलियाँ मचाने के कारण 'कन्हैया', रस के लोलुप होने के कारण 'भौंरा' तथा धर्म-कर्म के फल के भागी होने के कारण 'चन्द्रकला'। उचित अवसरों पर इन साहित्यिक शब्दों का प्रयोग गीतों की शब्दकला का पर्याप्त द्योतक है। जब प्रसव की वेदना से व्याकुल निःसहाय गर्भिणी वेदना को बाँट लेने के

स्त्रये अपने 'सभवना' को खोजती है, तब वह कितना कवित्वमय प्रतीत होता है! जब प्रिय धर्म-कर्म के समग्र फलों मे साझी है तब क्या उसे उचित नहीं है कि वह गर्भवेदना को भी बाँटकर व्याकुल पत्नी के बोझ को हल्का बना डाले? गीतो मे चित्रित सुन्दरी की सौन्दर्य-कल्पना मे कितनी नूतनता तथा नैसर्गिकता भरी है! वह पान के समान पतली (तन्वङ्गी) है, तो सुपारी की भाँति सघन-चिक्कण (दुरहुर) है। वह फूलों के समान कोमल (सुकुवार) है, तो चन्दन के समान सौरभ फैला रही (गमकती) है। उसके केश काले और लम्बे है। जब अपने बाबा के तालाब पर माथा मीसने और नहाने जाती है, तो उसके सौन्दर्य की छटा देखकर लोग मूर्च्छित हो जाते है। कभी-कभी उसका बाल टूटकर नदी मे बह निकलता है जिसकी सुकुमारता और सुनहला रंग किसी देखनेवाले रसिक के हृदय को बरबस खींच लेता है और वह उस काञ्चन केश वाली कामिनी की खोज मे बेचैन हो उठता है। उसके प्रेम के दो ही विषय है—माँग और कोख = पति और पुत्र, जिनको केन्द्र मानकर सुन्दरी स्नेह की अभिव्यक्ति अभिराम शब्दों मे की गई है।

पुत्र के पाने की चाह कितनी मीठी है इन ललनाओ मे!

पुत्र उत्पन्न होते ही माता के मन को भरता है, वह 'मनभरन' है, मन को रख लेता है—वह 'मनराखन' है, लीला का ललित निकेतन है—वह 'गोविंदजी' के नाम से अभिहित होता है।

बहू के हृदय मे अपने सास-ससुर के लिए गहरा, निश्छल आदर का भाव बना है। सास मचिआ (छोटी खटिया) पर बैठकर गृह का पालन करती है। वह नितान्त आदरणीय होने से 'बढ़ैतिन' है। ससुर 'बढ़ैता' है। सासु का हृदय कितना कोमल और सहानुभूतिमय है! जब उसे खबर लगती है कि वधू को गरमी के दिनो मे बाहर से पानी भरकर लाने मे क्लेश होता है, तब उसका हृदय पसीज जाता है और अपने पति से आग्रह कर आँगन मे कुआँ खोदने की व्यवस्था कर देती है। पानी खींचने के लिए रेशम की डोर लगा देती है जिससे उसके हाथ में किसी किस्म की तकलीफ न हो।

सास अपने पुत्र के मगल के लिए तो चिन्तित रहती है, परन्तु इसमे अधिक अपनी पतोहू के कल्याण के साधन मे व्यग्र है। किसी पाहुने के आने पर भोजन सोने की थाली मे परोसा जाता है और उसके स्वागत में रात भर चन्दन का तेल जलाया जाता है।

प्रियतम कार्यवश मोरंग चला जाता है और लौटने मे विलम्ब कर बैठता है। बेचारी पत्नी का हृदय बेचैन हो उठता है। वह कहती है कि यदि मैं जानती कि मेरा लोभिया मोरंग जायगा, तो मैं उसे रेशम की डोर से बाँध लेती। इतना ही नही, रेशम की डोर के टूटने की आशका हो सकती है, इससे अधिक दृढ होता है वचन का बन्धन (प्रतिज्ञा की शृखला), इसीमे उसे बाँध रखती। बडी कोमल कल्पना है इस वियोगिनी कामिनी की—

जहु हम जनितीं ए लोभिया, जइबे तुँहु मोरँगवा
घीचीं बाँही बँन्हितो ए लोभिया, रेसम के रे डोरिया।
रेसम के डोरिया ए लोभिया, टुटि फाटि जइहे
वचन के बान्हल पियवा कतहीं ना राम जइहे॥

प्रिय का यह विलम्ब पत्नी के लिए असह्य हो जाता है। वह अपने पडोसी भीमल मल्लाह के हाथ उसके पास पाती भेजना चाहती है, परन्तु पत्री कैसे तैयार हो? वह अपने नेत्र के काजल की स्याही बनाती है और अपना अँचल फाडकर कागज तैयार करती है। मदन-लेख (प्रेमपत्र) लेकर भीमल मल्लाह मोरंग जाता है और उसके पति को लाने मे समर्थ होता है।

बडा उदात्त, आदर्श तथा पवित्र चरित्र है इन भारतीय ललनाओ का जिनके सुकृत-सौरभ से ये गीत गमक रहे है। पति के परदेश चले जानेपर प्रोषितपतिका की व्याकुलता स्वाभाविक है, परन्तु वह कभी अनुचित व्यवहार में अपना हाथ नहीं डालती। देवर उसके पास नेह गाँठन का प्रस्ताव लाकर उपस्थित होता है, परन्तु वह उसे दुत्कार देती है और क्रोध मे आकर प्रिय के आने पर देवर की 'अलफी बाहों' (सुन्दर हाथो) को काट डालने की धमकी देती है।

पत्नी का सन्देश पाकर निर्मोही पति जब नही लौटता, तब पत्नी की चिन्ता पराकाष्ठा को पहुँच जाती है। वह नालायक उसे दूसरा पति कर लेने की सलाह देता है, तब पतिव्रता की स्वाभाविक तेजस्विता चमक उठती है और वह कह बैठती है कि तुम्हारी बहन या माता दूसरा पति कर ले, वह आजन्म अपने व्रत को निभावेगी और तुम्हारे जैसे आदमी को ड्योढी-दार बना कर रखेगी। पति के अतिरिक्त वह के सुख-स्वप्नो का केन्द्र उसका पीहर है और वह उसी ओर टकटकी लगाये जीवन बिता रही है। पीहर की हरएक चीज मे उसके वास्ते कितनी मोहकता है! भाई और पिता के लिवा ले जाने की आशा उसकी जीवन-लता को हरी-भरी रखती है और अपनी माँ से फिर मिलने तथा परिचित देश मे स्वतन्त्रता की वायु के सेवन की कोमल कल्पना उसके जीवन को सरस बनाये रहती है। बुरी ससुराल मिलने पर उसे सास, ननद और जेठानी के व्यङ्ग बाणो से विद्ध होने के अवसरो की कमी नही रहती। यह वस्तुस्थिति बुरे दिन आने पर भारतीय समाज मे आज विशेष रूप से दीख पडती है, परन्तु ये गीत हमें उस दुनिया की सैर कराते है जहाँ किसान हल-बैल के सहारे अपनी निष्कपट जीविका उपार्जन करता है, मचिया पर बैठकर 'बढैतिन' सास गृह के अनुशासन मे लगी रहती है, जहाँ रेशम की डोर से वधू अपने आँगन के कुएँ से पानी खीचती है, बच्चे अपनी छलहीन हँसी से बडो का मनोरञ्जन किया करते है। भोजपुरी गीतो मे चित्रित समाज का वातावरण कितना शान्त है, कितना निर्मल है, कितना मोहक है! इन गीतो मे हमे तो किसी दिव्य लोक की बाँकी झाँकी मिलती है, जिसके सामने आधुनिक समाज का प्रकाश फीका, बनावटी तथा मलिन प्रतीत होता है।

३—गीतों का भौगोलिक आधार

इन गीतो के अध्ययन से उनकी भौगोलिक पृष्ठभूमि का परिचय भली-भांति चलता है। भोजपुर भारत के पूर्वी प्रान्त मे आज ही नही, प्राचीनकाल मे भी परिगणित किया जाता था। मनु के कथनानुसार विन-

शन (कुरुक्षेत्र के पास सरस्वती नदी के लुप्त होने का स्थान) के पूरब तथा प्रयाग के पश्चिम का भारत खड 'मध्यदेश' माना जाता था। अत मध्य देश से पूरब ओर स्थिति के कारण भोजपुर का पूर्वीय प्रान्त माना जाना बिल्कुल स्वाभाविक है। आज की भाति इन गीतों के समय में भी भोजपुर का सम्बन्ध पूरब के देशो मे अत्यधिक था। शिवजी 'पूरबी बनिजीया' पर जाते है, अपनी सुन्दरी को शोक-सागर मे डुबाकर युवक पति भी जीविका की तलाश और वाणिज्य के नाते पूरब के देशो की ही ओर पयान करता है। इन देशों की विशेष उपज की भी गवाही गीतो से मिलती है। मगह अपने पान के लिए प्रसिद्ध है, तो मोरग (नेपाल की तराई मे देश विशेष) अपनी सुपारी के वास्ते मशहूर है। हाथी गोरखपुर से मँगाया जाता है और वर महोदय के चढ़ने के लिए वह पटनहिया झूल से अलकृत किया जाता है। कन्या के बाबा अपनी सयानी कन्या के लिए वर की तलाश मे उत्तर-दक्षिण सब देशो को छान डालते है, परन्तु केवल 'तिरहुत' में ही उन्हें मनोवांछित सयाना वर मिलता है। वर के परीछने के लिए जो लोटा मँगाया जाता है वह विन्ध्याचल के पत्थर का बना मिर्जापुरी ही है। बगाल की कीर्ति-कौमुदी इन गीतो मे खूब गाई गई है। कलकत्ते मे लाल रग के छाते बिकते है। अपने लम्बे-लम्बे काले केशो को सजा कर खडी होने-वाली सुघर बगालिन बिटिया 'पूरबी बनिजिया' पर जानेवाले भोजपुरी नायको का मन बरबस हर लेती है। वह उनके पजो में इतना फँस जाता है कि घर पर धर्म से ब्याही पत्नी के रहने पर भी वहाँ बगालिन को घर में डाल देता है, जिससे उपेक्षिता पत्नी का जीवन दूभर हो जाता है। भोज-पुरी सुन्दरी ढाके के मलमल की साडी और पटने की झूलनी पहनकर अपने को कृतकृत्य समझने लगती है। ध्यान देने की बात तो यह है कि गीतो में वर्णित पूर्वीय वाणिज्य की परम्परा अधिक या न्यून मात्रा मे, आज भी विद्यमान है। 'पूरब' को जाते हुए पति से प्रिय पत्नी का यह निवेदन कितना मार्मिक तथा हृदयस्पर्शी है तथा इसके विपरीत लम्पट पति का उत्तर कितना निष्ठुर और कठोर है—

आरे जो तुहु जइब बलमू पूरुब बनिजिया हो,
हमारा का तू ले अइब रावल मुनिया।
तोरा के लाइब धनिया कसमस चोलिया हो;
अपना के सुन्दर बगालिन रावल मुनिया।

कही-कही इन गीतो मे हाजीपूर के हाट—सोनपूर के हरिहर क्षेत्र के मेले का भी उल्लेख मिलता है। मालूम होता है कि उन दिनो मे यह मेला उतना ही प्रसिद्ध था जितना आजकल है। यह मेला अपनी विशालता तथा प्रसिद्धि मे भारतवर्ष मे अद्वितीय है।

४—गीतों में ऐतिहासिक वृत्त

इन गीतों का समय निर्णय करना कठिन है, परन्तु इतना तो निश्चित-सा प्रतीत होता है कि इनकी परम्परा कम से कम दो सौ, तीन सौ वर्ष से निरन्तर, अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होती आ रही है। भोजपुर मण्डप सदा से अपने वीर 'बांकुटों' के लिए विख्यात है। अत शत्रुओ का मान मर्दन करनेवाले वीरो की अनेक कहानियाँ गीतो मे गाई जाती है। सन् ५७ के वलवे की वात, जिसमे भोजपुरी सिपाहियो का विशेष हाथ था, इन गीतो मे आपको विखरी मिलेगी। वीराग्रणी बाबू कुँवरसिंह भोजपुर के पास जगदीशपुर (आरा) गाँव के निवासी थे। उन्होने जिस पराक्रम के साथ युद्ध किया था वह इतिहासवेत्ताओ को अविदित नही है। गीतो में वर्णित इनके उत्कृष्ट वाहुवल की कहानी सुनकर आज भी हमें रोमाञ्च हो आता है। उससे भी पहले मुसलमान-काल की दुरवस्था का भी पर्याप्त चित्रण हमे इन गीतो मे उपलब्ध होता है। तुर्को की विषय-लोलुपता तथा स्वेच्छाचारिता की गूँज इन गानो में खूब सुनाई पडती है। किस प्रकार कुसुमा देवी ने मिरजा साहव के अत्याचारो को सहकर भी अपने सतीत्व की रक्षा की थी तथा अपने चरित्र की ओजस्विता को प्रकट किया था वह भोजपुर के गाँवो मे आज भी उसी उत्साह से गाया जाता है। सती कुसुमा देई का नाम इन गीतो ने अमर कर दिया है। मिर्जा नामक किसी तुर्क सरदार की

दृष्टि कुसुमा देई के लावण्य-मण्डित शरीर पर पड़ी। वह उसे पाने के लिए बेचैन हो उठा। उसके पिता को कैदखाने की काली कोठरी में डाल दिया। पितृ-परायण पुत्री मिर्जा के साथ चलने के लिए तैयार हो गई परन्तु रास्ते में अपने पिता के तालाब में नहाने के बहाने उसने अपनी जान दे डाली। कुसुमा का यह दिव्य चरित्र हमारे लिए आज भी नारीत्व के उत्कृष्ट महत्त्व को प्रदर्शित कर रहा है। देखिए—

देहु न मैया रे कँगही कटोरिया हो ना।
बाबा के सगरवा मुड़वा मीजब हो ना॥
अरे सगरवा कुसुमा मुड़वा जो मीजै।
घोड़वा कुदावैं मिरजा रजवा हो ना॥
घोड़वा कुदावत परिगै नजरिया हो ना।
केकरी तिरियवा मुड़वा मीजै हो ना॥
घोड़वा थमावै मिरजा वो घोड़सरिया।
बाबा का पकरि मँगावै हो ना॥
अपनी कुसुमा मोहि बिआहौ हो ना॥
कैसे मैं बिआहौं अपनी कुसुमिया।
तू तो तुरुक हम ब्राह्मन हो ना॥
एतना बचन सुनि मिरजा रजवा।
बाबा के डारैं हथकड़िया हो ना॥
अगिया लगाओं बेटी तोरी सुन्दरइया।
बाबा के चढ़ी हथकड़िया हो ना॥
देहु न मैया रे अपनी चदरिया।
बाबा के सँसतिया देखि आवों हो ना॥
जो तुही मिरजा हो हमही लोभानेउ।
बाबा जोगे हथिया बिसाहेउ हो ना।
जो तुही मिरजा हो हमरी लोभानेउ।
भैया जोगे घोड़वा बेसाहेउ हो ना॥

मैय्या जोगे गहना गढावो हो ना।
भौजी जोगे चूनर रँगावो हो ना॥
हँसि हँसि मिरजा रे डोलिया फनावे।
रोइ रोइ चढ़ै कुसुमा रनिया हो ना॥
एक वन गइली दूसर वन गइली।
तिसरे मे वावा के सगरवा हो ना॥
तनियक डोलिया थमावो मिरजवा।
बावा के सगरवा मुँहवा धोइत हो ना॥
वावा के सगरवा सुन्दर वढइल पनियाँ।
हमरे सगरवा पनियाँ पीयो हो ना॥
तोहरा सगरवा मिरजा नित उठि होई है।
वावा कै सगरवा दूलम होइहै हो ना॥
एक घूँट पियली दुसर घूँट पियली
तिसरे मे गई है तराई हो ना॥
रोइ रोइ जलवा डरावै राजा मिरजा।
फँसि आवै घोंघिया सेवरिया हो ना॥
हँसि हँसि जलवा डरावै भैया गंगाराम।
आवै थी वहिनी कुसुमा हो ना॥
मुँहवा पठुका देके रोवे राजा मिरजा।
मोरे मुँह करिखा लगाइव हो ना॥
सिर पै पगडिया वाँधि हँसे भैया वावा।
दूनो कुल राखेउ वहिनी कुसुमा हो ना॥

अव कुँवरसिंह की वीरता मे परिपूर्ण इस गीत को पढिए और देखिए कि अग्रेजो से कुँवरसिंह की वहादुरी का कितना जीता-जागता चित्र उपस्थित किया गया है। इस गीत मे वर्णित घटनाएँ विल्कुल ऐतिहासिक है।

लिखि लिखि पतिया के भेजलन कुँअरसिंह
ए सुन अमरसिंह भाय हो राम।
चमड़ा टोडवा दाँत से हो काटे कि
छतरी के धरम नसाय हो राम ॥ १ ॥
बाबू कुँअरसिंह और भाई अमरसिंह
दोनों अपने हैं भाय हो राम।
बतिया के कारण से बाबू कुँअरसिंह,
फिरंगी से हो रेढ़ बढ़ाय हो राम ॥२॥
दानापुर से जब सजलक हो कम्पू,
कोइलवर में रहे छाय हो राम।
लाल गोला तुँहु के गनि के मरिहों,
छोड़ बरहरवा के राज हो राम ॥३॥
रोवत बाड़े बाबू हो कुँअरसिंह,
मुखवा पर धर के रुमाल हो राम।
ले ली लड़इआ हम तो बूढा हो समय मे,
अब कवन होइहे हवाल हो राम ॥४॥

इस गीत में विद्रोह का कारण कितना सटीक दिया गया है!

५—गीतों में देव-चरित्र

गीतों में देवताओं का चरित बड़ी खूबी से अंकित किया गया है। विवाह के अवसर पर मंगल के लिए सबसे पहले शिव-पार्वती के विवाह विषयक गान गाये जाते हैं। देवताओं की कल्पना मनुष्य अपनी ही भावना के अनुरूप करता है। देवता लोग किसी काल्पनिक जगत् के पात्र न होकर ऐहिक लोक के जीते-जागते सुख-दुख को भोगनेवाले जीवों के रूप में अंकित किये गए हैं। भोजपुर मण्डल मे विवाह के शुभ अवसर पर शिव-पार्वती के विवाह-विषयक गीतों के गाने की चाल है। इन गीतों में चित्रित शिव का चरित्र इस प्रदेश के मानवों की कल्पना के नितान्त अनुकूल है।

महादेव का विवाह भारतीय विवाह का एक आदर्श प्रतिनिधि है। शिवजी के माता-पिता दोनों हैं। एक बार शिवजी पार्वती से एकान्त में भेंट करने जाते हैं। पार्वती उनसे बात करने को कहती हैं। तब वे कहते हैं कि आज तो अपने 'दादा की चोरी' पिता से छिप कर, आया हूँ। बाद में अपने बन्धु-बान्धवों को इकट्ठा कर (गजन बटोरी) आऊँगा, तब तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा। शिव-पार्वती के जो शादी के लिए शर्त तय की जाती है, उनमें एक विचित्र ढंग का दुनियादारीपन है। पार्वतीजी कहती हैं कि मेरे पिता बड़े गरीब हैं आपको दहेज नहीं दे सकते, इसलिए ज्यादा गहना न लाइए मेरे लिए केवल नाग-पाट (सूत की बनी माला) ही लाइएगा। शिवजी इस पर तैयार हो जाते हैं, पर पार्वती से आग्रहपूर्वक कहते हैं कि हमारी माता का कभी जवाब न देना। इस पर वे कहती हैं कि "हे भोला, अपनी पूरी कमाई मुझे दे देना और कभी हिसाब न लेना, तभी मैं तुम्हारी माता की आज्ञाओं का सदा पालन करूँगी"—

हामारा ही आमा के गउरा जवाब जनी दीह।
जो कुछ अरजीह ए भोला, से लेखा जनी लीह।
तोहारा ही आमा के सीव जवाबो नाँही देबो॥

दूसरे दिन शिव की बारात पहुँचती है—चिताभस्म से भषित बावला वर (वर बौराह), बसहा बैल पर असवार, एकदम नंग-धिडंग! बराती भूत, प्रेत, पिशाच! ऐसे वर को देखकर पार्वती की माता चिन्तित हो उठती हैं, और कहती हैं—

धिया लेके उडबि, धिया लेके बुडबि।
धिया लेके खिलबों पाताल॥

अर्थात् मैं अपनी पुत्री को लेकर उड़ जाऊँगी, डूब मरूँगी और पाताल में खिल जाऊँगी अर्थात् पाताल-लोक में छिप जाऊँगी, जिससे मेरी पुत्री को

कोई पा न सके, पर ऐसे बौडम वर से शादी न होने दूंगी। वह केवल शब्दो से ही अपनी ग्लानि और चिन्ता प्रगट नहीं करती, बल्कि कार्यत भी। वह मांडो (मण्डप) उखाट फेकती है, कलश फोड देती है, पुरहथ बिखरा देती है, रग में भग उन्हे मजूर है, गौरा का क्वारी बनी रहना उन्हें मजूर है, परन्तु शिव जैसे बउराह वर से प्राणो से प्यारी पुत्री की शादी मजूर नही। पार्वती शिव से अपना विकट वेष बदल देने की प्रार्थना करती है, तब वे अपना चिर-सुन्दर, त्रिभुवन-रमणीय, मारमदभञ्जन रूप धारण कर लेते है। विवाह आनन्द से सम्पन्न होता है।

पार्वती अपनी ससुराल से घर आती है। माता उसकी दीन दशा देखकर नितान्त दुखी होती है। पार्वती का दिल भाग पीसने से बेचैन है। धतूर की गोलियाँ बनाते-बनाते हाथ घिस गए है। दुखित माता हाथ की चूरी फोड देने की और माथे का सिन्दूर मिटा देने की सलाह देती है, परन्तु पति-परायण पार्वती माता को चुप रहने के लिए झिडकती है और कहती है कि बुरा हो या भला, वह तपसी ही उसके जीवन की आशा है—

भँगीश्रा पीसत ए श्रामा, जीयरा श्रकुलाई।
धतुरा के गोलिया ए श्रामा, हाथावा रे खीश्राई॥
फोरि घाल श्राहो ए गउरा हाथ के रे चूरी।
मेटि घाल श्राहो ए गउरा सिर के सेनुरवा॥
दीनवा गवाँव ए गउरा हमरी।
श्रइसन बोलिया ए श्रामा फेतु जानि बोलीह।
उहे तपसीश्रा ए श्रामा हमारा जिश्ररा के श्राई॥

इस गीत में गौरी की माता की पुत्री-चिन्ता और गौरी का निष्कपट पतिप्रेम कितने सरल शब्दो मे अभिव्यक्त किया गया है। इस प्रकार शिव-गौरी की शादी में भोजपुरी माता तथा पुत्री के सरल स्नेह का ही हम प्रतीक पाते है। इस विषय में भोजपुरी गीतो की समानता उन उडिया ग्राम्य गीतो

से दी जा सकती है जिनमें राम का चरित्र एक सामान्य उडिया किसान के रूप मे चित्रित किया गया है।[1]

उडिया लोकगीतों के राम अपने हाथो अपने घर का सारा काम काज करते है। राम हल चलाते है, लईखन (लक्ष्मण) जुताई करते है और सीता बीज बोती हैं। वे कपिला गाय का दूध पीते है, जो चन्दन की आग पर गरम किया जाता है। लक्ष्मणजी कच्चे आम लाते है। सीताजी चटनी पीसती है। सब चटनी राम ही चट कर जाते है। बेचारे लक्ष्मण जी को थोडी भी चटनी चाटने को नही मिलती। बडे दु खित होते है। राम पान भी खाते है। सुख के साथ-साथ दु ख भी उनके बॉटे मे खूब पडा है। सीता फूटे वर्तन मे दूध दुहती है। सारा दूध वह जाता है। राम के क्रोध का ठिकाना नहीं रहता—

दौदरा मठिया हाते धरि करि
खीर दुहिबाकु सीताया गला। मो राम रे।
सबु खीर जाको तले वहि गला
सीताया ए कथा जाणी न पारीला। मो राम रे।
बौहड़ीला राम हल काम सरि
खीर मदे-वेगे सीताकु मागीला। मो राम रे।
धाई धाई सीताया पाखकु आईला
घोइतांकु सब कथाटीं कहिला। मो राम रे।
रामक ऑखीटी रंग हीई गला
मन कि तोर लो वइया हेला। मो राम रे॥

अर्थात्—फूटे हुए वर्तन को हाथ मे लेकर सीताजी दूध दूहने के लिए गई। सब दूध नीचे वह गया। परन्तु सीता को इस बात का पता न चला।

---

[1] उडिया ग्राम-साहित्य में रामचरित्र—ना० प्र० पत्रिका, भाग १५, पृष्ठ ३१७-३३०।

हल चलाकर राम घर पर आए और पीछे से सीता भी दूध लाया। वह दौड़ कर आई और पति से सारा हाल कह सुनाया। राम की आँख लाल हो गई और कहने लगे कि तुम्हारा मन क्या पागल हो गया है? राम की आँखों के लाल हो जाने और सीता को पागल कह कर भर्त्सना करने में भी प्रेम की ही झलक दीखती है।

भोजपुरी गीतों की नारी पतिगृह के निवास-काल में अपनी माता के लिए उसी भांति चिन्तित होती है जिस भांति उड़िया गीतों की सीता। सीताजी के जीवन पर एक झलक देखिए—

सरि गला दीप-र तेल
कि परि दीप जालिवी। महाप्रभु से।
तेल आगी वायु जाओ हे राम
से तेल दीप-रे ढालिवी। महाप्रभु से॥
सुना-र दीप रे चन्दन तेल
सीताया दीप जालूछी। महाप्रभु से॥
दीप जाली सीताया
मा घर कथा भालछी। महाप्रभु से॥

सीता की दयनीय दशा का कितना रोचक चित्रण है! वह कहती है कि तेल खतम हो गया है। मैं दीपक कैसे जलाऊँ? हे राम, तुम जाओ और तेल लाओ और उसी तेल को मैं दीपक में डालूँगी। सोने का दीपक है और चन्दन का तेल, जिससे सीता दीपक जला रही हैं। दिया जलाते-जलाते सीता को अपनी माता के घर की कथा याद आती है। पुत्री सुख-समृद्धि के दिनों में भी, आराम करने के दिनों में भी, अपनी माता के घर को भूल नहीं सकती। भोजपुरी गानों में सोने के दीपक चन्दन के तेल जलाने का वर्णन अनेक प्रसंगों में आता है। इन गायनों में राम विषयक अनेक गाने हैं जिनमें रामजन्म से सम्बद्ध गीत बड़े सुहावने लगते हैं। राजा दशरथ के चित्रण में हम भोजपुर के किसी समृद्ध गृहस्थ की ही छाया पाते हैं। पत्नी की प्रसव

वेदना को सुनकर उनका व्याकुल होना, धाय को बुलाने स्वय जाना, आदर-पूर्वक उसे लाना तथा पुत्र-जन्म के अवसर पर अपनी दौलत लुटाना—इनका चित्रण इतना नैसर्गिक है कि पाठको का चित्त अनायास इनकी ओर खिच जाता है। इस तरह देवचरित के बहाने हमे भोजपुर के निवासियो के दैनिक जीवन का विशद वर्णन उपलब्ध होता है।

६—गीतों में कवित्व

भोजपुरी गीतो मे चित्रित दुनिया का सबध गाँवो मे है। परन्तु इनमे प्रदर्शित भावो मे सर्वथा नागरिकता भरी पड़ी है। काव्य के जितने आवश्यक अग और उपाग है—रस, अलकार, गुण—उन सबका सन्निवेश उचित स्थान पर इन गीतो मे पाया जाता है। इन गीतो मे अलकारिक चमत्कार की कमी नही है, परन्तु गीतो के अलकारो मे एक विचित्र प्रकार की सादगी है, नवीनता है जो काव्य की कृत्रिम कविताओ मे देखने को नही मिलती। काव्य की अधिकाश उपमाएँ परम्परायुक्त होने से बासी तथा फीकी-सी प्रतीत होती है परन्तु इन भोजपुरी गीतो की उपमाएँ वैसी ही स्वाभाविक है जैसा जगल का अपने आप खिलनेवाला फूल। इस गीत मे मुँह सूरज की ज्योति से, आँख आम की फली से, नाक सुग्गे की 'ठोर' से, भौहे चढी कमान से, ओठ काटे हुए पान से, बाँह सोने की छडी से, पेट पुरइन के पत्ते से, पीठ धोबी के पाट से, पैर केले के खम्भा से उपमित किये गये है। साहित्यज्ञो से यह बतलाने की आवश्यकता नही कि ये सब उपमाएँ काव्य-जगत् मे बिल्कुल अनूठी और अपूर्व है—

गहिड़ि नदिया अगमि बहे राम पनिया।
पिया चलेले मोरङ्ग देसवा, विहरेला राम छतिया॥
जो हम जनितों ए लोभिया, जइब रे बिदेसवा।
पिया के पएतवा ए लोभिया, अचरा छिपइतों॥१॥
दह रोवे चकवा चकइया।
बिछोहवा कइले राम बलमू॥२॥

मुँह तोरे हवे ए लोभिया, सुरुज के जोतिया।
आँखि तोर हवे ए लोभिया, अमवा के फरिया ॥३॥
नाक तोर हवे ए लोभिया, सुगवा ठोरवा।
भहुँ तोर हवे ए लोभिया, चढल कमनिया ॥४॥
ओठ तोर हवे ए लोभिया, कतरल पनवा।
और तोर हवे ए लोभिया, कडि कडि मोछिया ॥५॥
बाँहि तोर हवे ए लोभिया, सोवरन सोंटवा।
पेट तोर हवे ए लोभिया, पुरइनि पतवा ॥६॥
पीठि तोर हवे ए लोभिया, धोविया के पटवा।
गोड तोर हवे ए लोभिया, केरवा के थुन्हना ॥७॥

कहीं-कहीं इन गीतों में भाव इतने अनूठे और अनोखे हैं कि उन भावों पर कितने काव्य निछावर किये जा सकते हैं। इस गीत की कन्या ससुराल से लौटकर अपने पिता से ससुराल की शिकायत करती है कि तुमने किस घर में मेरी शादी की? इस पर पिता कहता है कि ऊँचे स्थान पर मैंने 'काकर' बोया, जिसकी डाल जंगल में दूर-दूर तक फैल गई। उसकी बतिया (छोटा फल) देखने में तो बड़ी सुहावनी जान पड़ती है, परन्तु आगे चलकर हमें क्या मालूम कि उसका फल मीठा होगा या तीता?

ऊँच निवास बेटी काँकर बोअलों,
रन बन पसरेले डालि रे।
आरे ककरी के बतिया ए बेटी देखत सुहावन,
ना जानो तीत कि मीठ ए ॥

इस गीत का भाव बड़ा ही सुन्दर है। शोभन वर और सम्पन्न घर देख कर पिता ने अपनी कन्या का विवाह तो कर दिया, परन्तु बेचारे को क्या पता कि आगे चलकर लड़की को सुख होगा या दुख। इसकी उपमा ककड़ी से देकर गीत के कर्ता ने इसमें जान डाल दी है।

उपमा की छटा और कल्पना की उड़ान तो आपने देख ही ली, अब रसो के परिपाक का भी आस्वादन कीजिए और यदि आपका जी भरे तो दिल खोल कर दाद दीजिए।

७—गीतों में रस-परिपाक

भोजपुरी गीतो की शब्दार्थ-माधुरी बडी सुसम्पन्न है। शब्दमाधुर्य के साथ-साथ अर्थ चमत्कार की कभी कमी नही है। भोजपुरी (जैसा हमने ऊपर सप्रमाण दिखलाया है) मैथिली और बँगला की बहिन है। अत यदि इनमे इन भाषाओ के समान शब्दसौष्ठव दीख पडता है, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नही है। भोजपुरी मे ढलते ही कविता मे एक अद्भुत शाब्दिक मोहकता उत्पन्न हो जाती है—ऐसी मोहकता कि आस्वाद लेनेवालो को बरबस मस्त बनाये देती है। बँगला का माधुर्य प्रसिद्ध ही है। उसी के समान, यदि बढकर नही, माधुर्य आपको दीख पडेगा इन भोजपुरी के भी गानो में। अर्थ-चमत्कार की भी न्यूनता नही है। परन्तु सबसे बढकर इन गीतो की साहित्यिक विशेषता है रस से ओतप्रोत होना। परिस्थिति के अनुकूल समुचित रस के आस्वादन कराने की विचित्र शक्ति इन लोकगीतो मे पाई जाती है। विवाह तथा सोहर के गीतो मे शृगार का सुन्दर नमूना मिलता है तथा मन्द हास्य का उज्ज्वल दृष्टान्त। शिव-पार्वती के वैवाहिक गीतो मे हास्य का भरपूर परिपोष है। गवना के गीतो में जब कन्या अपने मायके छोडकर पति के घर पर पहले-पहल जाती है, करुण रस की सरिता उमड पडती है। कन्याओ का करुण रोदन इतना निश्छल तथा प्रभावशाली होता है कि पत्थर का भी कलेजा पसीज जाता है। शीतला माई तथा छठी देव की पूजा के अवसर पर भक्तिभाव के उद्रेक का मनोरम प्रसङ्ग आता है। गीतो की सरसता ही इनकी अपनी विशेषता है। मधुर शब्द, परिचित भाव, गृहस्थी का मनोरम वातावरण, अवसर की उपयुक्तता—सब मिलकर इन गीतो मे एक विचित्र तन्मयता उत्पन्न करने की क्षमता प्रदान करते है।

(क) शृङ्गार-रस

विवाह-सम्बन्धी गीतों में शृंगार रस का मजा हमें अधिक मात्रा में मिलता है। हमारे यहाँ विवाह एक दीर्घ व्यापार है जिसके भीतर अनेक अवान्तर व्यापार सम्मिलित किये जाते हैं। वरच्छा, तिलक, वर का कन्या के घर जाना, परिछन, कन्या निरीक्षण, (गुरहथी), सिन्दूर-दान आदि इसके विवाह के अन्तर्गत हैं। इन अवसरों पर जो गाने गाये जाते हैं उनमें शृंगार की पर्याप्त मात्रा है। इनके अतिरिक्त पुत्र-जन्म के उत्सव के ऊपर गाये जानेवाले सोहरों में भी शृंगार रसानुकूल सामग्री की कमी नहीं है। शृङ्गार वर्णन में भोंडे भावों की गुन्जाइश नहीं है। समस्त भाव नितान्त उदार, पवित्र तथा विशुद्ध हैं। भोजपुरी गीतों में सोहर अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। गर्भिणी की मानसिक अवस्था का जो चित्र इन गीतों में अंकित किया गया है वैसा सजीव वर्णन अन्यत्र मिलना अत्यन्त कठिन है। गर्भिणी के शरीर तथा मन पर जो-जो विकृतियाँ दिखाई पड़ती हैं उनका सूक्ष्म निरीक्षण तथा विशुद्ध वर्णन इन गीतों को साहित्यिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बनाये देती हैं।

गर्भिणी की शरीर-यष्टि का कितना सहानुभूतिपूर्ण वर्णन इस मनोरम गीत में किया गया है—

लीपी पोती अइलों ओबरीया[1] अँगनवा में ठाढ भइलों रे।
ललाना राजा के दुलरिया भितीआ ओठँघे, हरदी मुँहवा
पीयर रे ।१।।
दुअरा से अइलें नन्दलाला, नाजो[2] के मुँहवा देखलें हो।
आमा दुलहीनी के ओठवा झुरइलें, हरदी मुँहवा पीयर रे ।।२।।
सासु मोरी मुँहवा निरखे, ननद मुँहवा चूमेले हो।
बहुआ धीरे-धीरे अंगव[3] वेदनिया[4], होरिल तोहरा होइहें हो
सोहर हम सुनाइबी रे ।।३।।

---

[1]भीतरी घर। [2]सुकुमारी, नाजुक बदन। [3]सहो। [4]वेदना, पीड़ा।

आपन मइया जहू रहीतो बेदन बाँटी लीहीतीहू रे।
लालन प्राभू जी के मइआ नीरवादरदी[१] त होरिला होरिला करे
बेदन बहूत माँगेले रे ॥४॥
जनी केहु मुँहवा निरेखो, त जनी गलवा ये चूमसु रे।
ललना दुअरा सुतेला सम्झइतआ[२] बोलाय घरवा ये ले
आओ रे ॥५॥
एहि अवसर पीआ के भेटी तो लाते मूँके मरीतों हू रे।
ललन लपकी ढँडवाँ धरीतों बेदन आधा बटीतों हू रे ॥६॥
तब तू हुँ मथवा बँधुवलू त ताजावा लगवलू[३] हू हो।
प्राजी अब जीयरा परल बा सकेतवा[४] कवनी सकिया ये चलाई रे॥७॥

प्रसव वेदना से व्याकुल कोई सुकुमारी अपनी दशा का विशद वर्णन सुना रही है कि मैंने घर के भीतरी भाग को लीप पोत दिया है, आँगन में आकर खड़ी हूँ। अपने राजा (पिया) की दुलारी मैं भीत का सहारा लेकर लेट रही हूँ और मेरा मुँह हल्दी के समान पीला पड़ गया है॥१॥

नन्दलाल (प्रियतम) द्वार पर से भीतर आये, सुकुमारी का मुंह देखा और (माता से कहने लगे कि) ऐ माता! दुलहिन का होठ सूख गया है और हरदी के समान मुँह पीला पड़ गया है॥२॥

सासु मेरा मुँह देखती हैं, ननद मुँह को चूम रही है, ऐ बहूजी, इस पीड़ा को धीरे-धीरे सह लो। तुम्हें पुत्र होगा और मैं सोहर सुनाऊँगी॥३॥

यदि अपनी माता होती तो पीड़ा बाँट लेती, प्रभु जी (पति जी) की माता बड़ी निर्दयी है, केवल 'लड़का' 'लड़का' चिल्ला रही है और अधिक पीड़ा माँगती है॥४॥

(गर्भिणी कह रही है कि) कोई मेरा मुँह न तो देखो न गाल को चूमो, द्वार पर सोनेवाले मेरे सामी (पति) को बुला कर जरा घर के अन्दर ले लाओ॥५॥

---

[१]निर्दयी। [२]साभी, पति। [३]शिरोभूषण। [४]संकट।

यदि इन समय अपने प्रिय को पाती, तो लात-मूंगों से उनकी ख़बर लेती। लपककर मैं कमर पकड़ लेती और आधी वेदना बाँट लेती ॥६॥

(अपने पुत्र के मरम्मत किये जाने की बात सुन कर सास खीज उठती है और वहू को व्यंग्य सुना रही है कि) तब तो तुमने नाक में श्रृंगार किया, माथ बँधाया और सिरोभूषण पहना, अब, पाजी कहीं की, तुम्हारे प्राण संकट में पड़ गये हैं, अब कौन शक्ति चलाना चाहती हो? अपने ही सहो। मेरे बबुआ को इसके लिए क्यों उलाहना दे रही हो?

मुझे यह गीत गर्भिणी विषयक गीतों में सब से अधिक रमणीय जँचता है। इसमें गर्भिणी की शारीरिक विकृति की ओर पीड़ा के कारण विह्वल-चित्त की दशा से जिस प्रकार सहृदयों के हृदय में सहानुभूति की सरिता बह चलती है, उसी प्रकार 'प्रभु जी की निरदई माता'—सास के लिए कमीन धिक्कार मुँह से अनायास निकल पड़ता है। सास के दिल में वहू के लिए ममता न होकर बेहद निर्दयता का भाव घर कर लेता है। गर्भिणी का यह चित्र कितना दयनीय है—पाठकों के दिल में चित्र कितना दर्द पैदा करता है!

नारी-जीवन की सार्थकता

नारी-जीवन की सार्थकता मातृत्व में है। जब तक नारी माता नहीं बनती तब तक उसका जीवन निरर्थक है। इस गीत में इसका विवेचन भली भांति किया गया है—

बाय वहेले पुरवईआ, उतरही झकझोरेले हो
ए ललना, रुकुमिनी सुतेले रे ओसरवा, गोदिया भतीज लेई रे।
घर में से नीकले भउजइआ, अँगनवा में ठाढ़ भइली रे
ए ललना, जपकी के छोवेले भतीजवा, रुकमिनी मनवा दुखीत रे।
घर में से निकलेली आमा रुकुमिनी समुझावे ले रे
ए रुकुमिनी का ओही अनका बलकवा, तोर जनम अकारथ रे।
का ओही अमावा का खइले, अठीलीया का चटलेइ हो
रुकुमिनी, का ओही अनका बलकवा, तोर जनम अकारथ रे॥

लाल पीयर ना पहीरनी, चउक ना बइठली हू हो
रामजी गोदिया बलक ना खेलवलीं, मोर जनम अकारथ रे ॥

भावार्थ—पुरवैया हवा वहती थी और उत्तरी हवा पेडो को हिला रही थी। रुक्मिणी (नायिका) गोद मे भतीजा लेकर बरामदे (ओसारा) मे सो रही थी। उसकी भौजाई ने घर मे निकलकर बालक को छीन लिया। रुक्मिणी का मन उदास पड गया। माता घर मे से निकलकर अपनी पुत्री को समझा रही है कि दूसरे के बालक से क्या पुत्रवती बनना है तुझे ? तेरा जनम तो व्यर्थ हो गया है। दूसरे की दी गई चीज से कब तक गुजारा हो सकता है ! दूसरे के दिये आम का स्वाद लेना तथा गुठली का चाटना जैसे बेकाम है, उसी प्रकार दूसरे के बालक से पुत्रवती कहलाने का शौक हँसी का विषय है। पुत्रहीन नारी का जीवन तो व्यर्थ होता ही है। माता के समझाने पर पुत्री स्वय कह रही है कि माता, तेरा कहना सोलहो आने सच है। मेरे जीवन की व्यर्थता स्पष्ट है। मैंने लाल और पीला कपडा नही पहना, न तो पति के साथ किसी शुभ-कार्य मे देवाराधना के लिए चौके पर बैठी और न मैंने गोदी में बालक ही खेलाया। सचमुच मेरा जीवन व्यर्थ है !

अन्तिम कडी में सुन्दरी की हार्दिक इच्छा की कैसी सुन्दर अभिव्यक्ति है !

बालक के बिना सूनी सेज तथा बालक के बिना सूनी गोद का मनोरम वर्णन कितने अच्छे शब्दो में किया गया है इन सोहरो मे। एक सुन्दरी कह रही है—

एक सौ अमवा लगवलीं सवा सौ जामुन हो।
अहो रामा तबहुँ न बगिआ सोहावन यक रे कोइलि बिनु ॥१॥
नइहर मे पाँच भइया त सात भतीजा बाड़े हो।
अहो रामा तबहुँ न नइहर सोहवन यक रे मयरिया बिनु ॥२॥
एक कोरा लिहलो मैं भइया दूसरे कोरा भतीजवा हो।
अहो रामा न तबहुँ गोदिया सोहावन अपना बालक बिनु ॥३॥
पलग पर सेजिया डसवलो त फूल छितरइलों हो।
अहो रामा तबहूँ न सेजिया सोहावन एक बलम बिनु ॥४॥

मैंने एक दो नहीं बल्कि पूरे सौ आम के पेड और जामुन के सवा सौ पेड लगाए है, परन्तु यह बगीचा केवल एक कोयल के बिना सुहावना नही लगता ॥१॥

मेरे मायके में भाई पांच है और भतीजे सात है, परन्तु तो भी स्नेहमयी माता के बिना मायके में कभी अच्छा नही लगता ॥२॥

एक कोरे मे मैंने अपना भाई ले रखा है और दूसरे कोरे (क्रोड) मे मैंने अपना भतीजा ले लिया है, परन्तु अपने बालक के बिना मेरी गोदी सुहावनी नही लगती ॥३॥

पलंग के ऊपर मैंने सेज (बिस्तरा) बिछा दिया है, और उसके ऊपर फूल बिखेर दिये है, परन्तु तोभी केवल एक प्रियतम के बिना फूलो से सजी सेज सोहावनी नही लगती ॥४॥

इस गान के भाव सुन्दर है ही, परन्तु 'मयरिया' शब्द के भीतर कितनी ममता भरी हुई है—वह ममता जो न तो 'माता' मे विद्यमान है और न 'जननी' मे। 'माई' शब्द मे मोहकता जरूर है, परन्तु वह 'मयरिया' शब्द में वर्तमान कोमलता तथा मार्मिकता तक पहुँच नही सकता। 'सहृदया एव प्रमाणम्'।

भारतीय घरो मे सन्तानहीन नारियो का जीवन कितना दुःखमय बन जाता है। उनके शरीर मे कितना ही अधिक सौन्दर्य का साज हो, वे भले ही भलक रही अप्सराएँ हो, परन्तु पुत्र के बिना सब निरर्थक है। नारी की सार्थकता मातृत्व मे है और उसी सुख मे वंचित होने के कारण यदि वे अपना जीवन भारभूत समझती हो, तो अचम्भे की कौन सी बात है? एक वन्ध्या नारी अपनी रामकहानी कितने दर्दनाक शब्दो मे सुना रही है—

पनवा अइसन हम पातरी कसइली अइसन ढुरहूर[1] हो।
ये लालना फुलवा अइसन सुकुवार[2] चनन अइसन गमकीले हो।

---

[1]गोर और निर्मी। [2]सुकुमार।

इ तीन फल जहू पइतों अँगनवा मे लगाइतों हू रे।
ये ललना राम मोर वइठे पूजनरीया हम लोहीं लोहिं चढ़ाइवी रे॥
एक दिन ऐ रामजी उहे रहलो जाही दिन वीयाह भइलें हो।
नीहूरी नीहूरी चरन छुयल चीटूकी सेनुरा लावेल हो।
एक दिन ए रामजी उहे रहलों जाही दिन गवन कइली हो।
रामजी तोसक तकिया लगल नजरीया ना उतारीले हो॥
जइसन वन मे के कोइलरी वन ही वन कुहूकेले हो।
राम हो ओइसे जीयरा कुहूके हमार त एक रे वलक[1] विनु रे॥
जइसन वोरसी के आगीआ[2] धीरे धीरे तलफे ले हो।
राम हो ओइसे जीयरा तलफे हमार त एक रे वलक विनु रे॥

मैं पान-सी पतली और सुपारी के समान गोल और चिकनी हूँ। फूल की भाति मैं सुकुमार हूँ और चन्दन के समान मै गमकनी (सुगन्ध दे रही) हूँ। यदि सुन्दर फूलो की पाती, तो आँगना मे लगाती। प्रियतम के पूजा अवसर पर मैं इन्हे चुन-चुनकर उनके सामने रखती। एक दिन वह था जब मेरी शादी हुई, झुक-झुककर मैंने गुरुजनो के चरण छुए और चिटुकी भर कर सेन्दुर लगाया। एक दिन वह था जब गवना आने पर मैं तोशक लगाती थी और नजर नही उतारती थी, परन्तु आज ? हाँ, आज वे मेरे मधुर दिन अतीत की स्मृति वन गए। 'ते हि नो दिवसा गता'। अब तो वन मे कोयल के समान, वालक के विना मेरा दिल कूक उठता है, और जिस तरह वोरसी (अँगीठी) की आग धीरे-धीरे सुलगती है, उसी तरह मेरा जियरा वालक के विना रात दिन ताप से सुलगता रहता है। क्या करूँ ? कौन दवा है इस महान् रोग की ?

यह गीत साहित्यिक सौन्दर्य से भरपूर है। पहले छन्द मे दी गई उपमाएँ कितनी रुचिर है ! भोजपुरी के जानकारो मे 'ढूरहुर' शब्द के भीतर जो कवित्व है उसे वतलाने की जरूरत नही। यह शब्द गोल-चिकनी चीज के

[1]वालक (पुत्र)। [2]अग्नि।

लिए प्रयुक्त होता है—वह चीज जो नयनाभिराम होने के अतिरिक्त छूने में भी सुखद हो। कोयल की कूक साहित्य में नितान्त प्रसिद्ध है, परन्तु बोरसी (अँगीठी) की आग सुलगाने की उपमा काव्य-संसार में एक दम नई है। बोरसी में घास-पात और भूसा भरा रहता है जो झटपट तो दहकता नहीं, परन्तु दहकने पर उसकी आँच इतनी कड़ी होती है कि सही नहीं जा सकती। इसी भाव की अभिव्यक्ति इस उपमा से की गई है। संस्कृत में इस आग को 'कुकूलाग्नि' कहते हैं। सीता के वियोग में राम का शरीर कुकूलाग्नि में जलता-सा प्रतीत हो रहा है। मदनाग्नि की उपमा कुकूलाग्नि से दी गई है।

अयं क्वचन कुकूलाग्निकर्कशो मदनानल ॥

इस गीत में पुत्र प्राप्ति के निमित्त कोई सुभग सुन्दरी उपदेशों की राह चलने के वास्ते उद्यत है—

गाया त गइलो गजाधर अवरु वेनीमाधव रे।
ये ललना अवना तीरीथी हम कइलों सन्तती नाहीं पाई रे।
सासु ससुर नाहीं मानेलु ननदो न दुलारेलु हो।
ये ललना भसुरा अलोत कइ ना चललु, बझीनी हो गईलु हो।
सासु ससुर हम मानवी ननदो दुलारवी हो।
ये ललना भसुर अलोत कइ हम चलबों सन्तती हम पाइवी हो।
गँगवा के तीरवा कदम गाछ अवरु चनन गाछ हो।
ये ललना ताही तर ठाड नारायन वालका डरेहे ले हो।

सुभग तथा वस्त्र से सुसज्जित होकर वर जब विवाह के लिए प्रस्थान करता है, तब वह अवसर कितना मनोरम होता है। वर की माता अपनी सहेलियों के साथ उसे परीछने के लिए जाती है और वर के सिर के चारों ओर लोटा घुमा कर अवांछनीय बाधाओं के विनाश के लिए प्रार्थना करती है। उसी शुभ अवसर का वर्णन इस गीत में बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है—

सुनु देवरनिया रे सुनु रे छोटनिया, परिछीना लेहु मोरे राम रे
ललनवा।
जैसे गाया गजाधर झलकेले, ओइसन झलके मोरे राम रे
ललनवा॥
जैसे काशी मे शिव जी झलकेले, ओइसन झलके मोरे राम रे
ललनवा।
बाबू दुवरवा झलके मोर अँगनवा परिछीना लेहु मोरे राम रे
ललनवा॥
जैसे भादों के बिजुरी चमकेले, ओइसन चमके मोरे रे
ललनवा।
जैसे गांगा के लहरि चमकेले, ओइसन चमके मोरे राम रे
ललनवा॥
जैसे अजोधा के लाल झलकेले ओइसन झलके मोरे राम रे
ललनवा॥

पुत्र की माता अपनी देवरानी तथा 'छोटानी' से कहती है कि व्याह में जानेवाले मेरे पुत्र को तुम लोग क्यो नहीं परीछ लेतीं? जिस प्रकार गया में विष्णु, काशी में शिव, भादो के महीने में बिजली तथा गंगा की लहर चमकती है, उसी प्रकार मेरा पुत्र भी सुशोभित हो रहा है। वह कहती है कि जिस प्रकार अयोध्या में श्री रामचन्द्र जी सुशोभित हैं, उसी प्रकार विवाह में सजधजकर जानेवाला मेरा लड़का भी सुन्दर लगता है।

ऊपर के गीत मे माता का पुत्र-प्रेम कितना स्वाभाविक तथा सहज है! इस गीत के प्रत्येक पद मे शृंगार रस झलक रहा है।

बेटी का विवाह पिता के लिए किसी ग्रहण से कम नहीं होता। सूर्य तथा चन्द्रमा के समान विवाह-काल में भी पिता के ऊपर एक बड़ा ग्रहण लगता है। कन्या राशि पर स्थित होने वाला जामाता दशम ग्रह माना ही जाता है। नवग्रह की शान्ति साधारण चीजों से की जा सकती है, परन्तु जामाता रूपी ग्रह की शान्ति एक कठिन, बहु-साधन-साध्य व्यापार है।

दुर्भर जकारो मे जामाता जी भी तो एक है। इस वैवाहिक ग्रहण का विवरण कितने चुभते शब्दो मे इस गीत में किया गया है। भाव की कल्पना जितनी श्लाघनीय है, शब्दो की योजना उतनी युक्तियुक्त है।

कवन गरहनवा बाबा साँझ ही लागे हो
कवन गरहनवा भिनुसार ए।
कवन गहरनवा बाबा मड़वनी लागेला
कवदोनी उगरह होइ ए ॥१॥
चान गरहनवा बाबा साँझइ लागेला
सुरुज गरहनवा भिनुसार ए।
धीयवा गरहनवा बाबा मंड़वनी लागेला
कवदोनी उगरह होइ ए ॥ २ ॥
हामारा ही बाबा का सोने थरीयवा हो
छुवत झानाझनी होइ ए।
उहे थरीया बाबा दामादे के दीहीतो हो
तब रउवा उगरह होइ ए ॥३॥
हामारा ही भइया का लीली बछेड़वा हो
सोनवे मढावल चारो पाँव ए।
उहे बछेड़वा बाबा दामादे के दीहीतो हो
तब रउवे उगरह होइ ए ॥ ४ ॥

दही बेचने के लिए कोई ग्वालिन सिर पर मुकुट, गले में मोती की माला तथा पीताम्बर धारण किये चली जा रही है। रास्ते में कन्हैया मिल गए और उनका रास्ता रोकने लगे। ग्वालिनें दूध, दही उन्हें देने के लिए तैयार हैं। परन्तु कन्हैया काम-केलि माँगते हैं और उनको धर्म-च्युत करने को तैयार है। तब ग्वालिनें आपस में सलाह करती है कि कन्हैया की माँ के पास सब मिलकर चलो और यह उल्हना दिया जाय कि तुम्हारा लडका हमारा रास्ता रोकता है, तुम उसे मना क्यो नहीं करती। ग्वालिनो के उलाहना

देने पर उनकी माँ कहती है कि तुम लोग अपनी माँग का सिन्दूर मिटा दो, आँखो में काजल लगाना छोड दो तथा दातो मे मिस्सी (काला पाउडर) मत लगाओ। इस पर परिहास-प्रिय ग्वालिने उत्तर देती हैं कि हम लोग अपने दाँतो मे मिस्सी लगावेगी, आँखो मे काजल करेगी और माँग में खूब सिन्दूर लगावेगी। इस प्रकार बन-ठनकर हम लोग कन्हैया को ललचावेगी।

दही बेचे चलली गोवालीनी, सीर पर मुकुट लीहले हो।
आरे गले गजमुकुता के हार, त ओढेली पीताम्बर हो॥
एक बने गइलों दोसर बने, अवरु तीसर बने हो ।
आरे बीचवा कन्हइया बटवारावा, डगरी हमरो रोकेला हो॥
दही दूध दीहीले त नाही लेले, डगरिया हमरो रोकेले हो॥
आरे मॉगे ले कन्हइआ जी, के रतिया धरम हमरो छोडावेले हो॥
मीलहुँ सखीया सलेहरी, मीली जुली जासो अंगनवा चलहु हो।
ये मइया बरजी ना आपन कन्हइआ, डगरिया हमरो रोकेले हो॥
दही दूध दीहीले त नाही लेले, डगरिया हमरो रोकेले हो।
ये मइया मॉगेले कन्हइआ जी, के रतिया धरम हमरो छोडा-
वेले हो॥
मेटी घालु सीर के सेनुरवा, नयन भरी काजर हो।
ये बहुआ मेटी घाल दँतवा के मसीया, कन्हइआ तोहरो नाहीं
आइहे हो॥
धनी के बइठइवों दाँत मिसिआ, नयन भरी काजर हो।
ये मइआ डाटी फारी करवों इँगुरवा, कन्हइआ के ललचाइब हो

(ख) हास्य रस

इन गीतो मे स्थान-स्थान पर हास्य रस का भी पुट पाया जाता है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इन गीतो का हास्य ग्रामीण होते हुए भी ग्राम्य नहीं है। विवाह के अवसर पर ससुराल में वर के साथ जो परिहास

का उल्लेख किया गया है वह कितना भोंडा है, कितना निम्न है, यह बात उन गीतों के पाठकों से छिपी हुई नहीं है। कहीं-कहीं इन गीतों का स्वरूप इतना कुत्सित अश्लील तथा गन्दा है कि पाठकों को [illegible] होता है।

[illegible] चित्रा है [illegible] स्त्रियाँ [illegible] होता है उनमें वे पुरुष, सब स्त्रियों के विषय में नहीं। पुरुषों का चित्रण भी [illegible] विशेष रूप है। [illegible] पति को घर साथ छुड़ा देने में ही कोई चित्र [illegible] की दृष्टि से प्रशंसनीय नहीं हो सकता। आदर्श नारी स्त्रियों के चित्रण से साहित्य भरा पड़ा है परन्तु दुष्टा स्त्रियों का [illegible] चित्र बहुत कम मिलता है। इस दृष्टि से [illegible] का चित्रण कितना हास्यास्पद [illegible] है।

हे पुरुष! तेरा भाग्य धन्य है जो तुझ ऐसी कर्कशा स्त्री मिली है। सात घड़ी तक वह दिन में सोती है, बाद में भाड़ू उठा कर भुस-भुस कर आँगन बुहारती है और घर भर के सब लोगों को गाली देती जाती है। टूटे घर के ऊपर कौवा बोल रहा है, उसी समय घर में तीन अतिथि चले आए। तब वह स्त्री कहती है कि तुम लोग बैठो, मैं उपले इकट्ठी करके ला रही हूँ। उसने हाँडी में भर करके पानी डाल दिया और उसमें केवल तीन ही चावल डाले। कठौता भर माड़ निकाला और उस माड़ को अतिथियों से पीने के लिए कहने लगी। उन लोगों के लिए उसने सात सेर की सात रोटियाँ तैयार कीं, परन्तु अपने लिये नव सेर का एक ही लिट्टू लगाया। फिर गाली देती हुई कहने लगी कि तुम दुष्टों ने सातों रोटियाँ खा डालीं, परन्तु कुलश्रेष्ठा मैंने केवल एक ही खाई। वह दरवाजे पर बैठकर तेल लगाती है, माँग में सिन्दूर लगाती है। अपना आँचल पसार कर सूर्य से यही प्रार्थना करती है कि मैं विधवा कब हो जाऊँगी।

धनि धनि रे पुरुष तोरि भागि, करकसा नारि मिली।
सात घरी दिन रोय के जागी, लिहिन बढनिया उठाय।
निहुरे निहुरे अँगना बटोरे, घर भर को गरिआय॥
करकसा नारि मिली॥१॥

बखरी पर से कौवा रोवे पहुना अइले तीन।
आव पाहुन घरमाँ बैठ, कहा लाऊँ बीन।
करकसा नारि मिली ॥२॥
हँड़ियाँ भर के अदहन दीहली, चाउर मेरवली तीन।
कठवत भरि के माँड पसवली, पिय हिलोर हिलोर॥
करकसा नारि मिली ॥३॥
सात सेर के सात पकवली, नव सेर का एक।
तू दहिजरऊ सातो खइलः, हम कुलवन्ती एक।
करकसा नारि मिली ॥४॥
डेहरी बैठे तेल लगावै, सेंदुर भरावै माँगि।
आंचर पसारि कै सूरज मनावै होइहौं कब मैं राँड़ि।
करकसा नारि मिली ॥५॥

(ग) करुण-रस

भोजपुरी गीतो मे करुण-रस की मात्रा अत्यधिक दीख पडती है। यह करुण रस अनेक अवसरो पर विभिन्न परिस्थितियों मे प्रवाहित होता हुआ दीख पडता है। इस रस की अभिव्यक्ति इन गीतो मे तीन अवसरो पर विशेष रूप से होती है—विदाई, वियोग और वैधव्य। इन तीनो अवसरो पर सुखमय जीवन का अवसान हो जाता है, तथा दुःख का नया अध्याय आरम्भ होता है। जीवन के वसन्त मे अचानक पतझड़ शुरू हो जाता है। ये तीनो अवसर मनुष्य के कोमल हृदय पर गहरी चोट करनेवाले होते हैं। विदाई के अवसर पर लड़की का माता-पिता से वियोग होता है, वियोग मे पति से विछोह होता है और वैधव्य मे अपने प्रियतम से सदा के लिए आत्यन्तिक विच्छेद हो जाता है। यही कारण है कि इन गीतो मे करुण-रस की मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ती ही चली जाती है। जिस प्रकार भवभूति की करुण कविता सुनकर वज्र का हृदय फट जाता है और पत्थर भी पसीज जाता है, उसी प्रकार इन करुण रस से ओतप्रोत गीतों को पढ़कर पत्थर के समान

कठोर पुरुष का भी कलेजा आँसुओ के रूप में पसीज-पसीजकर बाहर निकल पडता है।

"आँसुन के मग जल बह्यो हियो पसीज पसीज"

बेटी की विदाई—कन्या की विदाई का समय कितना करुणोत्पादक है, इसे शब्दो में बतलाने की जरूरत नही होती। पितृगृह मे स्वतन्त्रता-पूर्वक जीवन बितानेवाली, दुलार से पाली गई कन्या एक अनजान, अपरिचित घर में जाती है, पिता के घर के दुलार की याद उसके हृदय को मसोसने लगती है। और उसकी मानसिक वेदना आँसुओ की झडी के रूप में बहती दीख पडती है, ऐसे अवसर पर बडे-बडे धीरो की भी धीरता का बाँध टूट जाता है, साधारण लोग किस गिनती मे है। कालिदास ने शकुन्तला की विदाई के अवसर पर उद्विग्न-चेता महर्षि कण्व के मुख से जिस भावोद्गार को अभिव्यक्त किया है, वह साहित्य-वेत्ताओ से अपरिचित नही है। इस प्रसग का मार्मिक चित्रण इन गीतो मे उपलब्ध होता है।

आठ काठ की बनी डाँडी या पालकी पर चढकर वधू पति-गृह जा रही है। इस पर उसका सगा भाई उसे पालकी से उतर जाने को कहता है। वह उसे अपने ही घर रखने की बात कहता है, परन्तु बहिन बोल उठती है कि ऐ मेरे भाई, मेरी डाँडी छोड दे, मुझे जाने दे। जानते हो मेरा बोझा कितना है। तुम सात लौंडियो का भार मजे मे सह सकते हे, उन्हे देखकर तुम खिला-पिला सकते हो, परन्तु मेरा भार तुम सह नही सकते—

'छोड्, छोड् भइआ डँडियावा घरे जाये रे देउ'
साती लउडियाँ के भारावा, ए गो हमारो नाहीं।

कैसी दीनता है इस कन्या की!

× × × ×

विदाई के समय माता पुत्री को समझा रही है कि घबडाना मत, मै तेरे भाई को खबर लेने के लिए जरूर भेजूँगी। परन्तु जेठे भाई के भेजने से कन्या को विश्वास नही होता। वह कहने लगती है कि तुम बासी भात

खाने को देते समय भी क्रुद्ध हो जाया करती थी और फलफूल (केन) खरीदने के समय भी मुझे लुलुआ देती थी, लो अब मैं चली। अब मेरे बासी भात को रखे रहना और फल खरीदने के पैसे से धेनु गाय खरीद कर स्वयं दूध पीना—

हमारा ही बसिया के आमा धरिह बार-बार।
हमारा ही केनवा के आमा कीनीह धेनु गाय॥

बेटी के ये व्यग्य वचन बिल्कुल सच्चे थे। उसका बर्ताव सचमुच ऐसा ही था। इन वचनो से माता की आँखे खुल जाती है और कहती है कि उसकी छाती पत्थर की है। भला होता, यदि उसकी छाती फट जाती—

चले के त चललु हो बेटी दीहलु समुझाई।
आरे पथल के छतिया हो बेटी बीहरि बलु जाई॥

परन्तु प्यारी माता का हृदय पुत्री के प्रति दयारहित हो नही सकता। 'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति'। दृश्य बदलता है। पुत्री की सवारी बनबीहट को पार करती दूर निकल जाती है। वह पालकी ओहार (ढकने वाली चादर) तनिक हटाकर क्या देखती है कि उसका भाई उसके पीछे-पीछे आ रहा है। माता सच्ची निकली। भाई को देख बेटी का हृदय माता के लिए बेचैन हो उठता है और वह अपने भाई को लौटा देती है। माता अटारी पर खडी है। पुत्र को लौटा देख झट झिड़कने लगती है कि मेरे रतन को तू कहाँ रख आया? मेरी बेटी को किस बनबीहट में छोड आया? भाई 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' की दुहाई देकर माता को समझाता है।

इस गीत मे माता के कोमल हृदय तथा अकृत्रिम स्नेह की अभिव्यक्ति कितने दर्दनाक शब्दो मे की गई है!

कन्या की विदाई के समय माता-पिता के रोने का पारावार नही है। पिता के रोने के कारण गगा मे बाढ आई है। माता के रोने के कारण उसकी

आँखों के सामने अँधेरा छा रहा है। भाई के रोने से उसके पैर की धोती भीग रही है, परन्तु भावज की नेत्र से आँसू का बूँद भी नहीं है—

बाबा के रोवले गगा बढ़ियली
आमा के रोवले अनोर।
भइया के रोवले चरन धोती भींजे
भउजी नयनवा न लोर॥

कन्या के लौट आने की सब कामना करते हैं, परन्तु उस कामना में प्रेम के विकास के अनुसार तात्त्विक भिन्नता भी है। परिवार के लोगों की मानसिक वृत्ति परीक्षा-योग्य है। माता कहती है कि बेटी, तू रोज उठकर आया कर, पिता कहते हैं छः मास पर आना, भाई कहता है कि कल ही प्रयोजन है—उत्सव है, और भावज कहती है दूर चली जा। जान पड़ता है कि भावज की मनोवृत्ति का आश्रय लेकर ही निरुक्तकार ने 'दुहिता' की व्युत्पत्ति 'दूरे हिता' (दूर रहने पर हित करनेवाली या दूर पर स्थापित की गई) की है। गीत के शब्दों में—

आमा कहेली बेटी निति उठि आव,
बाबा कहेलें छव मास।
भइया कहेलें बहिना काल्हे परोजन
भउजी कहेली दुर जाव॥

भावज के रुष्ट होने का कारण कभी-कभी कहा गया कटुवचन है। उसे वह मानती है। कारण पूछने पर वह कहती है कि न तो तुमने मेरे तेल-नून छुआ, न तो कोठी में पेहान लगा दिया, वचन ही मेरा वैर उत्पन्न करने का कारण है—

नाहीं तुहुँ ननदी नून तेल छेकलू
नाहीं कोठी लवलू पेहान।
नाहीं तुहुँ ननदी रसोइआ झाँकी अइलू
बतिये बैरिन भइल तोहार॥

बेटी को ससुराल ले जाने के लिए उसका श्वसुर बारात सजाकर आया है। हाथी-घोडे द्वार पर उगने वाले चन्दन पेड मे बाँध दिए गए है। वे चन्दन के पेड को तोड-मरोड रहे है। पिता से यह दृश्य देखा नही जाता, वह क्रुद्ध होकर बरातियो को भिडकी सुनाता है। इस पर उसकी पुत्री घर से बाहर निकल कर पिता को समझाने लगती है —

सहु बाबा सहु रे बाबा आज की रतीया हो।
बाड़ा हो पराते हो बाबा, जाइबी बड़ी दूर॥
दुबरा राउर होइहें ए बाबा रन रे बन।
आँगन राउर होइहें ए बाबा भदउआ निसु राती॥

हे बाबा, आज की रात भर इस क्लेश को सह लीजिए। कल बहुत तडके मुझे बडी दूर जाना होगा। हमारे चले जाने पर आपका द्वार जगल की तरह हो जायगा और आपका आँगन भादो की काली अँधियारी निशा हो जायगा। कितना दर्द भरा हुआ है कन्या के इस कथन में! उसकी बात सोलहो आने सच्ची निकली। दूसरे दिन उस कुटुम्ब की दशा कैसी बदल जाती है। गीत के मनोरम शब्दो को ही पढ लीजिए। कितनी वेदना भरी है इन छोटे-छोटे वाक्यो मे—

दुबरा भुलीए भूली बाबा जे रोवेले
कतहीं न देखों हो बेटी नुपुरवा हो तोहार॥
आँगाना भुलीए भूली आमा जे रोवेले
कतहीं न देखों हो बेटी, रसोइआ झाझाकाल॥
रसोइआ भुलीए भूली भउजी जे रोवेली
कतहीं ना देखों हे बेटी, रसोइआ झाझाकाल॥

दरवाजे पर पुत्री की बिदाई मे व्याकुल होकर पिता रो रहा है कि बेटी कहीं भी तुम्हारा नूपुर (पायजेब) मैं नहीं देख रहा हूँ, आँगन में बैठी हुई माता रो रही है और रसोईघर मे बैठी भावज रो रही है कि कहीं भी बेटी दिखलाई नहीं पडती। उसके बिना रसोईघर भयानक और ढूंढा लगता है।

इस गीत के करुण भाव को सुनकर कौन ऐसा सहृदय होगा जिसका दिल विदाई के समय की चोट की याद से विचलित न हो जायगा और जिसकी आँखें आँसुओं से भीग न जावेंगी।

विदाई के इन भोजपुरी गीतों में जो भाव दिखलाए गए हैं उनके समान ही भाव अन्य भाषाओं के लोक-गीतों में भी प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। मानव-हृदय सर्वत्र एक समान है चाहे हम भोजपुरी गीतों को पढ़ें चाहे गुजराती गीतों को। मिलन और बिछुड़ना, सयोग और वियोग मानव-जीवन के चिरसगी हैं। वियोग से सयोग पुष्ट होता है, बिछुड़ने पर मिलन की माधुरी का अनुमान लगाया जा सकता है। वियोग का तीता घूंट पीकर ही सासारिक जीवन मीठा होता है। यही कारण है कि लोक-गीतों में इस विषय का रसमय वर्णन विशेष मात्रा में उपलब्ध होता है।

पजाब के एक लोक-गीतमें कन्या अपने पितासे विदाईके समय कह रही है—

> साँडा चिड़ियादा चम्बा वे, बावल असीं उड़ जाना।
> साडी लम्बी उडारी वे, बावल के हुडे देश जाना॥
> तेरा चौका भाग्डा वे, बावल तेरा कौन करे?
> तेरा महल दॉ विच विच वे, बावल मेरी मॉ रोवे॥

गीत का आशय है कि हे पिता जी, मैं तो एक चिड़िया हूँ, मुझे तो एक दिन उड जाना होगा। मेरी उडान बडी लम्बी है। मुझे किसी अनजान देश में उडकर जाना होगा। हे पिता, मेरे बिना तेरा चौका-बर्तन कौन करेगा? तुम्हारे महल के बीच में मेरी अम्मा रो रही है।

ठीक इसी प्रकार एक गुजराती बेन अपनी दशा का वर्णन कर रही है—

> अमे रे लीलुडा वननी चर कलडी
> उडी जाशु परदेश जो।
> आज रे दादा जा ना देश माँ
> काले जाशु परदेश जो॥

—मेघाणी लोक-साहित्य, पृष्ठ १८३

मैं तो एक हरे-भरे जगल की चिड़िया हूँ। उड़कर परदेश चली जाऊँगी आज दादाजी के देश में हूँ, कल परदेश चली जाऊँगी।

काश्मीर की एक कुलाङ्गना पति के परदेश जाने पर किन शब्दो में अपनी विरह-व्यथा का बयान कर रही है—

यार चलुम तथ कति छाँडन, आर छासनय न्यसियय।
यारस रुसतूय बाग फुलमय, कुसम्य छाव्यम करमाह ॥

अर्थात् मेरा प्रेमी चला गया है, उसे मैं कहाँ खोजूं ? हे सखि! उसे मुझे छोडते तनिक भी दया नही आई। यदि समय पाकर मेरे यौवन रूपी उपवन में वसन्त आवे, तो उसका स्वाद कौन लेगा ?

क्या यावुन यीयना हीरिथ।
मानदि तीर जन गुम नीरिथ ॥

हाय! क्या वह यौवन फिर आवेगा जो तीर के मानिन्द गुम हो गया है—निकल कर चला गया है।

एक दूसरी विरहिणी इस प्रकार ईश्वर से प्रार्थना कर रही है—

यार गोमय पाम्पोर वते
कुग पाशव रुटनाल मते।
सुछ्म तते वछुस यते
वार सायवो बोजतम जार ॥

आशय है कि मेरा यार पाम्पुर (कश्मीर का एक मशहूर स्थान) की ओर चला गया है, केशर के फूलो ने उसे गले लगा लिया। वह वहाँ और मैं यहाँ। ओ खुदा! मेरी विनती सुन लो (कुग = केसर, पोश = पुष्प, फूल)।

पजाब की कन्या कितने पते की बात सुना रही है—

दिल दरिया समुन्दरों डूंघा
कौन दिला दीयाँ जाणे ?

विच्चे चप्पू विच्चे वेड़ी
विच्चे वग महाणे ॥

दिल एक दरिया है, समुन्दर से कही अधिक गहरा। दिल की बाते कौन जान सकता है, इसके बीच क्या चप्पू, क्या किश्ती, क्या मल्लाह (सभी डूब जाते है)।

वियोग—इन गीतो मे प्रिय-वियोग का वर्णन बड़े ही सरस शब्दो में किया गया है। प्रिय के परदेश चले जाने पर पत्नी के लिए सारा ससार सूना लगता है, घर काटने को दौड़ता है। प्रिय-वियोग के समय समस्त प्रकृति में एक अनोखी विपमता का साम्राज्य उठ खड़ा होता है। एक प्रोपितपतिका अपनी दयनीय दशा दर्शाती हुई कह रही है कि अरे निर्मोही लोभी, तुम्हारे विना देखें कितने लोग रो रहे है—घर मे तुम्हारी घरनी रोती है, वाहर हरिनी रोती है, तालाव मे चकवा चकई रो रहे है। विछोह करते समय तुझे तनिक दया नही आई। गीत के शब्दो मे—

घरावा रोवे घरिनी ए लोभिया, वाहारवा राम हरिनिया।
दाहावा रोवे चाका चकइया, विछोहवा कइले निरवामोहिया ॥

एक दूसरी प्रोपितपतिका के मनोभाव की वानगी देखिए। वह कह रही है कि ठढी पुरवैया चल रही थी। नीद में अलसाई पडी थी। उसी वक्त वह मेरा प्रियतम मुझे छोडकर चला गया। वह नाना प्रकार से उसकी सेवा करना चाहती है। कचहरी जाते समय वह अपने प्यारे के पैर में ववूर का कॉटा वनकर चुभना चाहती है, कभी कोयल वन मीठा शब्द सुनाना चाहती है, कभी फुलवाडी में फूल वनकर अपने प्यारे के वास्ते गमकना चाहती है, जल में मछली वनकर प्यारे के पैर से लिपटना चाहती है, पति के देश में जाकर पानी वरसने के लिए वादल से प्रार्थना करती है। गरज यह है कि विरह-व्यथा से सताई गई विरहिणी अपनी व्यथा को भूलने की विशेष चेष्टा करती है, परन्तु उसे सफलता नही मिलती।

एक दूसरी सुन्दरी अपने प्यारे से विछोह के दिनो को विताने की युक्ति

पूछ रही है। दिल मे दर्द पैदा करनेवाले इस गीत को पढिए और स्वयं गुनगुनाकर इसका रसास्वाद लीजिए—

जुगुति[1] वताये जाव
कवन विधि रहवों[2] राम ॥ टेक ॥
जो तुहु साम[3] वहुत दिन वितिहे,
अपनी सुरतिया[4] मोरे वहियाँ पर लिखाये जाव ॥१॥
जुगुति वताये०
जो तुहु साम वहुत दिन वितिहे,
विरना[5] बोलाइ मोको नइहर[6] पहुँचाये जाव ॥२॥
जुगुति वताये०
जो तुहु साम वहुत दिन वितिहे,
बहियाँ पकरि मोके गगा भसिआये[7] जाव ॥३॥
जुगुति वताये जाव
कवन विधि रहवों राम ॥

किसी स्त्री का पति विदेश जाने के लिए प्रस्तुत है। उसकी प्रेमी स्त्री उससे कहती है कि आपके वियोग मे मै कैसे रहूँगी इसकी युक्ति मुझे वतलाते जाइए।

ऐ मेरे प्राणप्रिय ! यदि तुम विदेश मे वहुत दिनो तक रहोगे तो कृपा करके अपना चित्र मेरी वाहो पर चित्रित कर दो, जिसे मै वियोग के दिनो मे सदा देखती हुई शान्ति धारण करूँगी ॥१॥

ऐ मेरे प्राणप्रिय ! यदि तुम विदेश मे वहुत दिन विताओगे तो कृपाकर मेरे भाई को बुलाकर मुझे अपने मायके पहुँचवा दो (जिससे मै तुम्हारे वियोग को काट सकूँ) ॥२॥

---

[1]युक्ति, उपाय। [2]रहूँगी। [3]श्याम, प्रिय पति। [4]मूर्ति (सूरत)। [5]भाई (वीर)। [6]मायका। [7]गिरा देना।

हे मेरे प्राणप्रिय ! यदि तुम विदेश में बहुत दिनों तक रहोगे तो मेरी बाँह पकड़ मुझे गंगाजी में गिरा दो (जिससे मैं सदा तुम्हारे वियोग के दुःसह दुःख को सहने से वंचित हो जाऊँगी) ॥३॥

इस गीत के प्रत्येक पद से करुण-रस चुआ पड़ता है। यह गीत क्या है करुण-रस का कलश है। जितनी करुणा इन कतिपय पंक्तियों में भरी पड़ी है उतनी सम्भवतः समस्त हिन्दी-साहित्य में भी नहीं मिलेगी। वियोग की आशंका से उत्पन्न दुःख का इतना सरस, सजीव, अकृत्रिम तथा हृदय-द्रावक वर्णन अन्यत्र उपलब्ध नहीं। हिन्दी के कतिपय कवियों ने पति के परदेश जाने के समय उनकी स्त्रियों की आँखों में आँसू तो जरूर दिखलाए हैं, परन्तु इस गीत में तो स्त्री अपने को गंगा में डुबो देने की प्रार्थना कर रही है, जिससे न तो वह जीती रहेगी और न वियोग के कष्टों को सहन करेगी। हिन्दी के तोष आदि कवियों ने वियोगिनियों के आँसू से नदियों में बाढ़ आने की बात लिखी है। यह वर्णन अलंकार की दृष्टि से भले ही चमत्कारपूर्ण हो परन्तु श्रोताओं के हृदय पर यह कुछ भी चमत्कार पैदा नहीं करता। परन्तु इस गीत में वर्णित भाव अपनी अकृत्रिमता के कारण सहृदयों के दिल पर सहज ही में चोट करते हैं। 'बहियाँ पकरि मोंके गंगा भसिआये जाव' आदि पदों में जो गहरी वेदना छिपी हुई है उसे अच्छी तरह से वे ही जान सकते हैं जो 'भसियाना' शब्द के देहाती अर्थ को जानते हैं। इस स्त्री को पति का वियोग सह्य नहीं है परन्तु गंगा में गिरकर मर जाना सह्य है। इस घनिष्ट तथा स्वाभाविक प्रेम की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही थोड़ी है।

इस गीत में पति के वियोग में उसके चित्र के स्मरण करने का वर्णन है। यह प्रथा बहुत प्राचीन मालूम पड़ती है। कालिदास ने अपने मेघदूत में यक्षपत्नी का अपने पति का चित्र बना कर मनोविनोद करने का वर्णन किया है। इस गीत में करुण-रस की मात्रा इतनी कूट-कूटकर भरी हुई है जिसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। मैं तो महाकवि भवभूति की अनेक करुण रसमयी कविताएँ इसी एक ही गीत पर निछावर करने के लिए

तैयार हूँ। इस गीत की सरसता, मधुरता तथा करुण-रसता के विषय में मतिराम का यह पद उपयुक्त जान पडता है। "ज्यो ज्यो निहारिये नेरे ह्वै नैनन, त्यो त्यो खरी निकरे सी निकाई।"

कोई विरहिणी स्त्री अपनी दु खद दशा का वर्णन करते हुए कह रही है कि मेरी धानी रग की चुनरी (साडी) इत्र के समान गमक रही है। मै अपने यौवन को लिये हुए पति के समागम के लिए मायके मे तरस रही हूँ। मैने सोने की थाली में भोजन परोसा था परन्तु उस भोजन को करनेवाला आज विदेश मे पडा तरस रहा है। मैने वडे लोटे मे पीने के लिए गगा जल रक्खा था, तथा पति के खाने के लिए लवग और इलायची लगाकर पान का बीडा तैयार किया था परन्तु उस पान को खानेवाला परदेस मे विराज रहा है। उस प्रियतम के सोने के लिए मैंने कलियो को चुन-चुन करके सेज तैयार की थी परन्तु उस सेज को सुशोभित करनेवाला परदेस में है—

मोरी धानी चुनरिश्रा इतर गमके।
धनि वारी उमरिया नइहर तरसे॥
सोने की थारी मे जेवना परोसलों।
मोर जेवन वाला विदेस तरसे॥
झझरे गेडुववा गङ्गाजल पानी।
मो घूँटन वाला विदेस तरसे॥
लवँग इलायची के वीढ़ा लगवलीं।
मोर कूँचन वाला विदेस तरसे॥
कलिश्रा चुनि चुनि सेजवा लगवलीं।
मोर सूतन वाला विदेस तरसे॥

प्रिय के वियोग में तडपनेवाली इस विरहिणी की दशा देखने ही योग्य है। प्रिय के वियोग मे कामिनी की व्याकुलता कितनी अधिक है। बेचैनी को न सह सकने के कारण वह स्वय प्रिय को खोजने के लिए निकल पडती है और बटोहियो से उसका पता पूछती चलती है। इस गीत में बडा

ही सोच है, द्रुत लय है। इस भूमर का पूरा स्वाद झूम-झूमकर गानेवाली कल-कण्ठ कामिनियों के कोरस में ही मिल सकता है। विरहिणी कह रही है कि—

ऐ भौंरा! तुम आज परदेश जाकर कितने दिनों में लौटोगे? मैं कितने दिनों तक तुम्हारे मार्ग की प्रतीक्षा करूँगी? जब पति बहुत दिनों तक परदेश से लौटकर नहीं आया, तब स्त्री दुःखी होकर कहती है कि पति के आने की अवधि के दिन गिनते-गिनते मेरी अँगुली घिस गई। उनके आने के दिन की प्रतीक्षा करते हुए मेरी आँखों से आँसू गिरते रहते हैं। मैं पति को ढूंढने के लिए एक वन, दूसरे वन और तीसरे वन में गई। वहाँ मुझे एक ग्वाला मिला। वह ग्वाले को सम्बोधित कर पूछती है कि ऐ भइया ग्वाला! क्या तुमने मेरे परदेशी भँवरे को कहीं देखा है? उनका पता भला बता तो नहीं।

आज के गइल भौंरा कहिया ले लौटब कतेक दिनवाँ।
जोहौं तोरी बटिया, कतेक दिनवाँ ॥ १ ॥
गनत गनत मोरी अँगुरी भैल खियानी चितवते दिनवाँ।
नैनवा ढुरे लोरवा चितवते दिनवाँ ॥ २ ॥
एक वने गइलीं दूसरे वने गइलीं तीसरे वनवाँ।
मिल्यो गोरू चरवहवा तीसरे वनवाँ ॥ ३ ॥
गोरू चरवहवा तुहीं मोर भइआ कतहू देखल ना।
मोर भँवरवा परदेसिया कतहूँ देखल ना ॥ ४ ॥

इन गीतों में पशु-हृदय का चित्रण भी अछूता नहीं बचा है। पशुओं के मानसिक भावों का भी अंकन सहानुभूति से भरे करों से किया गया है। पानी के लिए प्यासे प्रियतम हरिन के पकड़े जाने पर हरिनी का यह विलाप इतना करुणोत्पादक है कि श्रोताओं की आँखें आँसुओं से छलक उठती हैं। हरिनी का यह पति-प्रेम कितना आदर्श-पूर्ण है!

पानी के लिए प्यासा हिरन जमुना के घाट पर गया। मैंने खेत में चीन बोया था उसे वह चर गया। हरिनी पूछती है कि ऐ बटोही! तुम ने

भाई हो, क्या तुमने इस रास्ते मे हिरन को ले जाते हुए वहेलिया को देखा है ? बटोही कहता है कि मैंने वहेलिया को हिरन के हाथ और पैर बाँधकर हाजीपुर के हाट की ओर जाते देखा है। हरिनी वहेलिये पर क्रुद्ध होती हुई कहती है कि ऐ वहेलिये ! तेरे पाँव थक जायँ, तेरे हाथों मे घुन लग जायँ। तूने किस कारण से मेरी सेज को सूनी कर दिया ? तुम हिरन के चाम और मास को भले ही बेच देना, परन्तु उसकी हड्डियाँ मुझे दे देना। मैं उन्ही हड्डियो को लेकर इसी जमुना के तीर पर सती हो जाऊँगी। हरिनी के विचार कितने उदात्त है। कामना कितनी विशुद्ध है—

पानी के पिआसल हरिनवा, जमुनवा घाटे रे जाय।
वोअलों मै चीनवा हे रामा हरिनवा चरि रे जाय।
बाट बटोहिया भइआ तू हुँ रे मोर भाय।
एहि राहे देखुआ हरिनवा, वहेलिया लेले रे जाय॥
देखुई मैं देखुई हे पातरि हाजीपुर के रे हाट।
हाथ गोड़ बन्हले वहेलिया, हटिया लेले रे जाय॥
पग तोरे थाके वहेलिया हथवा लागे रे घून।
कवनों कसूरवा वहेलिया मेरी सेजरिया कइलो रे सून॥
चाम मासु वेचिहे वहेलिया हाडवा दिहे रे मोर।
ओही हाड लेइ सती होइवों एहि जमुना के तीर॥
पानी के पिआसल हरिनवा॥

वैधव्य—इन गायनों में विषाद की रेखा जरूर खिंची हुई है, परन्तु अमिट रूप से नही। दिन ज्यो-ज्यो ढलते जाते है, राते जितनी बीतती जाती है, विषाद की रेखा फीकी पड़ती जाती है, परन्तु बालविधवाओ की मनोवेदना का चित्रण किस प्रकार किया जा सकता है ? इन बालविधवाओ में कितना भोलापन भरा हुआ है जो व्याह जैसी अजनबी चीज को जानती ही नही, शादी जिनके वास्ते एक अजूबा है। इनकी दर्दनाक आहे किसके दिल को न दहला देगी। बड़ी मार्मिक वेदना भरी पडी है इन

विधवाओं के गीतों में। यहाँ नमूने के तौर पर एक ही गान नीचे दिया जाता है।

एक भोली-भाली बालविधवा अपने पिता से अपनी शादी के बारे में पूछ रही है कि आपने किस लिए मेरी शादी की? क्यों मेरा गवना किया? पिता कहता है कि तेरी शादी आनन्द भोगने के वास्ते की तथा सुदिन देखकर तेरा गवना किया। इस पर बेटी कह रही है कि मेरा सिर सिन्दूर के बिना रो रहा है, आँखें काजर के बिना रो रही हैं, मेरी गोद पुत्र के बिना रो रही है और सेज कन्हैया बिना रो रही है—

बाबा सिर मोरा रोवेला सेनुर बिनु,
नयना कजरवा बिनु रे राम।
बाबा गोद मोरा रोवेला बालक बिनु
सेजिया कन्हइया बिनु रे राम॥

बेटी की आह भरी बातें सुनकर पिता उसे फुसलाना चाहता है, परन्तु वह बालिका फुसलाने में नहीं आती। बाप कहता है कि ऐ बेटी! हाजीपुर की हाट लगने दे, उस बाजार में मैं चलूँगा और तुम्हारे करम को बदल दूंगा। परन्तु बालिका होने पर भी कन्या होशियार है। वह तुरन्त बढ़िया उत्तर देती है कि काँसा पीतल ही बदला जा सकता है, परन्तु करम कैसे बदल जायगा? जैसा मैंने किया है उसका फल तो भोगना ही पड़ेगा। जैसा बोया जायगा वैसा ही काटा जायगा। कन्या का यह कथन कितना भोला-पन से भरा है, साथ ही साथ कितना सच्चा है! भाग्य की प्रबलता और कर्म की दुर्निवारता की अभिव्यक्ति कितने अच्छे शब्दों में की गई है। गीत की दो-चार कड़ियों को पढ़कर इस मार्मिक वेदना का अनुभव कीजिए—

बेटी लागे देहु हाजीपुर के हटिया करम तोरे बदली देबों ए राम।
बाबा काँसावा पीतर सब बदलवी, करम कइसे बदलवी ए राम।
बेटी सिर तोरे भरबों रे सेनुर लेइ, नयेना काजरवा लेइ ए राम।
बेटी गोद तोरे भरबों रे बालक लेइ, सेजिया कन्हइया ए राम॥

(घ) शान्त-रस

इन ग्रामगीतो मे शान्तरस का भी वडा ही सुन्दर परिपाक दिखाई पड़ता है। देवी-देवताओ की स्तुति विषयक गीतो मे जिस प्रकार भक्ति का उद्रेक दृष्टिगोचर होता है उसी प्रकार भोजपुरी भजनो में ऐहिक जीवन की नि मारता और पारलौकिक जीवन की महत्ता प्रतिपादित की गई है। स्त्रियो की कामनाओ के केन्द्र दो ही है—माँग और कोख, अर्थात् पति और पुत्र। इनके कल्याण-साधन के लिए वे भिन्न-भिन्न देवी-देवताओ से मगल की कामना किया करती है। इन देवताओ मे एक प्रधान देवता षष्ठी माई (छठी माई) है, जिनकी पूजा कार्तिक शुक्ल षष्ठी को वडी उमग तथा उत्साह के साथ की जाती है। उस दिन उपवास में रहकर सायकाल में सूर्य को अर्घ दिया जाता है तथा सप्तमी के प्रात काल वालसूर्य को अर्घ देने के वाद ही व्रत की समाप्ति समझी जाती है। तव तक वे एक बूँद जल भी ग्रहण नही करती अनेक मनोकामनाओ की पूर्ति के लिए, परन्तु विशेषत: पुत्र की प्राप्ति के लिए, इस व्रत का आचरण विहित है। एक गीत के वर्णनानुसार वुढिया पोते की चाह से, तरुणी बेटा की इच्छा से तथा वालिका भाई-भतीजा पाने की अभिलाषा से इस व्रत को करती है।

एक वन्ध्या षष्ठी माता से पुत्र की प्राप्ति के लिए प्रार्थना कर रही है कि माता, मेरा जीवन निरर्थक-सा प्रतीत होता है। सास दुतकारती है, ननद गालियो की वौछार करती है और अपना व्याहता पति डण्डों से उसकी खवर लेता है। वेचारी का दोष केवल यही है कि उसकी गोद पुत्र के विना सूनी है। सूर्य भगवान् उसकी प्रार्थना सुनकर सफल वनाते है—

सासु मारे हुदुका ए दीनानाथ, ननदिया पारे गारी।
सगे लागल पुरुखवा ए दीनानाथ, देले उदवास ॥
आरे सवके डलियवा ए दीनानाथ; लिहलीं उठाई।
आरे वाँझि के डलियवा ए दीननाथ, ठहरे तवाँई ॥

आरे असों के कतिकथा ए आमिनि, नरवा नहिवों जाइ।
आरे अगिला कतिकथा ए आमिनि, गङ्गाधर पुलवा पारू॥

[illegible]

आरे गोटे खड़उँवा ए अदितमल, तिलका लिलार।
आरे हाथावा में सोवरन साटी, ए अदितमल अरघ दिआऊँ।
ए आमा के कोरा पउसि सुतेले अदितमल, भोरे हो गइल बिहान।
आरे हाली हाली उग ए अदितमल, अरघ दिआऊ॥
फलवा फूलवा ले ले मालिनि चिटिआ ठाढ़।
हाली हाली उग ए अदितमल, अरघ दिआऊ॥
धूपवा जलवा रे लेके, बभनवा रे ठाढ़।
हाली हाली उग ए अदितमल, अरघ दिआऊ॥
गोडवा दुखइले रे डांडवा पिरइले, कब से जे हम बानी ठाढ़।
हाली हाली उग ए अदितमल, अरघ दिआऊ।

भक्त-हृदय की व्याकुलता का कैसा सुन्दर चित्रण किया गया है!

शीतला माता के विषय में जो भोजपुरी गीत उपलब्ध होते हैं उनमें भावुक भक्त की प्रगाढ़ भक्ति का भलीभांति परिचय मिलता है। इन गीतों में चेचक से पीड़ित बालक के लिए आरोग्य-प्रदान की प्रार्थना की गई है। माता बड़ी दयालु हैं, थोड़े में उपकार के लिए भक्त के मनोरथ की सद्य पूर्ति कर देती हैं। वह नीम के पेड़ में हिंडोला लगाकर झूल रही है, इतने में

उसे प्यास लगती है। रात का समय, गाँव है दूर। गाँव में आकर वे मालिन की लड़की को जगाती हैं और पीने के लिए पानी माँगती हैं। वह कहती है कि मेरी गोद में लड़का सो रहा है, मैं कैसे उठूँ? शीतला के आग्रह करने पर वह उठती है और पानी पिलाती है। तब शीतला माता प्रसन्न होकर उसकी अभिलाषा की पूर्ति कर देती हैं। वह इतनी दयालु हैं।

एक गीत में सेविका की प्रार्थना तथा नैराश्य का भाव इतने सुन्दर शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है कि पढते ही बनता है। एक बाँझ स्त्री अपनी डाली लेकर माता के दरबार में उपस्थित होती है। सबकी पूजा की डाली माता ले लेती हैं, परन्तु उस गरीबनी की डाली पडी रह जाती है। पूछने पर वन्ध्यापन के कारण डाली अशुद्ध बतलाई जाती है। इस पर वन्ध्या दुखित होकर जल मरने के लिए जंगल में जाने को तैयार हो जाती है और कहती है कि आपकी पूजा के लिए पानी भरते-भरते मेरे सिर की चाँद घिस गई है और देवघर (मन्दिर) लीपते-लीपते मेरे हाथ घिस गये हैं। तो भी ऐ माता! आपकी कृपा नही हुई—मेरे बाँझिन होने का कलंक नही छूटा। इस पर माता आश्वासन देती हैं कि तुम जलो मरो नही। मैं तुम्हें पुत्र देकर तुम्हारे कलंक को धो दूँगी। इस भक्तिभावपूर्ण गीत को पढकर पाठक स्वयं आनन्द लें—

सिकिया चिरि चिरि बिनलों, ए डलियवा हो।
आरे डलिया लिहले ठाढ भइलों; मइया, दरबरिया हो।
सभ के डलियवा ए मइया; आरे लिहलु परीछि हो।
आरे हमरा अभागिन के डलियवा, काहे फिरि आइल हो।
आरे आरे बाँझी तिरियवा, आरे डलियवा तोर असुद्ध हो।
आरे तोहर बा असुद्धवा ए बाँझिनि; डलियवा तोर असुद्ध हो॥
पईसबि ननन बनवा, आरे छेवडब चननवा हो।
आरे चिरि, साजि के जरबी, मइया अकलंक तोहरा होइहे हो॥

पनिया भरत ए मइया; चनिया मोर खिआइल हो।
आरे देवघर लिपत ए मइया हाथवा खिआइल हो॥
आरे तबहुँ ना छुटेले ए मइया; बाझिनि कोरि नइयाँ हो।
आरे बाझी तिरियवा; जनी रोइ मर हो।
जनि पइस ननद बनवा, जनि पइस चननवा हो॥
आरे आपन बालकवा ए बाझिनि. तोहरा के देवों हो॥
आरे सुतल देवमुनि; उठली चिहाई हो।
आरे कवन चरित्र ए मइया: बाझिनि घरवा बालक हो॥
आरे का तुहु देवमुनि, उठलू चिहाई हो।
आरे सीतला का चरित्रे ए देवमुनि; बाझिन घरवा बालक हो॥

शीतला (चेचक) के होने से जब बालक का शरीर जलने लगता है, बेहद पीड़ा होती है, तब उसकी दयामयी जननी भक्ति भावना में झूमते-झूमते हुए शीतला माता से प्रार्थना करती है।

पटुका पसारि भीखि मागली बालकवा के माई;
हमरा के बालकवा भीखि दीं।
मोरी दुलारी हो मइआ;
हमरा के बालकवा भीखि दीं॥
आंचारा पसारि भीखि मांगेले बालकवा के बाबा
हमरा के बालकवा भीखि दीं।
मोरी मानावा राखलि मइया
हमरा के बालकवा भीखि दीं॥

मैं बालक की माता हूँ। मैं आँचल पसार कर भीख माँग रही हूँ इस बालक को मुझे भीख दीजिए। हे मेरी दुलारी माँ! कृपा कीजिए, बालक को भीख दीजिए, अर्थात् इसके रोग को दूर कर दीजिए। बालक की दर्द भरी आहों से व्याकुल हो कर उसकी माँ जब इन गीतों को मस्ती में झूम-झूमकर गाती है, तो सुनने वालों के शरीर में रोमाञ्च हो जाता है और जान

पडता है कि नीम की डाल पर झूलने वाली शीतला माँ, अपने आनन्दमय झूले से उतर कर, जल्दी-जल्दी बालक की सेज के पास आकर खडी हो जाती है और अपना वरद हस्त फैला कर उसे नीरोग होने का आशीर्वाद देती है।

भजन—भोजपुरी भजन बडे मार्के के है। इनमें ससार की नि सारता, जीवन की अनित्यता, सुख-सम्पत्ति की क्षण-भगुरता का सुन्दर प्रतिपादन मिलता है। वृद्धा स्त्रियाँ जब तीर्थ-यात्रा या गगा-स्नान के लिए सघ बाँध कर जाती है तब वे इन भजनो को प्राय गाया करती है। एक तो भजनो का कोमल भाव, दूसरे इन वृद्धाओ के कण्ठ से निकली भक्त-विह्वल ध्वनि, तीसरा प्रात काल का सुहावना समय—ये तीनो मिल कर इन भजनो को इतना रसमय बना देते है कि सुनने वाले का हृदय इस सासारिक प्रपञ्च से दूर हटकर भगवद्भक्ति के सरोवर मे गोता लगाने लगता है। नमूने के तौर पर इस भजन के भाव को परखिए जो मनुष्य के हृदय में वैराग्य जगाने मे सर्वथा कृतकार्य सा प्रतीत होता है—

का देखिके मन भइल दिवाना, का देखि के। टेक
मानुख देह देखि जनि भूल, एक दीन माटी होई जाना।
का देखि के०
आरे इ देहिया कागद की पुड़िया, बूँद पर भिहिलाना।
का देखि के०
इ देहिया के मलि मलि धोवलों, चोवा चनन चढ़ाई।
ओहि देहिया पर कागा भिनके, देखत लोग घिनाई॥
का देखिके मन भइल दिवाना, का देखि के।

८—गीतों में रहस्यवाद

भोजपुरी गीतो मे कही-कही रहस्यवाद की बडी सुन्दर झलक दिखाई पडती है। भक्ति-भाव से अपनापन को भूलकर जब भक्त अपने हृदय के भावो को प्रकट करता है तब जिस कविता का उद्‌गम होता है वह काव्यकला तथा दार्शनिक दोनो दृष्टियो से महत्त्वपूर्ण होती है। रहस्यवाद मे प्रयुक्त

लौकिक सांसारिक होते हैं परन्तु उनमें अभिव्यक्त भाव पारलौकिक होता है। इन गीतों में रहस्यवाद की छटा भी देखने को मिलती है।

इस गीत को लीजिए, जिसमें गुरु का महत्त्व दिखलाया गया है। साधिका कह रही है कि मैं अपने ओसरे में बेखबर सो रही थी कि गुरुजी ने मुझे जगाया और गवने के नजदीक होने की सूचना मुझे दी। यह गवना सांसारिक गवना न होकर भगवान रूपी प्रियतम के पास जाने की सूचना है। जीव संसार के रमणीय विषयों में इतना लगा हुआ है कि उसे गन्तव्य स्थान भी भूल गया है। वह जानता नहीं कि यह जन्म केवल आगे बढ़ने के लिए एक सोपान मात्र है, टिककर आनन्द मनाने की जगह नहीं। ऐसी गाढ़ अज्ञान-निद्रा से गुरु के सिवाय और कौन जगा सकता है? गुरु के शरण में जाने से ही साधक का निस्तार है—

सुतल रहलों ओसरवा हो, गुरुजी दिहलें जगाई।
गवना के दिन नियरा गइले हो, मन गइल घबराई॥
गुरुजी हो गुरुजी पुकारीलें हो; गुरुजी सरन तोहार।
रचे एक दीहितीं गुरु हुकुमवा हो, धउरल करि अइतों दान॥
कोठिला भरल बाटे चउरा हो, गुरुजी कइ अइतों दान।
रचे एक दीहितीं हुकुमवा हो, गुरुजी कइ अइतों दान॥

मानव हृदय उसी प्रकार सूना है जिस प्रकार घनघोर अँधियारी रात। प्रेम नगर के हाट में हीरा और रत्न बिकता है। चतुर लोग तो सौदा करके अपना जीवन सफल बनाते हैं। परन्तु मूर्ख लोग घूम-घूमकर खड़े-खड़े पछताते हैं। मूल गीत इस प्रकार है—

तमुवा गिराइ कहाँ जइबो हो कहो आपन ठेकान।
काहे के लगवल बबुरिया हो लगवत तू आम।
अमिरित करत भोजनियाँ हो भजत हरिनाम ॥१॥
प्रेम बाग नहीं बौरे हो प्रेम न हाट बिकाय।
बिना प्रेम कै मनुजवो हो जस अँधियरिया राति ॥२॥
प्रेम नगर की हटिया हो हीरा रतन बिकाय।
चतुर चतुर सौदा करि गये हो मूरख ठाढ पछिताय ॥३॥

इस भजन में तम्बू गिराने से सासारिक जीवन की जो उपमा दी गई है वह कितनी मार्मिक और उपयुक्त है, इसे वे ही लोग भलीभांति समझ सकते हैं जिन्होंने भोजपुर की बारातों का दृश्य देखा है। इन बारातों में किसी सुनसान खेत या बगीचे में तम्बू तान देते हैं। उसके नीचे बैठकर रात भर गाना, बजाना और नाच हुआ करता है। आलीशान मजलिस जमती है, संगीत से शामियाना गूंज उठता है। एक रहता है विवाह की नयी उमंग और दूसरा बन्धु-बान्धवों और इष्ट-मित्रों के साथ मेल-मिलाप। ऐसा उत्सव रात भर मचता रहता है, परन्तु दूसरे ही दिन सवेरे दृश्य बदल जाता है, बारात की बिदाई हो जाती है, तम्बू गिरा दिया जाता है और वह स्थान फिर से निपट उजाड़ बन जाता है। इसी सासारिक आकस्मिक परिवर्तन की उपमा तम्बू गिराने से दी गई है। पूरा भजन रहस्यवाद के गहरे रंग में रँगा हुआ है।

नीचे के भजन में नैहर से नाता तोड़कर पति के पास जाने का जो वर्णन दिया गया है वह भी रहस्यवाद की परम्परा के ही अन्तर्भुक्त है। यहाँ आत्मा की कल्पना स्त्री से की गई है और परमात्मा को पति माना है।

यह ममार ही नैहर है और गुरु की कृपा से ईश्वरोन्मुख होने का ही नाम गवना है। गुरु की कृपा ही वह डोली है जिस पर चढकर यह जीव अपने प्रियतम के पास जाता है। इस कमनीय कल्पना को हिन्दी भाषा के कबीर, जायसी आदि रहस्यवादी कवियो ने खूब ही अपनाया है। इस गीत में रहस्यवाद की आभा फूट निकलती है—

मोरे नइहरवा से नातवा छोड़वले जाला पियवा।
काचें काचे बँसवा के डोलिया बनवले,
ताहि पर काया के सुतवले जाला पियवा।
चारि कहार मिलि डोलिया उठवले,
आगे आगे रहिया देखवले जाला पियवा।

६—बिरहा की बहार

भोजपुरी गीतो में बिरहा अपना विशेष स्थान रखता है। उमग भरे अहीरो के मुँह से जब बिरहा गाया जाता है तो श्रोताओं के हृदय में एक विचित्र उत्माह पैदा हो जाता है। अहीरो का तो यह जातीय गान ही है जिसे वे अपने उत्सवो तथा पर्वो पर अवश्य ही गाते है। बिरहा से मिलता-जुलता अहीरो का एक दूसरा भी गाना है जिसे 'लोरकी' कहते है। इसमे एक आभीर वीर की पराक्रम-कथाओ का छन्दोबद्ध वर्णन रहता है। भोज-पुर प्रान्त मे 'लोरकी' गाने की बडी प्रथा है। परन्तु दु ख की बात यह है कि 'लोरकी' लिपि के कारागार मे बद्ध नही हो मकती, क्योकि इसके गाने वाले इतने उमग से, इतने जोश से तथा इतने आवेग से इसे गाते है कि अनेक प्रयत्न करने पर भी हम उनके लिपिबद्ध करने मे समर्थ नही हो सके। परन्तु बिरहा की दशा इससे भिन्न है। लोरकी की अपेक्षा लघुकाय होने के कारण बिरहा लिपि की कुण्डली में सिमट कर आ जाता है और नट के ममान अपनी कलाबाजी दिखाने मे समर्थ होता है।

हम कह आए है कि बिरहा एक छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो जगह यति होती है। प्रथम यति १६ अक्षर पर और दूसरी यति १०

अक्षर पर। अन्त मे दोहे के समान एक लघु और एक गुरु होता हैं। कही-कही प्रथम चरण मे दो अक्षर वढ भी जाते हैं। इसके गाने की एक विशेषता यह है कि छन्द के चतुर्थ चरण का उपान्त्य दीर्घस्वर प्लुत स्वर में उच्चारित किया जाता हैं। इसके वर्णनीय विषय अनेक हैं। नीति, शृगार, वीर तथा ग्रामीण जीवन का वडा रमणीय वर्णन इन विरहो मे पाया जाता है। भाषा का सौन्दर्य, भाव का माधुर्य इनमे इतना पूर्ण है कि जान पडता है कि किसी ने कलेजा निकाल कर इन गानो में रख दिया हो।

ये विरहे हृदय से उमग आने पर अपठित मनुष्यो के मुह मे आप ही आप निकल पडते है। इनका निवास स्थान जन साधारण का उत्साह पूर्ण हृदय ही है। इन कवित्वपूर्ण विरहो के उद्गम की कहानी किसी ने क्या ही अच्छे ढग से कही है।

नाहीं विरहा कर खेती भइया,
नाही विरहा फरे डाढ़।
विरहा वसेले हिरिदिया मे ए रामा;
जव उमगेले तव गाव॥

विरहा की न तो खेती है, न विरहा फलो की तरह पेडो की शाखाओ पर फलता है। विरहा तो मनुष्य के हृदय में वसता है। जव उमग आवे तव इसे गाइए।

मातृभक्त सरवन के मर जाने पर उसकी स्नेहमयी माता का विलाप इस विरहे मे कितने सुन्दर शब्दो मे व्यक्त किया गया है। कमनीय प्रकृति पर भी इस शोक-कलाप की मलिन छाया दीख पडती है—

तलवा झुरइले, कँवल कुम्हिलइले;
हँस रोवे विरह वियोग।
रोवत वाड़ी सरवन के माता,
के कावर ढोइहे मोर॥

ताल सूख गया है, कमल कुम्हला गया है, हस रो रहा है, सरवन की माता

रो रही है कि हाय अब काँवर कौन ढोवेगा, मुझ पगुल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर कौन ले जावेगा।

कुँवर कन्हाई के बाल चरित की भी बानगी देखिए—

वने वने गइया चरावेला कन्हइया,
घरे घरे जोरेला पिरीति।
अनका[1] मउगी[2] के सान[3] मारि अइले,
आखिर तक जात अहीर॥

ये वन-वन में तो गायो को चराते फिरते हैं और घर-घर में प्रीति जोडते फिरते हैं। दूसरी स्त्री से इशारा करने में भी नही चूकते। आखिर तो अहीर की ही जाति ठहरी। कृष्ण की बाल-लीलाओं पर यह कितना चुभता परिहास है—

पिया पिया कहत पियर भइली देंहिया,
लोगवा कहेला पिंडरोग।
गँउवा के लोगवा मरमियों न जानेले
भइले गवना न मोर॥

एक बिरहे में कोई पूर्वानुरागिणी स्त्री अपनी दयनीय दशा का रहस्य समझाती हुई कहती है कि 'पिया' 'पिया' रटते-रटते मेरी कोमल देह पीली पड गई है। पडोसी लोग कहते हैं कि मुझे पाण्डुरोग (पियरी) हो गया है। लेकिन बेचारे गाँव के भोले-भाले इसके मर्म को नही जानते। उन्हें क्या मालूम कि मेरा गौना अभी तक नही हुआ है। इस गीत में पूर्वानुराग जन्य दीनता तथा हृदय की द्रवता सहृदय रसिक के आस्वादन की वस्तु है।

स्वाधीनपतिका की व्यंग्यमयी वाणी का आस्वादन कीजिए—

रसवा के भेजलीं भँवरवा के संगिया,
रसवा ले अइले हा थोर।

---

[1]दूसरे की स्त्री। [2]स्त्री। [3]संस्कृत संज्ञा का अपभ्रंश, इशारा।

अतना ही रसवा मे केकरा के बटवों,
सगरी नगरी हित मोर ॥

वह कहती है कि ऐ मित्र ! मैंने भँवरा को रस लाने के लिए भेजा। लेकिन वह थोडा ही रस लाया। मेरे पास रस इतना थोडा है कि मैं किसे किसे इस रस मे से बाँटू क्योंकि गाँव के जितने रहनेवाले है वे सब हमारे मित्र है। भंवर (पति और भौंरा) और रस (प्रेम और मधु) का श्लेष सहृदय साहित्यिकों के मर्मस्थल को स्पर्श करता है। सुन्दरी का आशय यही है कि उसके पास प्रेम इतना कम है कि वह एक आदमी से अधिक को दे नही सकती, अर्थात् अपने पति के सिवाय अन्य पुरुष मे प्रेम नही कर सकती। भावो की उदात्तता तथा शब्दो की कोमलता इस गीत मे कितनी सुन्दर बन पडी है।

कामिनी के कमनीय कलेवर मे उभरते हुए यौवन का चित्रण भी इन बिरहो में बडी मार्मिक रीति से किया गया है। कोई सखी अपनी अन्य सहेली से नायिका की उठती हुई जवानी को लक्षित करके कहती है—

अमवा के लागले टिकोरवा, रे सगिया,
गूलरि फरेले हडफोर।
गोरिया का उठलेहा छाती के जोवनवा,
पिया के खेलवना रे होई ॥

आम मे टिकोरा (छोटे फल) लग रहे है, गूलर का पेड फलो से लद गया है अर्थात् वसन्त का समय उपस्थित हो गया है। गोरी की छाती पर यौवन खिल रहा है जो आगे चलकर प्रियतम का खिलौना बन जावेगा। इस बिरहे मे यौवन का आगमन कितनी मार्मिक रीति से वर्णन किया गया है।

एक अन्य बिरहे मे साहित्य की कला बडी अनुपम है। इसमे युवती स्त्रियो को उपदेश देने वाली कोई रसिका भावमय शब्दो मे अपना भाव प्रकट कर रही है। वह कहती है—

पिसना के परिकल मुसरिया तुसरिया,
दूधवा के परिकल बिलार।

आपन आपन जोबनवा सभारिहे ए धिटियवाः
रहरी में लागल बा हुंडार ॥

चूहा तथा उनके समान अन्य छोटे जीव खाने वाले के आदी हो गये हैं और बिल्ली दूध पीने की आदी हो गई है। ऐ युवती! तुम अपने यौवन को रक्षा करो, क्योंकि अरहर के खेत में हुँडार (भेड़िया) छिपा हुआ है। यहाँ हुँडार से अभिप्राय उन कामुक जनों से है जो स्त्रियों पर उचित घात देखकर छिपे-छिपे छापा मारा करते हैं और अपने बल से उन्हें अभिभूत कर अपने चंगुल में फँसा लेते हैं। हुँडार जब आदमी के मांस को चख लेता है तो वह मनुष्य के मांस-भक्षण का आदी बन जाता है। इसी प्रकार इस गीत का कामुक परस्त्री उपभोग का अभ्यासी है। अतः उससे बचने में बड़ी सावधानी होनी चाहिए। रसिकों की यह उक्ति बड़ी ही चुभती हुई है। हुँडार की कल्पना का स्वारस्य रसिक जन ही समझ सकते हैं।

बिरहा की बहार को समाप्त करने के पहले हम भोजपुरी बिरहों के नमूने पर लिखे गये कुछ साहित्यिक बिरहों की चाशनी हम अपने पाठकों को चखाना चाहते हैं। बाबू रामकृष्ण वर्मा (उपनाम 'बलवीर') रचित 'बिरहा नायिका भेद' इतना सरस, साहित्यिक और सुहावना है कि रसिकों के चित्त को अपनी ओर बरबस खींच लेता है। ये बिरहे इस बात के प्रमाण हैं कि प्रतिभाशाली कवि के हाथ में पड़ कर भोजपुरी भाषा भी ब्रज तथा अवधी की भांति काव्य की भाषा बन सकती है तथा अपनी कोमल-कान्त पदावली और रसमय भावों से सहृदयों का पर्याप्त मनोरंजन कर सकती है। कुछ बिरहों का रसास्वादन कीजिए—

अज्ञात यौवना

बइद हकीमवा बुलाओ कोई गुइयाँ;
कोई लेओ री खबरिया मोर।
खिरकी से खिरकी ज्यों फिरकी फिरत डुओ;
पिरकी उठल बड़े जोर ॥

मध्या

लजिया की बतिया मैं कइसे कहीं ए भउजी,
जे मोरे बूते कहलो ना जाय।
घर के फगुनवाँ की सिअली चोलियवा में;
असों न जोबनवाँ अमाय॥

रतिगुप्ता

भरली गगरिया उठवले जइसे गोइयाँ
तइसे बिछलल गोड़वा हमार।
जो पै बलबिरवा न बहियाँ धरत तो पै;
बहितीं जमुनवाँ के धार।

बलदेव उपाध्याय

: १ :

सोहर

सोहर उस गीत का नाम है जो पुत्र-जन्म के उत्सव पर गाया जाता है। इसे कहीं-कहीं 'सोहिलो' भी कहते हैं। किसी-किसी गीत में इसका नाम गाया भी जाता है। जैसे—

बाजेला अनद बधाव, महल उठे 'सोहर' हो।

परन्तु इसका मुख्य नाम 'मगल-गीत' है। कहीं-कहीं सोहर के स्थान मे इसी शब्द का प्रयोग मिलता है। जैसे—

गावहु ए सखि गावहु, गाइ के सुनावहु हो।
सब सखि मिलि जुलि गावहु, आजु मगल गीत हो॥

तुलसीदासजी ने भी रामचरित-मानस मे राम के जन्म और विवाह के अवसर पर मगल-गीत ही गवाया है। जैसे—

"गावहिं मङ्गल मजुल बानी। सुनि कलरव कलकठ लजानी॥"[?]

पुत्र का जन्म और विवाह दोनो ही मगल के अवसर है इसीलिये इन गीतो का नाम 'मगल-गीत' पड गया है।

जब किसी के घर पुत्र-रत्न पैदा होता है तब टोले-महल्ले की स्त्रियाँ उसके यहाँ एकत्र होती है और इसको गाती है। यह गीत बारह दिन तक गाया जाता है और जब बालक का "बरही" सस्कार समाप्त होता है तभी इन गीतो की भी समाप्ति होती है। महल्ले की स्त्रियाँ आकर कलकठ से बडे आनन्द तथा उछाह के साथ इन गीतो को गाती है और जिस पुरुष को लडका पैदा हुआ है उसका नाम उस गीत मे जोड कर गाती है जो बडा आनन्द दायक होता है। पुत्र-जन्म के अवसर पर जब घर के भीतर स्त्रियाँ सोहर गाती है और घर के बाहर दरवाजे पर पौरियाँ (एक प्रकार के देहाती अनपढ भाट) कोरस मे "श्री रामचन्द्र जनम लिहले, चडत रामनवमी"

आदि गीत गाते हैं, तब सचमुच ही वह दृश्य बडा ही मन-भावन होता है। वह पुरुष अपने को धन्य और सचमुच बडभागी समझता है। पुत्री के पैदा होने पर सोहर नही गाया जाता। यद्यपि कन्या को लोग लक्ष्मी समझते है और स्त्री को 'गृहलक्ष्मी' के नाम से पुकारते हैं परन्तु आज हिन्दू-समाज की कुरीति के कारण, कन्या के विवाह में तिलक-दहेज की प्रथा के कारण जो कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं और परेशानियाँ उठानी पडती है उनके कारण कन्या के जन्म से कोई भी प्रसन्न नही होता। इसलिए उनके जन्म के अवसर पर 'मगल-गीत' भी नही गाये जाते।

सोहर प्राय स्त्रियो के ही बनाये हुए है। स्त्रियाँ पिंगल के पचड़े में नही पडती। इसी से इन गीतो मे न तो तुक मिले हैं और न पदो की मात्राएँ ही समान हैं। स्त्रियाँ गाते समय छोटे-बडे पदो को खींचतान कर बराबर कर लिया करती है। जैसे—

'कावाना नछत्रे केसवा खोललों, काहाँवा नहइलों नु रे।
ए झगड़ा त भावेला गोतिन संगे, गोदिया बालक लेले हो॥"

इन उपर्युक्त उद्धरण की दोनो पक्तियों मे जो एक ही गीत से ली गई है न तो मात्राएँ ही समान हैं और न तो तुक ही मिलता है परन्तु स्त्रियाँ गाते समय इन पक्तियो को इस प्रकार खींचतान कर गाती है कि कही भी पद-भग या रस-भग नही जान पडता। परन्तु तुलसीदासजी ने "रामलला नहछू" में तुक भी मिलाया है और मात्राएँ भी प्रत्येक पद में बराबर रक्खी हैं। उन्होने पिंगल के अनुसार शुद्ध करके सोहर छन्द लिखा है। जैसे—

बनि बनि आवति नारि जानि गृह मायन हो।
बिहँसत आउ लोहारिनि हाथ बरायन हो॥
अहिरिनि हाथ दहेंडि सगुन लेइ आवइ हो।
उनरत जोबन देखि नृपति मन भावइ हो॥
रूप सलोनि तँबोलिनि बीरा हाथहि हो।
जाकी ओर बिलोकहि मन उन साथहि हो॥

दुरजिनि गोरे गात लिहे कर जोरा हो।
केसरि परम लगाइ सुगन्धन बोरा हो॥
नैन बिसाल नचनियाँ भौं चमकावइ हो।
देह गारी रनिवासहिं प्रमुदित गावइ हो॥

सोहर में शृंगार-रस की ही प्रधानता है परन्तु बीच-बीच में हास्य और करुण-रस की मात्रा कुछ कम नहीं है। स्त्रियों को करुण-रस प्रायः स्वभाव से ही प्यारा लगता है। उनका हृदय करुणा का उद्गम-स्थान है, जहाँ से करुणरस की धाराएं सदा बहा करती है। सोहर जैसे जन्मोत्सव संबंधी गीत में भी उन्होंने कहीं कहीं पर ऐसा करुण रस भर दिया है कि सुनते ही हृदय में करुणा की नदी उमड आती है और आँखों में आँसू छलक पडते है। इस प्रकार के अनेक उदाहरण आगे मिलेंगे।

भोजपुरी-सोहरों में करुण-रस की मात्रा विशेष रूप से पायी जाती है। जहाँ पुत्र-जन्म के उत्सव में स्त्री प्रसन्न और आनन्दित होती है वहाँ उस समय पति के घर पर न होने के कारण उसके वियोग से दुःख का भी अनुभव करती है। इस प्रकार इन गीतों में शृंगार और करुण का बडा ही सुन्दर संमिश्रण हुआ है। इन गीतों के विषय में पं० रामनरेशजी त्रिपाठी लिखते है कि "युक्त प्रान्त के पश्चिमी जिलों के सोहर में हमें वह रस नहीं मिला, जो पूर्वी जिलों के सोहर में है।"[1]

यहाँ हम कुछ चुने हुए सोहर अर्थ सहित देते है। पाठकों की सुविधा के लिए पाद-टिप्पणियों में कठिन शब्दों के अर्थ भी दे दिये गये हैं जिससे गीत का अर्थ समझने में आसानी हो।

सन्दर्भ—गर्भवती स्त्री का दोहद वर्णन

(१)

सावन की सवनइया[2] आगन सेज डासी ले हो।

---

[1]त्रिपाठी कविता-कौमुदी, पाँचवाँ भाग, पृ० ४। [2]सावन की रात।

ए पिया फुलवा फुलेला करइलिया[1] गमक[2] मने भावेला हो ॥१॥
आरे पातरि पातरि सुनर मुख दुरहुरि[3] हो।
कवन कवन फलवा मन भावे कहिना समुझावहु हो ॥२॥
भातावा त भावेला धानहि[4] केरा, दलिया रहरि[5] केरा हो।
ए प्रभु रेहुआ[6] त भावेला मछरिया, मासु तीतिले[7] केरा हो ॥३॥
आरे पातरि पातरि सुनर मुख दुरहुरि हो।
कवन कवन फलवा भावेला कहिना सुनावहु रे ॥४॥
बोलिया त ए प्रभु बोलीलें: बोलत लजाइलें हो।
ए प्रभु फलवा त भावेला नीवुआ, केरवा,[8] नरियर[9] भावे हो ॥५॥
आरे पातरि पातरि सुनर मुख दुरहुरि हो।
सुनरी कवन कापाड़ा मन भावे कहिना सुनावहु रे ॥६॥
ए प्रभु सड़िया त भावे मलमलवा, लँहगा साटन केरा हो।
ए प्रभु चोलिया त भावेला कुसुम[10] केरा, अवरु ना भावेला हो ॥७॥
आरे पातरि पातरि सुनर मुख दुरहुरि हो।
कवन सगति नीमन[11] लागेला, कहिना सुनावहु हो ॥८॥
ए प्रभु सागावा त भावेला सासु सँगे अवरु ननद जी के हो।
ए प्रभु झगड़ा त भावेला गोतीनि[12] सँगे, गोदिया[13] बालक लेइ हो ॥९॥

कोई स्त्री गर्भवती है। उसका पति उससे पूछ रहा है कि तुम्हें कौन सी वस्तु खाने तथा पहिनने में अच्छी लगती है। स्त्री उसका क्रमशः उत्तर दे रही है।

स्त्री पति से कह रही है कि सावन की रात में मैं आँगन में अपना पलंग डालकर विश्राम करने लगी। ऐ प्रियतम! करैले का फूल फूल रहा है और उसकी सुगन्ध मेरे मन को बड़ी अच्छी लगती है ॥१॥

---

[1]करैला। [2]गन्ध। [3]सुडौल। [4]चावल। [5]अरहर। [6]रोहित मछली। [7]तीतर। [8]केला। [9]नारियल। [10]कुसुम्भी [11]रंग। अच्छा। [12]दायादिन। [13]गोद।

इस पर पति ने कहा कि ऐ पतली, सुन्दरी तथा सुडौल मुखवाली स्त्री ! तुम्हे खाने के लिए कौन सा फल अच्छा लगता है यह मुझे समझाओ ॥२॥

स्त्री ने उत्तर दिया कि मुझे चावल का भात, अरहर की दाल, रोहित मछली तथा तीतर का मांस अच्छा लगता है॥३॥

पति ने फिर पूछा कि तुम्हे कौन सा फल अच्छा लगता है? इसके उत्तर में स्त्री ने कहा कि मुझे कहते हुए लज्जा मालूम हो रही है। परन्तु मुझे नीबू, केला और नारियल का फल अच्छा लगता है॥४।५॥

पति ने पूछा कि तुम्हे कौन सा कपड़ा अच्छा लगता है? इसके उत्तर में स्त्री ने कहा कि मुझे मलमल की साड़ी, साटन का लहगा और कुसुम्भी रग की चोली अच्छी लगती है॥६।७॥

पति ने पूछा कि ऐ सुन्दरी ! तुम्हे किसकी सगति अच्छी लगती है अर्थात् किसके सग रहना पसन्द आता है, इसके उत्तर मे स्त्री ने कहा कि मुझे सास और ननद का सग अच्छा लगता है तथा अपनी गोदी मे बालक को लेकर दासादिन से झगड़ा करना पसन्द आता है॥८।९॥

इस गीत मे गर्भवती स्त्री का वर्णन किया गया है। गर्भावस्था मे स्त्री की जो इच्छा होती है उसे "दोहद" कहते है। इस 'दोहद' की पूर्ति करना हमारे शास्त्रकारो ने अत्यन्त आवश्यक बतलाया है। यह प्रथा अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है।

सन्दर्भ—किसी स्त्री का पुष्प-चयन

(२)

ढुनुमुनु[1] ढुनुमुनु कवन देई[2], हाथ के डलिया[3] लेले हो।
ए जीव चलली फुलवरिया त फूलवा लोहेंली[4] हो ॥१॥

---

[1]धीरे-धीरे। [2]देवी, स्त्री। [3]डाली। [4]चुनती है।

फाँड[1] भरि लोहँलों फुफड[2] भरि, अवरु चँगेली[3] भरि हो।
ओहि फुलवरिया के लाल भँवरवा, आँचर धरि बिलमावेला
हो ॥ २॥

ठुमुकी[4] के बोलली कवन देई, अपना सामी[5] जी से हो।
ए सामी जी फुलवरिया के लाल भँवरवा, आँचर धरि बिलमा-
वेला[6] हो ॥ ३॥

एक हाथ लिहले तीर धेनुहिया[7], ए जीव चलले ओहि फुलवरिया।
अपना बाबा के दोहइया[8] भँवरवा जनि[9] मारहु हो ॥ ४॥

कोई स्त्री अपने हाथ में डाली लेकर फुलवारी में फूल चुनने के लिए चली ॥ १ ॥

उसने अपने आँचल में तथा दौरी (छवडी) में भर कर फूल चुन लिया। उस फुलवारी में विचरने वाले प्रेमी भौंरे ने (अथवा किसी रसिक पुरुष ने) उस स्त्री का आँचल पकड कर, उसे रोक कर घर जाने में देर कर दी ॥२॥

स्त्री जब घर लौटकर आई तब उसने पति से कहा कि फुलवारी के एक प्रेमी भौंरे ने मेरा आँचल पकड कर विलम्ब कर दिया ॥ ३ ॥

इस पर क्रोधित होकर उस पति ने अपने हाथ में तीर और धनुष ले लिया और उस भौंरे को मारने के लिए और भी कितने आदमी चले। परन्तु उस दयालु स्त्री ने कहा कि तुम्हारे पिता की शपथ है, तुम इस भौंरे को मत मारो ॥ ४ ॥

सन्दर्भ--प्रियतम का अपनी स्त्री से रूठना

साँझे[10] के रुसल[11] रे बलमुवा रे, आँगानवा ना सेज डासेला हो।
सात बदरिया[12] हमरी बहिन, मेघ मोरे भइया हवनो[13] हो ॥१॥

---

[1]आँचर, (अञ्चल)। [2]आँचल। [3]छवडी, दउरी। [4]रोककर देर करता है। [5]रोती हुई। [6]स्वामी, पति। [7]धनुप। [8]शपथ। [9]मत, निषेध। [10]सन्ध्या। [11]क्रोधित, रूठा हुआ। [12]बादल। [13]है।

ए मेघवा घुरुमी[1] रे घुरुमी तुहु बरीस न; पिया के डेरवाव नु हो।
साँझे के उमडलि रे बदरिया, अधही[2] राति बरिसे ले हो ॥२॥
ए ललना! खोल धनि सोबरन[3] रे केवडवा, दुवरवा[4] हम भीजिले हो ॥३॥

सिरवा सुतेली मोरि सासु, पायेतवा[5] मोरी ननदी हो।
ए प्राभु गोद पइसी सुतेला होरिलवा[6] ओसरवा[7] सेज डासहु हो ॥ ४ ॥

कोई पति अपनी स्त्री से रूठ करके सन्ध्या (रात्रि) के समय अपनी चारपाई को आँगन में न विछा कर वाहर द्वार पर चला गया। आकाश में उमडे हुए वादलो को देखकर स्त्री कहती है कि वादल मेरी वहिन है और मेघ मेरे भाई है (अत इस विपत्ति में वे मेरी सहायता करेंगे) ॥१॥

स्त्री कहती है कि ऐ मेघ! तुम खूब जोर से गरजो तथा वरसो जिससे मेरा पति डर जाये। ऐ सन्ध्या काल से उमडने वाले वादल, तुम आधी रात को वरसने लगो ॥२॥

इतने मे वृष्टि होने लगी। रूठे हुए पति देवता द्वार पर से घर के दरवाजे पर आकर स्त्री से कहने लगे कि ऐ सुन्दरी किवाड खोलो, मैं द्वार पर वर्षा के कारण भीग रहा हूँ ॥३॥

इस पर स्त्री ने यह कोरा उत्तर दिया कि मेरे सिर के पास सास सोती है, पैर के पास ननद सोती है तथा मेरी गोद में लडका सोता है। अतएव वरामदे में जाकर सोओ। (यहाँ तुम्हारे लिए विल्कुल भी गुजाइश नही है) ॥४॥

---

[1]गरजते हुए। [2]आधी रात। [3]सुन्दर। [4]द्वार पर। [5]पैर की ओर। [6]वेटा। [7]वरामदा।

सन्दर्भ—गर्भाधान-वर्णन

(४)

कावाना नछतरे[1] केसवा[2] खोललों काहाँवा नहइलों नु रे।
कावाना नछतरे सेजिया डसलों, कन्हैया[3] फलवा पवलों नु रे ॥१॥
रोहनी नछतरे केसवा खोललों, भरनी नहइलों नु रे।
आरे रोहनी नछतरे सेजिया डसलों, कन्हैया फल पवलों नु रे ॥२॥
सास[4] त भावेला[5] ससुर जी के ठनगन ननदी जी के हो।
ए झगड़ा त भावेला गोतिन[6] सगे गोदिया बालक लेले हो ॥३॥

कोई स्त्री कहती है किस नक्षत्र में मैंने अपना बाल खोला था, किस नक्षत्र में स्नान किया था तथा किस नक्षत्र में मैंने सेज डसाया था अर्थात् सुरत-समागम किया था जिससे मुझे यह पुत्र पैदा हुआ है ॥१॥

फिर वह आप ही उत्तर देती है कि रोहनी नक्षत्र में मैंने बाल खोला था, भरनी में स्नान किया था तथा रोहनी नक्षत्र में समागम किया था जिससे मुझे यह पुत्र पैदा हुआ है ॥२॥

सास और ससुर का झिडकना, ननद का ठनगन करना तथा दायादिन के साथ गोदी में बालक को लेकर झगड़ना अब मुझे अच्छा लगता है ॥३॥

सन्दर्भ—स्त्री के प्रसव-कष्ट का वर्णन

(५)

साभावा बइठल राजा दसरथ, चेरिया[7] अरज[8] करे ए।
राजा रउरा घरे घरनी बेयाकुल, रउरा[9] के चाहेले ए ॥१॥
पासावा लइवनी बेल[10] तर अवरु बबुर[11] तर ए।
राजा धवरि[12] पइसेले गाजा[13] ओवर कहना धनि कुसल ए ॥२॥

---

[1]नक्षत्र। [2]बाल। [3]पुत्र, बेटा। [4]झिडकना। [5]अच्छा लगता है। [6]दासी। [7]प्रार्थना। [8]आपको। [9]बिल्वबृक्ष। [10]वृक्ष विशेष। [11]डाँट कर। [12]घर का कोना।

कापारा[1] त हमरो टनकेला,[2] ओदारा[3] चीलीकेला[4] ए।
राजा दुनिया भइले अनसुन,[5] कवन कही कुसल ए ।।३।।
आताना वचन राजा सुनलनि, सुनही न पवलनि ए।
राजा चलि गइले मोरंग देसवा, जहाँ बसे धगड़ीनि[6] ए ।।४।।
पूछेले अटइनि बटइनि[7] से, कुइयाँ[8] पनिहारिनि ए।
राजा पूछेले सहर के लोग से, काहा बसे धगड़ीनि ए ।।५।।
पूछेले अटइनि बटइनि कुइयाँ पनिहारिनि ए।
राजा पूछेला सहरवा के लोग, कहा रउरा जाइबी ए ।।६।।
उतर मुँहे उतराहुत[9], अवरु पछिमाहुत[10] ए।
ए राजा दुवारा चानानावा के गाछी[11], उहाँ उसे धगडीनि ए ।।७।।
के मोरा टट्टर[12] खोलेला, रतन पेवारेला ए।
ए राजा कवन सुहइया[13] केरा कन्त[14], अधही राति आवेला ।।८।।
हम रउरा टट्टर खोलीलें रतन पेवारीले ए।
ए धगड़ीनि हम राजा दसरथ के पुत्र, अधही राति आइले ए ।।९।।
किया रउरी माई वियाले[15] त बहिना आसापत्ति[16] ए।
राजा किया घरे घरनी वेयाकुल[17], हमरा के चाहेले ए ।।१०।।
ना मोरी माई वियाले त, बहिना आसापति ए।
ए धगड़ीनि मोरा घरे घरनी वेयाकुल, रउरा के चाहेले ए ।।११।।
आपाना के राजा हाथी करु अवरु जे घोडा करु ए।
ए राजा हमरा लाल ओहार[18] चढी हम जाइवि[19] ए ।।१२।।

सभा मे वैठे हुए राजा दशरथ से दासी आकर प्रार्थना करती है कि आपके घर में आपकी स्त्री व्याकुल है तथा आपको चाहती है ।।१।।

वेल तथा ववुर वृक्ष के नीचे पासा खेलते हुए राजा दशरथ उसे छोड कर, अपनी स्त्री के पास दौडे और वहाँ जाकर कुशल समाचार पूछा ।।२।।

---

[1]सिर। [2]दर्द करता है। [3]पेट । [4]दुखता है। [5]शून्य । [6]दाई (धाय)। [7]रास्ते के लोग । [8]कुआँ । [9]उत्तर की ओर। [10]पश्चिम की ओर। [11]वृक्ष । [12]टाट (छप्पर) । [13]स्त्री। [14]पति। [15]बच्चा पैदा करना । [16]आशावती, गर्भवती । [17]व्याकुल । [18]परदा। [19]जाऊँगी।

स्त्री ने उत्तर दिया कि हमारा सिर दर्द कर रहा है तथा मेरे पेट में दर्द है। ए राजा मेरे लिए ससार शून्य सा हो रहा है। अब मैं अपना क्या कुशल कहूँ ॥३॥

स्त्री के इस वचन को राजा ने ठीक से अभी सुना भी नहीं था कि वह मोरग देश की किसी धाय की खोज मे निकल गये ॥४॥

वे रास्ते के बटोहियो से तथा कुँओ पर पानी भरने वाली पनिहारिनो से और शहर के लोगो से उस स्थान का पता पूछने लगे जहाँ वह धाय रहती थी ॥५॥

बटोहियो, पनिहारिनो तथा शहर के लोगो ने राजा से यह पूछा कि आप कहाँ जायेंगे ? राजा के द्वारा उत्तर देने पर उन्होंने बतलाया कि यहाँ से उत्तर और पच्छिम की ओर उस धाय का घर है जहाँ पर चन्दन का वृक्ष लगा है ॥६।७॥

राजा धाय के घर मे जाकर घुसने लगा। तब उसने कहा कि कौन मेरे टट्टर को खोल रहा है। ऐ राजा तुम किस स्त्री के पति हो जो आधी रात को मेरे घर में चले आ रहे हो ॥८॥

राजा ने अपने को छिपाते हुए कहा कि मैं राजा दशरथ का लडका हूँ। मैं ही आधी रात को आकर तुम्हारे टट्टर को खोल रहा हूँ ॥९॥

उस धाय ने कहा कि क्या तुम्हारी माँ को बच्चा पैदा होने वाला है या तुम्हारी बहिन गर्भवती है अथवा तुम्हारी स्त्री व्याकुल है और मुझे चाहती है ? ॥१०॥

राजा ने उत्तर दिया कि मेरी माँ को न तो बच्चा पैदा होने वाला है और न मेरी बहिन गर्भवती है। ऐ धाय! मेरी स्त्री अत्यन्त व्याकुल है और वह तुमको चाहती है ॥११॥

धाय ने कहा कि ऐ राजा तुम अपने चलने के लिए हाथी और घोड़ा ठीक करो। परन्तु मेरे लिए पालकी का प्रबन्ध करो जिसमें लाल परदा लगा हुआ हो। मैं उसी में चढ़ कर तुम्हारे घर चलूँगी ॥१२॥

सन्दर्भ—स्त्री की पुत्र-कामना का वर्णन

(६)

गगा के ऊँच आरारवा[1], चढत डर लागेला[2] हो।
ताही चढि कोसिला नहाली, मुकुती[3] बनावेली हो ॥१॥
हँसि के जे बोलेली गगाजी, सुन ए कोसिला रानी हो।
ए कोसिला कवन सकट तोहरा परले[4] मुकुती बनावेलु हो ॥२॥
सोनवा ए गगा जी ढेर बाटे, रूपवा[5] के पूछेला हो।
मोरा रे सनततिया[6] के साध[7], सनतति हम चाहिले[8] हो ॥३॥

गगा का किनारा बहुत ऊँचा है। उस पर चढन से डर मालूम होता है। कौशिल्या उसी किनारे पर चढकर अपनी मुक्ति बनाने के लिए नहाने चली ॥१॥

गगाजी ने हँस कर कौशिल्या से कहा कि तुम पर कौन सी विपत्ति आ पडी है जिससे तुम अपनी मुक्ति बनाने के लिए स्नान कर रही हो ॥२॥

कौशिल्या ने उत्तर दिया कि ऐ गगाजी मुझे सोना की आवश्यकता नही है। चाँदी की तो चर्चा ही नही भला उसे कौन पूछता है। मुझे पुत्र की इच्छा है, वही मै चाहती हूँ ॥३॥

सन्दर्भ—सीता का वनवास, उनका विलाप तथा जंगल में पुत्र-जन्म।

(७)

राम अवरु लछुमन भइया, आरे एकली[9] बहिनियाँ हइहो की।
ए जीव राम जी बइठेले जेवनरवा[10], बहिन लइया[11] लावेरे की ॥१॥

---

[1]किनारा। [2]लगता है। [3]मुक्ति। [4]पडा है। [5]चांदी। [6]सन्तति (पुत्र)। [7]इच्छा। [8]चाहती हूँ। [9]अकेली। [10]भोजन। [11]मिथ्यारोप।

ए भइया भउजी के द ना वन बासवा, जिनि रावना' उरेहेले' की ॥२॥
जिनि सोना भूखा के भोजन देलों आरे लांगा' के बहतरवा' हो की।
से हो सीता गइँ वा रे आसापति, कइसे बनबासवि हो की ॥३॥
मोरा पिछुवारावा कहरवाँ भइया, वेगें चलि आवहु हो की।
भइया सीता जोगे डँडिया' रे फानाव, सीता के बन पहुँचावहु हो की ॥४॥
रोवेलि सीता देई अछन कइ, अवरु नीछन कई हो की।
ए जीव के मोरा आगावाँ से पाछावों, लटवा 'खोली नु हो की ॥५॥
वन में से निकले वनसपति" आरे सीता समुझावेले रे की।
ए सीता हम तोहरा आगावाँ से पाछावा, लटवा खोलवि हो की ॥६॥
कुसवा'" ओढन कुस डासन', वनफल भोजन हो की।
ए जीव कुसवे के हाजामा'' रे बनचलो, लोचन' पहुँचावेला हो की ॥७॥
पहिल लोचन राजा दसरथ, तब कोसिला रानी हो।
तीसरे लोचन लछुमन देवर, रमइया' जनि सुनसु हो ॥८॥
चारु चउखंड के पोखरवा, चुने" चुनघटल हो।
ताहि चढ़ि राम करे दतुवनि, नउवा'' लोचन लेलें जाला नु हो ॥९॥
काहावा" के हव तुहु हजमा, काहा रे तुहु जाल नु हो।
ए जीव केकरा भइले नन्दलाल, लोचन लेके जाल नु हो ॥१०॥
वन ही के हम हइ हाजामा, अजोध्या कहले जाइले हो।
ए जीव सीता के भइले नन्दलाल; लोचन लेके जाइले हो ॥११॥
पहिले लोचन राजा दलरथ; तब त कौसिला रानी हो।
ए जीव तीसरे लोचन लछुमन देवर, राम जनि सुनसु हो ॥१२॥

'दे दो। 'रावण। 'चित्र बनाती है। 'गंगा। वस्त्र। 'अधिक। 'पालकी। 'चढाओ। 'जोर से रोना। ''बाल। ''वन देवता। ''कुश। 'विछौना। ''नाई। ''सन्देश। ''राम। ''चूना। ''नाई। ''कहाँ से।

राजा दसरथ चढन के घोडवा; कोसिला रानी आभरन[1] हो।
ए जीव लछुमन दुनो काने सोनवा; नउवा रहसि[2] घर जावहु हो॥१३
चिठिया लिखेले राजा रामचन्द्र, देहु तुह सीता के हाथ में हो।
ए जीव सब कुछ अवगुनवा सीता अब बकसहु[3] हो ॥१४॥
इहो मूल[4] रहिते ससुर के, अवरु भसुर जी के हो।
ए जीव इहो सूलवा सालता[5] रे करेजवा, अजोध्या कइसे जाइबि
हो ॥१५॥

राम और लक्ष्मण दो भाई हैं और उनकी अकेली एक ही वहिन है। जब राम भोजन करने के लिए वैठते है तब वहिन सीता पर अनेक झूटी वाते कह कर मिथ्यारोप लगाती है ॥१॥

वहिन ने कहा कि ऐ भाई! भावज (सीता) को वनवास दे दो क्योकि यह पर-पुरुष रावण का चित्र वना रही थी ॥२॥

इस पर राम ने उत्तर दिया कि जो सीता भूखे को भोजन तथा नगे को वस्त्र देती है, जो सीता गर्भवती है, उसे मै वनवास कैसे दे सकता हूँ ॥३॥

परन्तु वहिन ने राम को सीता को वनवास दिलाने के लिये तैयार कर लिया और वह कहती है कि ऐ मेरे घर के पीछे रहने वाले कहार! तुम लोग शीघ्र चले आओ और पालकी पर चढा कर सीता को वन मे पहुँचा आओ ॥४॥

यह समाचार सुन वेचारी सीता वडे जोरो मे करुण क्रन्दन करने लगी और कहने लगी कि अव कौन मेरे वालो को खोलेगा (और उनका प्रसाधन करेगा) ॥५॥

जव सीता वन में पहुँची तव वन-देवी वन में से निकल कर सीता को समझाते हुए कहने लगी कि ऐ सीता! मै तुम्हारे वालो को खोलूगी ॥६॥

---

[1]आभूषण। [2]आनन्द से। [3]क्षमा कर दो। [4]दुख। [5]कष्ट देता है।

सीता ने कुश (घास विशेष) का ही ओढना तथा कुश का ही बिछौना बनाया। वन के फलो का भोजन करने लगी। उसने कुश का ही एक नाई बनाया और उसे अपना सन्देश पहुँचाने के लिए अयोध्या भेजा ।।७।।

सीता ने उस सन्देश-वाहक से कहा कि इस सन्देश को पहिले राजा दशरथ सुने, फिर रानी कौशल्या सुने, फिर लक्ष्मण। परन्तु राम को यह सन्देश बिल्कुल मत सुनाना ।।८।।

एक बहुत बडे, चौडे तालाब के किनारे के मकान के ऊपर जो चूने से पुता हुआ था——रामचन्द्रजी दतौन कर रहे थे। नाई उस समय सन्देश लिये हुए जा रहा था ।।९।।

रामचन्द्र ने उससे पूछा कि ऐ नाई! तुम कहाँ से आये हो और कहाँ जाओगे। किसको पुत्र हुआ है? जिसका सन्देश तुम लेकर जा रहे हो ।।१०।।

नाई ने उत्तर दिया कि मैं वन मे से आ रहा हूँ और अयोध्या जा रहा हूँ। सीताजी को पुत्र हुआ हैं। वही सन्देश लेकर मैं अयोध्या को जा रहा हूँ ।।११।।

मैं इस सन्देश को पहिले राजा दशरथ को सुनाऊँगा, फिर रानी कौशिल्या को, फिर लक्ष्मण को। परन्तु राम को मैं यह सन्देश नहीं सुना सकता ।।१२।।

जब नाई ने यह सन्देश राजा दशरथ को सुनाया तो प्रसन्न होकर उन्होंने चढने के लिए नाई को एक घोडा दिया। रानी कौशिल्या ने आभूषण दिये तथा लक्ष्मण ने दोनो कानो का सोना अर्थात् कुण्डल दिया। नाई इस सब सामान को लेकर प्रसन्न होकर वन को चला गया ।।१३।।

जब नाई वन को लौटने लगा तो रामचन्द्र ने उसको एक पत्र दिया और कहा कि इसे सीता के हाथो में दे देना तथा मेरी ओर से यह कहना कि सीता मेरे सब दोषो को क्षमा कर दें ।।१४।।

नाई ने सीता से राम का सन्देश कहा तब सीता ने उत्तर दिया कि राम का दिया हुआ वनवास रूपी कष्ट मेरे हृदय को वेध रहा है। मैं भला अयोध्या कैसे लौट सकती हूँ ।।१५।।

इस गीत में जिस घटना का वर्णन किया गया है वह ऐतिहासिक दृष्टि

से अत्यन्त अशुद्ध है। सीता का वनवास राम की वहिन (शान्ता) के कुचक्र के कारण नहीं हुआ था वल्कि एक धोवी के अपवाद के कारण हुआ था। सीता के द्वारा पुत्र-जन्म का सन्देश भेजना भी ऐतिहासिक तथ्य के विरुद्ध है। अत यहाँ राम एव सीता का अर्थ किसी साधारण व्यक्ति से समझना चाहिए, दशरथ के पुत्र और पुत्र-वधू से नही।

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म के लिए स्त्री की प्रवल-कामना

(८)

तर वहे गगा से जमुना उपर मधु पीपरि[१] हो।
की ए जीव ताहावाँ वसेलें[२] राजा ठाकुर पुतरी उरेहेलें[३] हो ॥१॥
मोरा पिछुवारावा पडित भइया वेगे चलि आवहु हो।
ए भइया का विधि लिखल लिलार सँतति नाहि पाइले हो ॥२॥
नइ पोथी खोलले पुरानी पोथी खोलले, करम वाँचि[४] दिहलनि हो।
ए रानि नाहि विधि लिखले लिलार[५] सँतति[६] नाहि मिलेला[७] हो ॥३॥

कोई स्त्री पुत्र न होने के कारण से दु खी है। वह कहती है कि नीचे गगा वहती है और उसके पास ही यमुना वहती है। वहाँ एक मधुर पीपल का पेड है। वहाँ मेरा पति रहता है तथा चित्र वनाया करता है ॥१॥

स्त्री ने कहा कि ऐ मेरे घर के पीछे रहने वाले पण्डित जी तुम शीघ्र चले आओ और देखो कि ब्रह्मा ने मेरे ललाट मे सन्तति (पुत्र) का होना लिखा है या नही ॥२॥

पण्डित जी आये और नई तथा पुरानी पुस्तको को खोल कर देखा। उस स्त्री की कर्म-रेखा को पढा और कहा कि हे स्त्री ब्रह्मा तुम्हारे लिलार मे पुत्र का योग नही लिखा है अतएव तुम्हे पुत्र पैदा नही हो सकता ॥३॥

प्राचीन काल से ही पुत्र का पैदा होना वहुत वडे सौभाग्य तथा उत्सव

---

[१]पीपल। [२]रहता है। [३]चित्र। [४]पढकर के। [५]ललाट। [६]सन्तति (पुत्र)। [७]मिलेगा।

का अवसर समझा जाता है। हमारे षोडश संस्कारों में 'पुंसवन' संस्कार एक बड़ा संस्कार समझा जाता था। यह संस्कार इसलिए किया जाता था कि होनेवाली सन्तान पुत्र ही हो, पुत्री नहीं। पुत्र का होना यहाँ तक आवश्यक समझा जाता था कि शास्त्रकारों ने विधान कर दिया कि "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति"। यह भावना देहातों में अब भी दृढ़मूल है। अतएव पुत्रहीन स्त्रियों की चिंता का अनुमान सहज ही में किया जा सकता है। इस गीत की स्त्री पुत्राभाव में इसीलिए इतनी व्याकुल है।

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म

(९)

घर घर फिरेले नउनिया[1] त अवरु बरीनिया[2] नु ए।
ए रानि आजु मोरा राम जनमिहें भरतजी के तीलक ए ॥१॥
ओबरीनी[3] झगडेले धगडिनिया, दुअरिया पर नाउनि ए।
ए रानि हम लेबों राम ओढ़निया[4] तबहिं नोह[5] टुंगबि[6] ए ॥२॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर-घर में नाउनि (नाई की स्त्री) और बारी (कहार) की स्त्री घूम रही हैं। वे कहती हैं कि ऐ रानी आज मेरे इस घर में राम (पुत्र) पैदा होगा और भरत (दूसरे पुत्र) का तिलक होगा ॥१॥

धाय (दाई) घर में अपना पुरस्कार लेने के लिए झगड़ा कर रही है और दरवाजे पर नाई की स्त्री बैठी है। वह कहती है कि ऐ रानी मैं पुत्र जन्म के पुरस्कार स्वरूप ओढ़ने के लिए चादर लूँगी, तभी तुम्हारे नख को काटूँगी ॥२॥

सन्दर्भ—पुत्र-जन्मोत्सव का विशद वर्णन

(१०)

बाजन बाजेला बनहिं बीखे[7], अजोधा में तड़पेला[8] हो।
लालाना असीहिं कोस हो अजोधा, सबद[9] कानवा परि जइहे हो ॥१॥

---

[1]नाई की स्त्री। [2]बारी की स्त्री। [3]घर में। [4]चादर। [5]नख। [6]काटूँगी। [7]मध्य में। [8]दुखी होते हैं। [9]शब्द।

हकर[1] अजोधा के काँहारा[2] वेगहि चलि आव सु हो।
काहारा सीता जोगे डॅडिया फानाव, अजोधा पहुचावहु हो ॥२॥
हथिया ना देखो हथिसारावाँ[3], भइसि डील डावर[4] हो।
लालाना गोऊ ना देखो गोऊसालावा[5], अजोधा हमारा लुटि गइले हो ॥३॥
हथिया त देखों बभन[6] दान, भइसि भटन[7] दान हो।
ललना गइया[8] भइल साधु दान, गोदिन[9] का जनम भइल हो ॥४॥
काकाना[10] ना देखिले लुलुहि[11] बीखे, दुलरी[12] गलहीं[13] बीखे हो।
ललना मोतिया ना देखो सिर मॉग, अजोधा लुटि गइले हो ॥५॥
काकाना ननद दान कइलें, दुलरी कइली सासु दान हो।
राम धन, धान लुटवले, उछाह[14] सतति भइलें[15] हो ॥६॥

सीता को वाल्मीकि के आश्रम मे पुत्र रत्न उत्पन्न हुए हैं। उसी समय का यह वर्णन है। सीता के पुत्र होने के कारण से वन मे वाजा वज रहा है परन्तु अयोध्या के लोग उस उत्सव मे सम्मिलित न हो सकने के कारण से दुःखी हो रहे हैं। सीता जी कहती हैं कि अयोध्या यहाँ से अस्सी कोस है। शायद ही वहाँ के लोगो के कान मे यह आवाज पडे ॥१॥

कोई सखी कहती है कि अयोध्या मे कहारो को शीघ्र ही वुलाओ। ऐ कहार! सीता को पालकी मे बैठा लो और शीघ्र अयोध्या पहुँचा दो ॥२॥

जव सीता अयोध्या को लौट रही है तो वह कहती है कि हस्तिशाला मे मैं हाथी नही देखती हूँ। गोशाला मे गाय और भैंस को नही देख रही हूँ। मालूम होता है कि हमारी अयोध्या लुट गई हो ॥३॥

---

[1]बुलाओ। [2]ढोने वाले। [3]हस्तिशाला। [4]निवास स्थान। [5]गोशाला। [6]ब्राह्मण। [7]भाट। (भट्ट)। [8]गाय। [9]पुत्र। [10]कंकण। [11]हाथ। [12]हार। [13]गला। [14]आनन्द। [15]हुआ है।

हाथी तो ब्राह्मन को, भैंस भाटो को तथा गाय साधुओं को दान में दे दी गई हैं क्योंकि मेरे पुत्र पैदा हुए हैं ॥४॥

घर की स्त्रियों के हाथ में न तो कंकण दिखाई पड़ता है और न गले में हार ही। सिर के माग में पिरोये हुए मोती भी नहीं दीखते है। हमारी अयोध्या लुट गई है ॥५॥

हमारी ननद ने कंकण और सास ने हार दान कर दिया है। राम ने पुत्र-जन्म के आनन्द तथा उत्सव में अपना धन तथा धान्य सब गरीबों को दान देकर लुटा दिया है ॥६॥

इस गीत में पुत्र-जन्म के उत्सव के उछाह का बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। इस उत्सव में जिसे जो वस्तु प्यारी है उसे ही लुटा रहा है। पुत्र के पिता ने तो अपना धन, धान्य ही लुटा दिया। आजकल भी पुत्र-जन्म के अवसर पर अनेक दान-पुण्य तथा उत्सव मनाये जाते हैं। दिलीप को तो इस अवसर पर तीन को छोड़ चौथी कोई वस्तु भी "अदेय" नहीं थी।

"जनाय शुद्धान्तचराय शंसते, कुमार जन्मामृतसम्मिताक्षरम्।
अदेयमासीत्त्रयमेव भूपते, शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे ॥"

सन्दर्भ—पुत्र-जन्म के पहिले स्वप्न-दर्शन विचार

(११)

सुतल रहलों रे अटरिया, सपन एक देखिले हो।
आरे हाइ रे सासु सपनवा के कारन बीचार, सपन एक देखिला हो ॥१॥

गइया के देखलों बछरुआ[1] सगे, बाभाना[2] जनेउवा[3] सगे हो।
कि हाइ रे सासु आँगना में देखलों रे कलसवा[4], त असवा ववद[5] फरे हो ॥२॥

---

[1]बछड़ा। [2]ब्राह्मण। [3]यज्ञोपवीत। [4]कलश। [5]प्रचुर।

गइया त हवे लछिमिया¹, त बाभाना नारायन हो।
हाइ रे वहुआ कलसवा त तोरे एहवात², त अमवा सँतति हवे³ रे॥३॥

कोई वधू अपनी सास से कह रही है कि मैं अटारी पर सो रही थी। उसी समय मैंने एक सपना देखा। ऐ सास! मेरे सपने के फल का तुम विचार करो॥१॥

मैंने गाय को अपने बच्चे के साथ, ब्राह्मण को जनेऊ के साथ देखा। मैंने आँगन में घडे को रक्खा हुआ तथा आम को खूब फलते हुए देखा है॥२॥

सास ने सपने के फल का विचार करके कहा कि ऐ वहू! गाय लक्ष्मी है, ब्राह्मण नारायण है, आँगन में रक्खा हुआ कलश तुम्हारा सौभाग्य है तथा आम पुत्र होने का लक्षण है॥३॥

सन्दर्भ--पति के द्वारा छिपकर गर्भाधान करना

(१२)

माघ ही मास के चउथिया⁴ वहुवा मोरी भूखेले हो।
ए ललना वहुवा चलेले असनान, त सासु नीरेखेले⁵ हो॥१॥
ए वहुवा कवना चेलिकवे⁶ लोभइलु गरभ रहि गइल रे।
पूत मोरा वसेला अजोध्या पतोहिया राजा ओवरि रे॥२॥
पूत रउरा वसेले अजोधा, पतोहिया राजा ओवरि रे।
सासु भँवारा⁷ सरीखे प्रभु अइले, गरभ रहि गइल रे॥३॥
मोरा पिछुवारावा पटहेरा⁸ भइया, वेगे चलि आवहु रे।
भइया रेसम के जलिया⁹ वीनि देहु, त भँवरा वझाइवि¹⁰ रे॥४॥
घरी राति गइली पहर राति गइली, त भँवरा वझाइलेनि रे।
सासु चीन्हि¹¹ लेहु आपन वेटवना, कलंक जनि लावहु रे॥५॥

---

¹लक्ष्मी। ²सौभाग्य। ³है। ⁴चौथ। ⁵देखती है। ⁶परपुरुष। ⁷भ्रमर। ⁸गहना गूँथने वाला। ⁹जाल। ¹⁰फँसाऊँगी। ¹¹पहचानो।

ए वहुवा सापावा गोजरवा[१] लाँघी अइल वलइया[२] हमरा लागहु रे।
भल कइलु ए वहुवा भल कइलु, वेटवा[३] वियइलु[४] नु रे ॥६॥

माघ के महीने मे वधू ने करवा चौथ का व्रत किया था। अतएव वह उस दिन उपवास कर रही थी। जब वह स्नान करने के लिए चली तो सास ने उसे देखा ॥१॥

कुछ दिनो के पश्चात् जब उस स्त्री को गर्भ रह गया तब सास ने उससे कहा कि तुम किस पर-पुरुष से फस गयी हो, जिसके कारण तुम गर्भवती हो? मेरा लडका अयोध्या (परदेश) मे रहता है ॥२॥

इस पर वधू ने उत्तर दिया कि लडका अयोध्या में रहता है और पतोहू घर में रहती है यह कथन ठीक है। परन्तु भ्रमर के समान छिपकर मेरा पति मेरे पास आया था। इसी कारण से मुझे गर्भ रह गया है ॥३॥

वधू ने कहा कि ऐ मेरे घर के पीछे रहनेवाले पटहेरा (वह जाति जो गहना गूँथती है) भइया! तुम जल्दी चले आओ । रेशम का एक जाल बुन कर मुझे दो। मै एक भ्रमर (पति) को फँसाऊँगी ॥४॥

एक घडी रात गई; एक प्रहर रात बीत चली तब कहीं पति आया स्त्री ने उसे अपनी बातो में फँसा लिया और सास से कहा कि अब तुम अपने बेटे को पहिचान लो तथा फिर मुझे कलक मत लगाओ ॥५॥

सास ने लज्जित होकर कहा कि मेरा लडका रात्रि मे साँप और गोजर को लाँघ कर आया होगा। मै उसकी बलैया लेती हूँ। ऐ वधू! तुमने अच्छा काम किया जिससे तुम्हे पुत्र पैदा हुआ ॥६॥

सन्दर्भ—स्त्री के प्रसव-कष्ट का वर्णन

(१३)

एके कोठरिया[६] में दूनो जना, दूनो जना केलि[७] करसू[८] रे।
आरे अंग अग पीरवा[९] अँगइले[१०], केहु नाहि जागेला रे ॥१॥

---

[१]कीडा। [२]निछावर। [३]अच्छा काम किया। [४]पुत्र। [५]पैदा किया। [६]कमरा। [७]क्रीडा आनन्द। [८]करते है। [९]व्यथा। [१०]समा गया।

आरे एक जागे छोटका देवरवा, जिन्हि बँसिया वजावेले रे।
आरे एक जागे चेरिया लउँड़िया; जिन्हि अँगना वहारेले[1] रे ॥२॥
ए चेरिया दुअरा[2] सुतेला सजइतवा[3]; वोलाइ घरवा देहु न रे।
ए सजइत रउरा धनि वेदने[4] वेयाकुल; रउरा के वोलावेलि रे ॥३॥
पासावा लडवनी वेल तर अवरु ववुर तर रे।
ए सजइत धवरि[5] पइसेले गाजा ओवर, कह ना धनि कुसल रे ॥४॥
ए सजइत हँसि हँसि विरवा[6] लगावेले, मुसुकि[7] जनि वोलहु हो।
ए सजइत वुझि[8] जाहु आपन अवगुनवा, मुसकि जनि वोलहु हो ॥५॥
ए सजइत मिलि जुलि बन्हली रे मोटरिया[9], खोलत वेरियाँ[10] अकसर[11] हो।
छनिया[12] त रहीत छवाह[13] दिहतों लोगवा[14] वटोरि[15] दिहतों हो ॥६॥
ए धनिया आजु त कुवति[16] तोहार, ऊपर परमेसर[17] हो ॥७॥

एक ही कमरे में दो आदमी—स्त्री और पुरुष हैं और दोनों भोग-विलास कर रहे हैं। गर्भाधान के वाद जव लडका होने का समय आया तव स्त्री के अग-अग मे पीडा होने लगी। परन्तु कोई नही जगा ॥१॥

केवल एक छोटा देवर जो वशी वजाया करता था—जगा। फिर वह दासी जगी जो आँगन मे झाडू लगाया करती थी ॥२॥

स्त्री ने उस दासी से कहा कि ऐ दासी! मेरा पति वाहर द्वार पर सो रहा है, उसे जाकर वुला लाओ। दासी ने पति से कहा कि तुम्हारी स्त्री पीडा मे व्याकुल है और तुम्हे घर मे वुला रही है ॥३॥

---

[1]झाडती है। [2]द्वार। [3]पति। [4]वेदना। [5]दौड कर। [6]बीडा (पान का) [7]मुसकराना। [8]समझ जाओ। [9]गठरी। [10]समय। [11]अकेला। [12]छप्पर। [13]मरम्मत कराना। [14]मनुष्य। [15]इकट्ठा करना। [16]शक्ति। [17]परमेश्वर।

पति यह समाचार सुनते ही दौड़कर के घर में घुस गया और स्त्री ने पूछा कि तुम्हारी क्या हालत है ।।४।।

स्त्री ने उत्तर दिया कि ऐ पति ! तुम हँस-हँस कर पान का बीड़ा ला रहे हो । परन्तु तुम मुसकरा कर मत बोलो । तुमने जो करतूत किया है उसे समझ जाओ और मुसकरा कर मत बोलो ।।५।।

स्त्री ने फिर कहा कि हम दोनों ने मिल करके पुत्र-जन्म रूपी गठरी को बाँधा परन्तु इस गठरी को मुझे ही अकेले खोलना पड़ रहा है अर्थात् गर्भाधान के कारण हम दोनों आदमी हैं परन्तु प्रसव-पीड़ा मुझे अकेली ही सहनी पड़ रही है ।।६।।

पति ने उत्तर दिया कि ऐ स्त्री ! यदि छप्पर को छवाना (मरम्मत करना) होता तो मैं अनेक आदमियों को इकट्ठा करके छवा देता । परन्तु इस कार्य में मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ ? इस समय तो तुम्हारी सहन-शक्ति और परमेश्वर के भरोसे ही बेड़ा पार लग सकता है ।।७।।

इस गीत में पति के संयोग-समागम को "अवगुनवा" कहना कितना व्यंजना-पूर्ण है । इससे निकलने वाली ध्वनि को सहृदय ही समझ सकते हैं । जिस दुःख में हाथ बँटाने में पति असमर्थ है उस दुःख को उसे स्त्री को देने का क्या अधिकार है । यदि उसका यह कार्य 'अवगुण' नहीं तो और क्या कहा जाय ? इस गीत में एक दूसरी विशेषता है पुत्र को स्त्री तथा पुरुष के द्वारा मिल-जुल कर बाँधी गई गठरी कहना । वास्तव में पुत्र स्त्री-पुरुष के परस्पर प्रेम की ग्रन्थि रूप होता है । महाकवि भवभूति ने उत्तर-रामचरित (३ अंक १७ श्लोक) में पुत्र को दम्पति की प्रेम-ग्रन्थि कहा है—

> अन्तःकरण तत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेह संश्रयात् ।
> आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति कथ्यते ।।

वास्तव में पुत्र स्त्री-पुरुष की प्रेम-मंजरी का फल है । भाव बहुत ही सुन्दर है ।

सन्दर्भ—चौर्य-रति-वर्णन

(१४)

साँझ ही चोरवा[1] समइले, पलँग चढ़ि बइठले हो।
आरे हाइ रे मुसलनि[2] प्रेम धरोहर हरखि के बाहर भइले हो ॥१॥
मुसलनि खाटी तर के पाटी, सिरहाना[3] पटडेहरि हो।
आरे हाइ रे सासु मुसलनि राउर[4] बेटा, हरखि के बाहर भइले हो ॥२॥

कोई स्त्री कहती है कि ऐ सास! तुम्हारा लड़का साँझ ही को हमारे घर में चोर की तरह घुस आया और मेरे पलँग पर आकर बैठ गया। वह आकर मेरे प्रेम रूपी धरोहर को चुरा ले गया और बाहर चला गया ॥१॥

चारपाई की पाटी तथा सिर की तकिया वह चुरा ले गया। ऐ सास तुम्हरा बेटा आनन्द में बाहर चला गया ॥२॥

सन्दर्भ—पुत्रजन्म के बाद पति द्वारा स्त्री का उपचार

(१५)

कवन राम के ऊँची चउपरिया[5], मानिक[6] दीप जरेला[7] हो।
आरे कवन राम के इहे बिरिज नारी[8], त पुत्र भले सोभेला हो ॥१॥
दुवरा से अइले कवन राम, अपना नारि से बिनती करे हो।
बहुवा तुम्हे तिलरी[9] गढ़ाईं[10], पियहु मधु पीपरि हो ॥२॥
पीपरि के झार[11] हम न सहबि, पीपरि हम न पीयबि हो।
ससुर आँसू भरेला दुनो नयना, पीपरि हम ना पीयबि हो। ३॥

---

[1]चोर। [2]चुरा लिया। [3]सिर की ओर। [4]आपका। [5]चौपाल। [6]माणिक्य। [7]जलता है। [8]स्त्री। [9]हार। [10]गढ़ा दूँगा। [11]कष्ट।

दुवरा से अइले कवन राम, अहपि[1] तहपि बोलेला हो।
धनिया करबो मैं दोसर बियाह[2], पियहु मधु पीपरि हो ।।४।।
सवती[3] के जार हम ना सहबि, पियबि हम पीपरि हो।
ए प्रभु पगरी के पेचवे छनइलो[4], पीयबि मधु पीपरि[5] हो ।।५।।

किसी पुरुष की ऊँची चौपाल है। उसमे माणिक्य के समान उज्ज्वल प्रकाशमान दीप जल रहा है। इसकी स्त्री को पुत्र हुआ है जो बहुत अच्छा लगता है ।।१।।

द्वार पर से पति घर मे आया और अपनी स्त्री से प्रार्थना करने लगा कि ऐ स्त्री! तुम मधु और पीपल खाओ। (जिससे पेट का दर्द जाता रहे)। मैं तुम्हारे लिए गले का हार बनवा दूंगा ।।२।।

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं पीपल खाने के कष्ट को स्वीकार नहीं कर सकती। ऐ ससुर! मेरी दोनो आँखो मे आँसू भर रहे है, अतएव मैं मधु पीपल नही पी सकती हूँ ।।३।।

जब पति को पता चला कि उसकी स्त्री पीपल नहीं खा रही है तब वह द्वार पर से घर आया और गरज-गरज कर अपनी स्त्री से कहने लगा कि यदि तुम मधु और पीपरि नहीं खाओगी तो मैं दूसरा विवाह कर लूँगा ।।४।।

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं सपत्नी के कष्ट को नही सहन कर सकती। ऐ पति! तुम अपनी पगडी के कपडे में पीपल को छान लो तो उसे मैं अवश्य पी लूंगी ।।५।।

सन्दर्भ--पुत्र-जन्म के कारण प्रसन्नता का एवं पुत्री-जन्म के भय का वर्णन

(१६)

माघ ही पूस के रहरिया[6] त झपर झपर[7] करे रे।
ए ललना ओइसन झपेरे[8] हमरा हरि जी, त बबुआ के जनम सुने रे।।१।।

---

[1]गरज करके। [2]विवाह। [3]सपत्नी। [4]छाना गया। [5]पीपल वृक्ष विशेष का फल। [6]अरहर। [7]लहलहाती है। [8]आनन्दित होते हैं।

जइसन कासी में सिव हवे, नरलोक पूजेला रे।
ओइसन पूजेले हमरो हरि जी, त बबुआ का जनल नु रे ॥२॥
साल ओढ़न साल डासन, मेवा फल भोजन रे।
ए ललना चनन के जरेला पँसगिया[1], निनरि[2] भल आवेला रे ॥३॥
जइसन दहे[3] मे के पुरइनि[4] दहे विचे काँपेले[5] रे।
ए ललना ओइसन काँपेले हमरो हरि जी, धिया[6] कारे जनम नु रे ॥४॥
कुस ओढन कुस डासन, वन फल भोजन रे।
ए ललना खुखुडी[7] के जरेला पँसगिया निनरियो[8] ना आवेला रे ॥५॥

जिस प्रकार माघ और पौस के महीने में अरहर का पौधा लहलहाता है उसी प्रकार मे हमारा पति पुत्र-जन्म के उत्सव में आनन्दित हो रहा है ॥१॥

जिस प्रकार काशी के लोग शिव अर्थात् विश्वनाथजी की पूजा करते हैं उसी प्रकार से पुत्र-जन्म के अवसर पर मेरा पति मुझे पूजता अर्थात् आदर देता है ॥२॥

स्त्री कहती है कि शाल अर्थात् दुशाला मुझे बिछाने को तथा दुशाला ही ओढने को मिलता है। भोजन के लिए मेवा फल मिलता है। मेरे पाँसग मे चन्दन जलता है। अतएव नीद खूब आती है ॥३॥

जिस प्रकार से तालाव के बीच में स्थित पुरैन का पत्ता काँपता रहता है उसी प्रकार से मेरा पति पुत्री का जन्म होने से काँपता अर्थात् डरता है ॥४॥

दुर्भाग्य से यदि लडकी पैदा हो जाती है तो वह कुश ओढने को देता है और कुश ही बिछाने को देता है। वन के फल भोजन करने को देता है। बुरी लकडी जलाने के लिए देता है जिससे मुझे नीद नही आती ॥५॥

---

[1]गर्भगृह या प्रसवगृह के द्वार पर जलने वाली लकडी। [2]नींद। [3]तालाव। [4]पुरैन का पत्ता। [5]काँपती है। [6]पुत्री। [7]नीच काष्ठ। [8]नींद।

यो तो लडकी का पैदा होना सर्वत्र बुरा माना जाता है परन्तु देहाती दुनिया मे यह विशेष कर गर्हित समझा जाता है। देहातो मे कहते है कि लडकी के पैदा होते ही तीन हाथ पृथ्वी नीचे दब जाती है। जिस स्त्री को लडकी पैदा होती है उसका आदर नही होता और उसको वस्त्र तथा भोजन भी बुरा दिया जाता है। उपर्युक्त गीत मे इसी दशा का चित्रण किया गया है।

सन्दर्भ—वन्ध्या की मनोवेदना का वर्णन

(१७)

गया नहइलो गजाधर,[1] अवरु बेनी माधव रे।
ए ललना! अतना तीरिथि[2] हम कइली, बाँझिनि[3] रहि गइली नु रे॥१॥
सासु ससुर नाहि मनलू, ननद ना दुलारेलु रे।
भसुर अलोत देइ ना चललू, बाँझिनि होइ गइलू नु रे॥२॥
सासु ससुर अब मानबि ननदो[4] दुलारबि नु रे।
ललना भसुरा अलोत[5] देइ चलबि, बाँझिनि रहि गइली नु रे॥३॥
नदिया का तीरे कदम गाछि अवरु चनन गाछि रे।
ए ललना ताहि तर ठाढ़ रे नारायन, बालाका उरेहेले रे॥४॥
अताना तीरिथि हम कइली, बाँझिनि हम रहि गइली रे॥५॥

कोई बाँझ (वन्ध्या) स्त्री पुत्र के अभाव के कारण दुःखी होकर स्वत कह रही है कि पुत्र की प्राप्ति के लिए मैने गया, गजाधर तथा वेनीमाधव (काशी) आदि अनेक तीर्थो मे भ्रमण किया परन्तु फिर भी मै बाँझ रह गई॥१॥

इसके उत्तर मे किसी दैवी शक्ति ने कहा कि तुमने अपनी सास और ससुर का आदर नहीं किया, ननद को प्यार नहीं किया, भसुर से परदा नहीं किया। इसीलिये तुम बाँझ रह गयी॥२॥

---

[1] और। [2] तीर्थ। [3] वन्ध्या। [4] प्यार करूँगी। [5] परदा। [6] वृक्ष।

इस पर स्त्री ने कहा कि अब सास, ससुर का आदर करूंगी, ननद को प्यार करूंगी, भसुर से परदा करूंगी ॥३॥

उत्तर मिला कि नदी के तीर पर कदम्ब और चन्दन का वृक्ष है। वहां पर भगवान् बालक की सृष्टि करते हैं चली जाओ। स्त्री ने वहाँ जाकर भगवान् से प्रार्थना की कि मैंने इतना तीर्थ किया फिर भी बाँझ ही रह गई ॥४॥

सन्दर्भ—पुत्र-जन्मोत्सव के उछाह का वर्णन

(१८)

नन्द दुआरे कीरतन[1] होला देस देस आनन्द ए।
देस देस के लोग जागे, धगड़िनि नाहिं जागेले ए ॥१॥
उठु उठु धगड़िनी गरभी गुमानी, डीठ के ढारहु पाँव ए।
नन्द जसोदा घरे कान्ह जनमले, तीनों लोक आनन्द ए ॥२॥
उहवाँ से धगड़िनि दुअरा आइलि, बोल बोलले अभिमान ए।
लाल पाट के जाजिम माँ गेले, खोरी खोरी डसाव[2] ए ॥३॥
उहवाँ धगड़िनि ओवरिनि अइली, बोल बोलेले अभिमान ए।
सोने के छुरी हम नार छीनवि,[3] रूपे की थारी नहवाऊ ए ॥४॥
गंगा जी से जल भरि मँगाइवि कान्ह के नहवाइवि ए।
ओवरिनि बइठलि कहत जसोदा, धगड़िनि अरज हमार ए ॥५॥
कवन वहतर[4] रउरा चाही से, हमे कही ना समुझाई ए।
पाट पीतम्बर हमरा के वाढहु जीयसु[5] बबुआ तोहार ए ॥६॥
पियर वहतर हमरा के चाही, हमे आनि पहिराइ ए।
पहिरि ओढ़िय धगड़िनी अइली, उनका से अरज[6] हमार ॥७॥
अइसन असीस[7] दे ए धगड़िनि, जीयसु बबुआ हमार ए ॥८॥

---

[1]कीर्तन। [2]बिछाओ। [3]काटूंगी। [4]वस्त्र। [5]जीवें। [6]विनती।
[7]आशीर्वाद।

नन्द के घर लड़का पैदा हुआ है अतएव कीर्तन हो रहा है और देश देश में आनन्द मनाया जा रहा है। सब लोग जग गये है परन्तु धाय अभी तक नहीं जगी ॥१॥

तब किसी ने धाय के घर जाकर उससे कहा कि ऐ घमंडी धाय! उठो तथा यहाँ से चलो। नन्द और यशोदा के घर पुत्र पैदा हुआ है अत तीनों लोक में आनन्द फैला हुआ है ॥२॥

तब धाय उठकर अपने घर से नन्द के द्वार पर गई और अभिमान से युक्त बोली बोलने लगी उसने कहा कि लाल रंग का जाजिम लाओ और उसे बिछाओ ॥३॥

उसके बाद धाय घर में आई और अभिमान पूर्वक कहा कि इस बच्चे का नार (नाल) काटने के लिए सोने की छुरी लाओ और नहाने के लिए चाँदी का थाल लाओ ॥४॥

गंगा जी का जल लाओ जिससे मैं इस बालक को नहलाऊँ। घर में बैठी हुई यशोदा ने कहा कि ऐ धाय! मेरी विनती सुनो ॥५॥

तुम्हें कौन-सा वस्त्र चाहिए इस बात को समझ कर कहो। धाय ने उत्तर दिया कि मुझे रेशमी कपड़ा मिलना चाहिए। तुम्हारा बच्चा चिरायु हो ॥६॥

धाय ने कहा मुझे पीला वस्त्र पहनाओ। जब धाय पीले वस्त्र को पहन कर आँगन में खड़ी हुई तब यशोदा ने उससे विनती करते हुए कहा कि ऐ धाय! तुम ऐसा आशीर्वाद दो जिससे हमारा बच्चा बहुत दिन तक जीता रहे ॥७।८॥

इस गीत में पुत्र-जन्म के उत्सव का बड़ा ही सुन्दर वर्णन है। आनन्द के इस अवसर पर धाय का 'डिमाण्ड' बढ़ता ही चला जाता है। पुत्र-जन्म के समय पर इस प्रकार के उत्सव सर्वत्र देखे जाते हैं। अत उपर्युक्त वर्णन बहुत ही स्वाभाविक मालूम पड़ता है।

सन्दर्भ—प्रसव-पीड़ा का वर्णन

(१९)

सोने का खरउवाँ राजा रामचन्द्र, आमा से अरज करे हो।
ए आमा जीरवा[1] अइसन धनी पातर, वेदने वेयाकुल बोलावे हि हो॥१॥
जइतीं त बबुआ[2] जइतीं, त तोहरा बचनिया सुनि हो।
ए बबुआ तोरी धनी हाथवा के सकट[3], मुँहवा से फुहर[4] बोले हो॥२॥
काँखहु ए धनी काँखहु, कोठिला के आन धइले हो।
ए धनिया रामजी के बान्हल मोटरिया[5], कले कले[6] खुलेला हो॥३॥

सोने के खटाऊँ पर चढ़े हुए राजा रामचन्द्र अपनी माता से प्रार्थना करते हैं कि ऐ माता! जीरे के समान पतली मेरी स्त्री प्रसव-वेदना में व्याकुल है और आप को बुला रही है॥१॥

माता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटा! तुम्हारे वचन को सुन कर मैं अवश्य जाती परन्तु तुम्हारी स्त्री बड़ी ही कजूस है और मुंह से गन्दी बातें बकती है॥२॥

तब रामचन्द्र ने अपनी स्त्री से कहा कि ऐ स्त्री किसी प्रकार से तुम कष्ट सह लो। ईश्वर के द्वारा बाँधी गई गठरी (पुत्र) धीरे-धीरे खुल रही है॥३॥

सन्दर्भ—पुत्र-जन्मोत्सव में दान का वर्णन

(२०)

चारु खण्ड के हवेलिया[7], चुने चुनवटल रे।
एजी ताहि चढ़ि सुते, राजा दसरथ, कोसिला रानि लाढ[8] लावेरे॥१॥
का हम देवों बभन जी के अवरु भटन जी के रे।
का हम देवों धगडीनि, कन्हैया जी के जनम नु रे॥२॥

---

[1] जीरा। [2] जाती। [3] कजूस। [4] गन्दी बाते। [5] पुत्र। [6] धीरे-धीरे।
[7] घर। [8] नखरा।

सोनवा मैं देवो बभन जी अवरु रूपवा भटन जी के रे।
रानी पाँचो[1] टुक कपड़ा धगड़िनिया, कन्हैया के जनम नु रे ॥३॥
पहिरि ओढ़ि धगडीनि ठाढ भइली, अदित[2] मनावेली[3] हो।
अदीत बढसु कवन राम के सन्तति, जाँहा मोर आदर हो ॥४॥

चार खण्ड की बहुत बड़ी हवेली थी जिसमे सफेदी की गई थी। उसी मकान मे राजा दशरथ सो रहे है और रानी कौशिल्या नखरा कर रही है ॥१॥

रानी ने राजा ने कहा कि मेरे राम का जन्म हुआ है अतएव इस शुभावसर पर मैं ब्राह्मणो को, भाँटो को और धाय को क्या पुरस्कार दूं ॥२॥

राजा ने उत्तर दिया कि राम के जन्मोत्सव में मैं ब्राह्मणो को सोना, भाटो को चाँदी (रुपया) और धाय को पाँचो टूक (सारी, जम्पर, ओढनी आदि) कपडा दूँगा ॥३॥

धाय ने सारा पकडा पहन लिया और घर के आँगन मे खडी होकर वह भगवान् सूर्य से प्रार्थना करने लगी कि भगवान्! दशरथ के सन्तति की वृद्धि हो जिससे मेरा इस घर मे सदा आदर होता रहे ॥४॥

सन्दर्भ—स्त्री के दोहद का वर्णन; सासु की उक्ति वधू के प्रति

(७१)

मचिया बइठल तुहु ए सासु हो।
लागेला करइला मे फूल, मने मने हुलसेला[4] हो ॥१॥
मचिया बइठलि तुहु ए धनि नारि सुलछनी[5] हो।
ए धनि कवन कवन फल मन भावे, कही ना समुझावहु हो ॥२॥
फालावा त भावेला आमावा के, अवरु इमिलिया के नु हो।
ए प्रासु सेव, बदाम, छोहाड़ा त अवरु ना मन भावेला हो ॥३॥

---

[1]पाँच कपड़ा (धोती, कुर्ता, लम्बी चादर और पगड़ी या सारी, जम्पर, ओढ़नी आदि)। [2]आदित्य (सूर्य)। [3]पूजती है। [4]प्रसन्न होती है। [5]सुन्दर लक्षणवाली।

मचिया बइठलि तुहु ए धनि नारि सुलछनि हो।
धनी कवन पहिरन मन भावेला, कही ना समुझावहु हो ॥४॥
सरीया[1] त भावेला अतर कई, लाहँगा दरस कइ ए।
प्राभु चोलिया त भावेला कुसुम[2] कइ, अवरु ना मन भावेला हो ॥५॥

मचिया पर बैठी हुई ऐ सास! करैला मे फूल लग रहा है। अतः मुझे वडी प्रसन्नता हो रही है॥१॥

पति कहता है कि ऐ सुलक्षणा स्त्री! तुम्हे कौन सा फल अच्छा लगता है, इसे स्पष्ट कहो॥२॥

स्त्री ने कहा कि मुझे आम का फल, इमली, सेव, बादाम और छुहारा अच्छा लगता है और कोई चीज़ अच्छी नही लगती॥३॥

पति ने पूछा कि ऐ स्त्री तुम्हे कौन सा कपडा पहिनने के लिए अच्छा लगता है तब स्त्री ने जवाब दिया कि मुझे सारी, लहँगा और कुसुम्भी रग की चोली अच्छी लगती है और कुछ नही॥४॥

सन्दर्भ—सुखपूर्वक पुरुष का वर्णन

(२२)

सावन भदउवाँ के रतिया, देखत डर लागेला हो।
राजा खोल ना वजर केवार[1], हम ही रउरा सोइबि हो॥१॥
घरी राति गइली, पहर राति बितली नु हो।
राजा छोडिद ना हमरो आँचरवा, आँगानवा हम जाइबि हो॥२॥
किया हमरो मइया जगावेले, वहिन हाँक[2] पारेले हो।
धनिया कवन जरूर[3] तोहरा लगले; आँगन तुहुँ जालु नु[4] हो॥३॥
नाहिं राउर मइया जगावेली, वहिन हाँक पारेलिनि हो।
राजा बडा रे जरूर हमरा लगले आँगन हम जाइबि हो॥४॥

---

[1] साडी। [2] कुसुम्भी रग। [1] कपाट (दरवाजा)। [2] आवाज देना। [3] आवश्यकता। [4] जाती हो।

एक लात[1] देली चउकठ[2] पर, दोसर लात आँगाना मे हो।
राजा बाजे लागल मगल बधाव[3] महल उठे सोहर हो ॥५॥
आँगाना त नाचेली ननदिया, दुवारा पर कसबिनि[4] हो।
राजा त हो प्रभु कथक[5] नचावेले, बबुआ[6] जनम लिहले हो ॥६॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि सावन और भादो की अँधेरी रात को देख कर बडा डर मालूम होता है। ऐ पति! कमरे के दरवाजे को खोलो, मैं तुम्हारे साथ ही सोऊँगी ॥१॥

स्त्री जब अपने पति के साथ एक घडी तथा एक पहर तक सो चुकी तब उसने कहा कि ऐ पति मेरा आँचर छोड दो क्योंकि मैं आँगन में जाना चाहती हूँ॥२॥

पति ने पूछा कि क्या मेरी माता तुमको जगाने आयी है अथवा मेरी बहन तुमको बुला रही है। ऐ स्त्री! तुम्हें कौन सी ऐसी आवश्यकता आ पडी है जिसके कारण से तुम बाहर जाना चाहती हो ॥३॥

पत्नी ने उत्तर दिया कि न तो आपकी माता मुझे जगाने आई है और न आपकी बहिन ही मुझे बुला रही है। ऐ पति! मुझे बहुत बडी आवश्यकता है इसीलिए मैं बाहर जाना चाहती हूँ ॥४॥

इतना कहकर पत्नी ने एक पैर चौखट पर और दूसरा पैर आँगन में दिया। बाहर आते ही उसे पुत्र पैदा हो गया जिससे मगल वाद्य बजने लगा और महल में सोहर गाया जाने लगा ॥५॥

पुत्र-जन्म के उत्सव में आँगन में ननद नाचने लगी तथा द्वार पर वेश्या नाचने लगी और आनन्द मे विभोर पति ने भाँड नचाना शुरू कर दिया ॥६॥

सन्दर्भ—पुत्र-जन्मोत्सव का वर्णन

(२३)

चारु चउखण्ड के पोखरवा[7], त चुने चुनवटल हो।
ए जी ताहि चढि राम करे दतुवनि, सीता घरील[8] लेले हो ॥१॥

[1] पैर। [2] चौखट। [3] वाद्य (बाजा)। [4] वेश्या। [5] कत्थक (भाँड़)। [6] पुत्र। [7] तालाब। [8] घडा।

का ओहो राम का घरे रहले,का मधुवने⁷ गइले हो।
ए जी दुअरा लगइते लखरॉव⁸, बहुरि⁹ सीता देखसु हो ॥२॥
का एहि सीता घरे रहले, का नइहरे⁷ गइले हो।
ए जी कल मे पुतवा बियइती¹, सुनति सुख सोहर हो ॥३॥
हकर¹ अजोधा के काहारा, बेगहि चलि आवसु हो।
भइया जलदी से डँडिया फानाव, नइहर पहुँचाव नु हो ॥४॥
मचिया वइठलि तुहु आमा, पुरुप बिरह² बोलेले हो।
आमा काहे के धिया जनमलु, पुरुष बिरह बोलेले हो ॥५॥
कॉच ही बॉसावा कटइह, बिनइह डागा⁴ डाल नु हो।
ए बेटी ओहि मे भरइह तिल चाउर,गोसइँया⁵ परसन¹⁰ होइहे हो॥६॥
अदित मनवही ना पवलों, गोसइयॉ परसन भइले हो।
लालाना बाजे लागल अनघ¹¹ बधाव, महल उठे सोहर हो ॥७॥
ऑगन वहरइति¹² चेरिया, त अवरु लउँडिया नु हो।
बीरहा बोलना के दइना बोलाइ, सुनसु सुख सोहर हो ॥८॥
चटर¹³ चटर राम अइले, ऑगनवॉ में ठाढ भइलनि हो।
ए धनिया हमहो हरलीं¹⁴ रउरा जीतलीं¹⁵,सुनिले सुख सोहर हो ॥९॥
मोरा पिछुवारावा नोनिया¹⁶ भइया, बेगे चलि आव नु हो।
भइया जलदी से लाव¹⁷ लखराव¹⁸, बहुरि सीता देखसु¹⁹ हो ॥१०॥

एक बहुत बडा तालाव है जो चूने मे पुता हुआ है। उसके किनारे बैठ कर रामचन्द्र जी दातौन कर रहे है और सीता जी घडे मे पानी भर रही है ॥१॥

---

¹परदेश। ²लक्षाराम (बगीचा)। ³फिर। ⁴मायका। ⁵बच्चा पैदा करती। ⁶पुकारो। ⁷व्यंग्य वचन। ⁸सूप या डाली। ⁹पति। ¹⁰प्रसन्न। ¹¹अत्यधिक। ¹²झाड़ू देती हुई। ¹³खडाऊ पर चट-चट शब्द करते हुए। ¹⁴हार गया। ¹⁵जीत गई। ¹⁶मकान बनाने वाले कारीगर। ¹⁷लगाओ। ¹⁸लक्षाराम (बडा बगीचा)। ¹⁹देख सके।

सीता जी कहती हैं कि राम के घर रहने अथवा परदेश में जाने से क्या? अर्थात् उनका घर रहना व्यर्थ है। यदि द्वार पर वे एक बगीचा लगाते तो मैं उसे आनन्द पूर्वक देखती ॥२॥

राम ने उत्तर दिया कि सीता के घर रहने अथवा मायके जाने से ही क्या? यदि उसे पुत्र पैदा होता तो मैं सुखपूर्वक सोहर सुनता ॥३॥

इस पर क्रुद्ध होकर सीता ने अयोध्या के पालकी ढोने वाले कहारों को शीघ्र बुलाया और कहा कि मुझे पालकी पर बैठा कर मायके पहुँचा दो ॥४॥

मायके पहुँच कर सीता ने अपनी माता से कहा कि मचिया पर बैठने वाली ऐ माता! मेरा पति मुझसे व्यंग्य वचन बोल रहा है। ऐ माता! तुमने मुझे लड़की के रूप में क्यों पैदा किया ॥५॥

इस पर माता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी! तुम कच्चे बाँस को कटवा कर उसका सूप अथवा छबड़ी (डाली) बनवाना और उसमें तिल और चावल भरवा देना। इससे तुम्हारा पति प्रसन्न हो जायेगा ॥६॥

स्त्री ने अभी सूर्य की पूजा भी नहीं की थी कि भगवान् प्रसन्न हो गये और इस स्त्री को पुत्र-रत्न पैदा हुआ। घर में बाजे बजने लगे और महल में सोहर गाया जाने लगा ॥७॥

स्त्री ने कहा कि ऐ आँगन में झाड़ू देने वाली दासी! व्यंग्य वचन बोलने वाले मेरे पति को बुला लाओ, जिससे वह इस सुन्दर सोहर को सुने ॥८॥

पति खड़ाऊँ पर चढ़ा हुआ चट-चट शब्द करता हुआ आँगन में खड़ा हो गया और स्त्री से बोला कि ऐ प्यारी! तुम जीत गई और मैं हार गया ॥९॥

पति ने कहा कि ऐ मेरे घर के पीछे रहने वाले कारीगर (माली)! तुम लोग शीघ्र आओ और शीघ्र एक बगीचा लगाओ जिससे सीता उसे देख कर प्रसन्न होवे ॥१०॥

सन्दर्भ--पुत्र के विना स्त्री की मनोव्यथा का वर्णन

(२४)

पानावा अइसन हम पातर[1], कसइलि[2] अइसन ढुनमुनि[3] हो।
ए ललना फुलवा अइसन सुकुवारि[4], चनन अइसन गमकीले[5] हो॥१॥
इ तीनु फूल जाहॉवा मिलते, ऑगाना में लगइतों नु हो।
ए ललना हरि मोरा वइठे पूजनरिया[6] हम लोर्हि[7] चढइतों नु हो॥२॥
एक दिन ए राम जी उहे रहले, जाहि दिन वियाह भइले हो।
ए राम जी निहुरि[8] निहुरि चरन छुवले, चिटुकि[9] सेनुरा लावेले हो॥३॥
एक दिन ए राम जी उहे रहले, जाहि दिन गवना भइले हो।
ए रामजी आगा आगा घोडा दउरवले[10], त पाछा डाँडी आवेला हो॥४॥
ए राम जी तोसक तकियवा लगवले, नजरियो[11] ना उतारेले हो।
जइसन वन मे के कोइलरि[12], वने वने कुहुकेले[13] हो॥५॥
ए राम ओइसन जियरा हमरा कुहुकेला, एक रे वालक विनु हो।
जइसन वोरसी[14] के आग हवे धीरे धीरे सुनुगेला[15] हो॥६॥
ओइसे[16] जियरा हमरा सुनुगेला, एक रे वालक विनु हो॥७॥

कोई स्त्री कहती है कि मै पान की तरह पतली, सुपारी के समान सुन्दर, फूल के समान कोमल और चन्दन के समान सुगन्वित हूँ॥१॥

अगर सुन्दर और सुगन्धित फूल मुझे मिलते, तो मै उन्हे लाकर आँगन मे लगाती, और जब मेरा पति पूजा करने के लिए वैठता, तब मै उन्हे चुन कर उसे देती॥२॥

एक दिन वह था जिस दिन मेरा विवाह हुआ और पति ने झुक-

---

[1]पतली। [2]सुपारी। [3]सुन्दर। [4]सुकुमार। [5]सुगन्धित। [6]पूजा के लिए। [7]चुनना। [8]झुककर। [9]चुटकी। [10]दौडाया। [11]दृष्टि (नजर)। [12]कोकिल। [13]बोलती है। [14]अँगीठी। [15]जलती है। [16]उसी प्रकार से।

झुककर मेरा चरण-स्पर्श किया, तथा चुटकी से मेरी माँग मे सिन्दूर लगाया ॥३॥

एक दिन वह था जिस दिन मेरा गवना हुआ। उस दिन पति आगे-आगे घोडा दौड़ा रहा था और मेरी पालकी पीछे-पीछे जा रही थी ॥४॥

एक दिन वह था जब पति मेरे लिए तोसक-तकिया पलग पर बिछाया करता था, परन्तु आज समय के फेर मे वह मेरी ओर दृष्टिपात भी नही करता ॥५॥

स्त्री कहती है कि जिस प्रकार वन की कोयल वन मे कू-कू करती फिरती है उसी प्रकार मेरा हृदय एक पुत्र के बिना दु खी हो रहा है ॥६॥

जिस प्रकार से अँगीठी की आग धीरे-धीरे सुलगती है, उसी प्रकार हमारा हृदय एक बालक के बिना कष्ट पाता है, तथा धीरे-धीरे जलता रहता है ॥७॥

सन्दर्भ—वन्ध्या की मनोव्यथा का वर्णन

(७५)

बाव[1] बहेले पुरवइया, उतरही झकोरेले हो ।
ए ललना रुकमीनि सुतेली ओसारवा[2], त गोदिया भतीज लेले हो ॥१॥
घर मे से निकले भउजइया, अँगानावा मे ठाढ भइली हो ।
ए ललना झपटि के छोरेली भतीजवा, रुकमिनि मनवा दुखीत हो ॥२॥
घर में से निकलेलि आमा, रुकमिनि समुझावेलि हो ।
ए रुकमिनि का ओहि आनाका[3] रे बालकवा, तोर जनम अकारथ हो ॥३॥

---

[1]वायु। [2]बरामदा। [3]दूसरे का।

का ओहि आमावा का खइले, अठिलिया[1] के चटले नु[2] हो।
ए रुकमिनि का ओहि अनका रे बालाकावा, तोर जनम अकारथ
हो।४।

लाल पियर[3] ना पहिरलीं, चउक[4] ना बइठलीं[5] हो।
ए ललना गोदिया[6] बालक ना खेलवलीं[7], मोरे जनम अकारथ
हो।।५।।

पुरवैया हवा वह रही है और उत्तर की हवा झकझोर रही है। ऐसे समय मे रुक्मिणी नाम की कोई स्त्री अपने भतीजे को गोदी मे लेकर बरामदे में सो रही थी।।१।।

घर में मे भौजाई निकली और आँगन मे आकर खडी हो गई। उसने झपट कर रुक्मिणी की गोद मे अपने बालक को छीन लिया। इस कारण रुक्मिणी बहुत दु खी हुई।।२।।

इसके बाद माता घर मे निकली और अपनी पुत्री को दु खी देखकर समझाते हुए कहा—ऐ रुक्मिणी तुम दूसरे के बालक के छीने जाने पर दु खी क्यों होती हो? पुत्र न होने के कारण तुम्हारा जन्म अकारथ ही गया।।३।।

माता ने कहा—दूसरे के आम खाने और गुठली चाटने मे क्या लाभ? ऐ रुक्मिणी! दूसरे के बालक को लेकर सोने मे क्या फायदा? क्योकि वह आनन्द क्षणभगुर है।।४।।

इस पर दु खी होकर रुक्मिणी ने कहा—मैंने अपने जीवन मे लाल तथा पीला कपडा कभी नही पहना और न कभी पति के साथ चौका (पूजा-वेदी) पर ही बैठी। मेरी गोदी मे बालक न होने के कारण मेरा जन्म व्यर्थ ही गया, अर्थात् मेरा जीना असफल रहा।।५।।

---

[1]गुठली। [2]चाटना। [3]पीला। [4]चौका (पूजा वेदी)। [5]बैठी। [6]गोद में। [7]खेलाया।

पुत्र के अभाव में स्त्री के हृदय में कितनी मानसिक वेदना उत्पन्न होती है इसका बड़ा ही मार्मिक चित्रण ऊपर के गीत में किया गया है। वास्तव में स्त्रियाँ पुत्र के बिना अपने जीवन को निरर्थक समझती हैं। उनके हार्दिक कष्ट का अनुमान करना कठिन है।

सन्दर्भ—गोपियों द्वारा कृष्ण की धृष्टता का यशोदा को उलाहना

(२६)

दही बेचे चलली गोवालिनि[1], आरे सिर पर मटुक[2] लिहले हो।
आरे गले गज-मुकुता के हार, त ओढेली पितम्बर[3] हो ॥१॥
एक बने गइली दोसरे बने, अवरु तिसर बने हो।
आरे बीचवा कन्हइया बटवारावा[4], डहरिया[5] हमरो रोकेले हो ॥२॥
दही, दूध दिहिले त ना ले ले, डहरिया हमरो रोकेले हो।
ए राम मांगेलै कन्हैया जीव के रतिया[6]. धरम छोड़ावेले हो ॥३॥
मीलहु सखिया[7] सलेहरि, अवरु सनेहरि[8] हो।
ए सखि मिलि जुलि आगन जसोदा, ओरहन[9] देवे जाइवि हो ॥४॥
ए मइया बरजि[10] ना आपन रे बेटवना[11], डहरिया हमरो रोकेले हो।
दही, दूध, दिहितो ना मानेले, डहरिया हमरो रोकेले हो ॥५॥
मेटि घाल सिर के सेनुरवा[12], नयन भरि काजर हो।
ए बहुआ मेटि डाल दाँतावाँ के मिसिया[13], कन्हैया नाहिं घेरिहें जी हो ॥६॥
धनि के बइठइवों[14] दाँतें मिसिया, नयन भरि काजर हो।
ए मइया डाटि[15] फोरि करवोंरे ईंगुरवा[16], कन्हैया ललचाइवि हो ॥७॥

---

[1]ग्वालिन। [2]घड़ा। [3]पीताम्बर। [4]बटमार (डाकू)। [5]मार्ग। [6]इन्द्रिय-सुख (भोग)। [7]सखी। [8]प्रेमी। [9]उलाहना। [10]मनाकर दो। [11]लड़का। [12]सिंदूर। [13]मिस्सी (पाउडर)। [14]लगाऊँगी। [15]दाँत से। [16]सिन्दूर।

कुछ ग्वालिनें सिर पर दही का मटका लेकर दही बेचने को चलीं। उन्होंने अपने गले में गज-मुक्ता का हार और शरीर में पीताम्बर वस्त्र पहन रक्खा था ।।१।।

वे अपना दही बेचने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तथा तीसरे स्थान पर गई। इतने में श्रीकृष्णजी रास्ते में मिल गये और उन्होंने उनका मार्ग बीच रास्ते में रोक लिया ।।२।।

वे कहती हैं कि श्रीकृष्ण को दूध तथा दही दिया गया, परन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया। वे हम लोगों से इन्द्रिय-सुख माँग रहे थे और इस प्रकार हमारा धर्म छुड़ाना चाहते थे ।।३।।

वे आपस में कहती हैं कि ऐ स्नेह करने वाली सखियो, हम लोग आपस में मिलकर अर्थात् इकट्ठी यशोदा के घर चलें और उनके पुत्र के कुकर्म के लिए उलाहना दे आवें ।।४।।

उन्होंने जाकर यशोदा से कहा, कि ऐ माता! आप अपने लड़के को मना कर दीजिये, क्योंकि वह बार-बार रास्ते में हम लोगों को छेड़ता है तथा दही, दूध देने पर भी नहीं मानता ।।५।।

इस पर यशोदा ने उत्तर दिया कि तुम लोग अपने सिर का सिन्दूर और आँखों का काजल मिटा दो, अपने दाँत की मिस्सी (पाउडर) को नष्ट कर दो। तब कृष्ण तुम लोगों को नहीं छेड़ेंगे ।।६।।

तब गोपियों ने उत्तर दिया कि हम लोग अपने दाँतों में अब अधिक मिस्सी लगावेंगी, आँखों में काजल लगायेंगी, माँग में खूब मोटा सिन्दूर लगावेंगी। इस प्रकार श्रीकृष्ण को हम लोग और भी ललचावेंगी ।।७।।

श्रीकृष्ण के बाल्यकाल की नटखट प्रवृत्ति का यह बड़ा ही सुन्दर उदाहरण है। श्रीकृष्ण की 'दुष्टता' के कारण लोगों के उलाहनों के मारे यशोदा की नाकों में दम आ गया था। परन्तु वह नटखट कृष्ण को समझाने में असमर्थ थी। सूरदास ने अपने पदों में श्रीकृष्ण की बाल-लीला का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया है।

सन्दर्भ—राधाकृष्ण की प्रेम-लीला का वर्णन

(२७)

घर मे से निकले राधा रनिया, अगनवाँ मे ठाढ भइली।
ए ललना हँसि के पूछेलि जसोदा, काहे रे बहुआ[1] बेदिल[2] हो ॥१॥
लाज सरम[3] केरि बतिया, कहल नाहिं जाला नु हो।
ए सासु पलँग रखल मोरी तिलरी[4], नाहि त आजु मिलेला हो ॥२॥
नाहाई धोई अइले सीरि क्रुसना[5], आँगाना मे ठाढ भइले हो।
ए ललना हँसिके पूछेलि जसोदा, काहे रे बबुआ बेदिल हो ॥३॥
लाज सरम केरि बतिया, कहल नाहि जाला नु हो।
ए आमा बनबीरिदा[6] केरि बँसुली[7], से हो चोरि भइल हो ॥४॥
जेकर लिहल बबुआ तिलरी, से हा तोहार बन्सी लिहल[8] हो।
ए बबुआ देइ घाल बहू केरे तिलरिया, बँसुलिया हम दिया देवि हो ॥५॥
इ जनि जान सासु लाहे के तिलरिया, सहत[9] बाटे हो।
ए सासु सावा ही लाख केरे तिलरिया, रेसम में गुहावलि[10] हो ॥६॥
इ जनि जान आमा बाँस के बँसुलिया, हामार हवे हो।
ए आमा आढाइ ही लाख केरे बँसुलिया, त सोना मे मढावलि हो ॥७॥
एही बँसुलिया कारन मारबि अवरु गरिआइबि, घर मे कुठेठि[11] लाइबि हो।
ए आमा नइहर के डोहवा[12] रे देखाइबि इहाँ से दुरु दुरु[13] करबो हो ॥८॥
गोडवा[14] मे लवले चटकउवाँ पउवाँ, हाथावा सोवरनी साटी हो।

---

[1]वधू। [2]उदासीन। [3]शम। [4]हार। [5]श्रीकृष्ण। [6]वृन्दावन। [7]बाँसुरी। [8]ले लिया। [9]सस्ता। [10]गुँथवाया। [11]झगड़ा। [12]उजाड़ स्थान। [13]भगा देना। [14]पैर।

ए ललना चलि भइलों सरहजी नगरिया, हम लाहारा[1] रे लगाइबि हों ॥९॥

ए सरहजी कवन अवगुन तुहुँ कइलू, ननद तुहे गरियावेले हो ॥१०॥

झपा[2] में से कढली साटन सारी अवरु पीतवर हो।

ए ललना परते परते लर्वाल रे मोहरिया, ओरहनवा[3] देवे जाइबि हो ॥११॥

ए ननदी! कवन अवगुन हम कइलीं, तुहु गरियावेलु[4] हो।

कवन जे सखी उजे कहुवे, कवन सखि सुनुवे नु हो ॥१२॥

आरे कवन लर्वाज लइया[5] लवलसि[6], भऊजी पतियालु[7] नु हो।

कवनो ना सखी उजे कहुवी, कवनो सखी ना सुनुवी हो ॥१३॥

आरे सिरि कुरना लवज लइया लवले, त हम पतियालीं नु हो।

कारी वदन पर आताना[8] खोटाई, गोराइया पर कातानु[10] हो ॥१४॥

ए ललना कारी वदन उनुकर[11] हउवे, लका अगिया[12] लावेले हो ॥१५॥

घर मे मे राधा रानी निकली और आँगन मे आकर खडी हो गई। यशोदाजी हँस कर उनमे पूछती है कि ऐ वहू, तुम दु खी तथा उदासीन क्यो हो? ॥१॥

राधा ने उत्तर दिया कि यह लज्जा की वात है, अत मुझसे कहा नही जाता। ऐ माम! मैंने अपने पलग पर हार रख दिया था, वह आज नही मिल रहा है ॥२॥

श्रीकृष्णजी स्नान करके आँगन में आकर जब खडे हुए, तब उनकी माता यशोदा ने उनमे पूछा कि ऐ पुत्र! तुम आज उदासीन क्यो हो? ॥३॥

श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया कि ऐ माता! मुझे कहने मे लज्जा लगती है। मेरी वृन्दावन की वाँसुरी आज चोरी चली गई है ॥४॥

---

[1] झगडा। [2] वक्स। [3] उलाहना। [4] गाली देना। [5] झूठ वोलने वाली। [6] मिथ्यारोप। [7] लगाया। [8] विश्वास करना। [9] दुष्टता। [10] कितना। [11] उनका। [12] आग।

यशोदा ने उत्तर दिया कि जिसका तुमने हार चुरा लिया है उन्होंने तुम्हारी वंशी भी चुरा ली है। ऐ पुत्र! तुम बहू का हार दे दो तो मैं तुम्हारी मुरली भी दिला दूंगी ॥५॥

बहू ने कहा कि ऐ सास! तुम यह मत जानो कि हमारी माला (हार) सस्ती है। मेरा हार सवा लाख रुपये का है और रेशम में गूँथा गया है ॥६॥

श्रीकृष्ण ने कहा कि ऐ माता! मेरी बाँसुरी भी बड़ी कीमती है। उसका दाम ढाई लाख है और सोने में मढ़ी हुई है ॥७॥

यदि बाँसुरी नहीं मिली तो मैं राधा को मारूँगा, गाली दूंगा और घर में झगड़ा पैदा कर दूंगा। मैं राधा को मायके पहुँचा कर दुःख दूंगा और यहाँ से खदेड़ दूंगा ॥८॥

श्रीकृष्ण ने खड़ाऊँ पैर में पहन लिया और हाथ में सोने की छड़ी ली। वे अपनी सरहज (साले की स्त्री) के गाँव झगड़ा लगाने के लिए चल पड़े ॥९॥

कृष्ण ने सरहज से कहा कि तुमने कौन सा अपराध किया है जिसके कारण तुम्हारी ननद (मेरी स्त्री) तुम्हें गाली देती है ॥१०॥

यह सुनकर सरहज बहुत क्रोधित हुई और उसने अपने बक्स में से साटन की साड़ी और पीताम्बर निकाला और उलाहना देने के लिए ननद के घर चल पड़ी ॥११॥

वहाँ जाकर उसने अपनी ननद से पूछा कि हमने कौन सा अपराध किया है जिसमें तुम मुझे गाली दे रही हो। इस पर ननद ने उत्तर दिया कि किस आदमी ने मुझे गाली देते सुना है और किसने तुमसे यह बात कही है ॥१२॥

किस झूठे ने मेरे ऊपर यह मिथ्यारोप किया है। इस पर भावज ने उत्तर दिया कि सखी ने मुझसे यह बात नहीं कही है ॥१३॥

झूठे श्रीकृष्ण ने ही यह मिथ्यारोप तुम्हारे ऊपर किया है। इसीलिए मैंने विश्वास भी कर लिया ॥१४॥

श्रीकृष्ण का बदन जब काला है तब इतनी खोटाई (दुष्टता) भरी हुई है। यदि संयोग से उनका वर्ण गोरा होता तो न मालूम कितनी दुष्टता

भरी होती। कृष्ण का काला वदन है इसीलिए वे अपने रूप के अनुसार काली करतूतो के द्वारा सर्वत्र आग लगाते फिरते है अर्थात् झगडा करा देते है ॥१५॥

सन्दर्भ--प्रिय-वियोग तथा गर्भवती स्त्री की आकृति का वर्णन

(२८)

वरिसहु ए देव वरिसहु, मोरा नाही मने भावेला हो।
ए देव मोर पिया नान्हें[1] केरे विसनीयारे[2], अकेला काहा भीजेला[3] हो ॥१॥
पहिरि कुसुम रगे सरिया, चढलों अटरिया नु रे।
कि आरे मोरे ललना टपकि रहेला छाति वुनवा[4], मोरे निनियो ना आवेला रे ॥२॥
सुनवे त सुनवे रे ननदिया, आरे हमरी बचनिया नु हो।
कि आरे मोरे ननदो भइया केरे वोलइतु, उहे दरद मोरा जानेले हो ॥३॥
सुनवे त सुनवे रे भउजी, हमरी रे वचनिया नु हो।
कि रे भउजी दीन दस आवे देहु आसाढवा, आपन भइया वोलाई[5] देवि हो ॥४॥
ए ननदो कहीतु जहरवा[6] खाइके मरितीरे, सइयाँ विना दु खवा सहलो ना जाइ हो।
अइलनि भइया अँगनवा, दुवरिया ठाढ भइलनि हो ॥५॥
आरे ललना धनिया के मुख पियरइले,[7] त अव वस[8] वाढ[9] न हो।

---

[1] वचपन से ही। [2] शौकीन। [3] भीग रहा है। [4] बूंद। [5] वुला दूंगी। [6] जहर। [7] पीला हो गया। [8] वश। [9] वृद्धि।

आरे धनिया हमरा जो आमा के बोलइतु, त दु ख नाही अवहीत हो ॥६॥

माई रउरी हुई कुटनहरी[1], बहिनिया पिसनहरि[2] हो।
आरे पियवा रउरा हुई खेत जोतवा[3], मैं काहि के बोलाइबि हो ॥७॥

पतित के हउ तुहुँ धियवा, पतित के बहिनिया तु हो।
कि आरे धनिया पतित के तुहुँ नतिनिया[4], हम गोठहुल[5] घर देबों हो ॥८॥

माई रउरी हुइ पण्डिताइनि, बहिनिया चधुराइनि हो।
कि आरे पियवा रउरा हुई सिर साहब, हम बसहर[6] घर लेबों हो ॥९॥

कोई स्त्री कहती है कि हे देव ! खूब बरसो। परन्तु यह बरसना मुझे अच्छा नहीं लगता है। मेरा पति लडकपन से ही शौकीन है, अकेले वह कहाँ भीगता होगा ॥१॥

वह स्त्री कुसुम्भी रग की सारी को पहन करके पति का मार्ग देखने के लिए अटारी पर चढ गई। वह कहती है कि दु ख के मारे आँसू से मेरी छाती भीग रही है, मुझे निद्रा भी नही आती ॥२॥

उस स्त्री ने अपनी ननद से कहा कि ऐ ननद ! तुम अपने भाई को बुला दो, क्योंकि वह मेरा कष्ट जानता है ॥३॥

ननद ने उत्तर दिया कि ऐ भावज ! सुनो। दस दिन मे अब आषाढ का महीना आने वाला है। उस समय मैं अपने भाई को बुला दूंगी ॥४॥

इस पर भौजाई ने जवाब दिया कि ऐ ननद ! कहो तो मैं जहर खाकर मर जाऊँ। क्योंकि बिना पति के मैं अपने कष्ट को सहने में असमर्थ हूँ ॥५॥

इतने ही मे ननद का भाई (पति) परदेश से चला आया और आँगन

---

[1] कुटिला (दुष्टा)। [2] आटा पीसने वाली। [3] खेत जोतनेवाला (कृषक)। [4] पौत्री। [5] उपले रखने का गन्दा घर। [6] अच्छा तथा सुन्दर घर।

के दरवाजे पर आकर खडा हो गया। अपनी गर्भवती स्त्री का मुख देखकर वह सोचने लगा कि अब मेरे वश की वृद्धि होगी ।।६।।

पति ने पूछा कि तुमने मेरी माता को क्यो नही बुला लिया, नही तो तुम्हे इतना कष्ट नही होता। इस पर स्त्री ने उत्तर दिया कि तुम्हारी माता दुष्ट है, बहन आटा पीसने वाली है, और तुम खेत जोतने वाले हो, अत मै किसको बुलाती ।।७।।

इस पर पति ने उत्तर दिया कि तुम पतित पुरुष की लडकी हो, पतित की बहन हो, और तुम पतित की पौत्री हो। तुम्हे मै रहने के लिए गन्दा घर दूँगा ।।८।।

इस पर स्त्री ने उत्तर दिया कि आपकी माता पण्डितानी है, बहन चौधरानी है और आप बडे साहब है। अत अब मै अच्छे घर मे रहूँगी ।।९।।

उपर्युक्त गीत मे पत्नी का पति-प्रेम तथा पुरुष की निष्ठुरता का बडा ही सुन्दर चित्रण है। स्त्री तो पुरुप के वियोग मे मर रही है, परन्तु पति को जरा भी दया नही। स्त्री के द्वारा कुछ कटु शब्द कह दिये जाने पर उसे 'गन्दे' घर मे नजर बन्द कर देने की धमकी दी जाती है। इस प्रकार की घटनाएँ गाँवो मे प्राय रोज ही हुआ करती है। गृह-कलह तो देहातो में दैनिक घटना-सी हो गई है। अत उपर्युक्त चित्र अत्यन्त स्वाभाविक मालूम पडता है।

सन्दर्भ—स्त्री की प्रसव पीड़ा का वर्णन

(२९)

पच पच[1] पानवा के बिरवा, लवँगिया के मुसुकरि[2] रे।
ए ललना देहुँगे ननदजी का हाथे, ते बिरवा लगावसु रे ।।१।।
सुपुली[3] खेलत तुहु ननद, मोर पियारी ननद रे।
ए ननदी आपन भइया देई ना बोलाई, मैं दरद बेयाकुल रे ।।२।।

---

[1]पाँच। [2]खोच देना। [3]लडको का एक खेल विशेष।

जुववा[1] खेलत तुहु भइया अवरु बीरन भइया हो।
ए भइया प्रानप्यारी भउजी हमार, दरद में बेयाकुल हो ॥३॥
जुववा लड़वनी बेल तर अवरु बबुर तर हो।
ए ललना खबरि पड़मेले राजा ओवर, कहना धनि कुसल हो ॥४॥
डाँड मोर बथेला गाहागहि[3], कपार मोर टनकेला[4] हो।
ए प्रभु पृथ्वी मोरे सुझेला अलोपीत[5], अँगुरी में दम[6] बसे हो ॥५॥
घरवा त रहिते बनाइ दिहती, कारीगरवा बोलाई दिहती हो।
इहे बिरिज[7] नारि मोटरिया खोलेले नारायन हो ॥६॥
जामहु[8] ए बाबू जामहु, मोहि जुड़वावहु हो।
ए बाबू बाप के होइहे छत्र छाँह, बहिनियाँ के ओठगन[10] हो ॥७॥
हम ना अइबो ए आमा, हम ना अइबों हो।
ए आमा मइलहि[11] लुगवा सुतइबु, आरेइया[12] कहि बोलइबु तु हो ॥८॥
आवहु ए बबुआ आवहु मोहि जुड़वावहु हो।
साफहि लुगवा[13] सुताइबि[14] बबुआ काहि बोलाइबि हो ॥९॥

पाँच-पाँच पान का बीड़ा लगाया गया और उनमें लवंग खोस दिया गया। भावज ने कहा कि ननद के हाथ में इन पान को दे दो ॥१॥

भावज ने फिर कहा कि ऐ नुपुरों बजाने वाली मेरी प्यारी ननद! तुम अपने भाई को बुला दो, क्योंकि मैं दर्द से व्याकुल हूँ ॥२॥

तब लड़की ने अपने भाई के पास जाकर कहा कि ऐ जुआ खेलने वाले मेरे भाई! हमारी प्राणों से प्यारी भावज दर्द के मारे व्याकुल है ॥३॥

---

[1] जुआ। [2] भाई। [3] जोर से। [4] दुखता है। [5] शून्य, लुप्त। [6] प्राण। [7] व्रज नारि। [8] पैदा होओ। [9] अवलम्ब। [10] सहारा। [11] गन्दा। [12] ? कहना। [13] कपड़ा। [14] सुलाऊँगी।

बबूर वृक्ष के नीचे जुआ खेलन वाले पति ने जब यह समाचार सुना तो वह दौड कर घर मे घुस गया और अपनी स्त्री से कुशल समाचार पूछा ।।४।।

स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरी कमर मे दर्द है और मेरा सिर दुख रहा है। ऐ पति! मुझे सारी पृथ्वी शून्य-सी दिखाई पड रही है, और मेरी जान केवल अँगुलियो मे ही शेप रह गयी है ।।५।।

पति ने उत्तर दिया कि यदि घर बनवाना होता तो मै कारीगरो को बुलाकर आज ही घर तैयार करा देता। इस गर्भ मे स्थित प्रसव रूपी गठरी को भगवान् ही खोलेंगे ।।६।।

इस पर स्त्री ने कहा कि ऐ पुत्र! अब पैदा होओ, पैदा होओ और मुझे शान्ति प्रदान करो। ऐ लडके! तुम्हारी उत्पत्ति से पिता को अवलम्ब मिलेगा और बहन को प्यारी योग्य वस्तु मिलेगी ।।७।।

तब गर्भ में स्थित बालक ने उत्तर दिया कि ऐ माता! मै नही पैदा हूँगा, क्योंकि तुम मुझे गन्दे-गन्दे कपडे पर सुलाओगी और हमेशा 'रे' कहकर पुकारोगी ।।८।।

इस पर माता ने उत्तर दिया कि ऐ पुत्र! आओ और मुझे सन्तुष्ट करो। तुम्हे साफ कपडो पर मै सुलाऊँगी और 'बबुआ' कह कर पुकारा करूँगी ।।९।।

सन्दर्भ—बन्ध्या स्त्री की मनोव्यथा, उपचार तथा पुत्र-जन्म का वर्णन

(३०)

साभावा बइठलि राजा दसरथ सुन मोरसाध[1], सतति हम चाहिले हो।
भले बउरइलु[2] कोसिला रानि, आरे तुहे के बउरावल हो ।।१।।

---

[1] इच्छा। [2] पागल हो गई।

आरे जाहि लिखले विधाता, ललति नाहि मीलेला हो।
मोरा पिछुवारावा वढइया भइया, वेगे चलि आवसु हो ॥२॥
ए भइया जरि से ना काटहु ओखादावा[1], वेग से लावहु हो।
कहवाँ केरा लोहवा[2] मगवलों, कोसिला रानि खातिर[3] हो।
पुरुष के लोहवा मगवलों[4] पच्छिम के सिलिया[5] नु हो ॥३॥
आरे रगरि रगरि[6] जरिया पिसलो[7] कोसिला रानि पीयसु हो।
एक खोरा[8] पियली कोसिला रानि एक खोरा सुमित्रा रानि हो ॥४॥
आरे सिलि धोई पियली केकइया रानि तीनु जानी गरभ से नु हो।
कोसिला के भइले राजा रामचन्द्र, सुमित्रा का लछुमन हो।
केकइया भरत भुवाल[9] तीनों घरे मगल वाजेला हो ॥५॥
सेर जोखि[10] सोनवा लुटवली, पसेरि जोखवा रूपवा[11] नु हो।
आरे सगरें अजोध्या लुटवले, कोसिला रानि के आभरन[12] हो॥६॥
कवरहिं[13] बोलेली केकइया रानी, सुनु राजा दसरथ हो।
ए राजा जानि बूझि अवध लुटइह[14] भरत कुछ चाहेले हो ॥७॥
वरहो वरिस के राम होइहे, त वन के सिधरिहें[15] नु हो।
वनहिं वनहिं फल खइहे, साढा फल पड़हें नु हो ॥८॥
राम वने वन जइहें, वरिस[16] चउदह[17] रहिहें नु हो।
ए जी छुटले निरवसिया[18] के नाव राम घरें अइहे नु हो ॥९॥

सभा में बैठे हुए राजा दशरथ से कौशल्या ने कहा कि ऐ राजा! मेरी मनोकामना को सुनो। मैं एक पुत्र चाहती हूँ। राजा ने उत्तर दिया कि ऐ रानी तुझे किसने पागल बना दिया है ॥१॥

---

[1] औषध (दवा)। [2] लोढा। [3] लिये। [4] मँगाया। [5] सील। [6] रगड़ करके। [7] पीसा गया। [8] कटोरा। [9] राजा। [10] तौलकरके। [11] चाँदी। [12] आभूषण। [13] कोने में। [14] लुटाना। [15] जायेंगे। [16] वर्ष। [17] चौदह। [18] विना पुत्र के।

ब्रह्मा जब भाग्य मे पुत्र लिखता है तभी सन्तान पैदा होती है, अन्यथा नही। ऐ मेरे घर के पास रहने वाले बढई! तुम शीघ्र चले आओ ॥२॥

तुम औषधि को जड से काट करके लाओ। तब उसने पूछा कि ऐ राजा! कौशल्या रानी के लिए कहाँ से लोढा लाऊँ? राजा ने कहा कि पूर्व देश से लोढा लाओ और पश्चिम देश मे सिलवट ॥३॥

उस औषधि को रगड-रगड के पीसो और उसे कौशल्या पीवे। उस दवा को कटोरा भर कर कौशल्या और सुमित्राजी ने पी लिया। सिल को धोकर बचे हुए अश को कैकेयी ने पी लिया। इस प्रकार तीनो को गर्भ रह गया ॥४॥

कौशल्या के रामचन्द्र, सुमित्रा मे लक्ष्मण और कैकेयी के गर्भ मे भरत जी पैदा हुए। इस आनन्द के कारण तीनो रानियो के महल मे मगल के बाजे बजने लगे ॥५॥

कौशल्या ने तौलकर एक सेर सोना और एक पसेरी चाँदी लुटाया, और राजा दशरथ ने आनन्द में कौशल्या के सारे गहनो को गरीबो मे बाँट दिया ॥६॥

महल के कोने मे खडी हुई कैकेयी ने कहा कि ऐ राजा दशरथ! सुनो, तुम समझ-बूझ कर अयोध्या के खजाने को लुटाओ, क्योकि भरत को भी इसमे से कुछ चाहिए ॥७॥

कैकेयी ने यह भी कहा कि जब राम बारह वर्ष के होगे तब उन्हे वन जाना पडेगा। वहाँ वन-वन मे घूम कर कन्द, मूल, फल खाना पडेगा ॥८॥

राजा दशरथ ने इस प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए कहा कि राम चौदह वर्ष के लिये वन को जावेगे। राम के पैदा होने से मेरे निस्सन्तान होने का कलक जाता रहा।

इस गीत मे पुत्रहीन स्त्रियो की चिन्ता तथा मानसिक वेदना का अच्छा चित्रण है। वास्तव मे स्त्रियाँ तब तक अपने जीवन को सफल नही समझती जब तक उन्हे पुत्र पैदा न हो जाय। पुत्र-रत्न पैदा होने पर जो आनन्दोत्सव मनाया जाता है उसका कितना सुन्दर वर्णन यहा किया गया है! धनहीन

पुरुष भी ऐसे मौके पर बहुत खर्च करते है फिर राजा ने सोना लुटाया तो आश्चर्य ही क्या।

सन्दर्भ—प्रिय-वियोग का वर्णन

सुनिले कन्हैया हमरो जोगी भइले, हमहुँ जोगिन होइ जॉव।
जनि केहु बोअहु कुसुमिया[1], जनि केहु बोअहु कपास।
हम ना रँगइबों लाली चुनरिया, पिया बिनु सयरों[2] अन्हार ॥१॥
पीपर के पतवा जइसे डोलेले, जइसे डोले जलके सेवार[3]।
हम धनि[4] डोलिले बलमु[5] बिनु, मोहि छाडि गइले नन्दलाल ॥२॥
आँगन मोरा लेखे कुञ्जवन, घरवा मे फेकरें[7] सियार।
सेजिया पर लोटे काली नगिनिया, जेहि देखि जियरा डेराय ॥३॥
बिना रे सोना के कइसी अभरन[8], मोती बिना कइसी सिंगार।
बिना रे अमा के कइसी[9] नइहर, पिया बिनु कइसी ससुरार ॥४॥
रचि-रचि कोठवा रे उठवलों, रचि-रचि कटलों दुआर[10]।
सखिअन सगे दुख भोगब, जबलें अइहें नन्दलाल ॥५॥

एक सखी दूसरे से कहती है कि ए सखि! सुनो, अब कन्हैया! मेरे प्रियतम—योगी हो गए, मैं भी योगिन हो जाऊँगी। अब कोई कुसुम्भ का फूल न लगावे और न कपास बोवे। अब मैं अपनी चुनरी लाल रंग से नहीं रंगूंगी। प्रियतम के बिना चारो तरफ अन्धकार है ॥१॥

जिस प्रकार पीपल के वृक्ष के पत्ते हिलते है और जल में सेवार डोलता फिरता है उसी प्रकार मै प्राणवल्लभ के बिना डॉवाडोल हो रही हूँ। क्योकि नन्दलाल—मेरे प्रियतम—मुझको छोड कर चले गए ॥२॥

अब आँगन मेरे लिए कुंजवन के सदृश है। घर में गीदड आवाज

[1] कुसुम्भ पुष्प। [2] चारो ओर। [3] शैवाल। [4] स्त्री। [5] प्रिय।
[6] लिये। [7] आवाज करना। [8] आभरण। [9] कैसे। [10] द्वार।

कर रहा है। बिस्तरे पर काली नागिनी लोट रही है जिसको देख कर मेरा हृदय भयभीत हो रहा है ॥३॥

बिना सोना के आभूषण कैसा ? बिना मोती के शृङ्गार कैसा ? बिना माता के नैहर कैसा ? उसी प्रकार बिना प्रियतम के ससुराल कैसी ॥४॥

बना-बना कर घर बनाया और दरवाजा तैयार किया। जब तक नन्दलाल मेरे पति नहीं आवेंगे तब तक सखियों के साथ मैं दुख भोगेंगी ॥५॥

सन्दर्भ—पुत्रजन्मोत्सव का वर्णन

(३२)

सासु जे भेजेलि नउनिया,[1] त ननदि बरिनिया[2] हू रे।
ललना गोतिनि अपने प्रभु जाइ, गोतिनिया हमहीं पाइच[3] रे ॥१॥
सासु जे आवेलि गवइत, ननदि बजवइत रे।
ललना गोतिनि आवेलि विसाधल,[4] गोतिनि के घर में सोहर रे ॥२॥
सासु लुटावेलि रुपैया, त ननदि मोहरवा रे।
ललना गोतिनि लुटावेलि बनउरवा, गोतिनिया फेरिहे पाइच रे ॥३॥
सासु के डासलि खटियवा, ननदी के मचियवा हू रे।
ललना गोतिनि के पलंग रेसमिया, गोतिनिया फेरिहे पाइच रे ॥४॥
सासु के दिहलि चुनरिया, न ननदि पियरिया हू रे।
गोतिनि के लहरा पटोरवा[5], गोतिनिया फेरिहें पाइच रे ॥५॥

सास ने नाऊ की स्त्री को भेजा, तो ननद ने बारी की स्त्री को भेजा। परन्तु दायाद की स्त्री स्वयं आई। हे प्रिय ! मुझे इन लोगों का कर्जा चुकाना होगा ॥१॥

सास गाती हुई आ रही है। ननद बाजा बजाती हुई आ रही है। लेकिन गोतिनि (दायाद की स्त्री) क्रुद्ध हो कर आ रही है, क्योंकि गोतिनि

[1] नाइन। [2] बारिन। [3] उधार। [4] क्रुद्ध। [5] कपड़ा।

के घर में सोहर गाया जा रहा है और इस शुभ काल में वह ईर्ष्या के मारे जल रही है ॥२॥

इस उत्सव के अवसर पर सास रुपया लुटा रही है। ननद मोहर लुटा रही है, परन्तु गोतिनि बनउर (कपास का बीज) लुटा रही है, यद्यपि उसे मेरा पाइच (ऋण) लौटा देना उचित था ॥३॥

बच्चे की माता ने सास के लिए खटिया बिछा दिया, और ननद के बैठने के लिए मचिया रख दिया। परन्तु अपनी गोतिनि के लिए रेशम का पलंग बिछा दिया, क्योंकि उसे अपना पाइच (ऋण) लौटाना था ॥४॥

उसने सास को चुनरी दिया, ननद को पियरी दिया परन्तु गोतिनि के लिए कामदार रेशम की साड़ी पहनने को दिया। इस प्रकार उसने अपने उपकार दिखलाने वाले के प्रति ही नहीं बल्कि अपकार करने वाले के प्रति भी अपने पाइच (ऋण) को लौटाकर, अपनी कृतज्ञता का प्रदर्शन किया ॥५॥

: २ :

खेलवना के गीत

खेलवना के गीतो को भी सोहर के अन्तर्गत ही समझना चाहिए, क्योंकि सोहर की भाँति इन गीतो का विषय भी पुत्र-जन्म ही है। इन गीतो में कहीं पर पुत्र-जन्म के पहले की अवस्था—गर्भावस्था—का वर्णन है तो कहीं पर पुत्र-जन्म होने के बाद की अवस्था का। विषय की इसी समानता के कारण मैंने इन गीतो को सोहर के ही अन्तर्गत रखा है। यहाँ कुछ खेलवना के गीत दिये जाते हैं—

सन्दर्भ—स्त्री की प्रसव-पीड़ा के कारण पति का दुःखी होना

(३३)

महल मे दियरा[1] बारि[2] अइलो, सइयाँ के जगाई अइलो रे।
प्रभु जी के अँगुरी ममोरि अइलो, अब की वेदनिया अगवो[3] रे॥१॥
उहवाँ से जे अइलों त मचिया बइठलों, आमा पूछे हो।
बबुआ ताहार मनवा उदास, काहे के मन वेदिल हो॥२॥
उहवाँ से जे अइलो त, पासावा खेलत यार पूछसु हो।
यार काहे राउर मनवा उदास, काहे रे मन वेदिल[4] हो॥३॥
पानावा अइसन धनिया पातरि[5] हई हो।
कुसुमवा अइसन सुन्दरि हई हो॥४॥
यार जी उहे धनिया वेदने वेयाकुल[6]।
ओहि[7] कारन मनवा वेदिल भइल हो॥५॥

कोई स्त्री गर्भवती है। वह गर्भ की वेदना मे व्याकुल होकर महल में जाकर दीप जलाती है और अपने पति को जगाती है। जब वह अपना

---

[1] दीप। [2] जलाना। [3] सहन करो। [4] दुखी। [5] पतली। [6] व्याकुल। [7] उसी।

दुःख सुनाती है तब पति कहता है कि इस दुःख को किसी प्रकार सहन कर लो ॥१॥

महल से उठ कर पति आया और मचिया पर बैठ गया। तब माता ने उससे पूछा—कि बेटा! तुम आज क्यों दुःखी हो ॥२॥

जुआ खेलते हुए उसके मित्र ने उससे पूछा कि तुम्हारा चित्त आज क्यों दुःखी है ॥३॥

इस पर पति ने उत्तर दिया कि मेरी स्त्री पान के समान पतली है और फूल के समान सुन्दर है ॥४॥

आज वही मेरी प्रिय स्त्री गर्भ की वेदना से व्याकुल है, इसी कारण से मेरा चित्त आज इतना दुःखी है ॥५॥

सन्दर्भ—ननद-भौजाई के कलह का वर्णन

(३४)

इयारि पियारी[1] मोरी ननदी, से हो चलि आवेलि हो।
ए ननदी बइठ ना बाबा चउपरिया[2], मगल एक गावहु हो ॥१॥
गाइले ए भउजी गाइले गाइ के सुनाइले हो।
ए भउजी हमरा का देबु[3] दान, हरसि घरवा जाइबि हो ॥२॥
मागहु ए ननदी मांगहु, मागी के सुनावहु हो।
ननदी जो तोरा कुछु हिरदा[4] समाऊ, सेहोरे[5] कुछ मागहु हो ॥३॥
मॉगीले ए भउजी मागीले, मॉगि के सुनाइले हो।
भउजी बाबा के दीहल हारावा, से हो हम मॉंगिले हो ॥४॥
देबों मैं ए ननद देबों, नाक के नथियवा, भूलनी सगे हो।
ननद एक मैं ना देबों आपन हार, हार हमरा बाबा के हो ॥५॥
रोवत जाले ननदिया[7] बिलखात भयनवा[8] नु हो।
हँसइत जावे ननदोइया,[9] भलहि दर्प टूटल हो ॥६॥

---

[1] प्यारी। [2] चौपाल। [3] दोगी। [4] हृदय। [5] वह। [6] नथिया। [7] ननद। [8] भानजा। [9] ननद का पति।

आगा जाला भइया, त पाछे मे भतीजवा नु हो।
छड़िये चढल सीता जाली, ननद के मनावन हो ॥७॥
आगन बहरइत चेरिया, त अवरु लउँड़िया[1] नु हो
रानी आवतारि भउजी तोहार, तोहि के मनावन हो ॥८॥
ऊँच मन्दिर पुर पाटन, बेतवा[2] के छाजनि हो।
ए जी ताहि चढि देखेली सहोद्रा, भऊजी चलि आवसु हो ॥९॥
चेरिया खोरि खोरि डास बिछौना, भउजी चलि आवसु हो
भले कइलू ए ननद भले कइलू, भले लाजावावेलु हो ॥१०॥
भले कइलू ए भउजी भले कइलू, भले चलि अइलुनु हो
दरसन आपन देखवलु हमार मन राखेलु[3], हो ॥११॥

मेरी प्यारी ननद अपनी ससुराल मे चली आ रही है। तब भावज कहती है कि तुम इस चौपाल में बैठ जाओ और मेरे पुत्र-जन्म के उत्सव पर एक मगल गीत गाओ ॥१॥

ननद ने कहा—मैं गाना अवश्य गाऊँगी। परन्तु तुम यह बतलाओ कि तुम मुझे क्या दोगी जिसे लेकर मै प्रसन्नतापूर्वक अपनी ससुराल जाऊगी ॥२॥

भावज ने कहा—जो कुछ तुम्हारे हृदय मे हो उसे माँगो। मैं जरूर दूँगी ॥३॥

ननद ने कहा—बाबा ने जो हार तुम्हें दिया है उसे तुम मुझे दे दो ॥४॥

भावज ने कहा—मैं तुम्हें नाक की नथिया और झूलनी एक साथ दूँगी, परन्तु हार मैं नहीं दे सकती, क्योंकि वह मेरे पिता का दिया हुआ है ॥५॥

यह सुनकर ननद रोती हुई अपनी ससुराल चली गई और उसका पति यह कहते हुए हँसता चला जा रहा था कि अच्छा हुआ कि इसका गर्व टूट गया ॥६॥

---

[1] जाती है। [2] प्रसन्न करने के लिये। [3] दासी। [4] बेंत। [5] चली आई। [6] मन को सन्तुष्ट करती हो।

प्रसवों [illegible] को मनाने के लिये [illegible] गई तथा [illegible] [illegible] घरा और पानी। न उसको आदर [illegible] और भी नहीं ॥७॥

भावज की माँ [illegible] के [illegible] और सौतनों ने गली में [illegible] कि [illegible] आदर [illegible] ॥८॥

यह सुन कर [illegible] मानने [illegible] [illegible] ने [illegible] को [illegible] दिया ॥९॥

ननद ने दासियों को आज्ञा दी कि नहर में, प्रत्येक गली में बिछौना बिछा दो जिससे भावज आनन्द से चली आये। भावज ने प्रसन्न होकर कहा कि ए ननद! तुमने आज मुझे बहुत आदर [illegible] किया ॥१०॥

तब ननद ने उत्तर दिया कि ए भावज! तुमने अच्छा किया कि तुमने मेरे विक्षुब्ध मन को सन्तुष्ट कर दिया ॥११॥

सन्दर्भ—सास तथा वधू में मनोमालिन्य का वर्णन। वधू की उक्ति सास के प्रति

(३५)

सासु अइहें ना हामार, आरे का करिहें।
अवटन आपन आमा बोलइबों, हमे रँगीले के का केहु करिहें ॥१॥
आरे ननद ना अइहें हमार का करिहें, हमे अइसन सुन्दरि के का
केहु करिहें।
आरे बबुआ खेलावन बहिना बोलइबो, हमार का करिहें ॥२॥
आरे हलुवा बनावन आपन भउजी बोलइयों।
आरे गोतिनी ना अइहें, हामार का करिहें ॥३॥
हमे रँगाली के का केहु करिहें।
हमरा अइसन सुन्दरि क का केहु करिहें ॥४॥

कोई स्त्री अपने पति के साथ परदेश में है। उसे लड़का होने वाला है। तब वह कहती है कि यदि मेरी सास सहायता के लिए नहीं आवेंगी

तो हमारा क्या करेगी, वच्चे को उवटन लगाने के लिये मैं अपनी माता को बुला लूंगी ॥१॥

यदि हमारी ननद भी नही आवेगी तो मेरा क्या नुकसान होगा। मैं वच्चे को खेलन के लिये वहन को बुला लूंगी ॥२॥

मैं हलुवा वनाने के लिए अपनी भावज को बुला लूंगी। यदि मेरी "गोतिनि" नही आवेगी तो मेरा नुकसान क्या होगा ॥३॥

हमारी जैसी सुन्दर स्त्री का कोई क्या बुरा कर सकता है ॥४॥

सन्दर्भ—गायिका स्त्रियों की उक्ति पुत्रवती वधू के प्रति

(३६)

ओठं सुखाले कठ सुखाले, मोरे वाला जियरा[१]।
एक बीरा पनवों[२] ना दिहलु हो, मोरे वाला जियरा ॥१॥
वइठे के चटइयो ना दिहलु[४] हो, मोरे वाला जियरा।
केहु के दुआरे का कहवि हो, मोरे वाला जियरा ॥२॥
अव नाहि गावन आइवि[५] हो, मोरे वाला जियरा।
वड़ा के खखनवा[६] के होरिला[७] हो, मोरे वाला जियरा ॥३॥

पुत्र पैदा होने पर स्त्रियां गाना गाती है। ऐसे ही अवसर पर गाने के लिये आई हुई स्त्रियाँ लडके की माता से शिकायत करती है कि हमारा गला और कंठ सूख गया परन्तु तुमने एक भी बीडा पान खाने को नही दिया ॥१॥

तुमने हम लोगो को वैठने के लिये चटाई भी नही दी। किसी के सामने हम लोग जाकर क्या कहेगी ॥२॥

तुम्हारा लडका वडी लालसा के वाद पैदा हुआ है, परन्तु हमारा आदर न होने के कारण अव हम लोग गाना गाने के लिये नही आवेगी ॥३॥

---

[१] हृदय। [२] पान। [३] चटाई। [४] दिया। [५] आऊँगी। [६] लालना। [७] पुत्र।

सन्दर्भ--स्त्री की अत्यधिक प्रसव-पीड़ा का मार्मिक वर्णन

(३१)

बरहो बरिस पर अइले, अँगना में ठाढ़ भइले ए राम।
घरवा अलोत[1] गरभ रहि गइले, कवनी बइरिनिया[2] सेज डासे हो राम ॥१॥
कवनी बइरिनिया भइया भेजेले, हमारा के बेदन[3] ए राम।
सासु बइरिनिया सेज डासेले, फूल छितरावे ए राम ॥२॥
ननदी बइरिनिया भइया भेजेले, हमरा के बेदन ए राम।
अब ना सइँया सँगे सूतबि, नयना मेराइबि[4] ए राम ॥३॥
अब ना मैं होरिला खेलाइबि, गरभ दुख सहब ए राम ॥४॥
आधी राति गइली पहर[5] राति, होरिला जनमेले ए राम।
ए राम बाजेला अनद[6] बधाव[7], महल उठे सोहर ए राम ॥५॥
अब हम सँइया संगे सूतबि[8], नयना मेराइबि ए राम।
अब हम होरिला खेलाइबि, गाना गवाइबि ए राम ॥६॥

स्त्री कह रही है कि मेरा पति परदेस से बारह वर्ष के बाद लौट कर आया और आँगन में खड़ा हो गया। जब वह रात को मेरे महल में चुपचाप आया, तब मैं उसके साथ सोयी और मेरे गर्भ रह गया ॥१॥

जब गर्भ के बड़े होने पर उस स्त्री को वेदना होने लगी तब वह कहती है कि किस वैरिन ने मेरे पास पति को भेजा था जिसके कारण आज मुझे इतनी वेदना हो रही है ॥२॥

मालूम होता है सास ने सेज बिछाकर फूल बिखेर दिये थे और मेरी ननद ने अपने भाई को मेरे पास भेजा था। अब मैं अपने पति के साथ नहीं सोऊँगी और उससे आँखें नहीं मिलाऊँगी ॥३॥

---

[1] छिपकर। [2] वैरिन। [3] वेदना, दुःख। [4] आँखें मिलाऊँगी, नजर लड़ाऊँगी। [5] प्रहर रात्रि। [6] आनन्द। [7] मंगल गान। [8] सोऊँगी।

अब मै गर्भ के दु ख को धारण नही कर सकती और पुत्र को नही खिलाऊँगी। उसी दिन आधी रात को लडका पैदा हो गया और इस खुशी में महल मे मगल बाजा बजने लगा तथा सोहर गाया जाने लगा ॥४।५॥

पुत्र-जन्म होने से प्रसन्न वह स्त्री कहती है कि अब मैं फिर अपने पति के साथ सोऊँगी और उससे आँखे मिलाऊँगी। अब मै अपने पुत्र को खेलाऊँगी और गाना गवाऊँगी ॥६॥

इस गीत में युवती स्त्री के प्रथम गर्भ धारण के अवसर पर उसके हृदय मे पैदा होने वाले भावो का बहुत ही सुन्दर वर्णन है जो अत्यन्त स्वाभाविक है।

सन्दर्भ—गर्भवती भावज का ननद के द्वारा सास आदि को ज्ञापन

(३८)

अब पूस फूले सरसउवा[१]; आरे बाबू हालना[२]।
अब भउजी के मुँह पियरइले[३]; आरे बाबू हालना ॥१॥
आरे भउजी रे बाडी गरभ से; आरे बाबू हालना।
अब ननदी रे लुबुलुबिया[४]; आरे बाबू हालना ॥२॥
अब जाई सासु से जनवली; आरे बाबू हालना।
आरे सासु रे लुबुलुबिया; आरे बाबू हालना ॥३॥
अब जाई ससुर से जनवली[५], आरे बाबू हालना ॥४॥
आरे गोतिनि रे लुबुलुबिया; आरे बाबू हालना।
अब जाई भसुरे से जनवली; आरे बाबू हालना ॥५॥
आरे भसुरे रे लुबुलुबइया; आरे बाबू हालना।
अब जाइ बढइया से जनवले; आरे बाबू हालना ॥६॥
आरे बढइया रे लुबुलुबिया; आरे बाबू हालना।

---

[१]सरसो। [२]हिलाऊँगी। [३]पीला हो गया। [४]क्षुद्र स्वभाव वाली। [५]बताया।

अब उतुनगटोला गढ़ि दिहले, आरे थारू हालना ॥३॥
अब लाहि पर सुनैला[1] हरिलवा, आरे थारू हालना ॥४॥

इस गीत का अर्थ सरल है।

सन्दर्भ—गर्भवती स्त्री का वर्णन

(३९)

पहिला महीना जब चढ़ल ए पिया, सासु के बोलिया न सुहाई।
साँच ए धनी साँच, हमरो दुलारी धनी साँच ॥१॥
दूसरो महीना जब चढ़ल ए पिया, ननदी के बोलिया ना सुहाई।
तीसरो महीना जब चढ़ल ए पिया, गोतिनी के बोलिया न सुहाई ॥२॥
चउथा महीना जब चढ़ल ए पिया, राउर बोलिया ना सुहाई।
साँच ए धनी साँच हमरो दुलारी धनी साँच ॥३॥

कोई स्त्री गर्भवती है। वह अपने पति से कह रही है कि जब गर्भ-धारण का पहिला महीना शुरू हुआ तब मुझे सास की बोली अच्छी नहीं लगती ॥१॥

दूसरा महीना शुरू होने पर ननद की और तीसरा महीना शुरू होने पर "गोतिन" की बोली भी अच्छी नहीं लगती, (क्योंकि ये लोग काम करने को कहते हैं और गर्भ-धारण के कारण मैं काम करने में असमर्थ हूँ) ॥२॥

ऐ पति! चौथा महीना चढ़ने पर तुम्हारी बोली भी अच्छी नहीं लगती। तब पति कहता है कि ऐ स्त्री! तुम ठीक कह रही हो। तुम्हारा कहना अक्षरशः सत्य है ॥३॥

सन्दर्भ—भावज के पुत्र पैदा होने पर ननद का नेग माँगना

(४०)

जाहु तोरा ए भउजी होरिला होइहे; तवे आइबि तोरा आँगनवा।
नथिया भी लेबों, झुलनी भी लेबों, लेबो हार अवरु जोसनवा[4] ॥१॥

---

[1]पालना। [2]तैयार किया, बनाया। [3]सोना है। [4]हाथ का एक गहना।

तबे भऊजी आइबि तोरा आँगनवा।
हलका भी लेबों, हँसुली भी लेबों; लेबों जड़ाऊ कँगानवा।
कठा भी लेबों, टीका[1] भी लेबों, लेवों सब सोना के गाहानवा ॥२॥
तबे भऊजी आइबि तोरे आँगनवा।

ननद अपनी भावज से कह रही है कि ए भावज! तुम्हे लडका होने वाला है। अत मै जब तुमसे नथिया, झुलनी, हार, हलका, हँसुली, कँगना, कठा, मँग-टीका और अन्य सोने के गहने लूँगी तभी मै तुम्हारे आँगन अथवा घर मे आऊँगी अन्यथा नही ॥१।७॥

---

[1]सिर का एक गहना।

: ३ :

जनेऊ के गीत

भोजपुरी समाज में जनेऊ तथा विवाह दो प्रधान संस्कार समझे जाते हैं। यद्यपि विवाह के समान जनेऊ के अवसर पर धूमधाम विशेष नहीं रहता, तो भी उच्च वर्ण के लोग (विशेष कर ब्राह्मण) बड़े उत्साह के साथ अपने बालकों का जनेऊ करते हैं। धनी तथा प्रतिष्ठित लोग इस संस्कार को सम्पादित करने के लिये किसी विद्वान् पुरुष को अथवा काशी के 'वेदुआ' (वैदिक) को बुलाते हैं और संस्कार के अंत में उसे भूयसी दक्षिणा देकर अपने को कृतकृत्य समझते हैं। यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर बाह्या-डम्बरों पर जितना ध्यान दिया जाता है उतना उसके मूल सिद्धांतों पर नहीं।

यज्ञोपवीत संस्कार होने के एक दिन पहले बालक के अभ्यासार्थ उसे एक कच्चे सूत का धागा इसलिये पहिना देते हैं कि वह शौच के समय असली जनेऊ को कान पर चढ़ाना सीख जाय। हमारे यहां इस कच्चे सूत के धागे को 'गोबर जनेऊ' कहते हैं। दूसरे दिन 'वेदुआ' जी आते हैं और बालक का जनेऊ-संस्कार प्रारम्भ करते हैं। जनेऊ देने के पहले बालक का 'चूडाकर्म' संस्कार किया जाता है। इसके बाद स्त्रियां उसे स्नान कराती हैं। इस समय वे अपने कलकण्ठ से—

> 'पाँच सखी आहो मीलिके,
> हरदी चढ़ाव हमरा लाल के।
> बारहो बाजन बजाइके,
> हरदी चढ़ाव हमरा लाल के॥'

गाती जाती हैं और बड़े प्रेम से बालक के शरीर में हल्दी लगाकर उसे स्नान कराती हैं। स्नान कर लेने के बाद वैदिकजी उस बालक का यज्ञोपवीत संस्कार कराते हैं। यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात् वह बालक ब्रह्मचारी गुरुकुल में पढ़ने के लिये धन की भिक्षा करता है, जिसे 'भीख मांगना' कहते

है। वह अपनी माता, कुल की स्त्रिया तथा अन्य सम्बन्धियो के पास जाता है और भीख मागता है। यह भीख तीन बार मागी जाती है। पहली भीख आचार्य को दी जाती है, दूसरी पिता को तथा तीसरी माता को। उच्च तथा धनी घरानो मे ब्रह्मचारी की इस भिक्षा मे हजारो रुपये तक मिलते है जो बहुत प्रतिष्ठा-सूचक समझा जाता है। परन्तु भिक्षा के इन रुपयो मे से बेचारे आचार्य को बहुत थोडा धन मिलता है। भिक्षा मागने के पश्चात् ब्रह्मचारी (बालक) विद्या पढने के लिये काशी या काश्मीर को चल पडता है, परन्तु अभी दो-चार कदम भी चलने नही पाता कि उसके घर वाले 'बबुआ लौटि आव' कहकर उसे वापस बुला लेते है और इस प्रकार ब्रह्मचर्याश्रमका सारा कार्य केवल कुछ मिनटो में ही समाप्त कर दिया जाता है। ब्रह्मचारी के काशी से पढकर लौटने के अभिनय के पश्चात् उसका समावर्तन सस्कार किया जाता है। उसके कौपीन, पादुका मृगचर्म को हटाकर उसे नूतन वस्त्रो से सुशोभित किया जाता है, अनेक प्रकार के अगराग और आभूषण लगाये जाते है। वैदिकजी तथा आचार्यजी उस स्नातक को सदुपदेश देते है। इस प्रकार यह जनेऊ सस्कार समाप्त हो जाता है। प्राचीन काल में चूडाकर्म, यज्ञोपवीत, वेदारभ तथा समावर्तन ये चार पृथक्-पृथक् सस्कार थे और भिन्न-भिन्न समयो पर किये जाते थे, परन्तु आजकल ये चारो सस्कार केवल चौबीस घण्टो के अन्दर समाप्त कर दिये जाते है।

जनेऊ के जो गीत आगे लिखे गये है उनमे प्राय इस सस्कार मे किये जाने वाले विभिन्न कृत्यो का वर्णन पाया जाता है। कही पर ब्रह्मचारी किसी स्त्री को माता कहकर सम्बोधित करता हुआ भिक्षा देने की प्रार्थना करता है, तो कही वह काशी या काश्मीर जाने के लिये प्रस्तुत है। यह कहने की आवश्यकता नही कि प्राचीन काल में काशी और काश्मीर ही सस्कृत विद्या के प्रधान केन्द्र-स्थल थे जहा जाकर ब्रह्मचारी विद्याध्ययन करते थे। एक गीत में ब्रह्मचारी भिक्षा मा[illegible] रहा है तब गृहस्वामिनी उससे पूछती है कि—

"किया लेबे बरुवा रे धोती से पोथी, किया लेबे पीयर जनेव।
किया लेबे बरुवा रे सोवरन भिखिया, जाही घरे कान्हर जनेव।"

यज्ञोपवीत के अवसर पर ब्रह्मचारी को पलाश का दण्ड, मूंज की कौपीन और मृगछाला धारण करना पड़ता है। इसका भी उल्लेख इन गीतो मे कहीं-कहीं मिलता है। एक गीत में एक स्त्री कह रही है—

"ताही वने चलले कवन बाबा; काटेले परास डाँडा।
खोजेले मिरिग छाला; हमरा दुलरुवा के जनेव ॥"

इस प्रकार इन जनेऊ के गीतो में कहीं पर यज्ञोपवीत मे विहित विभिन्न कृत्यो का वर्णन है तो कहीं माता और पिता के आनन्द और उछाह का परिचय दिया गया है। कहीं पर काशी जाने के लिये भिक्षा की माग है तो कहीं पलाश का दण्ड और मृगचर्म का धारण। आनन्द का अवसर होने के कारण इन गीतों में उतना करुण-रस नहीं पाया जाता जितना अन्य गीतो मे। अब मैं पाठको के रसास्वादन के लिए जनेऊ के कुछ गीत उपस्थित करता हूं।

सन्दर्भ—बहन के काते हुए सूत से भाई के जनेऊ पहनने का वर्णन

(४१)

कवनी सुहइया सुत कातेली भल ओटेली।
पुरेले[1] कवन राम जनेऊ कवन बरुआ[2] पहिरसु ॥१॥
जानकी सुहइया सुत कातेली भल ओटेली।
पुरेले केसव राम जनेऊ बबन बरुआ पहिरसु ॥२॥
सितवन्ती सुहइया[3] सुत कातेली भल ओटेली
पुरेले सुरुज राम जनेऊ उमा बरुआ पहिरसु ॥३॥
अन्नपूर्णा सुहइया सुत कातेली भल ओटेली
पुरेले मगला प्रसाद जनेऊ सुगन बरुआ पहिरसु ॥४॥

---

[1]पूरना (गाँठ देकर तैयार करना)। [2]यज्ञोपवीत का अधिकारी बालक। [3]लड़की।

कौन-सी लड़की सूत कात रही है? कौन ओट रही है? कौन पुरुष जनेऊ को पूर कर तैयार कर रहा है, तथा कौन लड़का इस यज्ञोपवीत को पहिनेगा ॥ १ ॥

जानकी सूत कात रही है तथा ओट रही है। केशवप्रसाद जनेऊ को पूर रहे हैं और बबन जी उसको पहनेंगे ॥२॥

मितवन्ती सूत कात रही है तथा ओट रही है। सूरजप्रसाद जनेऊ पूर रहे हैं तथा उमाशंकर उसको पहनेंगे ॥३॥

अन्नपूर्णा सूत कात रही है तथा ओट रही है। मंगलाप्रसाद उसको पूर रहे हैं तथा मगनजी उसको पहनेंगे ॥४॥

प्राचीन काल में विलायत से बनकर आये हुए सूत के जनेऊ नहीं बना करते थे, बल्कि घर में ही सूत काता जाता था और उसी के यज्ञोपवीत बनाये जाते थे। उपर्युक्त गीत भारत के इसी प्राचीन कुटीर-शिल्प की सूचना दे रहे हैं। उस समय बहन सूत कातती थी और उसी सूत के बने जनेऊ को उसका भाई पहनता था।

सन्दर्भ—पुत्र के यज्ञोपवीत संस्कार के लिए पिता के द्वारा पलाश-दण्ड का लाना

(४२)

ए जाहि बने सिकियो ना डोलेला बघओ ना गरजेला रे,
ए ताहि बने चलले कवन बाबा, काटेले पारास डाँडा खोजेले
मिरिग छाला रे ॥१॥
ए हमरा दुलरुवा के जनेव हवे,
काटिले पारास डाँडा, खोजिले मिरिग छाला रे ॥२॥

जिस वन में (हवा के अभाव में) एक पत्ता भी नहीं डोलता और बाघ भी नहीं गरजता है, उसी वन में पिता पलाश का दण्ड काटने के लिए और मृगछाला खोजने के लिए चल पड़ा ॥१॥

वह कहता है कि हमारे पुत्र का जनेऊ होने वाला है, इसलिए मैं पलाश का दण्ड काट रहा हूँ तथा मृगछाला खोज रहा हूँ॥२॥

यज्ञोपवीत के अवसर पर ब्रह्मचारी को पलाश का दण्ड धारण करने के लिए तथा मृगछाला पहनने के लिए दिया जाता है। इसी रीति का संकेत उक्त गीत में है।

सन्दर्भ—भाई के यज्ञोपवीत के अवसर पर जल न बरसने के लिए देवता से प्रार्थना

(४३)

मोरा पिछुअरवा वा छाछरी पीपर, अरु वा छाछरी पीपरि;
ताहि तर ठाढ भइली कवनी देई, अदीत मनावेलि हो ॥१॥
अरे देव गरजहु, जनि देव बरसहु, नेवत हम जाइबि रे;
अरे हामारी दुलरुवा के जनेव, नेवत हम जाइवि रे ॥२॥

भाई के यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर सम्मिलित होने को व्याकुल कोई बहन कहती है कि मेरे घर के पीछे पीपल का पेड़ है। उसके नीचे खड़ी होकर वह देवी सूर्य (यहा बादल) से प्रार्थना कर रही है॥१॥

हे देव! तुम न तो गरजो और न बरसो, मैं न्योता में अपने मायके जाऊँगी। मेरे प्यारे भाई का जनेऊ होने वाला है, उस समय न्योता पर मैं अवश्य जाऊँगी॥२॥

इस गीत में बहन का प्रेम भाई के प्रति उमड़ा पड़ता है।

सन्दर्भ—बालक ब्रह्मचारी के द्वारा जनेऊ की विधि पूछना

(४४)

आरे बइठे कवन बाबा कवन जाँघा जोरी,
आरे तहवाँ कवन बरुआ रोदाना पसारे॥१।
माई हमरो जनेउवा रे बाबा कवन विधि होइहे;
आरे पहिले परिहे मूँज के डाँड़ा, तब मिरिग छाला, तब परिहे
बरुआ रतन जनेउवा रे॥२॥

पिता अपने पुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार करने के लिए चौके पर जघा समेट कर बैठा हुआ है। वहां पर उसका छोटा पुत्र आकर रोने लगा ॥१॥

वह कहने लगा—"ए माता मेरा जनेऊ किस प्रकार से होगा?" इस पर माता ने उत्तर दिया कि "पहिले तुम्हें मूंज का डण्डा (करधनी) पहनाया जावेगा, फिर मृगछाला पहनाया जावेगा और अन्त में जनेऊ दिया जायेगा ॥२॥

सन्दर्भ—अधिक बाल बढ़ जाने के कारण बालक के द्वारा जनेऊ करने का आग्रह : पुत्र की उक्ति पिता के प्रति

(४५)

साभावा बइठल तुहु कवन बाबा रे,
बाबा लापरि[1] मोरि छेकेले लिलार[2] ॥१॥
लपरिया जग मुडनी रे; अगहन दीनवा;
कुदिन बरुवा रे बरुवा; आवे देहु जेठ, बइसाख[3] ॥२॥
लपरिया जग मुडनी रे नव मन गेहुँवा पिसाइबी;
बरुवा रे बरुवा नेवतबि[4] बाभाना[5] पचास ॥३॥

पिता सभा में बैठा हुआ था। उस समय उनके पुत्र ने आकर उनसे कहा कि पिता जी! मेरे सिर के बाल बड़े होने के कारण ललाट पर चले आ रहे हैं ॥१॥

पिता ने कहा कि इस समय अगहन का महीना है। जनेऊ के लिए समय ठीक नहीं है। जेठ या वैसाख का महीना आने दो ॥२॥

उस समय नव मन गेहूँ पिसा करके और पचास ब्राह्मणों को निमन्त्रित करके मैं तुम्हारा जनेऊ करूँगा ॥३॥

---

[1]बाल। [2]ललाट। [3]वैसाख। [4]निमन्त्रण देना। [5]ब्राह्मण।

सन्दर्भ—ब्रह्मचारी के द्वारा भिक्षा-याचन । किसी स्त्री की उक्ति ब्रह्मचारी के प्रति

(४६)

कहवहीं[1] से उजे अइलेरे बरुवा, कइसन[2] वीरीति[3] तोहार,
केकर[4] सन्तति तू हव ए बरुवा, कवन देई अँगन भइली ठाढ ॥१॥
किया लेबे बरुवा रे धोती से पोथी[5],
किया लेबे पियर जनेव ॥२॥
किया लेबे बरुवा रे सोवरनी के भिखिया,
जाहि घर कान्हर जनेव ॥३॥

कोई ब्रह्मचारी भिक्षा मागने के लिए किसी गृहस्थ के घर पर गया हुआ है। उस ब्रह्मचारी को देखकर गृहस्वामिनी आती है और उससे पूछती है कि ऐ ब्रह्मचारी तुम कहाँ मे आ रहे हो? तुम्हारी वृत्ति (जीविका) क्या है तथा तुम किसके पुत्र हो? ॥१॥

ऐ ब्रह्मचारी क्या तुम धोती लोगे? अथवा पढने के लिए पुस्तक लोगे? अथवा पहिनने के लिए पीला जनेऊ लोगे?

क्या तुम्हारे घर में यज्ञोपवीत हो रहा है अतएव भिक्षा मागने के लिए आये हो?

सन्दर्भ—ब्रह्मचारी के द्वारा भिक्षा-याचन

(४७)

कासी जी से उजे अइलो रे बरुवा ठाढ भइले ॥१॥
कवन बाबा दुआर भीखि देहु भीखि देहु,
मायरी कवनी देई हम दूर देसी ही लोग ॥२॥
दीहल भीखियो ना लेला रे बरुवा,
माँगी घरे चलि जाई ॥३॥

---

[1]कहा। [2]कैसी। [3]वृत्ति (जीविका)। [4]किसके। [5]पुस्तक।

काशी जी से आये हुए दो ब्रह्मचारी खड़े हुए हैं और पूछ रहे हैं यह किस बाबा का घर है ॥१॥

ऐ इस गृह की स्वामिनी माता हम लोगों को भिक्षा दो। हम लोग बहुत दूर देश (काशी) के रहने वाले हैं। (परन्तु विलम्ब होने के कारण वे चले जाते हैं) ॥२॥

गृहस्वामिनी कहती है कि ये ब्रह्मचारी दी हुई भिक्षा भी नहीं लेते हैं और घर पर आकर, भिक्षा माँग कर चले जाते हैं ॥३॥

सन्दर्भ—ब्रह्मचारी के द्वारा भिक्षा-याचन

(४८)

चइतहीं' बरुवा तेजो भयो बइसाखें' पहुँचेला रे,
जइबों में जइबों जाही घरे जाहाँ बाबा कवन बाबा रे ॥१॥
उनुकर धोती फिचबों', जीहि बाबा नवगुन' दीहें रे,
जइबों में जइबों जाही घरे, जाहा मायरी कवनी देई रे ॥२॥
भीखि देहु माता असीस देहु, हम त कासी के बाभन' रे,
एहि भीखिया' के कारने, हम त छोड़लों बनारस रे ॥३॥
ए जाहु हम जनती ए माई, कवन बरुवा अइहें रे,
बालू के खेत जोतइतों, मोतिया उपजइतों' रे ॥४॥
कंचन थार' भरइतों', मोतिया भीखि देहितों'' रे ॥५॥

कोई बालक अपने यज्ञोपवीत संस्कार के लिए बड़ा उतावला हो रहा है। वह कहता है कि चैत का महीना आ गया और बैसाख का महीना भी आ पहुँचा। मैं वहाँ जाऊँगा जहाँ मेरे गुरु जी रहते हैं। मैं उनकी धोती को फींचूँगा। वे मेरा जनेउ संस्कार अवश्य करा देंगे ॥१।२॥

मैं अपनी माता के पास जाऊँगा और कहूँगा कि हे माता भिक्षा दो और हमें आशीर्वाद दो। हम काशी के ब्राह्मण हैं और इसी भिक्षा के कारण हमने काशी छोड़ा है ॥३॥

तब गृहस्वामिनी कोई माता कह रही है कि यदि मैं जानती कि कोई ब्रह्मचारी मेरे घर भिक्षा के लिए आने वाला है तब मैं बालू के खेत जोनवाती और उसमें मोती पैदा करती ॥४॥

सोने के थाल को भर कर मैं मोती की भिक्षा उसमें देती ॥५॥

सन्दर्भ—स्त्री की उक्ति पति के प्रति। पुत्र को जनेऊ देने की प्रार्थना

(४९)

नव दुअरिया[1] नव खम्भा गडावे रे;
ताही नीचे सुतेले कवन बाबा सुख नीन री ॥१॥
आहोरे पइसी जगावेली कवन देई,
सुनु पिया पंडित रे ॥२॥
बरहो बरिसवा[2] के लालना[3],
बरुवा[4] देइ घालहु रे ॥३॥
आरे धनी छुलछनी बरुवा कुछु चाहेला रे,
अछत, चनन, मोतिया, गेठी बन्हन रे ॥४॥
लाछ टका लाछ[5] धोती मोतिया गेठी बन्हन[6] रे ॥५॥

पुत्र बारह वर्ष का हो गया है। अत पत्नी पति से पुत्र को जनेऊ देने की प्रार्थना कर रही है। अर्थ स्पष्ट है।

संदर्भ—पुत्र के जनेऊ के लिए माता की तैयारी

(५०)

खोरियनि खोरियनि बढइया पुकारे रे,
केकरा दुलरुवा के जनेव रे, के लीहि पीढवा हमार रे ॥१॥
खोरियनि खोरियनि बाभाना पुकारे रे,
केकर दुलरुवा के जनेव रे, के लीहि जनेउवा हमार रे ॥२॥
घर में से निकली मतारी, हामारा दुलरुवा के जनेव रे;
हम लेब पीढवा बढइया के, जनेउवा तोहार रे ॥३॥

---

[1]द्वार। [2]वर्ष। [3]लड़का। [4]जनेऊ। [5]बहुत (अधिक)। [6]ग्रन्थि बन्धन।

गली-गली में बढई पुकार रहा है कि किसके प्यारे लडके का जनेऊ है? कौन मेरा पीढा लेगा ॥१॥

गली-गली में ब्राह्मण घूम रहा है और कहता है कि किसके लडके का जनेऊ है? कौन मेरा बनाया जनेऊ लेगा ॥२॥

इन पुकारो को सुन कर पुत्र के प्यार मे विभोर माता घर में से निकली और कहा कि मेरे लडके का जनेऊ है। ऐ बढई! मैं तुम्हारा पीढा और ब्राह्मण का जनेऊ लूँगी ॥३॥

संदर्भ—जनेऊ के समय फूआ के न आने से बालक की चिन्ता

(५१)

गाँगा यमुना परेला ओहार, त कवन फुआ ना अइली रे;
किया फुआ पहिरबि रातुल[1], किया रे दखीन[2] चीरा रे ॥ १ ॥
कवन बहतर[3] रउवा पहिरबि, लपरी परीछबि रे,
पियर बहतर हम पहिरबि लपरी परीछबि[4] रे ॥२॥
नाहि रातुल पहिरबि नाहि रे दखीन चीरा रे ॥३॥

जिस बालक का यज्ञोपवीत होने वाला है वह लडका कहता है कि बीच में गगा और जमुना पडती है। अत हमारी कौन-सी फुआ अभी तक नही आई है ॥१॥

फुआ के मायके से चली आने पर लडका पूछता है कि ऐ फुआ तुम चुनरी पहिनोगी या दक्षिण का कपडा? कौन-सा वस्त्र पहन कर तुम मुझे परछोगी ॥२॥

तब उसकी फुआ ने उत्तर दिया कि न तो मैं चुनरी पहिनूँगी और न दक्षिण का कपडा। मैं पीला वस्त्र पहिनूँगी और उसीसे तुम्हें परीछूँगी ॥३॥

यह गीत उस काल की याद दिलाता है जब आवागमन के साधन बहुत कम थे तथा नदी पार करना कठिन समझा जाता था।

---

[1]चुनरी। [2]दक्षिण। [3]वस्त्र (कपडा)। [4]परीछना।

: ४ :

क—विवाह के गीत

अन्य समाजो के समान भोजपुरी समाज मे भी विवाह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सस्कार समझा जाता है। यह बडी धूमधाम मे सम्पादित किया जाता है। धनी-मानी पुरुष की तो वात ही क्या साधारण स्थिति के आदमी भी इस शुभावसर पर आवश्यकता मे अधिक धन खर्च कर देते है और यदि पास में धन न रहा तो कर्ज लेकर भी खुले हाथ खर्च करते है। भोजपुरी समाज में एक कहावत प्रचलित है "खर्चा होय, सादी कि वादी" अर्थात् रुपया या तो विवाह मे खर्च होता है अथवा झगडे (मुकद्दमे) में। जहाँ के लोगो की यही प्रवृत्ति है वहाँ विवाह जैसे शुभ तथा उछाह भरे अवसर पर कितना धन खर्च किया जाता होगा, इसका सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता है।

भोजपुरी समाज में विवाह—विशेषतया लडकियो का विवाह—एक विषम समस्या बन गई है। इसका प्रधान कारण है तिलक तथा दहेज की कुत्सित प्रथा। लडकियो का पैदा होना इसीलिए समाज मे बुरा समझा जाता है क्योकि उनके विवाह मे पिता को वडी परेशानी उठानी पडती है। जब लडकी आठ-नौ वर्ष की होती है तभी से पिता उसके लिए योग्य वर की खोज में निकलता है। वह स्थान-स्थान पर जाता है परन्तु तिलक की कुत्सित प्रथा के कारण वर का मुह माँगा दाम न देने के कारण लडकी के विवाह में सफलीभूत नही होता। हमारे समाज मे लडके वाले के घर यदि कोई लडकी वाला विवाह के लिए आता है तब वह निर्लज्ज होकर उससे अपने लडके के लिए मन माँगा तिलक माँगता है। धनी, प्रतिष्ठित पुरुषो की तो वात ही क्या, साधारण लोग भी हजार रुपये के नीचे वाते नही करते है। इस लेखक ने स्वय कितने लडके वालो को यह कहते हुए सुना है कि "विना हजार के वाजार ना लागी" अर्थात् विना हजार रुपया तिलक लिये

में अपने लड़के का विवाह नहीं करने दा। इस प्रकार से छल-छद्म से लड़के वाले लड़की वालों से खूब रुपया एठते हैं। अपनी कुलीनता, धन तथा प्रतिष्ठा का अतिरंजित वर्णन कर लड़के वाला कन्या के पिता को लुभा कर उसे अधिक से अधिक रुपया तिलक देने को विवश करता है अन्त में कई स्थानों से भग्नाश लड़की का पिता माँगे गये धन को लाचार होकर देने को प्रस्तुत होता है और तिलक का दिन निश्चित कर दिया जाता है। यह बात उल्लेखनीय है कि अपनी पुत्री के भावी पति के चुनाव में पुत्री का पिता पति की विद्या की ओर उतना ध्यान नहीं देता जितना उसकी कुलीनता और वैभव की ओर। इसीलिए तिलक का रेट बढ़ता चला जाता है। अस्तु, तिलक की तिथि निश्चित हो जाने पर लड़की का पिता अथवा भाई तिलक के लिए निश्चित रुपये को तथा वस्त्र और बर्तन लेकर अपने कुछ बन्धु-बान्धवों के साथ उक्त तिथि पर लड़के वाले के घर आता है। इस दिन वर पक्ष वालों के यहाँ बड़ा आनन्द मनाया जाता है। गाना बजाना भी होता है। गाँव भर के लोगों को भोज (दावत) दिया जाता है। रात्रि के समय जब स्त्रियाँ सुन्दर गीत गाती रहती हैं, लड़की का भाई वर के हाथ में पूर्व निश्चित रुपया, वस्त्र आदि देता है तथा वर के सिर में तिलक लगाता है। इस प्रथा को हमारे यहाँ 'तिलक चढ़ाना' कहते हैं। अन्त में कन्या पक्ष के लोगों को सुस्वादु भोजन करा कर यह उत्सव समाप्त किया जाता है।

जहाँ पर तिलक के लिए निश्चित धन कन्या-पक्ष वाले वर-पक्ष वाले को ठीक-ठीक चुका देते हैं वहाँ पर 'तिलक' का उत्सव सानन्द समाप्त हो जाता है परन्तु जहाँ तिलक का रुपया पूरा नहीं चुकाया गया वहाँ की हालत फिर न पूछिए। फिर तो रंग में भंग ही पड़ जाता है। वर का पिता या भाई क्रुद्ध होकर तिलक का सब सामान कन्या-पक्ष वालों को लौटाने लगता है, उन्हें अपमानित भी करता है। अन्त में जब उसे पूरा रुपया मिल जाता है तभी वह कन्या-पक्ष वालों का पिण्ड छोड़ता है। इस लेखक को भी कई ऐसे मौकों पर उपस्थित होने का दुर्भाग्य प्राप्त है। यहाँ पर वर-पक्ष वालों ने कन्या-पक्षवालों से उक्त प्रकार से रुपया लिया था।

तिलक का उत्सव समाप्त होने के बाद वर-पक्ष वाले बरात ले जाने की तैयारी मे जी-जान से लग जाते हैं। अपने गाँव मे, आसपास के अन्य गाँवो तथा सबंधियो के पास हजाम (नाई) बारात का नेवता (निमन्त्रण) ले जाता है तथा खूब सज-बजकर उस दिन आनेके लिए कहता है। बारात मे चलने के लिए अधिक से अधिक लोगो को न्योता दिया जाता है। यदि लडकी वाले का गाँव लडके वाले के गाँव के पास ही हुआ तो फिर उसका हाल बेहाल ही समझिए। उसके बार-बार मना करने पर भी बारातियो की सख्या अवश्य दूनी और तिगुनी हो जाती है जिसका समुचित प्रबन्ध करना उसके लिए अत्यन्त कठिन हो जाता है।

भोजपुरी बारातो में हाथी का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। बारात की विशालता तथा सज-धज हाथियो की सख्या मे ही मापी जाती है। बारात में जितने अधिक हाथी जायेंगे, उतनी ही बारात की अधिक प्रशसा होगी और इसके विपरीत जिस बारात मे हाथी नही गया उसकी मानो नाक ही कट गई। इसीलिए वर-पक्ष वाले बारात मे अधिक से अधिक हाथी ले चलने के लिए प्रयत्नशील और परेशान रहते हैं। हाथी के साथ ही घुडदौड के लिए घोडा ले चलना भी आवश्यक होता है। वर तथा समधी (वर का पिता) के चढने के लिए पालकी या नालकी का प्रबन्ध होता है। इस प्रकार सारा प्रबन्ध ठीक हो जाने पर बारात चल पडती है। वर के घर से निकलने के पहिले परिवार तथा गाँव की स्त्रियाँ लोढा लेकर जो पत्थर का बना होता है—वर के सिर पर घुमाती हैं तथा अपने कलकण्ठ से 'परीछि ना लेहु मोरे राम रे ललनवा' गाती जाती हैं। इसको 'परीछावन' कहते हैं। सभवत यह वर की मगलमय यात्रा के लिए किया जाता है।

अब भोजपुरी बारात का जरा दृश्य देखिए। बारात के आगे हाथियोंकी पक्तियाँ चलती हैं जिन पर वर-पक्ष के प्रतिष्ठित लोग बैठते हैं। यदि किसी धनी पुरुष की बारात हुई तो इन हाथियो पर झूल भी पडे रहते हैं जो अत्यन्त शोभा देते हैं। हाथियो के पीछे घुडसवार चलते हैं जो अपने सिर पर मुरेठा (पगडी) बाँधे घोडो को 'कदम' चाल मे बडी अदा के साथ जमाते ले

चलते हैं। घोड़ों के पीछे 'समधी' जी की पालकी तथा उनके पीछे 'वर' महोदय की 'नालकी' चलती है। वर की नालकी के साथ नाई (हजाम) चलता है जो समय-समय पर चँवर हिलाता जाता है। नालकी के पीछे साधारण बारातियों का समूह चलता है जो नये वस्त्रों से सुसज्जित होनेके कारण बड़ा ही सुन्दर लगता है। बारात के बीच में कहीं बैण्ड बजता है तो कहीं रोशन-चौकी। 'सींगा' वाले (शृंग के आकार का एक विशेष बाजा) अपनी 'धूतू' 'धूतू' की मधुर आवाज से सारे वायु-मण्डल को गुंजित कर देते हैं। बारात के अन्त में भोजपुरी लठैत जवान चलते हैं जिनकी उपस्थिति बारात की रक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक समझी जाती है। इस प्रकार से बड़े सज-धज, ठाठ-बाट के साथ भोजपुरी बारात चलती है जिसकी शोभा अपूर्व होती है।

लड़कीवाले के घर बारात पहुँचने पर उसके द्वार पर वर की पूजा होती है जिसे 'द्वार-पूजा' कहते हैं। यहाँ पंडित लोग आपस में शास्त्रार्थ करते हैं। द्वार पूजा समाप्त होने के बाद लड़कीवाले की ओर से बारातियोंको भोजन का निमन्त्रण दिया जाता है जिसे 'आज्ञा माँगना' कहते हैं। यह निमन्त्रण केवल मुख से निवेदन करने से ही नहीं होता बल्कि इसके लिए रुपया भी देना पड़ता है। यदि रुपये की संख्या कुछ कम होती है तो समधी महोदय रुष्ट हो जाते हैं और भोजन का निमन्त्रण स्वीकार ही नहीं करते। कभी-कभी तो समधी की हठधर्मिता के कारण सारी बारात को रात भर अनशन व्रत ही करना पड़ता है। समधी की इसी कुटिलता तथा जिद के कारण भोजपुरी में एक कहावत प्रचलित है कि "तीन टेढ़े टेट, समधी टेढ़, नालकी टेढ़, सींगा टेढ़" अर्थात् बारात की शोभा तीन चीजों के टेढ़े होने के कारण होती है। इनमें पहिला समधी टेढ़ा होना चाहिए, दूसरा नालकी का बाँस और तीसरा सींगा (बाजा)। भोजन-निमन्त्रण के पश्चात् वर का बड़ा भाई, भावी वधू को को गहने तथा वस्त्र आदि देता है जिसे 'कन्या निरीक्षण' कहा जाता है। भोजपुरी में इसे 'गुरहत्थी' कहते हैं। 'गुरहत्थी' के बाद वर मण्डप में लाया जाता है और शास्त्रीय रीति से कन्या के साथ उसका विवाह सम्पादन

प्रारम्भ होता है। विवाह के समय लड़की का पिता अपनी प्यारी पुत्री को गोद में बैठाता है। वह वर के पैर को पूजता है और शास्त्रीय रीति से अपनी पुत्री को वर के लिए दानरूप में दे देता है। हमारे यहां इस प्रथा को 'कन्या-दान' कहते हैं। यह बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कार्य समझा जाता है। जो पिता या भाई 'कन्या-दान' करता है वह अपनी पुत्री या बहिन के घर का अन्न ग्रहण तो दूर रहा वह उस गांव का पानी तक भी नहीं पीता। 'कन्या-दान' के समय के गीत बड़े ही करुणाजनक होते हैं।

"दिनवा हरेलू ए बेटी भूख रे पिअसिया,
रतिया हरेलू सिर पगिया नु रे॥"

में कितनी हृदय-वेदना छिपी पड़ी है। विवाह के बाद वर एक घर में लाया जाता है जिसे 'कोहबर' कहते हैं। यहां गांव की युवती तथा बूढ़ी स्त्रियां एकत्रित होकर वर से अनेक प्रकार का मजाक करती हैं जो बहुत ही संयत और शिष्ट होता है। इस प्रकार विवाह का कृत्य सम्पादित होता है।

भोजपुरी बारात में एक विशेष उल्लेखनीय वस्तु है—बारातियों का भोजन, क्योंकि इसमें त्रुटि का होना झगड़े का घर बन जाता है और बाद में निन्दा का कारण होता है। हमारे गांवों में बारातियों के भोजन के लिए बड़ी मोटी तथा चौड़ी पूरियां तैयार की जाती हैं जो वजन में पाव भर (१/४ सेर) से कम नहीं होतीं। ये खाने में स्वादिष्ट और मुलायम होती हैं। दूसरी उल्लेखनीय खाद्य वस्तु 'फुलवरा' है जो उड़द को पीसकर बनाया जाता है और आकार में हाकी के गेंद के समान बड़ा और गोला होता है। वर का विवाह जब समाप्त हो जाता है तब बारातियों को खाने के लिये बुलाया जाता है। इस समय का दृश्य भी कुछ कम मनोरंजक नहीं होता बारातियों में से कोई पत्तल माँगता है तो कोई पानी, कोई पूरियों के लिए आवाज देता है तो कोई साक के लिए, कोई दही माँगता है तो कोई चीनी परोसने के लिए कहता है। भोजपुरी दावतों में दही परोसना भोजन-समाप्ति का सूचक है अतः दही और चीनी सबके अंत में दी जाती है। इस प्रकार बड़ी चहल-पहल के साथ बारातियों का भोजन समाप्त हो जाता है।

"हमरा के खोजिह् ए बाबा चाँद सुरजवा"

कहीं-कहीं पर कन्या के छोटी होनेका भी वर्णन मिलता है। लड़की की माता वर से प्रार्थना करती है कि हमारी लड़की छोटी है अतः इसे आराम से रखना।

"मोरी धिया लरिकी से बारी, बोलहि् नाहि जाने।
तब हमहूँ कवला के फूल, दुनो प्रानी विहँसवि हो॥"

संदर्भ—सास के द्वारा वर का परीछना। सास की उक्ति वर के प्रति

(५२)

जइसन[1] आषाढ़ रे मास के बिजुली चमकेला हो।
ओइसन[2] कवन राम के दुलहा[3] के, दाँतावा झलकेला हो॥१॥
जब रे कवन दुलहा नगर से बाहर भइले नु हो।
ससुरु कवन रे राम के हियरा जुड़इले[4] नु हो॥२॥
परिछे बाहर ले भइली सासु हो मदागिनि, परिछत[5] बदन निहारेलि[6] हो।
जाहु हम जनिती कि अइसा रघुबन्सी बाड़े, मिर्जापुर के लोहवा बेसहितीं नु हो॥३॥
सोने रूपे सोहगइली मे, धरितो बेसाहि् नु हो।
किया तो के आहे ए बाबू, कुनेला[7] कुनेली नु हो॥४॥
किया तो के आहो ए बाबू, साचावा मे ढारलि नु हो।
नाहिं हम आहो ए सासु, कुनेला कुनेलिनि हो॥५॥
नाहि हमरो आहो ए सासु साचावा के ढारलि नु हो॥६॥
जब हम रहलीं ए सासु, आमा के गरभ मे नु हो।
चनन रगरी रे रगरी[8], आमा हमारी पियली नु हो॥७॥

---

[1]जैसा। [2]ऐसा। [3]दूल्हा (वर)। [4]सन्तुष्ट हो गई। [5]वर के सिर पर घुमाना। [6]देखती है। [7]गढ़ा गया। [8]रगड़ करके।

जवन ओखदवा[1] ए बाबू, आमा रउरी पियली नु हो।
तवन ओखदवा ए बाबू हमरा के बकसि[2] दीहि हो ॥८॥
पुरब के चानावा[3] ए सासु, पछिम चलि जाई।
आमा के ओखदवा ए सासु, रउरा नाहि पाइवि[4] हो ॥९॥

कोई युवक अपने ससुराल गया हुआ है। उसको देखकर उसकी सास कहती है कि जैसे आषाढ़ के महीने में बिजली चमकती है उसी प्रकार से हमारे दामाद का दाँत झलकता है ॥ १ ॥

जब वह दूल्हा नगर में बाहर हुआ। तब उसे देखकर उसके ससुरजी का हृदय अत्यन्त सन्तुष्ट हो गया ॥ २ ॥

जब वह युवक अपनी ससुराल में पहुँचा तब सास उसे परीछने के लिए आई तथा परीछते समय उसका मुख देखती रही। उसने कहा कि यदि मैं जानती कि मेरा दामाद राम के समान सुन्दर है तो उसे परीछने के लिए मिर्जापुर से पत्थर का लोढ़ा मँगाती ॥ ३ ॥

अपने दामाद के सत्कार के लिए मैं सोना चाँदी भी खरीदकर रखती। सास ने अपने दामाद की अलौकिक सुन्दरता पर मुग्ध होकर पूछा कि ऐ बेटा! तुम्हें किस दैवी शक्ति ने गढ़ा है अथवा तुम साँचे में ढाले गये हो ॥ ४ ॥

दामाद ने उत्तर दिया कि न तो मुझे किसी दैवी शक्ति ने गढ़ा है और न मैं साँचे में ही ढाला गया हूँ ॥ ५ । ६ ॥

दामाद ने कहा कि ऐ सास! जब मैं अपनी माता के गर्भ में था तब मेरी माता ने चन्दन को रगड़-रगड़कर पिया था। इसी से मैं इतना सुन्दर पैदा हुआ ॥ ७ ॥

सास ने कहा कि जिस दवा को तुम्हारी माता ने खाया था। उसी दवा को मुझे भी दे दो, जिससे मैं उसे अपनी लड़की को खिलाऊँ ॥ ८ ॥

दामाद ने उत्तर दिया कि यदि पूरब का चन्द्रमा पश्चिम में भी उदय होने लगे तो भी ऐ सास! तुम मेरी माता की दवा को नहीं प्राप्त कर सकती अर्थात् मैं तुम्हें उसे नहीं प्रदान कर सकता ॥ ९ ॥

---

[1]औषध, दवा। [2]दे दो। [3]चन्द्रमा। [4]पाओगी।

संदर्भ—पुत्री के द्वारा सुन्दर वर खोजने के लिए पिता को निवेदन पिता का उत्तर

(५३)

वर खोजु वर खोजु वर खोजु रे, बाबा अब भइलों विअहन[1] जोगए।
आरे हामारा के बाबा सुनर[2] वर खोजेले, हँसे जनि दुअरवा[3] के लोग ए ॥१॥
पुरुब खोजलों बेटी पछिम रे खोजलों, अवरु ओड़इसा[4] जगन्नाथ[5] ए।
आरे तीनों भुवन तुहें वर खोजलों कतहीं ना मिले सिरिराम ए ॥२॥
पुरुब खोजल बाबा पछिम रे खोजलों, अवरु ओड़इसा जगन्नाथ ए।
तीनो भुवन ए बाबा ! हमें वर खोजलों, कतहीं ना मिले सिरिराम ए ॥३॥
आरे सात समुन्दर ए बाबा सरजू बहत हैं; खेलत बाड़े सरजू तीरे ए।
चारु भइया ले सुनर ए बाबा ! खेलेले सरजू का तीर ए ॥४॥

कोई लड़की अपने पिता से कह रही है कि ऐ पिता ! मेरे लिए वर खोजो क्योंकि अब मैं विवाह करने योग्य हो गयी हूँ। ऐ पिता ! मेरे लिए सुन्दर वर खोजना जिससे कोई मेरी हँसी न उड़ाये ॥ १ ॥

पिता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी ! मैंने तुम्हारे लिए पूरब तथा पश्चिम और उड़ीसा में जगन्नाथ (पुरी) आदि अनेक स्थानों में वर खोजा। तीनों भुवन में मैंने वर ढूंढा लेकिन श्रीराम मुझे नहीं मिले ॥ २ ॥

लड़की ने उत्तर दिया कि ऐ पिता जी आपने पूरब, पश्चिम उड़ीसा तथा जगन्नाथ आदि सब स्थानों में मेरे लिए वर खोजा परन्तु आपको कहीं भी श्रीराम नहीं मिले ? ॥ ३ ॥

लड़की ने कहा कि पिता जी ! एक बड़ी सरयू नदी अयोध्या में बहती है। वे उसी के तीर पर खेलते होंगे। श्रीराम अपने चारों भाइयों में अधिक सुन्दर हैं और वे सरयू के किनारे खेलते हुए मिलेंगे ॥ ४ ॥

---

[1]विवाह। [2]सुन्दर। [3]द्वार। [4]उड़ीसा। [5]जगन्नाथ (पुरी)। [6]नदी का।

संदर्भ—पति-पत्नी का मदन-लेख वर्णन

(५४)

बेरि बेरि तोहि बरजों कवन दुलहा, बिरिंदा बने जनि जाहु ए।
आरे बिरिंदा बने देव बरिसि जइहे, भींजि जइहे चनन तोहार ए ॥१॥
आजन भींजेला बाजन[1] भींजेला; भींजेला घोडा के लाहास[2] ए।
आरे घोड़वा के ऊपर भींजेले कवन दुलहा; चनन भरेला लिलार[3] ए ॥२॥
बेरि हि बेरि[4] तोहिं बरजों कवन सुहवा, बिरिंदा बने जनि जाहु ए।
आरे बिरिंदा बने देव बरिसि जइहे, भींजि जइहे सजन तोहार ए ॥३॥
आजन भींजेला बाजन भींजेला, भींजेला बतीसो काहार ए।
आरे डँडिया[5] के भीतर भींजेली कवन सुहवा, सेन्दुर भरेला लिलार ए ॥४॥
चिठिया जे लिखि लिखि भेजेला दुलहवा, देहुँगे दुलहिन के हाथ ए।
आरे आपन ए दुलहिन सेन्दुरा सहेजिह[6], बूँद परत भीहिलाइ[7] ए ॥५॥
चिठिया जे लिखि लिखि भेजली दुलहिनिया, देहुगे दुलहा का हाथ ए।
आरे आपन ए दुलहा चनन सहेजिह, घाम[8] परत कुम्हीलाइ[9] ए॥६॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि मैंने बार-बार, अपने पति को मना किया कि तुम वृन्दावन मत जाओ, वहाँ पर पानी बरसेगा और तुम्हारा चन्दन भीग जायेगा ॥ १ ॥

---

[1]सामान। [2]काठी। [3]ललाट। [4]बार-बार। [5]पालकी। [6]रक्षा करना। [7]नष्ट हो जाता है। [8]धूप। [9]गल जाना।

तुम्हारा सामान भीग जायेगा। तुम्हारा घोड़ा और उस पर बैठे हुए तुम दोनों भीग जाओगे और मारे ललाट में चन्दन फैल जायेगा ॥ २ ॥

तब पति कह रहा है कि बार-बार मैंने अपनी स्त्री को मना किया कि तुम वृन्दावन अपने मायके मत जाओ। क्योंकि वहाँ पर पानी बरसने से सारा सामान भीग जायेगा ॥ ३ ॥

सारा सामान भीगेगा, पालकी में लगे हुए बत्तीस कहार भी भीग जायेंगे तथा पालकी में बैठी हुई मेरी स्त्री भी भीग जायेगी तथा मारे ललाट में सिन्दूर फैल जायेगा ॥ ४ ॥

पति ने एक पत्र लिखकर अपनी स्त्री के पास भिजवाया जिसमें लिखा था कि ऐ स्त्री अपने सिन्दूर की रक्षा करना क्योंकि यह बूंद पड़ते ही नष्ट हो जाता है ॥ ५ ॥

इसके उत्तर में पत्नी ने भी अपने पति के पास यह पत्र लिखकर भेजा कि ऐ पति! अपने चन्दन की तुम अवश्य रक्षा करना क्योंकि यह धूप पड़ते ही नष्ट हो जाता है ॥ ६ ॥

संदर्भ—पति की कठोरता तथा निर्दयता का वर्णन

(५५)

सवन भदउवाँ के नीसु अँधियरिया, बिजुली चमकेले सारी रात ए।
आरे सुतल कन्त हम कइसे जगावों, भँइसी तुरावेले छानि[1] ए ॥१॥
बोलिया त ए प्रभु हम एक बोलिले, जाहु बोलि सुनि मनवा लाइ ए।
आरे भँइसी बेचि ए प्रभु चुरवा[2] गढ़इती, हम रउरा सोइती निरभेद ए ॥२॥
बोलिया त धनि एक हम बोलिलें, जाहु बोलि सुनि मन लाइ ए।
आरे तोहि के बेचिए धनि भँइसी लेअइबों, बछरू[3] चरइबों सारी राति ए ॥३॥

---

[1]रस्सी। [2]पाटी। [3]बछड़ा।

के तोहरा ए प्रभु कुटी ही पीसी, के तोहरा करी जेवनार[1] ए।
आरे के तोहरा ए प्रभु दुधवा औंवटीहें[2] के तोहरा जोरन[3] लाइ ए ॥४॥

चेरी बेटी ए धनि कुटी ही पीसी, चेरी बेटी करी जेवनार ए।
आरे बहिना हामार ए धनि दुधवा औंवटीहे, आमा मोरा जोरन लाइ ए ॥५॥

कोई स्त्री कह रही है कि सावन और भादो की निस्तब्ध अँधेरी रात्रि है और सारी रात बिजुली चमक रही है। मेरा पति सोया हुआ है। घर की भैंस ने अपनी रस्सी तोड़ दी है। ऐसे समय में पति देव को कैसे जगाऊँ॥ १ ॥

स्त्री ने कहा कि ऐ पति! मैं एक बात कहना चाहती हूँ जिसे सुन आप अपने हृदय में धारण करें। मैं भैंस को बेचकर चारपाई की पाटी मरम्मत कराऊँगी जिससे मैं और तुम सुखपूर्वक सो सकें॥ २ ॥

पति ने उत्तर दिया कि ऐ स्त्री मैं तुम्ही को बेचकर एक भैंस खरीदूंगा और उसके बच्चे को सारी रात चराऊँगा॥ ३ ॥

स्त्री ने जवाब दिया कि जब तुम मुझे बेच दोगे तब घर में कौन कूटेगा और आटा पीसेगा। कौन तुम्हारी रसोई बनावेगा और दूध गर्म करके कौन उसमें जोरन डालेगा॥ ४ ॥

पति ने कहा कि ऐ स्त्री! मेरी दासी की लड़की कूटेगी और पीसेगी। वही रसोई भी बनावेगी। मेरी बहिन दूध गर्म करेगी और मेरी माता जोरन लगायेगी (डालेगी)॥ ५ ॥

इस गीत में पत्नी का आदर्श पति-प्रेम तथा इसके विपरीत पति की निष्ठुरता स्पष्ट झलक रही है। जहाँ स्त्री पति के साथ सुखपूर्वक सोना चाहती है वहाँ निर्दयी पति उसे बेच डालने की धमकी देता है। स्त्री के ऊपर पति का यह सार्वभौम अधिकार प्राचीन काल से चला आ रहा और आज भी वैसा ही बना है। कालिदास ने शकुन्तला में स्पष्ट ही लिखा है—

"उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोन्मुखी।"

---

[1]भोजन। [2]गर्म करना। [3]जामन।

संदर्भ—गाय को बगीचे में चराने के कारण मालिन के द्वारा कृष्ण का उपालम्भ

(५६)

आरे मालिनि लावेले दावाना मरुववा, कान्ह चरावेला गाई ए।
आरे हाँकु हाँकु कान्हर आपनि गइया, चरी गइली मोरि फुलवारी ए ॥१॥
आरे आमुनी चरी गइली, जामुनी चरी गइली मोरि फुलवारी ए।
आरे कवन दुलरुवा वर ठाढी ओरमावे, चम्पा गइली कुम्हीलाइ ए ॥२॥

माली की स्त्री अपनी फुलवारी मे पौधो को लगा रही है और कृष्णजी उसके पास ही गाय चरा रहे है। मालिन कहती है ऐ कृष्ण तुम अपनी गायो को यहा से खदेड कर ले जाओ नही तो वह हमारी फुलवारी के पौधो को खा जायेगी ॥१॥

मालिन कहती है कि गाय ने जामुन तथा अनेक अन्य पौधो को खा लिया है और मेरी फुलवारी को नष्ट कर दिया है। कृष्ण को देखकर वह कहती है कि यह कौन सा सुन्दर वर खडा है जिसके गले की चम्पा की माला सूख गई है ॥ २ ॥

संदर्भ—दामाद का गवना कराने ससुराल जाना तथा सास के द्वारा निवेदन

(५७)

आपना ही सुहवा लागि चलले कवन दुलहा; ना गुने घाम ना धूप ए।
घोडवा त बान्धेला दुलहा कदम्ब जुडि, छडी दिहले ओंठघाइ ए ॥१॥

खदेडो। कृष्ण। प्यारा। खडा है। स्त्री। नही गिनता है। वृक्ष। रख देना

कालासा का ओटें' ओटे सासु विनती करे, बाबू से विनती हमार ए।
बाडा रे तपसिये बबुआ आपन धियवा पोसिलें धियवा घुमिल;
जनि होइ ए ॥२॥
बिटिया' खियाइवाँ सासु आमुनि जामुनि, घरवा सुरहिया' के दूध ए।
अठवें ही सतवे सासु लुगवा' धोवाइवि, निति उठि अवटन'
तेल ए ॥३॥
आतान जतनवे ए सासु राउर धियवा पोसवि।
जब लगि प्राण हमार ए ॥४॥

कोई पुरुष गवना करने के लिए अपनी ससुराल को चल पडा। वह न तो धूप ही का ख्याल करता है और न किसी अन्य कष्ट का। जब वह ससुराल पहुँचा तब उसने घोडे को कदम्ब वृक्ष की शीतल छाया मे बाँध दिया और अपनी छडी को नहीं रख दिया॥ १॥

ससुराल मे उसकी सास कलशे के परदे से विनती करती हुई उससे कह रही है कि ऐ बेटा! मैंने बड़े परिश्रम से अपनी पुत्री को पाला, पोसा है अतएव इसे इस प्रकार से रखना जिससे इसे कष्ट न हो॥२॥

तब उस दामाद ने उत्तर दिया ऐ सास जी! मैं आपकी पुत्री को अनेक प्रकार के जामुन इत्यादि फल खिलाऊँगा और गाय का दूध पिलाऊँगा। सात या आठ दिन पर उसके कपडो को धुलाऊँगा और रोज ही उबटन और तेल लगाऊँगा॥ ३॥

ऐ सास! मैं जबतक जीता रहूँगा तबतक तुम्हारी लडकी को बडे यत्न से पालूँ-पोसूँगा॥ ४॥

संदर्भ—अल्पवयस्क पति वाली पुत्री का पिता से निवेदन

(५८)

लिलिही घोडवा चेलिक' असवरवा, बाबा का भगती बहुत ए।
आरे रउरे भगतिया' ए बाबा' हमे नाहीं भावे" हमे बेटी दुःख
बहुत ए ॥१॥

'छिपकर। 'उदासीन 'पुत्री। 'गाय। 'कपडा। 'उबटन। 'युवक। 'भक्ति। 'पिता जी। 'अच्छा नही लगता।

आवहु बेटी हो जाँघे चढ़ि बइठ[1] दु:ख सुख कह समुझाइ ए।
आरे कवन कवन दु:ख तोहरा[2] ए बेटी, से दु:ख कह समुझाइ ए॥२॥
दाल भात बाबा मोरा जे जेवनारवा[3], करुवहिं[4] तेल असनान ए।
आरे लाहारा पटोरवा[5] मोरा पहीरानावा[6], घीव दूध असनान ए॥३॥
ऊँच नीचास बेटी ककरी बोइले, रन बन पसरेले डाढ़ी ए।
आरे ककरी[7] के बतिया[8] ए बेटी! देखत सुहावन, ना जानों मीठ ना तीत[9] ए॥४॥
आरे सोनवा जे रही तु ए बेटी! फेरु[10] से तुरइती[11]; रूपवा तुरवलो ना जाइ ए।
आरे पूतवा[12] जो रहोतु ए बेटी! फेरु से बियहितीं[13], तोहि के बियहिलो ना जाइ ए॥५॥
आरे छोटहि बड़ होइहें ए बेटी! जो कुल रखबू[14] हमार ए॥६॥

किसी स्त्री का पति छोटा है तथा बड़ा ही निर्दयी है। इससे दुःखी होकर वह स्त्री अपने पिता से कहती है ऐ पिताजी! तुम भक्ति बहुत करते हो परन्तु यह तुम्हारी भक्ति मुझे पसन्द नहीं आती क्योंकि मुझे बहुत कष्ट हो रहा है॥ १॥

पिता ने प्रेम-पूर्वक कहा कि ऐ बेटी आओ और मेरे जंघे पर बैठ जाओ तथा तुम्हें जो-जो दु:ख हो उसे मुझसे समझा करके कहो॥ २॥

पुत्री ने उत्तर दिया ऐ पिता जी! मुझे खाने तथा पहिनने का कष्ट नहीं है क्योंकि खाने को मुझे दाल और भात मिलता है तथा लगाने को सरसों का तेल प्रचुर मात्रा में है सुन्दर वस्त्र मैं सदा पहिनती हूँ और दूध तथा घी से स्नान करती हूँ। अर्थात ये खाने के लिये काफी मिलते हैं॥ ३॥

---

[1]बैठो। [2]तुम्हारा। [3]भोजन। [4]सरसों का तेल। [5]वस्त्र। [6]पहिनावा। [7]ककड़ी। [8]बच्चा (छोटा)। [9]तीखा। [10]पुन। [11]बनाता। [12]पुत्र। [13]ब्याह। [14]रखोगी।

पिता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी ऊँचे स्थान पर ककड़ी का पौधा बोया जाता है, उसकी शाखायें चारो ओर फैलती हैं। जब उसमे छोटे-छोटे फल लगते है तब वे देखने मे बड़े सुहावने मालूम पड़ते है परन्तु यह कोई नही जानता कि ये मीठे है या तीखे। उसी प्रकार से तुम्हारे पति के स्वभाव के विषय मे ठीक-ठीक अन्दाजा नही लगाया जा सकता था॥ ४॥

ऐ बेटी यदि तुम सोना होती तो उसे तुड़ाकर दूसरा गहना बनवा देता परन्तु रूप (वर्ण) मे परिवर्तन कैसे किया जा सकता है। यदि तुम बेटा (पुत्र) होती तो तुम्हारा दूसरा व्याह कर देता परन्तु तुम्हारा (बेटी होने के कारण) व्याह कैसे करूँ॥ ५॥

ऐ बेटी! तुम्हारा छोटा पति धीरे-धीरे बड़ा हो जायेगा। तुम कुमार्ग मे पैर न रखकर हमारे कुल की रक्षा करो॥ ६॥

इस गीत में बाल-विवाह की बुराई की ओर सकेत किया गया है। कितनी ही स्त्रियाँ घर मे खाने, पहिनने का सुख होने पर भी अपने पति की नादानी के कारण अनेक कष्ट भोगा करती हैं।

संदर्भ—पुत्री की विदाई के समय माता की व्याकुलता। पुत्री पैदा होने के कारण शोक-प्रकाश

(५९)

बासावा[1] के जरिया[2] सुनरी[3] एक रे जमलो[4], सगरे अयोध्या मे अँजोर रे।
सुनरी धियवा चउकवा[5] चढि रे बइठे, आमा कोनारवा[6] घइले ठाढ रे॥१॥
छाती चुरइली[7] बेटी नयन ढरे लोरवा[8], अब सुनरी भइलू पराय[9] रे
जाहु हम जनिती धियवा कोखी रे जनमिहे पिहितो[10] में मरिच भराइ॥२॥

---

[1]वास। [2]नजदीक। [3]बेटी। [4]पैदा हुई। [5]बेदी। [6]कोने मे। [7]दूब भरी हुई। [8]आँसू। [9]दूसरे की। [10]पी लेती।

मरिच के झाके झुके धियवा मरि रे जइहे छुटि जइते गरुवा[1] सताप रे।
डासलि सेजिया उढासि चलु रे दिहिती, सामीजी से रहिति छपाइ[2] रे ॥३॥
बारल[3] दियरा बुझाई चलु रे दिहिती, हरिजी से रहिती छपाई रे।
बुकलि[5] सोंठिया घुरा ही फाँकि लीहिती, सामी जी से रहिती छपाई रे ॥४॥

किसी स्त्री को एक लड़की पैदा हुई जिससे सारी अयोध्या में उजेला हो गया जब विवाह का समय आया तब वह स्त्री चौका (वेदी) पर बैठी और उसकी माता कोने खड़ी थी ॥ १ ॥

माता कहती है कि ऐ बेटी प्रेम के कारण मेरी छाती में दूध भर रहा है तथा आँखों से आँसू गिर रहे हैं। ऐ बेटी अब तुम परायी हो गई। यदि मैं जानती कि मेरी कोख से लड़की पैदा होगी तो मैं मरिच खा लेती जिसके असर से मेरी यह लड़की मर जाती और मैं इसके विवाह के महान् झंझट से छुटकारा पा जाती ॥ २ । ३ ॥

मैं यदि जानती कि लड़की पैदा होगी तो पति के साथ सोने के लिए बिछाई गई चारपाई को भी उठाकर रख देती, जलाये हुए दीप को बुझा देती, पीसी हुई सोंठ खा लेती जिससे गर्भपात हो जाता तथा अपने पति के साथ कभी भी सम्भोग नहीं करती ॥ ४ ॥

ऊपर के गीत में पुत्री पैदा होने के कष्ट का बड़ा ही सुन्दर तथा मार्मिक चित्रण किया गया है। माता गर्भपात कराने को तैयार है परन्तु लड़की पैदा करने के लिए उद्यत नहीं। पुत्री का विवाह करना आजकल हिमालय लाँघने के समान कठिन हो गया है। इसीलिए संस्कृत के एक कवि ने कहा है कि —

---

[1]बड़ा। [2]बिछाई हुई। [3]जलाया हुआ। [4]दीप। [5]पीसा हुआ।

"पुत्रीति जाता महती हि चिन्ता, कस्मै प्रदेयेति महान् वितर्कः।
दत्वा सुख प्राप्स्यसि वा न वेति, कन्या पितृत्व खलु नाम कष्टम्॥"

सन्दर्भ—लड़की वाले के यहाँ बारात का आना तथा पुत्री का पिता को जगाना

(९०)

कोठा ऊपर कोठरी रचि महला उठाओ,
ताहि पइसि[1] सुतेले कवन बाबा सुख नीनि[2] रे ॥१॥
आओ धनि बेनिया[3] डोलाओ, पइसि जगावेली कवन बेटी;
बाबा नीन भल आयो, राजा दुआरे भइले ठाढ़ रे ॥२॥
राउर नगर छेकइले[4], पहिन कवन बाबा रे धोतिया।
करु ना समधिया से मिनती[5], जिनि अपने से आयो रे ॥३॥
बाबु नयो भइया नयो हम कबही ना नयो।
बेटी हो कवन बेटी, कारने सीस आजु नवायो रे ॥४॥

कोठे के ऊपर अपने महल मे एक पुरुष सुख की नीद सो रहा है और वह अपनी स्त्री से कहता है कि तुम पखा झलो। इतने मे आकर उसकी लड़की उसे जगाती है और कहती है कि ऐ पिताजी! आपको नीद कैसे आ रही है आपके द्वार पर बारात के आदमी खड़े है ॥ १-२ ॥

ऐ पिताजी! बाराती लोगो के द्वारा आपका घर चारो तरफ से घिर गया है। आप धोती पहिन कर अपने समधी (दूल्हा के पिता) से जाकर प्रार्थना करें कि वे लोग शान्त रहे। उपद्रव न करे ॥ ३ ॥

इस पर पिता ने उत्तर दिया कि मेरा पुत्र तो झुककर प्रार्थना कर सकता है परन्तु मैने आज तक किसी के सामने अपना सिर नही झुकाया। लेकिन ऐ बेटी! तेरे कारण से आज मुझे भी अपना सिर झुकाना पड़ेगा ॥ ४ ॥

---

[1]घुस करके। [2]नीद। [3]पखा। [4]घेर लिया गया। [5]प्रार्थना।

जिन्होंने बारात चढ़ने के समय का देहाती दृश्य देखा है वे ही इस गीत में सकेतित लड़की की चिन्ता का अनुमान कर सकते हैं। देहाती बारात क्या है, हाथी, घोड़ा, ऊँटों तथा बारातियों की चतुरंगिणी सेना है।

संदर्भ--माता के द्वारा पुत्र को स्त्री को लाने वृन्दावन जाने को मना करना

(६१)

नदिया के तीरे दुइ पेड़ वाटे, एक महुआ एक आम रे।
आरे नगर अजोध्या में दुइ वर सुनर एक लछुमन एक राम रे ॥१॥
वेरि हि वेरि तोहि वरजों कवन दुलहा, विरिदा वने जनि जाहु रे।
आरे वन विरिदा वनें वाघ वघिनिया, जाहि देसे सुहवा तोहार रे ॥२॥
दे ना आमा हो ढालि तरुवरिना, वन विरदा वने जाहु रे।
आरे वघवा के मारवि वघीनिया ए आमा, धनि लेवि डँडिया ॥चढाइ रे ३॥

जिस प्रकार सरजू नदी के किनारे दो सुन्दर पेड़ हैं एक आम का और दूसरा महुए का। उसी प्रकार से नगरी अयोध्या में दो सुन्दर वर हैं एक राम और दूसरे लक्ष्मण ॥ १ ॥

माता अपने पुत्र से कहती है कि ऐ बेटा! मैंने बार-बार तुम्हें मना किया कि वृन्दावन के घने जंगल में मत जाया करो। वहाँ बाघ और बाघिन रहते हैं और वहीं पर तुम्हारी ससुराल भी है ॥ २ ॥

वीर पुत्र ने उत्तर दिया कि माता तुम मुझे ढाल और तलवार दो। मैं वृन्दावन जाऊँगा और बाघ और बाघिन को मारकर अपनी स्त्री को पालकी पर बैठाकर लेता चला आऊँगा ॥ ३ ॥

संदर्भ--स्त्री को लाने के लिए पति का घोड़े पर चढ़कर ससुराल जाना

(६२)

हहर झहर[1] रे करे गांगा यमुना रे पनिया।
आरे चलन करे दुलहा चढि लिलि घोड़िया रे ॥१॥

[1] लहराना।

आरे हमरा बावा जी सँकरी रे गलिया।
आरे कइसे के दउरइबे', ए दुलहा अपनी लिलि घोड़िया रे ॥२॥
हमरा ही बाबा के सोने मुठी रे छुरिया।
आरे कटइबों खिरिकिया' ए सुहवा, दउरइबों लिलि घोडिया रे॥३॥
आरे बाबा हमरा सुनिहे ए दुलहा मनही' रे अर्नानि हे'।
आरे भइया हमरा सुनिहे ए दुलहा, चोरइहे' लिलि घोडिया रे ॥४।

गगा और यमुना का पानी वडे जोरो मे लहरा रहा है। कोई दूल्हा अपनी 'लिलि' नामक घोडी पर चढकर उसे पार करना चाहता है॥ १॥

उसकी स्त्री उससे कह रही है (सभवत वह दूल्हा गवना कराने के लिए आया था) कि मेरे पिताजी का घर सँकरी गली मे है अत तुम अपनी घोडी उसमे कैसे दौडाओगे॥ २॥

इस पर उम दूल्हे ने कहा कि मेरे पिता की एक मोने की मूँठ वाली छुरी है उसीसे मै खिडकी बना लूँगा और अपनी घोडी को दौडाऊँगा ॥३॥

तब उसकी स्त्री ने कहा कि इम वातको मुनकर मेरे पिताजी तो प्रसन्न होगे परन्तु मेरा भाई तुम्हारी इम उद्दण्डता के कारण घोडी चुरा लेगा॥ ४॥

(सन्दर्भ—पत्नी का क्रुद्ध होकर मायके जाना तथा रास्ते में नीच मल्लाह की कुचेष्टा)

(६३)

मोरा पिछुअरवा लवँगवा के गछिया' लवँग चुवेले' सारी रात ए।
आरे लवँग कटाइ ए वावा पलँग सलाइ' हम सामि' सइतो
निरभेद'' ए ॥१॥

'दौडाओगे। 'खिडकी। 'मनमे। 'प्रसन्न होंगे। 'चुरा लेंगे। 'वृक्ष। 'गिरता है। 'बनाओ। 'स्वामी (पति)। ''निःशंक।

ए ओरी[1] सुतेले कवन दुलहा चवरे[2] कवनि सुहवा रानि ए।
आरे ओगसुल ओलरू ससुर जी के धियवा, मोरा पीठी गरमी[4]
बहुत ए ॥२॥
आताना वचन जब सुनली कवनि सुहवा, खाट छोड़ि भुइयाँ[5]
लोटि ए।
आरे आरे भइया मलहवा लगइते, हमरा के पार तनीक ए ॥३॥
भइया नइया लेई आव, मोहि के उतारि देहु पार ए ॥४॥
आरे बहिनी कवनि बहिनी लगवु[6] तू, बहिना हमार ए।
आजु की राति बहिना इहवें गँवाव, बिहने[8] उतारि देवों पार ए ॥५॥
दिनवाँ खिअइवों[9] बहिना चाल्हावा[10] मछरिया, रतिया सुरहिया
गाई के दूध ए।
आरे लेई सुतइबो ए बहिना जाँत के करियवा[11] जहाँ बहे सीतल
बातास ए ।६॥
आगि लगाइबो चाल्हावा मछरिवा, बजर परसु[12] तोरा दूध ए।
आरे टुनुकि[13] फुटहु तोरा जाँत के करीयवा, नउजी[14] उतारि
देबो पार ए ॥७॥
कइ नइया आवेला अगर चननवा, कइ नइया आवे सिरि राम ए।
आरे कइ नइया आवेला पियवा पतरे, मोरा के मनावनि होइ ए॥८॥

कोई लड़की अपने पिता से कह रही है कि मेरे घर के पीछे लवँग का वृक्ष है। सारी रात उस वृक्ष में से लवँग चूकर नीचे गिरता है। ऐ पिता जी! उस वृक्ष को कटवा कर मेरे लिए पलग बनवा दीजिये जिसमे मैं अपने पति के साथ निशक सो सकूँ॥ १॥

उस पलँग पर एक ओर तो पति सो गया और दूसरी ओर पास ही में

---

[1]एक तरफ। [2]पास में। [3]अलग हटो। [4]पीठ में। [5]जमीन में। [6]सो गयी। [7]लगोगी। [8]कर प्रात काल। [9]खिलाऊँगा। [10]मछली विशेष [11]पास। [12]नष्ट हो जाय। [13]फूट जाय। [14]मत।

उनकी स्त्री सो गई। पति ने स्त्री से कहा कि ज़रा हट कर अलग सोओ क्योंकि मेरी पीठ में बहुत गर्मी हो रही है॥ २॥

इस वचन को सुनते ही वह स्त्री गुस्से में आकर पलँग को छोड़कर जमीन पर लेट गई। तदनन्तर वह घर से भाग खड़ी हुई। रास्ते में नदी पड़ी तब उसने मल्लाह से कहा कि तुम अपनी नाव लाओ और मुझे पार उतार दो॥ ३-४॥

उस दुष्ट मल्लाह ने उत्तर दिया कि तू मेरी बहिन लगेगी। आज की रात तुम यहीं पर बिताओ। मैं तुम्हें सवेरे ही पार उतार दूंगा॥ ५॥

मल्लाह ने उस स्त्री से कहा कि मैं दिन को तुम्हें मछली का मांस खिलाऊँगा और रात को गाय का दूध पीने को दूँगा। ऐ बहिन! मैं तुम्हें लेकर जाँत के पास सोऊँगा जहाँ पर ठण्डी हवा बहती रहती है॥ ६॥

इस पर क्रुद्ध होकर उस सती ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारे मांस में आग लगा दूंगी। तुम्हारे दूध में वज्र पड़ जाय, तुम्हारा जाँत टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाय। मुझे पार मत उतारो॥ ७॥

उस सती स्त्री ने एक नाव को आते देखकर अनुमान किया कि क्या इसमें अगरु चन्दन आ रहा है, अथवा श्रीराम है, अथवा मेरा दुबला-पतला पति मुझे मनाने के लिए आ रहा है॥ ८॥

इस गीत में तनिक-सी बात पर स्त्री का क्रुद्ध होना वर्णित है। ऐसी घटनाएँ प्राय सर्वदा हुआ करती है और कभी-कभी स्त्रियाँ क्रोध तथा अविवेक के कारण अपने प्राणो को भी खो बैठती है। ऐसी ही स्त्रियो के लिए कवि ने क्या ही सुन्दर उपदेश दिया है कि —

"भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीप गम."

देहातो में एक कहावत है कि "घटवार बटवार होते है।" यह उक्ति इस मल्लाह के ऊपर अच्छी तरह से घट रही है। ये मल्लाह धन ही नहीं लूटते बल्कि इज्जत भी लूट लेते है।

सन्दर्भ—बारात का कन्या के घर आना और लड़की के द्वारा बारातियों के भोजन की तैयारी का वर्णन

(२४)

आमावा महुइया सीतल जुड छहियाँ रे, बहि गइले सीतल बतास[२] रे।
ताही तर बाबा पलंग डसावेले, बाबा सोवेले निरभेद रे ॥१॥
पइसी जगावेली बेटी हो कवन बेटी, भले बाबा सोइले निरभेद रे।
बाड़ा बाडा पंडित बाबा बीहन[३] आवेले, भोजन घुमिल[४] जनि होई रे ॥२॥
भात जनि अवसिह[५] हो बाबा दाल जनि अउसिह, दहिया अमत[६] जनि होइ रे।
पाख[७] बरोबरि बेटी भात नीराइबि, दलिया चलइबों पवनार[८] ए ॥३॥
इथहर[९] के डोटी ए बेटी घीव ढरकाइबि[१०], बाराबा[११] के नेववा देबि ए।
बाड़ा बाड़ा पंडित बेटी बियहन आवेला, भोजन धूमिल नाहि होइ ए ॥४॥
जेवहि[१२] बइठेले[१३] समधी कवन समधि, कवन राम बेनवा[१४] डोलावे ए।
जेवहि समधी सकुच[१५] जनि मानी ही, आजु हम सरन[१६] तोहार ए ॥५॥

आम और महुआ के वृक्षों की शीतल छाया है वहाँ पर शीतल हवा बह रही है। वहाँ पर पलंग डालकर लड़की का पिता निःशंक होकर सो गया ॥१॥

थोड़ी देर में उसकी लड़की ने आकर अपने पिता को जगाया और कहा

---

[१]शीतल। [२]हवा। [३]विवाह करने के लिये। [४]खराब। [५]खराब करना। [६]खट्टा। [७]दीवाल। [८]नाली (ज्यादा)। [९]लोटा। [१०]गिराऊँगा। [११]फुलवरा (वरा)। [१२]भोजन। [१३]बैठता है। [१४]पखा। [१५]संकोच। [१६]शरण।

कि आप भले रहे कि निश्चित होकर सो गये। आपके घर आने वाली बारात में वड़े-वड़े पण्डित आ रहे हैं अतएव उनके भोजन का प्रबन्ध खराब नही होना चाहिए ॥ २ ॥

ऐ पिताजी ! भात और दाल छोटे बर्तन मे बनकर खराब नही होनी चाहिए और दही खट्टा न हो। तब पिता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी मै दीवाल के बराबर ऊँची भात की ढेरी लगा दूंगा, दाल की नाली बहा दूंगा, घी लोटे से दाल मे डालूँगा और बडा (फुलवरा) भी बनवाऊँगा। बड़े-बड़े पण्डित बारात में आ रहे है अत भोजन मे त्रुटि नही हो सकती ॥३-४॥

बारात के आने पर समधीजी भोजन के लिए बैठे तब लडकी के पिता ने प्रार्थना की कि समधीजी आज खाने मे सकोच मत कीजिए। आज मैं आपकी शरण मे हूँ ॥५ ॥

सन्दर्भ—बर खोजने में आलस्य करने के कारण पुत्री द्वारा पिता को उलाहना

(६५)

आरे बाबा के आँगना रे झालरि बिरवा[1] झालरि बहेलाबयारि[2] ए।
ताहि तर बाबा रे पलंग डसावेले, बाबा सोवेले निरभेद ए ॥१॥
आरे पइसि जगावेली बेटि हो कवन बेटि, भले बाबा सोवे निरभेद ए।
आरे जाहि घरे ए बाबा धियवा कुँआरी, से कइसे सोवे निरभेद ए॥२॥
आरे आताना बचन जब सुनले कवन बाबा, उठेले पावेल छाहा-
राई ए।
आरे आताना बचन जब सुनही ना पावेले, चलि भइले सहर
बजार ए ॥३॥
आरे फांडे[3] बान्हि लिहले बाबा ढेबुआ[4], कउड़िया[5] चलि भइले
सहर[6] बजार ए।

---

[1]वृक्ष। [2]हवा। [3]कपड़े मे। [4]पैसा। [5]कौडी। [6]शहर।

सोनवा वेसाही[1] वावा घरे चलि अइले, नयना ढरि गइले लोर[2] ए ॥४॥

आरे मोरा पिछुआरावा सोनार भइया हितवा, सोने के हरफ गढ़ि देहु ए।

आरे हराफावा मे धियवा छिपाइवि, जे जइहे दुलहा दामाद ए॥५॥

आरे आताना बचन जव सुनली कवन बेटी, उठली पयेर छाहाराइ ए।

आरे तोरवों[4] हाराफावा रे तोरवो दारापवा, तुरवों मे खुटवा[5] पचास ए॥६॥

आर खुटवा तुराइ वावा घरे चलि अइले, जइवों[6] दुलह[7] जी के साथ ए॥७॥

पिता के आँगन मे छायादार वृक्ष है। वहाँ पर ठंढी हवा बहती है। उसी के नीचे पलँग विछाकर वह पिता निश्चिन्त सोता है॥ १॥

बेटी ने जाकर पिता को जगाया और कहा कि जिसके घर में क्वाँरी बेटी पड़ी हुई है वह पिता निश्चिन्त कैसे सो सकता है॥ २॥

इतना वचन सुनते ही वह पिता जग उठा और बाजार को चल पड़ा॥३॥

उसने पैसा और कौड़ी अपने फेंटे में ले लिया और बाजार से सोना खरीद कर चला। उसकी आँखों से आँसू गिर रहे थे॥ ४॥

मेरे घर के पीछे रहने वाले ऐ सोनार तुम एक सोने का हरफ (साँचा) गढ़ दो। जब मेरा दामाद मेरी पुत्री को लेने आयेगा तब मैं बेटी को इसी में छिपा लूँगा॥ ५॥

इतना वचन सुनते ही वह लड़की उठी और कहने लगी कि मैं साँचे को तोड़ दूँगी और पचासों खूँटों को भी उखाड़कर फेंक दूँगी॥ ६॥

---

[1]खरीदना। [2]आँसू। [3]साँचा। [4]तोड़ दूँगी। [5]खूँटा। [6]जाऊँगी। [7]पति (दूल्हा)।

खूंटे (बन्धन) को तोड़कर मैं अपने पति के साथ जाऊँगी और पिता के घर को छोड़ दूंगी॥ ७॥

सन्दर्भ—पुत्र तथा माता का स्नेह-वर्णन

(६६)

चेइली विरिछिया[1] तर कोइलरि खोलेले, बाबू तू धूप गँवऊ[2] ए।
कइसे मैं धूप गँवाऊँ ए कोइलरि, सुहवा लगनिया समतूल[4] ए॥१॥
रचे[5] एक हाथी बेलमाव[6] मोरे बाबा हो, घोड़ा बेलमाव जेठ भाइ ए।
रेसम डोरिया सजन बेलमाइवि, आमा के पइयाँ परि लंबि ए॥२॥
अइसन असीसिया[7] ए आमा हमरा के दीह, जाते ही होला बियाह ए।
दान दहेज ए बबुआ बरधी[8] लदइह, सुहवा लिह डडिया चढाइ ए॥३॥
जाहु तुहु जइब ए बबुआ सुहवा का देसवा, दुधवा के निखि[9] मोहि देहु ए।
दुधवा के निखिया ए आमा दिहलो[10] ना जाला, जनम के निखि मोहि से लेहु ए॥४॥
हम त होइबो ए आमा बाप के सेवइत[11], धनि होइहे[12] दासी[13] तोहार ए॥५॥

कोई दूल्हा अपना विवाह करने के लिए जा रहा है। एक वृक्ष पर बैठी हुई कोई कोयल उससे कह रही है कि ऐ बबुआ! तुम इस पेड़ की छाया के नीचे गर्मी बिताओ। लड़के ने उत्तर दिया कि मैं यहाँ समय कैसे बिता सकता हूँ मुझे विवाह करने जाने की जल्दी हो रही है॥ १॥

लड़के ने अपने पिता से कहा कि आप थोड़ी देर के लिये हाथी रोक

---

[1]वृक्ष। [2]कोयल। [3]बिताओ। [4]जल्दी। [5]थोड़ी देर के लिये। [6]रोक लो। [7]आशीर्वाद। [8]बैल। [9]प्रत्युपकार(मूल्य)। [10]दिया नहीं जा सकता। [11]नौकर। [12]होगी। [13]नौकरानी।

कीजिए, भाईजी घोटे को गोद लें। जिससे मैं अपनी माता को प्रणाम कर लूं॥ २॥

पुत्र ने माता को प्रणाम करते हुए यह प्रार्थना कि हे माता! आप मुझे ऐसा आशीर्वाद दीजिए जिससे जाते ही विवाह सकुशल (बिना झगड़े-बखेड़े के) हो जाय। माता ने उत्तर दिया 'हे बेटा! जाओ, दान, दहेज को बैल के ऊपर लादकर लाना और वधू को पालकी में चढ़ाकर लाना'॥ ३॥

माता ने कहा ऐ बेटा तुम अपनी स्त्री के देश में जा रहे हो अतः तुम मेरे दूध पिलाने के निमित्त (मूल्य) को दो। सुशील पुत्र ने उत्तर दिया कि हे माता! दूध का मूल्य चुकाना असंभव है। हां, पैदा करने का मूल्य मैं कुछ चुका सकता हूँ॥ ४॥

ऐ माता! मैं पिताजी का दास बनूंगा और मेरी स्त्री तुम्हारी सेविका बनेगी॥ ५॥

यदि आजकल भी ऐसे ही सुशील और भक्त पुत्र और वधू मिल जायें तो माता और पिता का जीवन सुखमय बन जाय। पुत्र ने अपनी माता से सकुशल शीघ्र ही विवाह हो जाने का जो वरदान मांगा है उसका कारण यही है कि विवाह में प्राय छोटी-छोटी बातों पर भी झगड़ा हो जाया करता है और कभी-कभी तो कपालक्रिया की भी नौबत आ पहुंचती है। अतः बरात से सकुशल लौट आना बड़े सौभाग्य की बात समझी जाती है। इसीलिए पुत्र अपनी माता से आशीर्वाद चाहता है।

सन्दर्भ—वर का योगी के वेश में विवाह करने जाना

(६७)

काहाँवाँ से अइले रे जोगिया, काहाँवाँ कइले जाले।
कवन बाबा चउपरिया[1] रे जोगिया, बइठे[2] आसन मारी॥१॥
पुरुब से अइले रे जोगिया, पछिम कइले जाले।
कवन बाबा चउपरिया रे जोगिया, बइठे आसन मारी॥२॥

---

[1]चौपाल। [2]बैठता है।

का ओकर खइल ए बाबा, काई लिहल उधारी।
कावना कारानवा ए बाबा, छेकेला[1] नगर तोहारी ॥३॥
पानावा ओकर[2] खइनी[3] ए बेटी, फुलवा लिहलों उधारी।
तोहरे कारानवाँ ए बेटी! छेकेला धरम दुआरी ॥४॥
पानावा ओकर फेरि द ए बाबा, फुलवा दीह छितराई[4]।
अपना ही धोतिया ए बाबा, करना धरम बियाही ॥५॥

कोई पुरुष योगी का वेष बनाकर व्याह करने के लिए गया है। कोई पूछता है कि यह योगी कहाँ से आया है और कहाँ जायेगा। किसकी चौपाल में यह आसन मारकर बैठा हुआ है ॥ १ ॥

वह योगी उत्तर देता है कि मैं पूर्व देश से आया हूँ और पश्चिम जाऊँगा तथा अमुक मनुष्य की चौपाल में बैठा हुआ हूँ ॥ २ ॥

तब लडकी अपने पिता से पूछती है ऐ पिताजी! आपने इसका क्या खाया है और क्या उधार लिया है जिस कारण से यह आप के दरवाजे को घेरे बैठा है ॥ ३ ॥

पिता ने उत्तर दिया कि मैंने इसका पान खाया है और फूल उधार लिया है (तिलक के समय)। तुम्हारे विवाह करने के लिए ही ऐ बेटी यह द्वार को घेरे हुए है ॥ ४ ॥

लडकी ने उत्तर दिया कि आप उसके पान को लौटा दें और फूल को बखेर दें और अपनी केवल धोती ही को दहेज में देकर मेरा धर्म-विवाह कर दीजिए ॥ ५ ॥

इस गीत में दहेज की प्रथा की ओर संकेत किया गया है।

---

[1]रोकता है। [2]उसका। [3]खाया है। [4]बिखेर दो। [5]बिना धन खर्च किये ही विवाह कर देना।

सन्दर्भ—पति के द्वारा दहेज में सोने का कटोरा माँगना

(६८)

फूल लोहें चलली सीता अइसन सुनरी, हाथे डलिया मुख पान ए।
आरे आँचर धई बिलमावे[1] हो रघुवर, अब सीता भइलु हमार ए ॥१॥

छोड़-छोड़ रघुवर हमरी अँचरिया, सुनि पइहें बाबा हमार ए।
आरे बाबा जे सुनिहें बिचिलहोई[2] जइहें; अब सीता भइलू पराय[3] ए ॥२॥

हँसि के जे बोलेले दुलहा कवन दुलहा, सुन सुहवा वचन हमार ए।
आरे तोहार बावाजी का सोने का कटोरवा, उहे[4] दीहिते हमरा के ए ॥३॥

हरि जी से बोलेली सुहवा कवनि सुहवा, सुनु प्रभु वचन हमार ए।
आरे हमरा बावाजी का सोने का कटोरवा पियेले[5] कवन भइया दूध ए ॥४॥

आरे दुधवा पियत ए वहिना माँगे दुलहा वहिन हमार ए।
आरे जेकर वहिना पयेत[6] सोवे हमें संगे, से हो माँगे वहिना हमार ए ॥५॥

सीता जैसी सुन्दरी हाथ में डाली और मुँह में पान का बीड़ा लेकर फूल चुनने के लिए बगीचे में चली। वहाँ राम ने सीता का आँचर पकड़ कर रोक लिया और कहा कि अब तुम हमारी हो गई ॥ १ ॥

सीता ने कहा ऐ राम! तुम मेरा आँचर छोड़ दो। नहीं तो पिताजी यदि इस घटना को सुन लेंगे तो वे विचलित हो जायेंगे और कहेंगे कि सीता परायी हो गई ॥ २ ॥

---

[1]रोकता है। [2]विचलित हो जाना। [3]दूसरे की। [4]उसी को। [5]पीता है। [6]साथ।

हँस कर राम ने सीता से कहा कि ऐ स्त्री ! तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारे पिताजी के पास सोने का कटोरा है, उसे मुझे दहेज मे दिला दो॥ ३॥

सीता ने पति से कहा कि आप मेरे वचन को ध्यान से सुनिये। हमारे पिताजी के सोने के कटोरे मे मेरा भइया दूध पीता है (अत आपको वह नही मिल सकता)॥ ४॥

भाई कहता है कि दूध पीते समय दूल्हा मेरी बहन को माग रहा है। हँसी मे वह कहता है कि जिसकी वहिन मेरे पास सोती है वह दूल्हा मेरी वहिन को विवाह करने के लिए माँग रहा है॥ ५॥

दहेज में बहुमूल्य वस्तुओ को माँगने की प्रथा सी पड गई है। उसी प्रथा के अनुसार दूल्हा सोने का कटोरा माँग रहा है।

सन्दर्भ—वर का गवना कराने जाना तथा पुत्री की माता का पुत्री को प्रेम से रखने का उससे निवेदन

(६९)

काहाँवाँ से आवेला चाक चकई,[1] अवरु दूलह जी के भाई रे।
काहाँवाँ से आवेला दुलह पगीया,[2] माया मोह लागाई रे॥१॥
पुरुब से आवेला चाक चकई, अवरु दुलह जी के भाई रे।
पछिम से आवेला दुलह पगीया, माया मोह लागाई रे॥२॥
काहाँवाँ बइठइवों चाक चकई, अवरु दुलह जी के भाई रे।
काहाँवाँ बइठइवों[3] मे दुलह पगीया, माया मोह लगाई रे॥३॥
दुवरो बइठइवों मे चाक चकई, अवरु दुलह जी के भाई रे।
आरे कोहवर[4] बइठइवों में दूलह राजा, माया मोह लगाई रे॥४॥
काई खिअइवों चाक चकई, अवरु दुलह जी के भाई रे।
आरे काई खिअइवों में दुलह पगीया माया मोह लगाई रे॥५॥

---

[1]घोडा। [2]पगडी। [3]बैठाऊँगी। [4]भीतरी घर।

दाल भात खिअइबों[1] मैं चाक चकई, अवरु दुलह जी के भाई रे।
पुड़िया खिअइबों मैं दूलह राजा, माया मोह लगाई रे ॥६॥
का ले समोखबि[2] चाक चकई, का ले दुलह जी के भाई रे।
का ले समोखबि दूलह राजा, माया मोह लगाई रे ॥७॥
घास ले समोखबि चाक चकई, धोतीये दुलह जी के भाई रे।
धिया ले समोखबि दुलह राजा माया मोह लगाई रे ॥८॥
छुछियनि चुनियनि धिया हम पोसलीं[3], काँचा[4] दूध पियाई रे।
से धिया ले गइले दुलह राजा, करेजवा[5] में अगिन[6] लगाई रे ॥९॥

दूल्हा अपने नाई तथा छोटे भाई के साथ गवना कराने के लिए आए हैं। पुत्री के प्रश्न करने पर कि दूल्हा और उसका भाई कहाँ रहेगा तथा क्या खायेगा उसकी माता क्रमशः उसका उत्तर दे रही है। इसका अर्थ सरल है।

सन्दर्भ—दामाद की उक्ति ससुर के प्रति

(३०)

काहाँवाँ के बाग में बानावा गोतिनवा, काहाँ बाग डसावल[7] बाड़ी रे सेजिया।
ससुरु हो ससुर रवन राम ससुरु, रउरे महल में लुटल[8] बाटे छुड़िया ॥१॥
कथी केरा छुड़िया[9] ए बाबू, कथी लागल रे मुठिया।
आरे बाबू[10] कथीनी फुदेना[11] लगावल बाड़ी रे छुड़िया ॥२॥
सोने केरि छुड़िया ए ससुर, रूपे लागल रे मुठिया।
आरे ससुर रेसम लागल, फुदेना लगावल बाड़ी रे छुड़िया ॥३॥
लोहे केरी छुड़िया ए बाबू पीतर लागली रे मुठिया।
आरे चिरकुट[12] फुदेना लगावल बाड़ी रे छुड़िया ॥४॥

---

[1]सन्तुष्ट करूँगी। [2]ऊख का टूटा हुआ अंश। [3]पालन पोषण किया। [4]कच्चा। [5]कलेजा (हृदय)। [6]अग्नि (आग)। [7]बिछाया गया है। [8]झूल गया है। [9]किस चीज का। [10]बाबू। [11]कपड़े का गोल फूल। [12]गन्दा फटा कपड़ा।

किसी बाग में चन्दन के वृक्ष के नीचे एक लडकी का पिता चारपाई डालकर पडा हुआ है। उसका दामाद जो विवाह करने के लिए आया हुआ था—उससे कहता है कि ऐ ससुरजी तुम्हारे महल में मेरा चाकू छूट गया है॥ १॥

ससुर ने पूछा कि तुम्हारा चाकू किस चीज का है और किस चीज़ की मुट्ठी लगी हुई है तथा उसमे किस चीज़ का फुदेना लगा हुआ है॥ २॥

दामाद ने उत्तर दिया कि मेरा चाकू सोने का है, चांदी की उसमे मुट्ठी लगी हुई है और उसमे रेशम का फुदेना लगा है॥ ३॥

ससुर ने कहा कि तुम झूठ बोलते हो। तुम्हारा चाकू लोहे का है, उसमे पीतल की मुट्ठी लगी है और उसमें गन्दे कपडेका फुदेना है॥ ४॥

सन्दर्भ—ससुराल में दामाद का क्रुद्ध होना

(७१)

सींकी[1] के धवरहरि, पाननि[2] छावल ऐ।
ताहि पइसि[3] सुतेले कवन दुलहा, मुखहु ना बोलेले रे॥१॥
किया बाबू दान दहेज थोर बाटे, किया बाबू धोती छोट ए।
किया बाबू धियवा घिनावनि[4] बाटे, काहे रउरा रूसिले[5] ए॥२॥
नाहीं सासु दान, दहेज थोर नाहीं; नाहीं सासु धोती छोट ए।
नाहीं सासु धियवा घिनावनि नाही, नाहीं हम रूसिले ए॥३॥
असी ही कोसे चलि अइलों त बटिया धूमिल भइले ए।
से सुनि सासु अननेली, नगर पइसेली ए॥४॥
नगर कुकुरिया[6] जनि भूकसु[7], पहरुवा[8] जनि ठनकहु[9] ए।
आजु हम नगर पइसवि, धनि परबोधवि[10] ए॥५॥

सरकण्डे से बने हुए, तथा पत्ते मे छाये हुए मण्डप मे बैठकर विवाह करने के लिए आया हुआ दूल्हा मुख से तनिक भी नही बोलता है॥ १॥

---

[1]सरकण्डा। [2]पत्ता। [3]प्रवेश करके। [4]घृणास्पद (कुरूप)। [5]रुष्ट। [6]कुत्ता। [7]भौंकना। [8]पहरेदार। [9]आवाज़ करे। [10]सन्तोष दूंगा, प्रबोधन दूंगा।

यह देखकर उसकी सास ने पूछा कि ए बच्चा! क्या तुम्हें दान-दहेज कम मिला है, क्या धोती छोटी मिली है अथवा क्या स्त्री कुरूपा मिली है जिससे रुष्ट हो॥२॥

दामाद ने उत्तर दिया कि न तो मुझे दान-दहेज ही कम मिला है न तो धोती ही छोटी है और न स्त्री ही कुरूपा मिली है। मैं इन कारणों से रुष्ट नहीं हूँ॥३॥

मैं अस्सी कोस के लम्बे रास्ते को तय करता हुआ चला आ रहा हूँ। इसलिए थक गया हूँ। यह सुनकर सास बहुत ही प्रसन्न हुई॥४॥

दामाद ने सास से कहा कि आज इस नगर में कुत्ता मत भूकें (न बोलें) और न पहरा देने वाले चौकीदार ही आवाज़ करे। क्योंकि आज मैं आपके घर में अपनी स्त्री से मिलकर उसे सान्त्वना दूँगा॥५॥

सन्दर्भ—पुत्री-जन्म के कारण पिता का शोक-प्रकाश

(७२)

जाहि दिन ए बेटी तोहरो जनमवा, सोनवा सकलपीले आजु ए।
आरे का तोहरा बावा हो सोनवा सकलपेले[1], बेटी के वदन मलीन ए॥१॥
जाहि दिन ए बेटी तोहरो जनमवा; हमरे सीरे बेसहलु[2] गारि[3] ए।
आरे सीखे ना पवलों बावा घर घरुवरिया[4] अवरु[5] रसोइया मन लाइ ए॥२॥
आरे सीखे ना पवलों बावा छप्पन पदारथ, रउरे सीरे बेसहीले गारि ए॥३॥

लड़की का पिता अपनी पुत्री के विवाह के लिये तिलक चढाने जा रहा है। वह कहता है कि ऐ पुत्री! तुम्हारे जन्म के कारण मैं आज यह सोना (धन) तिलक में दे रहा हूँ॥१॥

---

[1]संकल्प करना। [2]खरीदना। [3]भार। [4]घर का काम। [5]और।

पुत्री ने उत्तर दिया कि आपके धन देने मे क्या लाभ ? मेरा चित्त अत्यन्त उदास है। पिता ने कहा कि ए बेटी ! जिस दिन से तुम पैदा हुई उसी दिन से मेरे सिर पर भार चढ़ गया॥ २॥

तब लड़की ने कहा कि ए पिता ! अभी मेरा विवाह क्यो करते हो। मैंने अभी तक न तो घर का काम करना सीखा और न छप्पन पदार्थवाला भोजन बनाना ही सीखा॥ ३॥

सन्दर्भ—बारात का कन्या-पक्ष वाले के घर पहुँचने का वर्णन

(७३)

जब बरियतिया[1] जनकपुर आवे, हे हे[2] घोडे बरखा[3] लगी।
मालिनि गुहेले[4] चित्र मउरिया[5], सिर पर छत्र धरी॥१॥
जब बरियतिया गयेए[6] भिरि आवे, सीता झरोखे[7] खरी।
इ होरे दुलह जनि अबकी हारसु, कइसे के ब्याह होई॥२॥
जब बरियतिया दुआरे भिरि आइल, सीता झरोखे खरी।
इ होरे दुलह जनि अब हारसु, कइसे के ब्याह होई॥३॥
जब बरियतिया मड़उवा भीरि[8] आइल, सीता का नीर ढरी।
मिलि जुलि लोग सीता समुझावत, काहे सीता नीर ढरी॥४॥
मुरुख[9] पुरुख यदुनन्दन[10] बाड़े, उनही से ब्याह होई।
इ बात सीता मनवा मे गुनेली[11], ए ही से नीर ढरी॥५॥

सीता के विवाह के लिए जनकपुर मे जब बारात आ रही थी उस समय बड़े जोरो से वर्षा होने लगी। माली की स्त्री एक ऐसा सुन्दर मौर बना रही थी जिसके ऊपर छाते का रूप बना हुआ था॥ १॥

जब बारात नगर के पास चली आई तब सीता झरोखे पर खडी हुई उसे

---

[1]बारात। [2]बडे जोर से। [3]वर्षा। [4]गूँथती है। [5]मौर। [6]गाँव। [7]खिड़की। [8]पास, नजदीक। [9]मूर्ख। [10]श्रीराम। [11]सोचती है।

देखकर मन में कह रही है कि यह वर भी कहीं धनुष तोड़ने में हार न जाय नहीं तो मेरा विवाह फिर कैसे होगा ॥ २ ॥

जब बारात दरवाजे पर चली आई तब भी सीता ने अपने मन में यही कहा ॥ ३ ॥

जब बारात मण्डप में चली आई तब सीता की आंखों से आँसू बहने लगा। सब लोग मिल-जुलकर सीता को समझाने लगे और पूछने लगे कि तुम क्यों रो रही हो ॥ ४ ॥

सीता ने उन लोगों से कहा कि मेरा पति मूर्ख है। आज उसीसे मेरा व्याह होने वाला है। इसी बात को मन में सोचकर मैं रो रही हूँ ॥ ५ ॥

यह गीत ऐतिहासिक घटना के विरुद्ध है अतः सीता का यहाँ अर्थ साधारण स्त्री से लेना चाहिए जनक-नन्दिनी से नहीं। मूर्ख पति पाकर स्त्री को कितना दुःख है यह इस गीत में स्पष्ट प्रकट हो रहा है।

सन्दर्भ—बारात का सज-धज कर कन्या के पिता के घर आना तथा उसकी नम्रता का वर्णन

(७४)

काहाँवाँ के हथिया सींगारलि[1] आवेले, काहाँवाँ के झीन[2] लाहास[3]।
काहाँवाँ के राजा बियहन[4] आवेले, माथे मुकुट, मुखे पान ॥१॥
गोरखपूर के हथिया सींगारलि आवेले, पटना के झीन लाहास।
कासी का राजा रे बियहन आवेले, माथे मुकुट, मुखे पान ॥२॥
तड़पि[5] के बोलेले समधी कवन समधी, सुनु समधी वचन हमार।
कहीती त ए समधी उधरी पधरवी,[6] नाहीं त बरोही[7] तर ठाढ ॥३॥
मिनती[8] करि बोलेले समधी, सुनु समधी वचन हमार।
कवन दुलहा के ऊँच छवाइबि[9], ठाढे[10] ही हथिया समाई[11] ॥४॥

[1]शृंगार करके। [2]पतला। [3]झूल। [4]विवाह। [5]जोर से। [6]उलटा लौट जाऊँगा। [7]वृक्ष। [8]विनती, प्रार्थना। [9]बनाऊँगा। [10]खड़े खड़े। [11]घुस जाय, प्रवेश कर जाय।

कहाँ से यह श्रृंगार की हुई (अर्थात् जिसके शरीर पर वेल वूटे निकाले गये हैं) हाथी आ रहा है और कहाँ से उसके ऊपर का सुन्दर तथा पतला झूल आ रहा है। कहा का राजा सिर पर मुकुट और मुख मे पान खाते हुए विवाह करने के लिये चला आ रहा है॥ १॥

तब कोई उत्तर देता है कि गोरखपुर का हाथी आ रहा है, पटना से उसका झूल आ रहा है और काशी का राजा विवाह करने के लिये चला आ रहा है ॥२॥

वर पक्ष के समधी ने कन्या के पिता से वडे जोर से गरज कर कहा कि कहो तो हम लोग उलटे अपने घर को लौट जायँ अथवा किसी वृक्ष के नीचे खडे रहे। (तुमने वारात के ठहरने का प्रवन्ध क्यो नही किया है?) ॥३॥

इस पर लडकी के पिता ने प्रार्थना करते हुए कहा कि मै अपने दामाद के लिये वहुत वडा मकान वनाऊँगा जिसमे हाथी भी खडे-खडे घुस जा सके ॥४॥

सन्दर्भ—ननद का ससुराल जाना तथा भावज से नेग मांगना

(७५)

कवन नगरिया चनन उपजेला, कवना नगरिया हथिया होरिसारे विकाय।
अपना दरबरिया मे से कवन बाबा दुरेले, कवन रे दुलहा पगरिया मांगे रे दान ॥१॥
अपना रसोइया मे कवन देवी दुरेली कवनी रे सुहवा काकानवा माँगे रे दान ॥२॥

किस नगर में चन्दन पैदा होता है और किस नगर मे हाथी विकते है। अपने घर में लडकी का पिता वैठा है और दूल्हा दहेज मे दान माँग रहा है ॥१॥

भावज रसोई घर मे वैठी हुई है और उसकी ननद उससे सोने का ककण नेग के रूप मे माँग रही है (क्योकि अव वह ससुराल जाने वाली है) ॥ २॥

सन्दर्भ—वर का गवना कराने के लिये ससुराल जाना

पीपर पात पुलुइयनि[1] डोले नदियन बहेल, सेवार ए।
गांगा आरारें[2] चढि बोलेला दुलहवा, लेला रमइया जी के नांव ए ॥१॥
आरे कई घवरे[3] भेंटबि बागबगइचा, कई घवरे भेंटबि ससुरारी।
आरे कई घवरे भेंटबि सुहवा पियारी, देखी नयेना जुड़ाई ॥२॥
एक घवरे भेंटबि बाग बगइचा[4], दुई घवरे भेंटबि ससुरारी।
तीन घवरे भेंटबि सुहवा पियारी, जे देखि नयेना जुड़ाई ॥३॥
दुलहा दुलहिनि मिलि एक मति भइली; दुलहा पूछेला एक बात।
धीरे धीरे बोल ए प्रासु सुनेला, नइहर के लोग बात ॥४॥
आरे हम रउरा ए प्रासु कोहबर[5] चली, आमा के देबि चिन्हाई।
पीअर ओढ़न, पीयर डासन; पीयरे मोतिन के हार ॥५॥
आरे जेकरा हाथे सोने के लोहा, उहे प्रासु आमा हमार।
लोहावा घुमावेली रोदना पसारेली उहे प्रासु आमा हमार ॥६॥
लालहि ओढ़न लाल ही डासन, लाले मोतिन केरा हार।
जेकरा हाथे सोनही केरा कंकन, उहे प्रासु चाची हमार ॥७॥
हरियर ओढन हरियर डासन, हरियर मोतिन केरा हार।
जेकरा गोदी में बालक भल सोमेला, उहे प्रासु भऊजी हमार ॥८॥
सबुज[6] ओढ़न सबुज डासन, सबुजे मोतिन केरा हार।
आरे जेकरा लिलारे झमाझमि[7] बिनुली[8]; उहे प्रासु बहिना हमार ॥९॥

कोई दूल्हा विवाह करने के लिये अपनी ससुराल जा रहा है। रास्ते में नदी आ पड़ती है। उसी समय का यह वर्णन है।

पीपल के पत्ते शाखाओं पर डोल रहे हैं और नदी में सेवार भरा हुआ

---

[1]गाछ के अन्त में। [2]ऊँचा किनारा। [3]डाँट। [4]बगीचा। [5]वह एकान्त घर जहाँ पति-पत्नी विवाह के बाद थोड़ी देर तक साथ रहते हैं। [6]आसमानी रंग। [7]सुन्दर। [8]बिन्दी।

है। गंगा के बड़े तथा ऊँचे किनारे पर चढ़कर दूल्हा अपने ससुर का नाम ले रहा है (जिससे कोई नाव वाला उसे पार उतार दे) ॥ १ ॥

वह सोचता है कि पार उतर कर मैं कितनी दौड़ में बगीचे, कितनी दौड़ में ससुराल पहुँचूँगा और कितनी दौड़ में स्त्री से मिलकर अपनी आँखों को शान्ति प्रदान करूँगा ॥ २ ॥

फिर वह आप ही उत्तर देता है कि एक दौड़ में मैं बगीचे में, दूसरी में ससुराल पहुँचूँगा और तीसरी दौड़ में स्त्री से मिलकर अपनी आँखों को सन्तुष्ट करूँगा ॥ ३ ॥

जब वह ससुराल पहुँचा तब अपनी स्त्री से मिलकर शान्ति प्राप्तकर उसने एक प्रश्न पूछा। तब स्त्री ने उत्तर दिया कि तुम धीरे-धीरे बोलो नहीं तो मायके के लोग हम लोगों की सब बातें सुन लेंगे ॥ ४ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि हम आप कोहबर में चलें। मैं अपनी माता का आप से परिचय करा दूँगी। वह पीला वस्त्र ओढ़ती है और पीला वस्त्र बिछाती है तथा पीले मोती का हार डाले है वही हमारी माता है ॥ ५ ॥

जिसके हाथ में सोने का लोहाँ है, जो उस लोहें को घुमा रही है तथा रो रही है, वही हमारी माता है ॥ ६ ॥

जिसका लाल वस्त्र ही ओढना है और लाल ही विछौना है तथा जिसके हाथ में सोने का कंकण है वही हमारी चाची है ॥ ७ ॥

जिसका हरा वस्त्र ओढना है तथा हरा ही विछौना है, जिसके गले में हरे मोती की माला है और जिसकी गोदी में सुन्दर बालक सुशोभित हो रहा है, वही हमारी भावज है ॥ ८ ॥

जिसका आसमानी रंग का कपड़ा ओढ़ना और विछौना है और आसमानी रंग का हार गले में डाले हुए है, जिसके ललाट पर सुन्दर बेंदी सुशोभित हो रही है, वही हमारी बहिन है ॥ ९ ॥

लड़की ने अपनी माता का जो परिचय दिया है वह अत्यन्त चित्ताकर्षक और हृदयद्रावक है। दूल्हे को परीछने के लिये वह अपने हाथ में लोहाँ लिये हुए है और पुत्री के भावी वियोग के डर से उसकी आँखों से आँसू गिर

रहे हैं। लड़की के ससुराल जाने समय माता को जो कष्ट होता है वह माता का हृदय ही जान सकता है अन्य कोई नहीं। विदाई के कई दिन पहले से ही आँसू की झड़ी लगाना उनका प्रधान कृत्य हो जाता है।

सन्दर्भ—वर का विवाह के लिये प्रस्थान एवं लड़की का रोदन

(६७)

चलेले कवन दुलहा बाजन बाजाइ रे, वन के चिरइया सब
डुगुरलि जाइ रे।
हम त कवन दुलहा वियहन जाईं रे, कातु चिरइया सब डुगुरलि
जाइ रे ॥१॥
हम त कवन दुलहा वियहन जाईं रे, हँसि हँसि कवन दुलहा
बिरवा लगाइ ए।
रोई रोई कवन सुहवा बिरवो ना लेई रे, केकरा दरपवे सुहवा
बिरवो ना लेइ ए ॥२॥
केकरा दरपवे सुहवा रोदना पसारे रे, बाबा के दरपवे सुहवा
बिरवो ना लेइ रे।
आमा के दरपवे सुहवा रोदना पसारे रे ॥३॥

कोई दूल्हा अपना विवाह करने के लिए बाजे के साथ चल रहा है। उसके साथ वन की सारी चिड़ियाँ धीरे-धीरे चलती चली आ रही हैं। तब वह उन चिड़ियों से पूछता है कि मैं तो विवाह करने जा रहा हूँ परन्तु तुम लोग मेरे पीछे क्यों आ रही हो॥ १॥

वह दूल्हा हँस-हँस कर पान का बीड़ा लगाता है और खाता जाता है। परन्तु उसकी स्त्री रो रही है और पान का बीड़ा नहीं खाती है। तब वह पूछता है कि तुम किस कारण अर्थात् किस दुख से पान नहीं खा रही हो तथा तुम किस कारण रो रही हो॥ २॥

इसके उत्तर में वह कहती है कि मैं अपने पिता के भावी वियोग के दुख से पान नहीं खा रही हूँ और माता जी के वियोग के डर से इतना रो रही हूँ ॥३॥

सन्दर्भ—बाल विवाद का वर्णन माता की उक्ति पुत्र के प्रति

(८८)

सुरहिया गाइ के दुधवा रे दुधवा, अवरु मगहिया[1] ढोलि[2] पान ए।
हमारा कवन दुलहा वियहन चलेले; पान विनु[3] ओठ सुखाई ए ॥१॥
ऊँच रे मन्दिल चढि हेरेली[4] कवन देई, कवन गाँव नियरा[5] कि दूर ए।
हमरा कवन दुलहा वियहन चलेले, दूध विनु ओठ सुखाई ए ॥२॥
सुरहिया गाई के दुधवा रे दुधवा, अवरु मगहिया ढोलि पान ए।
हमारा कवनी सुहवा सासुर[6] चलली, दूध विनु ओठ सुखाई ए॥३॥
ऊँच रे मन्दिल चढि हेरेली कवन देई, कवन गाँव नियरा की दूर ए।
हमरा कवनी सुहवा सासुर चलली, पान विनु ओठ सुखाई ए ॥४॥

पुत्र विवाह करने के लिए जा रहा है। माता कह रही है कि गाय का दूध तथा मगध देश का पान रखना है। हमारा लडका विवाह करने जा रहा है। कहीं पान की कमी के कारण उसका ओठ न सूख जाय॥ १॥

ऊँचे मकान पर चढकर उसकी माता देख रही है कि जिस गाँव मे विवाह करने जाना है वह गाँव नज़दीक है या दूर है। कही दूध के विना मेरे लडके का ओठ ही न सूख जाय॥ २॥

जब दूल्हा विवाह करके अपनी स्त्री को साथ लेकर घर लौटने लगा तब लडकी की माता ऊँचे मकान पर चढकर लडकी की ससुराल की ओर देखती है कि वह गाँव नजदीक है या दूर॥ ३॥

वह कहती है कि मेरी लडकी ससुराल जा रही है। कही रास्ते मे दूध और पान की कमी से उसका गला न सूख जाय॥ ४॥

इस गीत से स्पष्ट पता चलता है कि प्राचीन काल मे लडके लडकियो का विवाह बचपन मे ही हो जाता था। क्योंकि यदि ऐसी बात न होती तो लडकी तथा लडके की माता रास्ते में गला सूखने के डर से नही डरती। ऐसी स्थिति की कल्पना तो बालको के विषय में ही की जा सकती है।

---

[1]मगध देश। [2]ढोली। [3]बिना। [4]देखती है। [5]नजदीक। [6]ससुराल।

सन्दर्भ—विवाह के लिये जाते हुए पति का पत्नी से अचानक भेंट

(७९)

सावन भदउवाँ के दह पोखरि,[1] पुरइनि हालरि[2] लेइ ए।
आरे कोठवा ऊपर दुलहा धोतिया पसारेले, परे दुलहिनी जी के दीठी ए ॥१॥
आरे केकर हउवे रे अल्हड बछेडवा,[3] कवना मइया जी के पुत्र ए।
आरे केकरा सागरवा नहाल वर सुन्दर, केई वियाहन जाई ए ॥२॥
आरे बाबा हई रे अल्हड बछेडवा, अपना मइया जी के पुत्र ए।
आरे ससुर सागरवा नहालीं वर कामिनि, तुहीं वियाहन जाई ए ॥३॥
आरे आताना वचन जब सुनली कवन सुहवा, धवरि पइसेली आमा गोद ए।
आरे जवन वर आमा वियहन आवेला, तवन वर पोखर नहाई ए ॥४॥
आरे आताना वचन जब सुनले कवन भइया, अँखियनि लिहले गड़ोरी[4] ए।
आरे बाबूजी के जँघिया[5] के जामल[6] बहिनियाँ, आपु वर खोजन जाइ ए ॥५॥

सावन और भादों के महीने का तालाब पानी में भरा हुआ है और उसमें पुरैन का पत्ता हिलोरे ले रहा है। विवाह करने के लिये आया हुआ दूल्हा अपनी धोती को वहीं फैलाये हुए है। नहाने के लिये गई हुई दुलहिन ने उस दूल्हे को वहां देखा ॥ १ ॥

उसने दूल्हे से पूछा कि तुम किसके अल्हड़ बच्चे हो तथा किस माता के पुत्र हो। किसके तालाब में नहा रहे हो तथा किसको व्याहने के लिये आये हो ॥ २ ॥

दूल्हे ने उत्तर दिया कि मैं अपने पिता का अल्हड़ पुत्र हूँ, अपनी माता का लड़का हूँ, अपने ससुरजी के तालाब में मैं नहा रहा हूँ और तुम्हें व्याहने के लिये आया हूँ ॥ ३ ॥

---

[1]तालाब। [2]हिलोरे लेना। [3]पुत्र। [4]जानना। [5]जाँघ। [6]पैदा हुई।

इतना वचन सुनते ही वह लड़की दौड़कर घर गई और अपनी माता की गोद में बैठकर कहने लगी कि हे माता! जो दूल्हा हम ब्याहने के लिये आ रहा है वह तालाब में नहा रहा है ॥ ४ ॥

इतना वचन सुनते ही उस लड़की का भाई आंखें तानकर देखने लगा और कहने लगा कि ऐसे उद्दण्ड दूल्हे से मैं अपनी बहिन का विवाह नहीं कर सकता। अतएव मैं स्वयं दूसरा वर खोजने के लिये जा रहा हूं ॥ ५ ॥

सन्दर्भ——पुत्री की विदाई का वर्णन पिता-पुत्री वार्तालाप

(८०)

साँझ के उगली अंजोरिया[1] ए बाबा, सुकवा उगेला भिनसार[2] ए।
आरे सुरुज किरिनि[3] हमरा लागे हो बाबा; गोरा वदन कुम्हिलाइ ए ॥१॥
कहतु त बेटी हो तमुआ[4] तनइतीं, कहतु त छत्र उरेही ए।
होत भिनुसाहर बाबा बोलेले चिचुहिया[5]; लगवों सुनर वर का साथ ए ॥२॥
आरे दुधवा के निखियो ना दिहलू ए बेटी, लगलु सुनर वर का साथ ए।
काहे के दुधवा पियवल ए बाबा, काहे के कइल दुलार ए ॥३॥
जानते तु रहल बाबा धियवा परायी[6], लगली सुनर वर का साथ ए ॥४॥

कोई लड़की गवने के समय पिता के घर से अपनी ससुराल को जा रही है। वह अपने पिता से कहती है कि यह चाँदनी सन्ध्या के समय से ही छिटक रही है। शुक्र उदय हो रहा है अतः प्रातःकाल होने वाला है। सवेरे सूर्य की तेज़ किरणें जब हमारे ऊपर लगेंगी तब हमारा गोरा चेहरा मलिन हो जायेगा ॥ १ ॥

---

[1]चाँदनी। [2]प्रातःकाल। [3]किरण। [4]शामियाना। [5]चिड़िया। [6]दूसरे की चीज़।

तब पिता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी कहो तो मैं शामियाना तनवा दूँगा अथवा छाता लगा दूँगा जिससे तुम्हारे शरीर पर सूर्य की किरणें न पड़ें। तब लड़की ने यह कोरा जवाब दिया कि सवेरा होते ही जब चिड़ियाँ बोलने लगेंगी तभी मैं अपने सुन्दर पति के साथ ससुराल चल दूँगी॥ २॥

पिता ने कहा कि ऐ पुत्री! तुम मेरे दूध पिलाने तथा लालन-पालन का बदला बिना चुकाये ही पति के साथ जाने के लिये तैयार हो गई। इस पर लड़की ने उत्तर दिया कि आपने हमें दूध क्यों पिलाया॥ ३॥

आप तो जानते ही थे कि लड़की पराये घर की चीज है। अतः आज मैं पति के साथ अवश्य जाऊँगी॥ ४॥

वास्तव में लड़की पराई वस्तु होती है। कालिदास ने भी कहा है कि "अर्थो हि कन्या परकीय एव।'

सन्दर्भ—पुत्री के विवाह की ग्रहण लगने से तुलना तथा दामाद को दहेज देना

(८१)

कवन गरहनवा[1] बाबा साँझहीं[2] लागे हो, कवन गरहनवा भिनुसार[3] ए।
कवन गरहनवा बाबा मड़वनि[4] लागेला, कब दोनी उगरह[5] होई ए ॥१॥
चान गरहनवा बेटी साँझ ही लागेला, सुरुज गरहनवा भिनुसार ए।
धियवा गरहनवा बेटी मड़वनि लागेला, कब दोनी उगरह होई ए ॥२॥
हमरा ही बाबा के सोने के थरियवा छुवत झानाझनि होई ए।
उहे थरिवा[6] बाबा दामादे के दीहित, तब रउरा[7] उगरह होई ए ॥३॥
हमरा ही भइया का सुनर गइया हो, सोनवे मढावल चारो खूर ए।
सुनर गइया दामादे के दीहित हो, तव राउर उगरह होई[8] हो ॥४॥

[1]ग्रहण (आपत्ति)। [2]सन्ध्या (रात्रि)। [3]प्रातःकाल (दिन)। [4]विवाह-मण्डप। [5]उग्रह अर्थात् ग्रहण से छुटकारा पा जाना। [6]थाली। [7]आप का। [8]होगा।

पुत्री अपने पिता से पूछ रही है कि कौन ग्रहण रात को लगता है, कौन दिन में तथा कौन मण्डप में लगता है तथा उनका उग्रह कब होता है ॥ १ ॥

इस पर पिता ने उत्तर दिया कि चन्द्र-ग्रहण रात में, सूर्य-ग्रहण दिन में तथा पुत्री का ग्रहण विवाह-मण्डप में लगता है। मालूम नहीं कि इस पुत्री-ग्रहण से उग्रह कब होता है ॥ २ ॥

लड़की ने कहा कि ऐ पिता जी ! आपके पास सोने की एक थाली है जिसकी आवाज झनाझन होती है। यदि उस थाली को अपने दामाद को दे दें तो आपका पुत्री के ग्रहण से उद्धार हो जायगा ॥ ३ ॥

लड़की ने फिर कहा कि मेरे भाई के पास एक सुन्दर गाय है जिसके चारों पैर (खुर) सोने से मढ़े हुए हैं। वह गाय यदि आप दहेज में दे दें तो आपका उद्धार हो जायेगा ॥ ४ ॥

यहाँ पर यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि लड़की का विवाह प्रसन्नता का विषय न रहकर ग्रहण (पकड़ना, आपत्ति) कहा गया है तथा पिता इस ग्रहण से छूटने के लिये अत्यन्त व्याकुल है। पुत्री के विवाह में अधिक दान-दहेज देकर ही दामाद से पिण्ड छूटता है। प्राचीन कवियों ने इसी कारण दामाद की निन्दा करते हुए उसे दसवाँ ग्रह कहा है यथा —

"कन्याराशि स्थितो नित्य जामाता दशमो ग्रहः।"

सन्दर्भ—बारात का प्रस्थान तथा कन्या के पिता द्वारा सब का सत्कार

(८२)

अगीली नलकिया[1] रे दुलहा के बाबा, पछिला दुलह जी के चाचा जी।

बीचिली नलकिया रे दुलहा जी सोभेले, बावें[2] दहिने पाचों भाई जी ॥१॥

---

[1]पालकी। [2]बाँया।

जब बरियतिया गयेएं[1] भीरि गइली, गयेंणिनि धूम मचायो जी।
जब बरियतिया दुआरे भीरि गइली, चेरिया कलस ले ले ठाढ़[2] जी ॥२॥
जब बरियतिया मडउवा[3] भीरि अइली, मड़वनि धूम मचायो जी।
गद्दो, दरी अवरु गवद्र गलइचा, जाजिम[4] झारि डसायो[5] जी ॥३॥
थारीनि थारि मसाला[6] उड़ायो, अवरु मगहिया पान जी।
जेवहि बइठेले समधी कवन समधी; कवन राम बेनिया डोलाई जी ॥४॥
जेवहि समधी सकोच मती मानी, आजु हम राउर गुलाम[7] जी।
रउरा के समधी हम कुछहु ना दिहली; दिहली चेरिया तुम्हारजी ॥५॥
अइसन बोली जनि बोली ए समधी, राउर बचन पियार[8] जी।
राउर बेटी रे हामार लछिमी[9], लाख रुपइया हम पाई जी ॥६॥

विवाह के लिये दूल्हे की बारात जा रही है। अगली पालकी में लड़के का पिता बैठा है और पिछली में उनका चाचा। बीच वाली पालकी में स्वयं दूल्हा बैठा हुआ है और उसके बायें और दायें पाँचो भाई बैठे॥ १॥

जब बारात गाँव के नजदीक आ पहुँची तब वहाँ पर गाजे-बाजे के कारण धूम मच गई। जब बारात दरवाजे पर पहुँची तब वहाँ पर दासी कलश लिये हुए द्वारपूजा पर खड़ी थी॥ २॥

जब बारात विवाह-मण्डप में पहुँची तब वहाँ भी धूम मच गई। वहाँ पर बारातियों के बैठने के लिये दरी, जाजिम और गलैचा आदि बिछाया गया॥ ३॥

थाली में गरी, सुपारी, इलायची तथा मगहिया पान दिया गया। इसके बाद समधी जी (लड़के के पिता) भोजन करने के लिये बैठे और लड़की का पिता पखा झलने लगा॥ ४॥

---

[1]गाँव। [2]पास, नजदीक। [3]खड़ी। [4]मण्डप। [5]बिछौना। [6]बिछाया गया। [7]गरी, इलायची। [8]नौकर। [9]प्यारी, सुन्दर। [10]लक्ष्मी।

तब लड़की के पिता ने कहा कि समधी जी ! आप खाने में सकोच मत करें। आज मैं आपका गुलाम हूँ। मैंने आपको कुछ भी धन दहेज में नहीं दिया। अपनी लड़की को आपकी चेरी के रूप में दे दिया है ॥ ५ ॥

इस पर समधी ने उत्तर दिया कि आप ऐसी बात मत कहिये। आपका वचन मुझे बहुत प्यारा लगता है। आपकी पुत्री मेरे लिए लक्ष्मी है। मैंने उस लक्ष्मी स्त्री के रूप में लाखो रुपया पा लिया ॥ ६ ॥

यहाँ पर लड़की के पिता की नम्रता दर्शनीय है। वह पखा झलता है तथा अपने को गुलाम कहता है। देहात में लड़की का पिता विवाह के समय सचमुच ही बड़ा नीच, क्षुद्र तथा हेय समझा जाता है।

सन्दर्भ—युवती पुत्री के द्वारा युवक वर खोजने के लिये पिता से प्रार्थना तथा पिता की परेशानियों का वर्णन

(८३)

छोटी मोटी सीता कवरवनि[1] ढाढ़ी, बाबा से अरज हमार ए।
आरे हमारा के बाबा सुनर वर खोजिह, अब भइलों वियहन जोग ए ॥१॥

पुरुब खोजल बेटी पछिम खोजलों, अवरु बनारस, प्रयाग ए।
चारो भुवन बेटी तोहि वर खोजलों, कतही ना मिले सिरी राम ए ॥२॥

जाहु जाहु बाबा हो ओही अवधपुर, राजा दसरथ जी का द्वार ए।
राजा दसरथ जी का चारि सुनर वर, चारि हवे कन्या कुवाँरि ए ॥३॥

चारुन में जिनि[2] साँवर बाड़े, उहे हवे[3] कन्त हमार ए।
हाथे गुरदेलिया[4] गले तुलसी के माला, खेलत सरजू का तीर ए ॥४॥

---

[1]कोना। [2]जो। [3]है। [4]धनुष।

आलर[१] बाँसावा कटइह हो बावा, रचि रचि मड़वा[२] छवाव हो।
हमरो कन्त ना बावा हो निहुरी,[३] बिंदुली,[४] सेनुर मँगाव हो ॥५॥
लाली डँडिया फानाव हमरो बावा हो, भइली बिदइया के बेरि[५] हो।
तुलसीदास छुटेला भोर नइहर, सखि सब भेंट अँकवार[६] हो ॥६॥

इसी भाव का एक दूसरा गीत अर्थ सहित पहिले लिखा जा चुका है अत अर्थ सरल होने के कारण इस गीत का अर्थ लिखने की आवश्यकता नही जान पडती।

संदर्भ—बारात के आने, विवाह तथा बिदाई होने का वर्णन

(८४)

के[७] आवे हाथी, कवन आवे घोड़ा; के आवेला सुख पालकि ए।
केकरा ही मथवा मनिक[८] छत्र सोभेला; केई बियाहन जाई ए ॥१॥
राम आवे हाथी, लछमन आवे घोड़ा; भरत आवेला सुख पालकि ए।
रामजी का माथावा[९] मानिक छत्र सोभेला; रामचन्द्र बियहन जाई ए ॥२॥
भइले बियाह परेला सिर सेनुर[१०]; रामचन्द्र कोहबर जाई ए।
जब राजा रामचन्द्र कोहबर चलेले, सरहजि छेकेले दुआरि ए ॥३॥
हमार नेग[११] जोग दीहिं वर सुन्दर; तब रउरा कोहबर जाई ए।
तोहरा के देबों सरहजि दुनो काने तढिवन; अवरु गजमुकुता के हार ए ॥४॥
ए बाड़ा हो पाराते सरहजि डँड़िया फानावेली; बीचवा भेंटेले पासाराम[१२] ए।
ए हमरी बियाहलि सीता के ले जाला, मारबि धेनुका चालाई ए ॥५॥

---

[१]बड़ा। [२]विवाह-मण्डप। [३]झुक करके। [४]बिन्दी (टिकुली)। [५]समय। [६]आलिंगन (गले लगना)। [७]कौन। [८]माणिक्य। [९]सिर। [१०]सिन्दूर। [११]पुरस्कार। [१२]परशुराम।

डँड़िया उघारि जब सीता अरज करे, पासाराम अरज हमार ए।
बालक राम, धेनुख[1] बड भारी, टुटत बिलम[2] बड़ होई ए ।।६।।
ए पहील बान गिरेला जमुना दहे; दूसरा गिरेला कुरुखेत[3] ए।
ए तीसर बान गिरेला[4] जमुना दहे; टुटी, पराले[5] पासाराम ए ।।७।।

कौन हाथी पर चढकर आ रहा है, कौन घोडे पर है ओर कौन पालकी मे बैठा है। किसके सिर पर माणिक्य से जडा छत्र सुशोभित है तथा कौन विवाह के लिए आ रहा है ।। १ ।।

रामचन्द्रजी हाथी पर, लक्ष्मण घोडे पर तथा भरतजी पालकी पर चढे हुए चले आ रहे है। रामचन्द्रजी के सिर पर माणिक्य का छत्र सुशोभित हो रहा है तथा रामचन्द्र ही विवाह के लिए चले आ रहे है ।। २ ।।

राम के विवाह-मण्डप में आने पर विवाह कृत्य सम्पन्न हो गया, सिर मे सिन्दूर पड गया। जब रामचन्द्रजी कोहवर में जाने लगे तब सरहज ने आकर उनको दरवाजे पर ही रोक लिया ।। ३ ।।

सरहज ने कहा कि ऐ सुन्दर दूल्हा जब तुम हमारा नेग (उचित पुरस्कार) दे दोगे तभी तुम कोहवर में जा सकते हो। तब रामचन्द्र ने उत्तर दिया कि ऐ सरहज! मै तुम्हारे दोनो कानो के लिये इयरिंग दूंगा और गजमुक्ता की माला भी दूंगा ।। ४ ।।

जब सवेरा हुआ तो सरहज ने सीता को पालकी में ससुराल जाने को बैठा दिया। जब सीता और राम चले तब रास्ते मे परशुरामजी मिल गये। परशुराम ने कहा कि मेरी ब्याही हुई सीता को कौन लिये चला जा रहा है? मै उसे धनुष चलाकर मारूँगा ।। ५ ।।

पालकी में से निकलकर सीता ने परशुराम से प्रार्थना की कि राम अभी बालक है और धनुप बहुत भारी है। इसे तोडने मे विलम्ब अवश्य होगा ।। ६ ।।

---

[1]धनुप। [2]विलम्ब। [3]कुरुक्षेत्र। [4]गिरता है। [5]भग जाता है।

परन्तु परशुराम ने झगडना शुरू कर दिया। उनका पहिला वाण यमुना के जल में गिरा, दूसरा कुरुक्षेत्र में और तीसरा फिर यमुना जल में। इतने में परशुराम का धनुष टूट गया और वे भाग गये ॥ ७ ॥

इस गीत में ऐतिहासिक सत्य का अभाव है। विवाह के पहिले ही राम ने शिव के धनुष को तोड दिया था। इसी कारण परशुराम से उनकी मुठभेड हुई थी। परन्तु इस गीत में झगडे का दूसरा ही कारण बताया गया है जो अत्यन्त अशुद्ध है। परशुराम का हथियार फरसा था न कि धनुष जैसा कि इसमें लिखा है। अत गीत में वर्णित परशुराम वाली घटना नितान्त कपोल कल्पित ही समझनी चाहिए॥

सन्दर्भ—काला वर खोजने के कारण पुत्री की पिता से शिकायत

(८५)

बावा न देखो बाग बगइचा[1], बावा ना देखो फुलवारी ए।
काहा दल उतरी ए बेटी; बरियाति[2] टिकाइबि[3] फुलवारी ए ॥१॥
रउरा चुकलीं ए बावा हमरी बेरिया, हमरा करियवा[4] वर आवे हो।
साँवर साँवर जनि कहु बेटी; साँवर कृष्ण कन्हाई हो ॥२॥
बदन मलिन देखि पूछेले बावा; काहे बेटी मन मलीन हो।
बाराबा के मइया बडि फूहडि[5] बेटी; तिसिया के तेलवा लगावे हो ॥३॥
तोहरा मइया बडि गिहिथिनि[6] बेटी; करुवा तेल अवटेले हो।
ए ही से वर भइले साँवर बेटी; तू भइलू धप[7] धप गोरी[8] हो ॥४॥

पिता कह रहा है कि मैंने न तो कोई बाग, बगीचा देखा और कोई फुल-

---

[1]बगीचा। [2]बारात। [3]ठहराऊँगा। [4]काला। [5]गन्दी। [6]चतुर तथा काय-कुशल। [7]स्वच्छ। [8]गौर शरीर वाली।

वारी ही देखी। वारात कहाँ उतरेगी यह समझ में नही आता। फिर निश्चय करता है कि मैं वारात को फुलवारी में ही ठहराऊँगा ॥ १ ॥

वर को देखकर लडकी ने अपने पिता से कहा कि ऐ पिताजी! आपने मेरे विषय में बहुत वडी गलती की है। क्योंकि आपने मेरे लिये काला वर ढूंढ रक्खा है। इस पर पिता ने उत्तर दिया कि बेटी! काली चीज़ बुरी नही होती। कृष्ण भी काले ही हैं ॥ २ ॥

लडकी के चित्त को दुःखी देखकर पिता ने पूछा कि तुम्हारा चित्त दुःखी क्यो है? वर की माता वडी फूहड़ है। वह इसे तीसी का तेल लगाया करती थी ॥ ३ ॥

तुम्हारी माता चतुर और कार्य-कुशल है। वह तुम्हारी देह मे सरसो का तेल लगाया करती थी। इसीलिए तुम इतनी सुन्दरी होगई और तुम्हारा दूल्हा साँवला हो गया ॥ ४ ॥

कन्या सर्वदा सुन्दर वर से ही अपना विवाह करना चाहती है जो स्वाभाविक ही है। लिखा भी है कि—

'कन्या वरयते रूपम्'। अतः वर खोजते समय इस वात का सदा ध्यान रखना चाहिए ॥

संदर्भ—वारात का आना तथा वर के द्वारा सरहज को दहेज में मांगना

(८६)

नदिया के तीरे माली फुलवरिया, कान्ह चरावेला[1] गाई ए।
हाँकु हाँकु कान्ह तू अपनी रे गइया; चरी गइले मोरि फुलवारि ए ॥१॥

---

[1]चराता है।

आमुनि चरि गइलि जामुनि चरि गइलि, चरी गइले केरा, अम-रूध ए।

झड़ रे झरोखे चढ़ि सरहजि निरखेले[1], कत कन आवे बरियाति ए ॥२॥

कवन कवन जन आवे बारात में, कन्त आवेला असवारि[2] ए।
माई हाथिनि घोड़नि नगर छेंकइले, सरहजि लेवों डँडिया चढ़ाइ ए ॥३॥

आवाना वचन सरहजि सुनही ना पवली; चली भइली घरवा तयार ए।
माई रे अइसन दमाद लवइ[3] कतहीना देखो; सरहजि माँगेला दहेज ए ॥४॥

नदी के तीर पर एक माली की फुलवारी है। वहा पर कृष्णजी अपनी गायों को चरा रहे हैं। मालिनि ने उनसे कहा कि तुम अपनी गायों को हटा लो क्योंकि हमारा सारा बगीचा ये चर गई ॥ १ ॥

ये गाय जामुन, केला तथा अमरूद के पौधे चर गई। उसी समय सरहज ने खिड़की पर चढ़कर धीरे-धीरे आती हुई बारात को देखा ॥ २ ॥

वह बारात को देखकर कहती है कि न मालूम कौन-कौन से आदमी चले आ रहे हैं। दूल्हा पालकी पर चढ़ा हुआ है। वह अपनी सास से कहती है कि ऐ माता! हाथी और घोड़ों के कारण सारा नगर घिर गया है ॥ ३ ॥

दूल्हा जब विवाह करने के लिए आया तब उसने उस सरहज को दहेज में माँगा और कहा कि इसे पालकी में चढ़ाकर अपने घर ले जाऊँगा। इतना वचन सुनते ही वह सरहज क्रोध में आकर अपने मायके चली गई और वहाँ जाकर अपनी माता से कहा कि मैंने ऐसा दुष्ट तथा बदमाश दामाद कहीं नहीं देखा जो सरहज को दहेज में माँगता हो ॥ ४ ॥

---

[1]देखता है। [2]धीरे-धीरे। [3]पालकी। [4]दुष्ट, बदमाश।

वास्तव में दामाद ऐसी ही ऊँटपटाँग चीजें माँगा करते हैं जो देने लायक न हो और जो दाता की शक्ति के बाहर हो। इस गीत में कुछ अतिशयोक्ति अवश्य है।

सन्दर्भ—पति-पत्नी का काम-कलह वर्णन

(८७)

आरे अपना वलमुजी के मरमो[1] ना जानिले,
हँसि हँसि पारेले गारी ए ॥१॥
धाउ तेहु नउवा[2] रे, धाउ तेहु वरिया, सरहजि पकड़ि ले आउ रे।
आवसु सरहजि पलँग चढि वइठसु; ननदी चरित देखि जाहु रे ॥२॥
अइली सरहजि हाथ के पन वाटावा[3], भइली कवरहीं ठाढ़ ए।
आरे ए ननदोइया[4] मोरी ननदो दुलारी; मोरा कुछु कहलो ना जाई ए ॥३॥
केकर छवावल वसहर घरवा; केई विनावल पटिहाटि[5] ए।
आरे केकरा दरपवे पलँग चढी वइठेल, ननदी हमारी भुइयाँ लोटि ए ॥४॥
ससुरु छवावल वसहर घरवा, सारावे विनावल पटिहाटि ए।
सासु का दरपे पलँग चढि वइठेलों; ननदी तुम्हारी भुइयाँ लोटि ए ॥५॥
उठु उठु ननदी रे उठु रे दुलारी, उठि के आपन सेज जाहु ऐ।
आरे आपना छयल[6] सगे विरवा लगाऊ; आजु सोहाग के राति ए ॥६॥
जाहु जाहु भउजी रे जाहु दुलारी, उठि के आपन सेज जाहु ए।
आरे आपन ललन[7] सगे काम सँवारहु[8], आजु सोहाग के राति ए ॥७॥

---

[1]मर्म। [2]नाई। [3]पनडब्बा। [4]ननद का पति। [5]पलग। [6]पति। [7]प्रियतम। [8]भोग-विलास करो।

कोई स्त्री अपने पति के साथ सोई हुई थी। परन्तु पति ने अधिक गर्मी होने के कारण साथ सोने में अप्रसन्नता प्रकट की। तब वह स्त्री क्रुद्ध होकर जमीन में लेट गई। अब वह कह रही है कि मैं अपने पति के मर्म को नहीं जानती हूँ। वे हँस-हँसकर गालियाँ दिया करते हैं॥ १॥

स्त्री को जमीन पर पड़ी देख दूल्हा ने नाई तथा बारी से कहा कि तुम लोग दौड़कर जाओ और मेरी सरहज को बुला लाओ। वह आकर मेरे पलँग पर चढ़कर बैठे और अपनी ननद की हालत को देखे॥ २॥

हाथ में पान का डब्बा लिये सरहज आ गई और कोने में खड़ी हो गई तथा उससे कहने लगी ऐ ननदोई मेरी ननद बहुत दुलारी है। परन्तु उसकी दशा आज कुछ कही नहीं जाती॥ ३॥

सरहज ने दूल्हे से पूछा कि किसने यह छप्पर छवाया है, किसने यह पलँग बनवाया है तथा किसके घमड से तुम इस पलग पर चढ़कर बैठे हो और मेरी ननद जमीन में पड़ी लोट रही है॥ ४॥

दूल्हे ने उत्तर दिया कि मेरे ससुरजी ने इस घर को छवाया है, मेरे साले ने इस पलँग को बनवाया है और मैं सासु की आज्ञा से पलँग पर बैठा हूँ॥ ५॥

इस पर भावज ने ननद से कहा कि ऐ ननद! उठो और अपनी सेज पर जाओ। अपने प्रियतम के साथ तुम पान का बीड़ा लगाओ क्योंकि आज सोहाग-रात है॥ ६॥

यह सुनकर क्रोध में आकर ननद ने भावज से कहा कि तुम्हीं अपनी सेज पर चली जाओ तथा अपने पति के साथ भोग-विलास करो क्योंकि आज सोहाग रात है॥ ७॥

सन्दर्भ—स्त्री के छोटी मिल जाने पर वर का दुख प्रकाश करना

(८८)

साभावा वइठल राजा दशरथ, सुन राजा वचन हमार ए।
जियल[1] जन्मल राजा एकउ ना पूजेला[2], जिहि घरे रामकुँवार ए ॥१॥
एक छिन रोवलु ए रानी राम जनमले; एक बेरिया[3] राम वियाह ए।
केई तोहरा ए राम जोडवा[4] सँवारी रे, के सजइहे वरियात ए ॥२॥
केई तोहरा राम कसतुरिया[5] सँवरिहें; हरखि के जइव वरियात ए।
भइया हो भरत भइया जोडवा सँवरिहें; वावा सहेजिहें वरियात ए॥३॥
आमा हो कोसिला आमा तिलक सँवरिहें, हरखि चलवि वरियात ए ॥४॥
दखिन के चीरा पहिर नीकलु[6] कैकई; राम के परीछले आउ ए।
जेकर राम से परीछ ले आऊ; मोरा नाहीं परीछे के साध ए ॥५॥
दखिन के चीरा[7] पहिर निकलु कोसिला रानी, राम के परीछले आउ ए।
आपन राम में अपने परीछवि, मोरा वड परीछे के साध ए ॥६॥
जवरे कोसिला रानी लोहों घुमावेली; राम नयेन ढरे लोर ए।
किया ववुआ रामचन्द्र माई, वाप निरधन, किया दहेज पवल थोर[8] ए ॥७॥
किया ववुआ रामचन्द्र सीता छोटी वाड़ी हो काहे नयनवा ढरे लोर हो।
नाहीं कोसिला आमा माई वाप निरधन, ना पवली थोर दहेज हो॥
आमा कोसिला आमा सीता छोट वाडी, ए ही से नयन ढरे लोर हो ॥८॥

---

[1]जीना। [2]सन्तुष्ट होना। [3]समय। [4]कपडा। [5]तिलक। [6]निकलो। [7]कपडा। [8]थोडा (कम)।

सभा में बैठे हुए राजा दशरथ से कौशिल्याजी कहती है कि तुम मेरी बात सुनो। जिसके घर में रामचन्द्र अभी तक कुँवारे हों उसका जीना और जन्म लेना व्यर्थ है ॥ १ ॥

राजा दशरथ ने उत्तर दिया कि राम के जन्म लेने के पहिले भी तुम पुत्र के अभाव में रोया करती थी और अब विवाह के लिए रो रही हो। तुम्हारे राम के लिए कपडा कौन बनायेगा और बारात कौन सजायेगा। उनके सिर तिलक कौन लगायेगा जिससे प्रसन्न हो सब बारात चल सके ॥ २ ॥

इस पर रामचन्द्र ने उत्तर दिया कि भाई भरत कपडा तैयार करेंगे, पिता जी बारात सजायेंगे, माता कौशिल्या तिलक लगायेंगी और सब लोग आनन्द से बारात में चलेंगे ॥ ३ । ४ ॥

जब राम विवाह करके लौटकर आये तब कौशिल्या ने कैकेयी से कहा कि दक्षिण देश का कपडा (धारीदार) पहिनकर तुम राम को परीछो। इस पर कैकयी ने उत्तर दिया कि जिसके राम पुत्र है वही परीछे। मुझे परीछने की इच्छा नहीं है ॥ ५ ॥

तब राम को परीछने के लिए कौशिल्या निकली और कहा कि अपने राम को मैं आप ही परीछूंगी क्योंकि उन्हे परीछने की मुझे बडी इच्छा है ॥ ६॥

जब कौशिल्या राम को परीछते समय अपना लोढ़ा घुमाने लगी तब राम की आँखों से आँसू गिरने लगा। यह देखकर कौशिल्या ने पूछा कि क्या लडकी के माता-पिता गरीब है अथवा तुम्हे दहेज कम मिला है ? अथवा सीता छोटी है (किस कारण से तुम रो रहे हो) ॥ ७ ॥

राम ने उत्तर दिया कि ऐ माता! न तो लडकी के माता-पिता ही निर्धन हैं और न मुझे दहेज ही कम मिला है। ऐ माता! सीता की अवस्था बहुत थोडी है, इसीलिए मैं रो रहा हूँ। अन्य कोई कारण नहीं है ॥ ८ ॥

कौशिल्या की भाँति सभी माताओं को अपने पुत्र का विवाह देखने की बडी इच्छा रहती है चाहे वह बच्चा छोटा ही क्यों न हो। पत्नी को बडे पति के मिलने से वही कष्ट होता है जो पति को छोटी स्त्री मिलने से। इसीलिए राम सीता की छोटी अवस्था के कारण इतने दुखी है।

सन्दर्भ—राम के द्वारा सीता की अग्नि-परीक्षा

(८६)

कवन आम पियर कवन आम हरियर, कवन आम सेनुरवा के जोते ए।
ई तीनु आमावा के के सीरिजल, कवन पापी लगन सोचाई ए॥१॥
चौदहों बरिस पर अइले राजा रामचन्द्र, सीता विचरवा हम लेवि ए।
जब रे सीता देई अगिनि हाथे लिहली[1] रे. अगिनि भइली जुड[2] पानी ए॥२॥
इहो किरियवा ए सीता हम ना पतियाइवि,[3] अदित विचरवा हम लेवि ए॥३॥
जब रे सीता देई अदीत[4] हाथे लिह लीरे, अदित छपित[5] होई जाइ ए।
इहो किरियवा ए सीता हम ना पतियाइवि, सरप विचरवा हम लेवि ए॥४॥
जब रे सीता देई सरप[6] हाथ लिहली रे, सरप बइठेले फेटा[7] मारि एं।
इहो किरियवा सीता हम ना पतियाइवि; गंगा विचरवा[8] हम लेवि ए॥५॥
जब रे सीता देई गंगहि हाथ लिहली रे; गंगहि परि गइले रेत ए।
इहो किरियवा ए सीता हम ना पतियाइवि, तुलसी विचरवा हम लेवि ए॥६॥
जब रे सीता देई तुलसी हाथे लिहली, तुलसी गइली सुखाई ए।
अइसन पुरुखवा[9] के मुँह नाहिं देखवि, जिनि राम देले वनवास ए॥७॥
फटि जइती धरती अलोप[10] होई जइती रे, अब ना देखवि सनसार[11] ए॥८॥

---

[1]लिया। [2]शान्त। [3]विश्वास करूँगा। [4]आदित्य (सूर्य)। [5]अस्त हो जाना। [6]सर्प। [7]फना। [8]शपथ, साक्षी। [9]पुरुष। [10]नष्ट हो जाना। [11]संसार।

कौन आम पीला है, कौन हरा है और कौन सिन्दूर के समान लाल है। इन तीनो आमो को किमने वनाया तथा किम लग्न में सृष्टि की। अर्थात् मनुष्य की त्रिगुणात्मिका प्रकृति को किसने वनाया ॥ १ ॥

राजा रामचन्द्र चौदह वर्ष के वाद वन से लौटकर आये तव उन्होंने यह निश्चय किया कि दूसरे के घर रही हुई सीता की परीक्षा की जाय। अत. सीता ने अपनी शुद्धता दिखलाने के लिए जव अग्नि हाथ में लिया तव वह विल्कुल ठंडी हो गई ॥ २ ॥

तव राम ने कहा कि मै इस परीक्षा को मत्य नही मानता। सीता सूर्य के समक्ष साक्षी दे। तव मीता ने सूर्य को अपने हाथ में उठा लिया और वह हाथ में उठाते ही अस्त हो गया ॥ ३ ॥

राम ने कहा मै इसको भी नही मानता। मीता सर्प की शपथ ले। इस पर पर मीता ने मर्प को अपने हाथ मे ले लिया तव वह फना फैलाकर बैठ गया ॥ ४ ॥

• राम ने कहा सीता गगा की माक्षी दे। जव मीता ने गंगा को हाथ में लिया तव गगा विल्कुल सूख गई और रेत-रेत हो गया ॥ ५ ॥

राम ने कहा कि मै इमे नही मानता। सीता अपने हाथ में तुलसीदल लें। परन्तु जव सीता ने तुलमी को अपने हाथ में लिया तव तुलसी जी विल्कुल ही सूख गईं ॥६॥

परन्तु फिर भी जव राम ने सीता को वनवास दे दिया तव मीता ने क्रुद्ध होकर कहा कि मैं ऐमे पुरुष का मुह नही देखना चाहती जिसने मुझे वनवास दिया है ॥७॥

अव धरती फट जाती तो मै उमी में विलीन हो जाती। अव मै इस दुष्ट ममार को देखना नही चाहती ॥८॥

४. (ख) शिवजी के विवाह के गीत

भोजपुरी गीतो मे शिव तथा पार्वती के विवाह सबधी अनेक रोचक गीत मिलते है जिनमें शिव की विलक्षण आकृति, उनकी विचित्र बारात तथा अन्य हास्यजनक वस्तुओ का वर्णन पाया जाता है। कही-कही शिव जैसे भयकर आकृति वाले वर के मिलने के कारण पार्वती के साथ समवेदना प्रकट की गई है। कही पर कठिन तपस्या करने पर भी शिव के वर रूप में प्राप्ति के कारण पार्वती के भाग्य की निन्दा की गई है। तुलसीदास ने रामायण में शिव की बारात का जैसा वर्णन किया है, उस वर्णन से इन गीतो का वर्णन बहुत कुछ मिलता-जुलता है।

सन्दर्भ—शिव की बीभत्साकृति को देखकर पार्वती की माता का अपनी पुत्री का विवाह करने से मना करना परन्तु शिव के सुन्दर रूप बनाने पर विवाह कर देना।

(९०)

आरे बाजत आवेला ढोल दमामा, उडइत आवेला नीसान[१]।
नचइत आवेले ईसर महादेव; बयल[२] पर असवार ॥१॥
गउरा अइसन गयानी सयानी; तेकर वर बउराह[३]।
धिया[४] लेके उडवो, धिया लेके बुडवी; धिया लेके खिलवों पाताल॥२॥
एइसन तपसिया के गउरा नाहीं देवों, बलु गउरा रहिहें कुँवार।
ए आगे परीछे गइली सासु मादागिनि, सरप छोड़ेले फुफकार॥३॥
ए वहँवा से अइली मादागिनि ठोकली, वजर[५] केवार[६]।
आरे माडो[७] उखारेली, कलसा फोरेली, पुरहथ[८] देली छितराइ॥४॥

---

[१]पताका। [२]बैल। [३]पागल। [४]लडकी। [५]वज्र (कठिन)। [६]केव [७]मण्डप। [८]चौक पूरने का आटा।

अइसन तपसिया के गउरा मे ना देवों, बलु गउरा रहिहे ,कुँवार।
ए सीव गउरा अइसन गेयानी, सेकर सामी[1] बउराह ॥५॥
आरे क्लसा का ओटे ओटे गउरा[2] विनती करे, सुनु सीव अरज
हमार।
तनियेका ए सीव जाटा उतारीं, नइहर[3] लोग पतियासु ॥६॥
आरे जाटा उतारि सीव भभुती[4] उतरलें, गांगा करेले असनान[5]।
आठो अग सीव चनन चढवलें, माह्[6] मडउवा भइले ठाढ[7]।
आरे कार्हाँ बाडी सासु कार्हाँ वाड़ी सरहजि, अब रूप देखसु
हमार ॥७॥
आरे माडो गडावेली कलस धरावेली, पुरहथ लिहली बटोर।
अइसन तपसिया के गउरा[2] हम देवों, करवों में गउरा से
बिआह ॥८॥

शिवजी की बारात आ रही है। उसमे ढोल तथा नगाड़े बज रहे हैं और पताके उड़ रहे हैं। शिवजी बैल पर चढ़कर उसे नचाते हुए चले जा रहे हैं ॥१॥

बारात में आये हुए शिव को देखकर पार्वती की माता कहती है कि हमारी लड़की पार्वती गोरी तथा सुन्दर है। लेकिन उसका पति (शिव) काला है (क्योंकि सर्पों की माला लगाये तथा बैल पर चढ़े हुए चला आता है)। मैं अपनी पुत्री को लेकर उड़ जाऊँगी, उड़ जाऊँगी या पाताल में [illegible] नहीं जाऊँगी ॥२॥

मैं ऐसे तपस्वी के हाथ में अपनी लड़की का ब्याह नहीं करूँगी, चाहे पार्वती क्वाँरी [illegible] रह जाय। तब पार्वती की माता वर (शिव) का [illegible] (शिव के [illegible]) [illegible] ॥३॥

---

[1]स्वामी (पति)। [2]गौरी। [3]मायका। [4]विभूति (भस्म)। [5]स्नान। [6]मध्य। [7]खड़े।

वहाँ से आकर माता ने रुष्ट होकर बड़े जोरों से घर का दरवाजा बन्द कर दिया। उन्होंने व्याह के मण्डप को उखाड़ दिया, कलशे को फोड़ दिया तथा चौका पूरने के लिये रक्खे गये आटे को बखेर दिया ॥ ४ ॥

माता कहने लगी कि ऐसे साधु को अपनी लड़की पार्वती को मैं नही दूँगी चाहे वह क्वांरी भले ही रह जाय। पार्वती तो इतनी चतुर है और उसका पति इतना पागल है ॥ ५ ॥

तब घोड़े के पीछे छिपकर पार्वती ने प्रार्थना करते हुए यह कहा कि ऐ शिव! मेरी विनती सुन लो तथा थोड़ी देर के लिये अपनी जटा उतार दो जिससे तुम्हारे असली रूप पर मायके के लोग विश्वास कर सके ॥ ६ ॥

पार्वती की इस प्रार्थना को सुनकर शिवजी ने अपनी जटा और विभूति (भस्म) को उतार दिया तथा गंगा मे स्नान कर लिया। अपने आठो अग में चन्दन चढा दिया और विवाह मण्डप के बीच मे आकर खड़े हो गये। वे कहने लगे मेरी सासु और सरहज (साले की स्त्री) कहाँ है, अब आकर मेरे रूप को देखें ॥ ७ ॥

इस रूप को देखकर पार्वती की माता बहुत प्रसन्न हुई और वे मण्डप गड़ाने तथा कलश धरने लगी तथा बिखरे हुए आटे को इकट्ठा कर लिया। अब ऐसे तपस्वी को मैं पार्वती को अवश्य दूँगी तथा पार्वती का विवाह उससे अवश्य करूँगी ॥ ८ ॥

इस गीत मे अनमेल विवाह का जो मार्मिक चित्र खीचा गया है वह देखते ही बनता है। पार्वती की माता का अपनी पुत्री के प्रति कितना गाढ प्रेम है। वह मर जाने के लिये तैयार है परन्तु ऐसे अनमेल वर से पार्वती का विवाह करना नही चाहती। इस प्रकार के अनमेल व्याह आजकल भी गावो मे बहुत देखने में आते है जहाँ ७५ वर्ष के पोपले मुँह वाले बाबा दुधमुँही बच्चियो से विवाह करने के लिये वर बन कर जाते हैं।

सन्दर्भ—शिवजी के गवने का वर्णन पार्वती की उक्ति शिव के प्रति

(९१)

सीव जी हाथावा मे सोने केरी छुरी ।
होरी फिरी खोजेले सीव गउरा की अटारी ॥१॥
सुतली रहली गउरा देई उठेली चोहाई[1] ।
काहे रउरा अइलीं ए सीव नीसु[2] अन्हीयारी[3] ॥२॥
आजु हम अइलीं ए गउरा बाबाजी की चोरी ।
कालु हम अइबों ए गउरा सजन बटोरी ॥३॥
तोहरा के ले अइबों गउरा घुघुरा लगाई ।
हामारा के ले आइबी सीव पाट के पटोरी ॥४॥
बाबा हमार निरधन ए सीव दहेजवो ना दीहें ।
बाबा तोहार निरधन ए गउरा देहेजवों ना दीहें ॥५॥
हामारा ही आमा के गउरा जवाब जनी दीह ।
जो कुछ अरजीह ए भोला से लेखा जनि लीह ॥६॥

शिवजी विवाह करने के लिये आये हैं। सम्भवतः उनके कोहबर का यह वर्णन है। शिवजी के हाथ में सोने की छुरी थी। वे पार्वती के घर में बार-बार उसे ढूंढ रहे हैं॥ १॥

पार्वती सो रही थी, वह आश्चर्यित होकर उठी और शिव को देखकर उसने कहा कि हे शिव! आप अन्धेरी रात में यहां क्यों आये॥ २॥

तब शिवजी ने उत्तर दिया "आज मैं अपने पिता से छिपकर आया हूँ परन्तु कल सब मित्रों को इकट्ठा करके आऊँगा"॥ ३॥

"तुम्हारे लिये पैर में लगाने के लिये मैं घुघुरू लाऊँगा" शिव ने कहा।

---

[1]आश्चर्यित होकर। [2]रात्रि। [3]अन्धेरी।

तब पार्वती ने उत्तर दिया कि अब शिव तुम्हारे [illegible] अथवा नाग-नाट करते [illegible] ॥ ६ ॥

"मैंने शिवजी, शिव ने, [illegible] आपको कुछ [illegible] नहीं दे पाते" पार्वती ने कहा ॥ ७ ॥

शिव ने कहा कि हे पार्वती, मेरे घर आने पर तुम मेरी माता को जवाब मत देना। तब पार्वती ने कहा कि हे शिव! तुम जो कुछ कमाना उसे मुझे दे देना और दूसरा विवाह मत करना ॥ ८ ॥

सन्दर्भ—विवाह के अवसर पर पार्वती के घर शिव के परीछने तथा दहेज देने का वर्णन

(१२)

ऊँच मड़उवा[1] माहादेव बरधी[2] लदाई।
रचें एक नीहुरी महादेव परीछों मे तोही ॥१॥
गाई का गोबरे महादेव अँगाना लिपाई।
गजमोती आहो माहादेव चउका पुराई ॥२॥
चउकनी बइठेले माहादेव गइले आलासाई।
अँगुठनी मारि गउरा देइ लिहली जागाई ॥३॥
अँगुठा के मरले माहादेव गइले कोहनाई[4]।
चहिया लफाइ गउरा देइ लिहली मनाई ॥४॥
बीयही की बेरिया[5] माहादेव कुछुवो ना पइवो।
गावना का बेरिया महादेव सब कुछ पइवो ॥५॥
ग्वाये के माहादेव थारी, अँचवे के झाड़ी[6]।
सुते के पँलगरी[7] माहादेव, ओढे के रजाई ॥६॥
सुनि ए सीव बाबा दीहें हाथों से घोड़ा।
भऊजी दीहें अँगूठी, भइया दीहें धेनु गाई[8] ॥७॥

---

[1]मण्डप। [2]बैल। [3]झुकना। [4]रुष्ट हो जाना। [5]समय। [6]बटा लोटा। [7]पलग। [8]अच्छी गाय।

ऊँचे मण्डप में शिवजी बैल पर चढ़कर विवाह करने के लिये आये हैं। उनकी भावी सास कहती है कि शिव! जरा झुक जाओ जिससे मैं तुम्हें परीछ सकूं॥ १॥

गाय के गोबर से आँगन लिपा गया है और गजमोती से चौक पुरा गया है॥ २॥

जब शिवजी विवाह करने के लिये चौके पर बैठे तब उन्हें आलस्य आगया और सो गये। तब पार्वती ने उन्हें अपने अँगूठे से मार कर जगाया॥ ३॥

अँगूठे से मारे जाने के कारण शिवजी रुष्ट हो गये परन्तु पार्वती ने अपनी बाँह से पकड़कर उन्हें प्रसन्न कर लिया॥ ४॥

पार्वती ने शिव से कहा कि ऐ शिव! विवाह के समय आपको दहेज के रूप में कुछ नहीं मिलेगा परन्तु गवना के समय सब कुछ मिलेगा॥ ५॥

खाने को थाली, हाथ धोने के लिए बड़ा लोटा, सोने के लिये पलँग और ओढ़ने के लिये रजाई (लिहाफ) मिलेगी॥ ६॥

ऐ शिव! मेरे पिताजी घोड़ा और हाथी देंगे, भावज एक अँगूठी देगी और भाई एक अच्छी गाय देगा॥ ७॥

सन्दर्भ—शिव की विचित्र बारात का वर्णन

(९३)

लेहुना बारी रे हाथे सोपारी, ए डाँडे घुघुरवा बान्ही,
लेहु देखु आउरे बरिया कत दल आवेरे सिव बरियतिया[1]॥१॥
भूत बेताल आवे सिव बरियनिया,
आरे सीव रूप देखलो ना जाई॥२॥
परीछे बाहर भइली सासु मादागिनि,
सरप छोड़ले फुफुकार॥३॥
लोढ़ा पटकली अछत देली छितराई
आरे कलसा के ओटे गउरा बिनती करे॥४॥

---

[1]बारात।

सीवजी से अरज हमार
तनिक ए सिव ! भेख उतारु नइहर लोग पतिआई ॥५॥
उतरले सीव जाटा उतरले गागा, करेले असनान[1];
आठो ही अग सिव चनन चढवलें, माह मँडउवा भइले ठाँढ ॥६॥
काहाँ वाड़ी सासु काहाँ वाड़ी सरहिज[2],
रूप देखसु अव हमार ॥७॥

शिवजी की वारात आ रही है, उसकी अगवानी के लिये वारी (एक जाति) को भेजते हुए कोई कहता है कि ऐ वारी! तुम अपने हाथ मे सुपारी ले लो और अपने डाँड मे घुघुरू वाँध लो तथा जाकर के देखो कि शिव की वारात मे कौन-कौन आदमी आ रहे है ॥ १ ॥

तव उसने आकर कहा कि शिव की वारात मे भूत, वैताल सव आ रहे है। शिव का रूप (सर्प धारण के कारण) इतना भयकर है कि देखा भी नही जाता ॥ २ ॥

जव पार्वती की माता शिव को परीछने के लिये गई तव साँप फुफुकार छोडने लगे। इस पर उन्होने लोढ़ा पटक दिया और अक्षत तितर-वितर कर दिया ॥ ३ । ४ ॥

तव कलसे के ओट से पार्वती यह प्रार्थना करने लगी ऐ शिव ! अपने इस रूप को हटाकर असली रूप दिखलाओ जिससे मायके के लोग विश्वास कर सके ॥ ५ ॥

तव शिव ने अपनी जटा खोली, गगा को उतारा और स्नान करके अपने आठो अगो मे चन्दन लगाकर मण्डप के वीच में आकर खडे हो गये और कहने लगे ॥ ६ । ७ ॥

हमारी सास और सरहज कहाँ है। वे आवे और मेरे रूप को अव देखें ॥८॥

---

[1]स्नान। [2]साले की स्त्री।

सन्दर्भ—विवाह के लिए आते हुए शिव की विचित्र आकृति का वर्णन

(१४)

फूल लोहें[1] चलली गउरा ओही फुलवारी,
बासाहा[2] चढल माहादेव लावेले गोहारी[3] ॥१॥
फूल जनि लोहं गउरा हमरी फुलवारी,
लोहल फुलवा ए गउरा देबो छितराई[4] ॥२॥
उँहवा से अइली गउरा बइठे मन मारी,
आमा पुछेली ए गउरा काहे मन मारी ॥३॥
भउजी जो रहतीं आमा, कहतीं मन लाई,
लाज केरि बतिया आमा, कहल नाहि जाई ॥४॥
भउजी से कहबु ए गउरा,
हामारा से कहबु ए गउरा, हिरिदया लगाई ॥५॥
सूप अइस दढ़ीया[5] ए आमा, बरध अस आँखी,
उहे तपसिया ए आमा, हमे घेलमाई[6] ॥६॥
भँगिया पीसत ए आमा, जीयरा अकुलाई,
धतुरा के गोलिया ए आमा, हाथावा रे खिआई[7] ॥७॥
फोरी घाल ए गउरा, हाथ केरी चूरी,
मेटि घाल ए गउरा, सीर के सेनुरवा ॥
दीनवाँ गँवाव[8] ए गउरा हमरी राम रसोई ॥८॥
अइसन बोलिया ए आमा फेरु[9] जनि बोलिह,
उहे तपसिया ए आमा जीयसु दुनिया की आई[10] ॥९॥

इसका अर्थ स्पष्ट है।

---

[1]चुनना। [2]बैल। [3]आवाज, पुकारना। [4]तितर बितर कर देना। [5]दाढी। [6]विलम्ब। [7]घिस जाना। [8]बिताना। [9]फिर, पुन। [10]आयु, उम्र।

शिवजी के रूप का वर्णन पढ़कर हास्य रस का आनन्द आता है। शायद हिन्दी के प्राचीन या अर्वाचीन किसी भी कवि को दाढ़ी की उपमा सूप से और आँख की उपमा बैल की आँख से न सूझी होगी। इसीलिए ग्राम्य गीतों में उपमा की अनोखी छटा पाई जाती है। इस गीत में पार्वती का पति-प्रेम और उनकी माता का पुत्री-प्रेम स्पष्ट रूप से झलक रहा है॥

सन्दर्भ—शिव का पूर्व दिशा में कमाने के लिये जाना और दूसरा विवाह कर लेना

(९५)

महादेव चलले हो पुरुबि बनिजिया, बितेला महिनवा चारि रे।
मचिया बइसि गौरा जोहेली बटिया, कब अइहें तपसि हमार रे॥१॥
बरह बरिस पर लौटे महादेवा, भइलें दुअरवा पर ठाढ़ रे।
सूतल बाड़ू के जागल गउरा देई, खोलहू बजर केवाड़ रे॥२॥
पनिया पियहु तुँहू बइस महादेवा, कह न नइहर कुसलात रे।
कूल्ह कुसल मोरे बाड़े हे गउरा देइ, कूसल नैहर तोहार रे।
एक कूसल मोरे नाहिं हे गउरा देइ, कइलीं हों दूसर वियाह रे॥३॥
कइलों वियाह सिव बड निक कइलीं, जे अङ्ग सुभाव बताव रे
कइसन हथवा कइसन गोडवा, कइसन सहज सुभाव रे॥४॥
तोहर निअर बाड़े गोडवन हथवन, ओइसन अंग सुभाव रे,
ओठवा त बाडे गउरा कतरल पनवा, केसियन भँवर लोभाई रे॥५॥
किया गउरा आन्हर किया गउरा लंगर, किया गउरा कोखिय वेहून रे
किया गउरा देइ सेवा के चुकली, काहे कइलीं दूसर वियाह रे॥६॥
नाहिं गउरा आन्हर नाहि गउरा लंगर, नाहिं गउरा कोखिया वेहून रे।
विधि के लिखल गउरा आरे नाहिं मेटे रे, भावी कइल दूसर वियाह रे॥७॥

इस गीत में शिवजी के दूसरे विवाह करने का प्रस्ताव उपस्थित किया गया है। यह प्रस्ताव सस्कृत-साहित्य मे नितान्त अज्ञात है, परन्तु भोजपुर के गीतो में यह प्रस्ताव बहुलायत से पाया जाता है। शिवजी पूरब व्यापार करने के लिए जाते है और चार मास के बाद लौट आते है। पार्वती जब उनसे कोई नया समाचार पूछती है तो शिवजी द्वितीय विवाह का प्रस्ताव छेडते है। पार्वती पूछती है कि मुझमे कौन दोष है ? शिवजी भावी की प्रबलता बतलाकर चुप हो जाते है।

५. वैवाहिक-परिहास

दुल्हा (वर) जब अपनी ससुराल जाता है तब दुल्हिन की सहेलियाँ, ननद और भौजाई दुल्हे से हँसी-मजाक किया करती हैं। यह नितान्त स्वाभाविक ही है। जैसे विवाह के गीतों में आनन्द या उल्लास रहता है और गवने के गीतों में करुणरस का प्रवाह बहता हुआ दिखलाई देता है उसी प्रकार इन गीतों में विशुद्ध हास्य का फौवारा फूटता हुआ दृष्टिगोचर होता है। इन गीतों के देहाती होने पर भी इनका हास्य ग्रामीण न होकर नागर है, भद्दा या भोंडा न होकर विशुद्ध और सयत है। रीतिकाल के कवियो की भाँति इन गीतो में अश्लीलता तथा उच्छृंखलता को कहीं स्थान नही दिया गया है। अनेक गीतो मे हास्य की अभिव्यक्ति अभिधा के द्वारा न होकर व्यन्जना के द्वारा की गयी है। हँसी भी उतनी चुभती हुई है कि समझदार के दिल में गुदगुदी पैदा किये बिना नहीं रह सकती। उस सुन्दरी का परिहास नितान्त मार्मिक है जो बन-ठनकर रास्ते में नायक के मिलने पर अपने खर्चे खतम होने की तथा यौवन का विनिमय कर आवश्यक वस्तुओ के खरीदने की बात कहती है। नायक भी उसके उत्तर मे कहता है कि आज का खर्चा मैं तुम्हे दे दूँगा परन्तु तुम्हे अपने यौवन में मुझे साझी रखना होगा।

"बाट में भेंट रसिया कवन राम हो।
काहाँ रे जालु मोर रनिया।
आजु के खरचिया ओराइल बाटे हो।
जोवन बेचे ओह् गलिया ॥
आजु के खरचिया हम चलाइबि हो।
जोवनवा में हम सझिया।"
काहाँ रे जालु मोर रनिया।

यह परिहास कितना शुद्ध और नम्र है। इसी प्रकार का परिहास इन गीतों में आगे मिलेगा।

सन्दर्भ—कृष्णजी का ससुराल जाना और लौटकर माता से ससुराल की प्रशंसा करना

(९६)

सोने के खाटी[1] आंगन ले डासी[2]; वहतर[3] धरि ना उतारि जी।
चरन पखारी[4] चरनोदक लीन्हा, अति बड़ भाग हमारी जी ॥१॥
जेवहीं[5] वइठेले कृष्ण कन्हइया; पारी सखिय सब गारी जी।
दाल, भात अवरु गोहूँ की रोटी, परवर की तरकारी जी ॥२॥
दीहि सखिय सब हमरा के गारी[6]; हम लेवों पटुका[7] पसारी जी।
अइसन गारी के गारी न कहिये; इ गारी प्रेम पियारी जी ॥३॥
माई पियारी[8] पूछे वहिना दुलारी; कहो ललन ससुरारी जी।
सारी[9] ले सरहजि अवि ही पियारी; सासु गंगाजल पानी जी ॥४॥
नवहीं मासे कृष्ण एही कोखी[10] रखली; कवहूँ ना कइल वढाई जी।
एक ही दिन कृष्ण गइल ससुरारी, सासुके अतना वड़ाई जी ॥५॥
राम दोहइये[11] परमेसर कीरिये,[12] अब ना जाइबि ससुरारी जी।
जुग जुग वाढ़े[13] कृष्ण राउर ससुरारी; निति[14] तू जाहु ससुरारी जी ॥६॥

कृष्णजी अपनी ससुराल गये हैं उसी समय का यह वर्णन है। ससुराल जाने पर सोने का पलग आँगन में बिछा दिया गया। तब सास ने कहा कि आप अपने कपडे उतार कर रख दीजिए। आप अपने चरण धोइये जिससे मैं चरणोदक ले सकूँ। आज हमारा बडा भाग्य है॥ १॥

जब कृष्णजी भोजन करने के लिये बैठे तब सखियों ने गाली देना

---

[1]चारपाई। [2]विछाया। [3]वस्त्र। [4]धोओ। [5]भोजन करने के लिये। [6]गाली। [7]वस्त्र। [8]प्यारी। [9]साले की बहिन। [10]गर्भ। [11]दुहाई। [12]शपथ। [13]वृद्धि को प्राप्त करे। [14]नित्य प्रति।

प्रारम्भ कर दिया। कृष्णजी को भोजन करने के लिये दाल, भात, रोटी और परवर की तरकारी दी गयी थी॥ २॥

कृष्ण ने उन सखियो से कहा कि आप लोग जितनी चाहे गालियाँ दीजिये। मै कपडे फैलाकर उन गालियो को स्वीकार कर लूँगा। ऐसी गाली को गाली नही समझना चाहिए क्योकि यह प्रेम-पूर्ण गाली है॥३॥

जब कृष्णजी ससुराल से लौटकर अपने घर गये तब प्यारी माता और बहिन ने उनसे पूछा कि अपनी ससुराल का समाचार सुनाओ। तब कृष्णजी ने उत्तर दिया कि सरहज (साले की स्त्री) अत्यन्त प्रिय बोलने वाली है और मेरी सास गगाजल के समान शुद्ध और पवित्र है॥ ४॥

सास की यह प्रशसा सुनकर कृष्ण की माता को कुछ बुरा लगा और वे बोली कि ऐ बेटा! नव महीने तक हमने तुम्हे अपने गर्भ मे रक्खा लेकिन तुमने कभी मेरी प्रशसा नही की। परन्तु तुम केवल एक दिन के लिये ससुराल गये और सास की इतनी प्रशसा करने लगे॥ ५॥

तब कृष्णजी ने कहा कि मै राम की दुहाई देता हूँ और परमेश्वर की शपथ खाता हूँ कि अब मै ससुराल नही जाऊँगा। तब कृष्ण की माँ ने कहा कि तुम्हारी ससुराल सदा बढती रहे और तुम नित्य प्रति ससुराल जाया करो॥६॥

कृष्ण की माता का सास की बढाई सुनकर क्रुद्ध होना स्वाभाविक ही है। कृष्ण की मातृभक्ति प्रशसनीय है क्योकि माता को क्रुद्ध समझकर वे ससुराल न जाने की प्रतिज्ञा कर लेते है।

सन्दर्भ—किसी कुलटा का कामी पुरुष से प्रेम

(१७)

अतरस लहँगा सबुज[१] रग साडी; चोलिया जरद किनारी पाइ।
अलबेला ना ॥१॥

---

[१]नीली।

चोलिया पेन्हेली कुलटा[1] कवन देइ, घटिया चलेली मटकेली ॥२॥
हाइ अल०

हम त जे जाइ रसिया[3] रउरी महल में, [illegible]
हाइ अल०

हमरा महल कुलटा अन्हरा अन्हरा गुन्डा; मारि लीहें [illegible]
मचाई[9] हाइ अलबेलाना ॥४॥

[illegible] लगा हुआ है। [illegible] मार्ग में
जाने [illegible] ॥१।२॥

किसी के पूछने पर कि तुम कहाँ [illegible] कि मैं तुम्हारे
महल में जाऊँगी। तब उसने कहा कि हमारे महल में अंधे गुंडे रहते हैं,
वे तुम्हें वहाँ तंग करेंगे ॥३।४॥

सन्दर्भ—मार्ग में जाने वाली स्त्री पर किसी लम्पट पुरुष की कुदृष्टि

(६८)

काँच ही बाँस के बसुलिया[1] हो, कटाव पर के तीन चोलिया।
चोलिया पेन्हेली कवनी[6] देई हो; चमक चलली ओह[7] गलिया
आहो कटाव पर तीन चोलिया ॥१॥

बाट में भेटें रसिया[8] कवन राम हो; काहाँ रे जालु मोरि रनिया।
आजु के खरचिया ओराइल[9] बाटे हो; जोबन[10] बेचें ओह गलिया
काहाँ रे जालु० ॥२॥

आजु के खरचिया[11] में चलाइबि हो, जोबनवा में हम सझिया[12]
काहाँ रे जालु मोर रनिया ॥३॥

---

[1]दुष्टा स्त्री। [2]रास्ता। [3]प्रेमी। [4]भवा गुना। [5]आँगुने। [6]कौन। [7]उन।
[8]लम्पट। [9]समाप्त। [10]स्तन, जवानी। [11]खर्चा। [12]साझी, हिस्सेदार।

कोई स्त्री कच्चे बाँस की बाँसुरी लेकर और ऐसी चोली पहिनकर जिस पर फूल कढे हुए थे किसी गली मे चमकती हुई चली॥ १॥

जब वह रास्ते मे जा रही थी तब कोई लम्पट आदमी उसे मिला और कहने लगा कि ऐ मेरी रानी ! तुम कहाँ जा रही हो ? उस स्त्री ने उत्तर दिया कि आज मेरे घर मे खर्चा घट गया है अत मैं इस गली में अपनी जवानी वेंचने आई हूं॥ २॥

तब उस लम्पट पुरुष ने कहा कि आज का खर्चा मैं तुम्हे दे दूंगा परन्तु अपनी जवानी में तुम मुझे साझी बनाओ अर्थात् अपनी जवानी तुम मुझे उपभोग करने दो॥ ३॥

(९९)

कथि के उ जे रे[1] पिजरा रे; कथि[2] के लागल डोरी।
कोयल धीरे धीरे बोल, तूती[3] धीरे धीरे बोल ॥१॥
सोने के उ जे पिजरवा रे, रेसम लागल डोरी ॥२॥
ओहि पिजरा कुलटा कवन देई, पिजरा करता चबोल[4]।
ले चेलु कुलटा के जमुना पार हो; गँहकी[5] होई सो बोल ॥
तूती धीरे धीरे बोल ॥३॥

किस वस्तु का यह पीजड़ा बना हुआ है और किस चीज की इसमें डोर लगी हुई है। ऐ कोयल और तूती तुम लोग धीरे-धीरे बोलो॥ १॥

सोने का यह पीजडा है और इसमे रेशम की डोर लगी हुई है। इस पीजडे में एक कुलटा (दुष्टा) स्त्री है जो लोगो से मजाक किया करती है। कोई लम्पट पुरुष कहता है कि इस स्त्री को वेंचने को जमुना पार चला जाय। यदि इसका कोई ग्राहक हो तो बोले॥ २। ३॥

सन्दर्भ—लम्पट पुरुष के द्वारा किसी कुलटा का गर्भाधान

(१००)

निहुरली[6] आँगन बहारेली कवन देई, भुइया[7] सोहरि[8] गइले केस।
मोरे राजा हो; भुँइया लटकि गइले केस ॥१॥

---

[1]वह। [2]किस वस्तु का। [3]एक पक्षी विशेष। [4]मजाक। [5]ग्राहक। [6]झुक कर। [7]जमीन पर। [8]लटक गया।

घोड़वा चढल तुहु रसिया कवन राम; केसिया बटोरि[1] मोहि देहु।
मोरे राजा हो, केसिया बटोरि मोहि देहु ॥२॥
छुटले अँचरवा कुलटा रहि गइले पेटवा[2];
ढोढवा[2] के कवन उपाय ॥३॥
हँसि हँसि चिठिया जे लिखेले कवन राम;
कुलटा तू जनि घबडाय ॥४॥
गड़ीये लदइवों सोठि[3] रे पीपरिया[4];
कूपवे[6] लदइवों करुवा[7] तेल ॥५॥
कुलटा रे तोरा पेट के उपाय करवों[8];
करवों जतन अनमोल ॥६॥

कोई स्त्री झुककर आँगन में झाड़ू दे रही थी कि उसका बाल खुलकर जमीन पर गिरने लगा ॥ १ ॥

उसने घोडे पर चढ़कर जाते हुए किसी लम्पट पुरुष ने कहा कि तुम मेरे बिखरे हुए बालो को समेट दो ॥ २ ॥

जब वह पुरुष उस स्त्री के बाल समेट रहा था इतने ही में उसका आँचल खुल गया और उस पुरुष के कुकर्म के कारण उसे गर्भ रह गया। कुछ दिनो के बाद स्त्री ने उसे लिखा कि इसका क्या उपाय किया जायगा ॥ ३ ॥

उस पुरुष ने हँसते हुए उस स्त्री के पत्र में लिखा कि ऐ कुलटा स्त्री! तुम घबराओ नही ॥ ४ ॥

मैं सोठ और पीपल (दवा) गाड़ी मे लादकर तुम्हारे लिये भेज दूँगा। ऐ कुलटा! मैं तेरे गर्भ के लिए अनेक अमूल्य उपाय करूँगा ॥ ५ । ६॥

इस गीत में एक कुलटा स्त्री और दुश्चरित्र पुरुष के चरित्र का चित्रण किया गया है जो स्वाभाविक प्रतीत होता है।

---

[1]इकट्ठा करना। [2]गर्भ। [3]सोंठ। [4]पीपल। [5]दवा। [6]ज्यादा। [7]सरसों का तेल। [8]करूँगा।

सन्दर्भ--किसी कुलटा द्वारा कामुक पुरुष को सुरत-संभोग के लिये निमन्त्रण

(१०१)

झोप झोपारी' रे फरेला सोपारी; तर नरियरवा के वारी।
आहो लाल तर नरियरवा' के वारी ॥१॥
कचन सेज डसावेली कवन देई, केहु ना आवेला केहु जाई।
धावल धूपल' अइले कवन राम; मोहर दे गइले साईं ॥२॥
आहो लाल मोहर दे गइले साईं ॥
आधी राति जनि अइह मोरे राजा हो; नगर के लोग डेराई।
ठीक दुपहरिया अइह मोरे राजा हो, हम रउरा करवि लराई' ॥३॥
राजा हो हम रउरा करवि लराई।
निचवा रजाई' रे उपरा दोलाई,' ताहि बीचे होखेला' लराई।
अहो लाल ताहि बीच होखेला लराई ॥४॥

सुपारी का वृक्ष फलों से लदा हुआ है। उसके पास ही नारियल का वृक्ष है। वहाँ पर किसी स्त्री ने सोने का पलंग बिछा रखा है। परन्तु वहाँ पर कोई आदमी आता या जाता नहीं है। इतने ही में कोई आदमी दौड़ता और हाँफता हुआ आया और उसे बयाना के रूप में एक मुहर दे गया ॥ १।२ ॥

उस स्त्री ने उस पुरुष से कहा कि ऐ मेरे राजा तुम आधी रात को मेरे पास मत आना क्योंकि नगर के लोग इससे डर जायेंगे। तुम ठीक दोपहर के समय मेरे पास आना और तब हम दोनों लड़ाई करेंगे अर्थात् सुरत संभोग करेंगे ॥ ३ ॥

हम लोगो के बिछाने के लिये नीचे तोसक होगा और ओढने के लिये ऊपर दुलाई होगी। इसके बीच में हम दोनो आदमी लडाई लडेंगे अर्थात् भोग विलास करेंगे॥ ४॥

इस गीत मे सभोग शृंगार की वडी मार्मिक व्यजना हुई। वर्णन कही अश्लीलता की सीमा तक नही पहुँचने पाया है। इसी भाव के अनेक दोहे बिहारी सतसई मे पाये जाते है जो कही-कही पर बहुत अश्लील हो गये हैं

सन्दर्भ—पति-पत्नी का सुरत संभोग वर्णन

(१०२)

कचन सेज डसावेले कवन राम; तकिया धरेले सिरहानी[१]।
धावल धूपल आवेली कवन बहू; ठाढ भईली गोनतारी[२] ॥१॥
का तू कवनि वहू ठाढ गोनतारी, ए जी घुसुकना[३] अव सिर-
हानी ॥२॥
ए जी चूमा[४] देत नकवेसर टूटेला, कुलटा के राम जी वचाई।
चोली खोलत बनवा[५] सव टूटेला, कुलटा के राम जी बचाई ॥३॥
लँहगा खोलत कमर टूटेला; कुलटा के राम जी वचाई ॥४॥

किसी पुरुष ने सोने का सेज बिछा रक्खा था और सिरहाने में तकिया रक्खा था। कोई स्त्री वहाँ आई और गोनतारी खडी हो गई॥ १॥

तव पुरुष ने उससे पूछा कि तुम कौन हो और यहाँ क्यो खडी हो तुम सिरहाने की ओर चली आओ॥ २॥

पुरुष ने जब उस स्त्री का चुम्बन किया तव उसके नाक का वेसर टूट गया, चोली खोलते समय सारे बन्द टूट गये और सुरत सभोग के लिये लहँगा खोलते समय उसकी कमर पीडित होने लगी। तव उनने कहा कि ईश्वर ही इस स्त्री की रक्षा करें॥ ३। ४॥

---

[१]चारपाई का सिर की ओर का हिस्सा। [२]चारपाई का पैरकी ओर का हिस्सा। [३]धीरे से चलो। [४]चुम्बन। [५]बन्द।

सन्दर्भ--प्रिया के द्वारा प्रवासी पति को पत्र लिखना

(१०३)

अब काहाँवा के गइया चरन[1] आवे; काहाँवा के उमडल[2] साँड।
अब चिठिया जे लिखली कवन देई; मोरे राजा दुबर[3] जनि होई ॥१॥
अब चिठिया जे लिखली कवन देई, मोरे बबुआ दुबर जनि होई ॥२॥

कहाँ की गाय चरने के लिये आती है और कहाँ का साँड चला आ रहा है। X X X जब पति परदेश चला गया तब स्त्री ने उसे एक पत्र में लिखा कि ऐ राजा! तुम चिन्ता के कारण दुबले मत होना। माता ने भी लिखकर भेजा कि पुत्र तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करना॥ १।२॥

सन्दर्भ—वर के पिता का कन्या के भाई से मजाक करना

(१०४)

नदिया के तीरे कवन बाबू, बछरु[4] चरावे ना।
आपन मइया ए बबुआ हमरा के द ना[5] ॥१॥
कुलटा के हमरो के द ना।
हामारी मइया ए पाडे जी, लरिका[6] से बारी।
ए पाडे जी लरिका से बारी॥२॥
खिअइबों मैं बनारस के लड्डूआ हो; हो जइहें सयान।
सुतइबों मैं आपन कोरवा[7] हो; हो जइहे सयान[8] ॥३॥
कुलटा हो, हो जइहे सयान॥

लडकी का भाई तिलक चढाने के लिये आया है। लडके का पिता उससे मजाक करता हुआ कहता है कि तुम नदी के किनारे गाय चराया करते हो। ऐ बच्चे! तुम अपनी माँ को मुझे दे दो॥ १॥

---

[1]चरने के लिये। [2]सामने आना। [3]दुबला। [4]बछडा। [5]दो। [6]कम उम्र की। [7]गोदी। [8]जवान।

तब उस लडके ने उस खूसट बूढे से कहा कि ऐ पाण्डेजी मेरी माता अभी बहुत छोटी है॥ २॥

तब बूढे ने कहा कि मैं बनारस का लड्डू खिलाकर उसे जवान बना दूँगा और उसे मैं अपनी गोदी में सुलाऊँगा। इस प्रकार वह कुलटा स्त्री जवान हो जायगी॥ ३॥

विवाह में बूढे लोग भी प्राय ऐसे मजाक किया करते है और उन्हें इसमें जरा भी लज्जा नही मालूम होती।

सन्दर्भ—वर के पिता का पुत्र की ससुराल जाना और अपनी समधिन से व्यभिचार करना

(१०५)

जाहि वने अइसन सिकियो ना डोले रे; ताहि वने कवन उपाय॥१॥
वेलाल वेनुली। टेक
कवन सेज डसावेले कवन राम; एको कुलटवा नाहिं पास॥२॥
धावत्त धूपल[1] आवेली कवन देई; सेज पर परे अरराई॥ ॥
वेलाल वेनुली।
आरे जब त बोलवनि रे कुलटा तब नाहिं अइलू, अपने अइलू बालाई।
जब तुहु देखलु हो साठि रूपइया, सेज पर परे आराराई॥३॥
वेलाल वेनुली।
खेत खरिहनिया[2] से अइले कवन राम, बाहर रहेले ललचाई।
इ का[3] कइनी समधी, कवन समधी, इज्जति[4] लिहली[5] हमार॥४॥
वेलाल वेनुली॥
हम का समधी कवन समधी, अपने अइली आराराई॥५॥
वेलाल वेनुली॥

---

[1]दौड करके। [2]खलिहान। [3]यह क्या। [4]प्रतिष्ठा (इज्जत)। [5]लिया

लडके का पिता अपने पुत्र की ससुराल गया था। उसी समय का यह वर्णन है। जिस स्थान पर जरा भी हवा नही चलती वहाँ पर कौन सा उपाय है॥ १॥

समधी ने सोने का पलँग विछाया परन्तु कोई स्त्री उसके पास नही आई। परन्तु थोडी देर में उसकी समधिन आई और उसकी सेज पर पड गई॥ २॥

तव समधी ने उससे कहा कि जब मैंने वुलाया तव तू नही आई परन्तु जव मैंने रुपये का लालच दिखाया तव तुम चली आई॥ ३॥

जव उस स्त्री का पति खेत और खलियान से लौटकर आया तव उसने समधी के कुकर्म को देखकर कहा कि आपने यह क्या किया? आपने आज मेरी इज्जत मिट्टी में मिला दी॥ ४॥

तव समधी ने उत्तर दिया कि मैं क्या करूँ? तुम्हारी स्त्री स्वत मेरे पास चली आई। इसमें मेरा कुछ भी दोष नही है॥ ५॥

६. गवना के गीत

हमारे यहाँ गवना भी विवाह ही के समान बडे धूम-धाम से किया जाता है। अनेक भाई-बन्धु वर के साथ गाजे-बाजे के साथ वधू के घर जाते है और उसकी विदाई कराके घर लाते है। इधर वर पक्ष के लोगो में आनन्द ही आनन्द छाया रहता है परन्तु कन्या-पक्ष के लोगो में विषाद के चिह्न दिखाई पडते है। कही लडकी का भाई रो रहा है तो कही उसके पिता की आँखो से आँसुओ की झडी लगी हुई है। पुत्री की माता का रोना तो पत्थर को भी पिघलाये देता है। जब पुत्री की विदाई का समय समीप आता है तब उस समय का दृश्य और भी हृदयद्रावक होता है। इधर वरपक्ष वाले वधू को घर से बाहर निकालने के लिये जल्दी मचाते है उधर माता लडकी को अपनी गोद में चिपटाये हुए रहती है उसे छोडती ही नही, मानो अब लडकी अपनी ससुराल से लौटकर आने की ही नही। सचमुच लडकी की विदाई का दृश्य देहातो मे एक विचित्र कारुणिक दृश्य होता है। ऐसे समय के गीतो के विषय का अनुमान सहज ही मे किया जा सकता है।

इन गीतो मे कही तो पुत्री की माता अपने जामाता से अपनी प्राण प्यारी पुत्री के आदर के साथ रखने तथा उससे प्रेम करने का उपदेश देती है तो कही भावी पुत्री-वियोग से जन्म-दु ख का अनुमान कर विलाप करती है। कही भाई अपनी बहिन की पालकी के पीछे-पीछे रोता जाता हुआ दिखाई पडता है तो कही बहिन अपने भाई, माता तथा पिता के वियोग-दु ख से दु खी होकर रोती, कलपती, बिलखती चली जाती है। इस दृष्टि से विचार करने पर विवाह के गीत शृगार-रस से ओतप्रोत दिखाई पडते है परन्तु गवने के गीतो में करुण-रस की ही प्रधानता है। सचमुच करुण-रस मे निमग्न इन गीतो को पढकर "अपिग्रावा रोदति, अपि दलितवज्रस्य हृदयम्" वाली भवभूति की उक्ति अक्षरश सत्य प्रतीत होती है।

गवने का समय सचमुच ही बहुत हृदय-विदारक होता है। चिरकाल से

जाती चली गई प्रिय पुत्री का वियोग कितना दुःखदायक न होगा। महर्षि कण्व भी जब दत्तकपुत्री शकुन्तला की विदाई के समय अपने मन को न सँभाल सके तो इतर प्राणियों की क्या कथा है—

आप कहते हैं कि—

> "यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया,
> कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
> वैक्लव्यं मम तावदीदृशमहो स्नेहादरण्यौकसः
> पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।" ॥

वास्तव में यह उपर्युक्त कथन नितान्त यथोचित है। मैंने ऐसे कितने गम्भीर-चेता पुरुषों को ऐसे अवसर पर फूट-फूट कर रोते देखा है जिनके मुख पर कभी विषाद की रेखा भी नहीं झलकती। अतः ऐसे अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में करुण-रस की धारा का प्रवाहित होना स्वाभाविक है। लड़की की विदाई के समय माता और पिता का रुदन अत्यन्त करुणाजनक होता है।

इन गीतों में बहिन तथा भाई का अट्ठन प्रेम दिखलाया गया है। भाई का बहिन के घर जाना और उसका कुशल समाचार पूछना अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। इस प्रकार इन गीतों में स्वाभाविक प्रेम तथा करुण-रस की अटूट धारा निरन्तर बहती हुई दिखाई पड़ती है। अब यहाँ पर गवने के कुछ चुने हुए गीत पाठकों के मनोरंजनार्थ दिये जाते हैं।

संदर्भ—लड़की के गवना के बाद ससुराल जाते समय माता की उक्ति अपने पुत्र के प्रति

(१०६)

सुन सुन लोकनी[1] सुनहु जेठ भाई।
कहिह समधीनी आगे अरज[2] हमारी ॥१॥

---

[1] नौकरानी। [2] प्रार्थना।

लाते[1] जनि मरीहे पाराते[2] जनि गारी।
आ काँच ही नीनीये[3] जनि जगइहे मोरी दुलारी ॥२॥
सुन सुन लोकनी सुनहु जेठ भाई।
कहीह समधीनी आगे दरप हमारी ॥३॥
लाते हम मरवों पाराते देवों गारी।
काँच ही नीनीये हम जगइवों पूत बहुआरी ॥४॥
वाये जइहे लोकनी दहीनें जेठ भाई।
रामजी के बहियाँ सीरहाना[4] धइले जाई ॥५॥

गवने के समय अपनी पुत्री को उसके ससुराल विदा करते समय उसकी माता अपने जेठे पुत्र और नौकरानी से कह रही है कि ऐ नौकरानी और (पुत्री के) जेठे भाई ! सुनो, तुम लोग जाकर समधी की स्त्री से मेरी यह प्रार्थना कह देना ॥ १ ॥

वे मेरी पुत्री को पैर से न मारेंगी और प्रात काल उसे गाली न देगी तथा सोई हुई मेरी प्यारी पुत्री को कच्ची नीद मे न जगायेंगी ॥ २ ॥

नौकरानी तथा जेठे भाई ने अपनी माता की प्रार्थना को जाकर समधिनि से कह सुनाया। इसे सुनकर वह गर्व से कहती है कि तुम लोग सुनो और मेरी समधिनि के पास यह मेरी गर्वोक्ति कह सुनाना ॥ ३ ॥

मै पैर से ठोकर मारूँगी और प्रात काल ही उसे गाली दूगी और अपनी पतोहू (पुत्रवधू) को कच्ची नीद मे ही जगाऊँगी ॥ ४ ॥

वायें तो नौकरानी जायेगी और दाहिने जेठा भाई जायेगा परन्तु मेरे पुत्र की बाहे पतोहू के सिर की ओर रहेंगी ॥ ५ ॥

इस गीत में लडकी की माता का प्रेम अपनी पुत्री के लिये उमडा जाता है। वह उसके सुख के लिये कैसी बेचैन है। सास की गर्वोक्ति कितनी कठोर है। अपनी इसी क्रूरता के कारण सास आजकल घृणा की दृष्टि से देखी जाने लगी है। इसमें दोष उनका नही तो और किसका है ?

---

[1]पैर। [2]प्रात काल। [3]नीद। [4]सिर की ओर।

सन्दर्भ—ससुर की उक्ति दामाद के प्रति

(१०.)

आरे साभावा[1] बइठल रे ससुर करे मनुहारी[2]।
मोरे प्रान हरी दीन दस रहे देहु धियवा[3] हमारी ॥१॥
मोरे प्रान हरी जाहु तोहरा ए ससुर धियवा पियारी।
मोरे प्रान हरी आ काहे के पउवाँ पखरल हमार ॥२॥
मोरे प्रान हरी पासाव[4] खेलत रे सारावा[5] करे मनुहार।
मोरे प्रान हरी दीन दस रहे देहु बहिना हमारी ॥३॥
मोरे प्रान हरी जाहु तोरा ए सारावा बहिना दुलारी।
मोरे प्रान हरी काहे के चनन[6] चढ़वल हमार ॥४॥
मोरे प्रान हरी मचीया[7] बइठल सासु करे मनुहारी।
मोरे प्रान हरी दीन दस रहे देहु धियवा हमारी ॥५॥
मोरे प्रान हरी जाहु तोरा ए सासु धियवा पियारी।
मोरे प्रान हरी काहे के लोढ़वा[8] घुमवलु हमार ॥६॥

दामाद अपनी स्त्री को लेने के लिये ससुराल आया है तब उसके ससुर उससे यह प्रार्थना करते हैं कि ऐ प्रिय जामाता ! मेरी लड़की दस दिन मेरे यहाँ और रहने दो ॥ १ ॥

तब दामाद ने उत्तर दिया कि ऐ ससुर यदि तुमको अपनी पुत्री प्यारी है तब तुमने मेरा पाव क्यो धोया अर्थात् ब्याह क्यो किया ? ॥२॥

पासे खेलते हुए साले ने भी यही प्रार्थना की कि मेरी बहिन को दस दिन के लिये रहने दो ॥ ३ ॥

तब दामाद ने कहा कि यदि तुमको अपनी बहन प्यारी है तो तुमने मुझे चन्दन क्यो लगाया ॥ ४ ॥

मचिया पर बैठी हुई सास ने भी यही प्रार्थना की ॥ ५ ॥

---

[1]सभा। [2]प्रार्थना। [3]पुत्री। [4]पाशा (जुआ)। [5]श्यालक (बहिन का भाई)। [6]चन्दन। [7]छोटी चारपाई (खटोली)। [8]पत्थर का लोटा।

फिर भी दामाद ने यही उत्तर दिया कि ऐ सास यदि तुमको अपनी लडकी प्यारी है तो तुमने व्याह मे मेरे ऊपर लोढा क्यो घुमाया अर्थात् अपनी लडकी से मेरा व्याह क्यो किया ॥ ६ ॥

देहातो मे लडकियो की विदाई के लिये ऐसे दृश्य रोज ही देखने मे आते है। इस लेखक को तो इसका वहुत ही वुरा व्यक्तिगत अनुभव है।

सन्दर्भ—गवना करा के आये हुए पति की उक्ति स्त्री के प्रति

(१०८)

काहे तोरा आहो ए सुहवा[1] ओठवा सुखइले हो।
काहे तोरा आहो ए सुहवा नयनवा ढरे हो लोर[2] ॥१॥
नइहर[3] मोरा आहो ए प्रभु! दुरि रे वसे।
कहु ना आवेला केहु जाई ॥२॥
चान्हहु आहो ए सुहवा, सकर[4] लडुइया रे।
हमहीं कवन रे दुलरुआ[5] जाइवि वडी दूर ॥३॥
कवना सरीखे ए सुहवा मइया रे तोर।
कवना सरीखे ए सुहवा भऊजी रे तोहार ॥४॥
कवना सरीखे ए सुहवा चेरिया रे तोर।
कवना सरीखे ए सुहवा नइहर रे तोहार ॥५॥
सोने के ककनवा[6] ए प्रभु मइया रे मोर।
सोने के ककनवा ए प्रभु भऊजी रे हामार ॥६॥
सोने के ककनवा ए प्रभु चेरिया रे मोर।
ओही सरीखे ए प्रभु नइहर रे हमार।

गवना कराके पति स्त्री को घर लाया है। स्त्री के मायके से वहुत दिनो से कोई आदमी नही आया है। इस कारण वह रो रही है। तव पति उससे

---

[1]स्त्री। [2]आँसू। [3]मायके। [4]चीनी। [5]प्यारा। [6]ककण।

पूछता है कि ऐ स्त्री ! तेरा होंठ क्यों सूख गया है और तेरी आँखों में आँसू क्यों गिर रहे हैं ? ॥ १ ॥

स्त्री उत्तर देती है कि मेरा मायका यहाँ से बहुत दूर है वहाँ से न तो कोई आता है और न जाता है ॥ २ ॥

तब पति ने कहा कि ऐ स्त्री तुम धीरज धरो। मैं अपने घर का प्यारा तुम्हारे दूर भी मायके जाऊँगा ॥ ३ ॥

ऐ स्त्री यह बताओ कि तुम्हारी माता और भावज कैसी हैं (जिससे मैं उनको पहिचान सकूँ) ॥ ४ ॥

ऐ स्त्री तेरी नौकरानी कैसी है और तेरा मायका कैसा है ॥ ५ ॥

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरी माता और भावज सोने के कंगन पहने हुई है ॥ ६ ॥

और मेरी नौकरानी भी सोने का कंगन पहनती है। इसी प्रकार का मेरा मायका है ॥ ७ ॥

सन्दर्भ—ससुर की उक्ति दामाद के प्रति

(१०९)

साभावा बइठल ए ससूर पूछे एक बात ।
आरे कइसे कइसे अइल ए दुलहा एहि देसवा की ओर ॥१॥
आरे हमरेहि देसावा ए ससुर साँवरो बहुत,
आरे गोरी लोभे अइली ए ससुर एहि देसवा की ओर ॥२॥
आरे पासावा खेलत रे सारावा पूछे एक बात ।
आरे कइसे कइसे अइल ए दुलहा एहि देसवा की ओर ॥३॥
आरे हमरे हि देसावा ए सारावा सांवरो बहुत ।
आरे गोरी लोभे अइलीं ए सारावा एहि देसवा की ओर ॥४॥

अर्थ बहुत ही स्पष्ट है।

दामाद की उक्ति से पता चलता है कि पहले समय में लड़का स्वयं अपनी भावी पत्नी खोजने के लिये जाया करता था तथा अपनी पसन्द के अनुसार ही विवाह करता था।

सन्दर्भ—गवना के बाद लड़की का ससुराल प्रथम बार जाना

(११०)

बाबा के रोवले गंगा बढ़ी अइली।
आमा के रोवले अन्हार[1] ए आरे ॥१॥
भइया के रोवे चरन, धोती भीजे,
भऊजी नयनवों न लोर ॥२॥
किया तोहरी भऊजी नून[2] तेल छेकलीं।
किया कोठी लवली पेहान[3] ॥३॥
नाहीं तुहुँ ननदी नून तेल छेकलू।
नाहीं कोठी लवलू पेहान ॥४॥
नाहीं तुहुँ ननदी रसोंइया झाँ कि अइलू।
बतिये[4] बैरनी भइल तोहार ॥५॥

लडकी के ससुराल जाते समय उसका पिता इतना रोया कि गंगा में बाढ आ गई और माता के रोने से अँधेरा छा गया॥ १॥

भाई के रोने से पैर और धोती भींग गई परन्तु भावज की आँखो में आंसू भी नही दिखाई दिये॥ २॥

तब लडकी ने भावज से पूछा कि ऐ भावज! क्या मैंने तेरा नमक तेल रोक रक्खा था और क्या अन्न का भण्डार बन्द कर दिया था अर्थात् तुम्हे खाने को नही देती थी॥ ३॥

भावज ने उत्तर दिया कि ऐ ननद! न तो तुमने मेरा नमक तेल ही रोक रक्खा था और न अन्न का भण्डार ही बन्द किया था॥ ४॥

और न तुमने मेरा रसोई घर ही कभी झाँककर देखा था। परन्तु तुम्हारे कठोर वचन ही मेरे वैरी हो गये॥ ५॥

---

[1]अन्धकार। [2]नमक। [3]पिधान (ढक्कन)। [4]बातें।

इस गीत में करुणरस की धारा बह रही है तथा पिता का पुत्री के प्रति अगाध प्रेम स्पष्ट झलकता है। ननद और भावज के शाश्वतिक विरोध की भी झलक दीख पडती है। रोने की अत्युक्ति हिन्दी कवियों को भी मात कर रही है।

संदर्भ—कन्या के विदा के समय का गीत

(१११)

आठहि काठ केरि डँड़िया[1] नेतवे लागेला ओहार[2]।
फानावले कवन राम डँड़िया, बहु चढी चलु रे हामार ॥१॥
छेकेले कवन भइया डँड़िया बहिना जाये ना देब।
छोडु छोडु भइया डँड़ियावा घरे जाये रे देउ ॥२॥
सातो लउँडिया[3] के भारावा एगो हमरो नाहीं ॥३॥

आठ काठ का पालकी बनी हुई है जिस पर परदा लगा हुआ है। स्त्री का पति उसको उस पर चढाता हुआ कहता है कि मेरे घर तुम चलो ॥ १ ॥

इस पर उस स्त्री का भाई पालकी को रोककर प्रेमवश कहता है कि ऐ बहिन! मैं तुम्हें जाने नही दूगा ॥ २ ॥

तब बहिन कहती है ऐ भाई पालकी छोड दो, मुझे ससुराल जाने दो। सात नौकरानी का भार तुम सह सकते हो परन्तु मेरा अकेला भार नही सह सकते ॥ ३ ॥

लडकियो की दीनता का कैसा करुण दृश्य है।

सन्दर्भ—ससुराल से लौट आने पर माता की उक्ति पुत्री के प्रति

(११२)

आरे कथि[4] केरि ककही[5] कथीय केरा तेल।
आरे कथिका मचियवा हो बेटी झारेलु लामी[6] केस ॥१॥

---

[1]पालकी। [2]परदा। [3]नौकरानी। [4]किस वस्तु की। [5]कघी। [6]लम्बा।

आरे सोने केरी ककही नरियर केर तेल ।
आरे सोने का मचियवा हो आमा भारीले लामी केस ॥२॥
आरे रोवेली माइरे धिया भीजेला रे पटुक[1] ।
आरे चुप होखु चुप ए वाचावा चुप होखु रे ॥३॥
आरे पाछा से पठइवों ए वाचावा सहोदर जेठ भाई ।
आरे तोहरी वतिया ए आमा मे ना पतिआइवि[2] ॥४॥
आरे वसिया[3] के वेरिया[4] हो आमा उठलु भाहाराई ।
आरे केनवा[5] के वेरिया हो आमा उठलु लुलुवाई[6] ॥५॥
आरे हामारा ही बसिया के आमा धरिह वार वार ।
आरे हामारा ही केनवा के आमा कीनिह[7] धेनुगाई ॥६॥
आरे चले के त चललु हो बेटी दीहलु समुभाई ।
आरे पथल के छतिया हो बेटी वीहरि[8] वलु जाई ॥७॥
आरे एक वने गइले रे डँढ़िया दोसरे वन जाई ।
आरे डँड़िया उघारि रे देखे सहोदर जेठ भाई ॥८॥
आरे रोवति होइहें ए भइया मादागिनी हमरी माई ।
आरे फिरहु फिरहु ए भइया सहोदर जेठ भाई ॥९॥
आरे ऊँचे भडोखवा रे चढिके हेरेले[9] मतारी ।
आरे काहाँ छोडल काहाँ ए बवुआ वाचावा[10] रे हमारी ॥१०॥
आरे लेकर वाचावा ए आमा से हो लेई जाई ॥११॥

माता पुत्री से पूछती है कि ऐ बेटी तू किस वस्तु की कघी और कौन-सा तेल लगाती हो ? तथा किस वस्तु की मचिया पर बैठकर अपने लम्बे बालो को सँवारती हो ॥ १ ॥

तब लडकी ने उत्तर दिया कि मै सोने की कघी और नारियल के तेल का

---

[1]पट, कपडा। [2]विश्वास करना। [3]बचा हुआ भोजन। [4]समय। [5]फल। [6]भिडकना [7]खरीदना। [8]फट जाना। [9]देखना। [10]वेटी।

प्रयोग करती हूँ तथा गोने की मनिया पर बैठकर आने वाले गवाहनी हूँ ॥ २ ॥

प्रेम की अधिकता के कारण पुत्री रोने लगी जिससे उसका कपड़ा भीग गया। तब माता ने कहा कि ऐ बेटी तुम चुप हो जाओ ॥ ३ ॥

मैं तुम्हारे साथ ससुराल में तुम्हारे जेठे भाई को भेजूंगी। लड़की ने उत्तर दिया कि माँ लेकिन तेरी बात पर मुझे विश्वास नहीं होता ॥ ४ ॥

ऐ माँ खाती भोजन करते समय मुझ पर गुस्सा होती थी और कोई फल, फूल खरीदने समय छिपाने लगती थी ॥ ५ ॥

ऐ माता मेरे खाती भोजन को तुम सचित कर रखना (जिससे तुम्हें धन सचय हो) तथा हमारे लिये-दिये फल के पैसों से दूध वाली गाय खरीद लेना ॥६॥

तब माता ने उत्तर दिया कि ऐ बेटी तूने चलने समय मुझे अच्छा समझाया, मेरी पत्थर की छाती अब भी क्यों नहीं फट जाती ॥ ७ ॥

लडकी पालकी पर चडकर जब बहुत दूर निकल गई तब उसने परदे को हटाकर अपने सहोदर भाई को आते हुए देखा ॥ ८ ॥

तब लडकी ने अपने भाई से कहा कि ऐ भइया मेरी माता रोती होगी, तुम लौट जाओ और उसे समझाओ ॥ ९ ॥

माता ऊँची खिडकी पर चडकर पुत्र की बाट देख रही थी। लडके को देख कर उसने कहा कि ऐ पुत्र ! तूने मेरी प्यारी बेटी को कहाँ छोड दिया ॥१०॥

इस पर लडके ने उत्तर दिया कि ऐ माता जिसकी वह चीज थी वही उसको लिये जा रहा है ॥ १० ॥

माता और पुत्री के स्वाभाविक प्रेम का यह कितना सुन्दर प्रतिविम्ब है। लडकी कठोर भले ही हो पर माता कुमाता नही हो सकती। विवाह के बाद वास्तव में लडकी दूसरे की चीज हो जाती है।

सन्दर्भ—गवना कराने के लिये आये हुए लोगों पर पिता का क्रोध तथा लड़की द्वारा पिता को शान्त रहने की प्रार्थना

(११३)

ओरिनी तर उपजेला चानानावा[1] छछन बीछनरे करे ॥
हथिया से घोड़वा लेइ उतरेलें कवन समधि ।
'हाथी घोड़ा नान्हे ए समधि चानानवा केरि गाछि ॥१॥
अपना महलिया से निकलु कवन समधि ।
काहें समधि रउनीलें[2] चानाना केरि गाछि ॥२॥
अपना महलिया से निकलि कवन सुहवा[3] ।
काहा बाबा बोलिले झाड़ा झड़ी रे बोल ॥३॥
सहु बावा सहु बावा आजु केरि रतिया ।
बाडा हो परातें[4] जाइबि बडी दूर ॥४॥
दुवरा राउर होइहें ए बाबा रन रे बन ।
आँगन राउर होइहे ए बाबा भदउवाँ निसुराती[5] ॥५॥
दुवरा भुलिये भूलि बाबा जे रोवेलें ।
कतहीं ना देखों हो बेटी नुपुरवा हो तोहार ॥६॥
आँगाना भुलिये भूलि आमाजी रोवेलीं ।
कतहीना देखों ए बेटी रसोइया झाझाकाल ॥७॥
रसोइया भूलिये भूलि भऊजी जे रोवेली ।
कवहीना देखों ए ननदी रसोइया झाझाकाल[6] ॥८॥

गवना कराने के लिये लड़की का ससुर हाथी घोड़े के साथ आया है। उसके हाथी घोड़े द्वार पर स्थित चन्दन के वृक्ष को रौंद रहे हैं॥ १॥

---

[1]नन्दन। [2]रौंदना। [3]बेटी। [4]प्रातःकाल। [5]निःशब्द रात्रि। [6]भयानक डरावना।

इम पर लड़की का पिता कह रहा है कि समधीजी मेरे चन्दन के वृक्ष को आप क्यों रौंद रहे हैं। ॥२॥

तब उसकी लड़की घर से निकलकर कहती है कि ऐ पिताजी आप ऐसी कठोर तथा क्रोधपूर्ण बातें क्यों कह रहे हैं ॥३॥

केवल आज रात को आप सब कष्ट सह लीजिये मैं कल प्रात काल अपनी ससुराल बहुत दूर चली जाऊँगी ॥ ४ ॥

उस समय आपका द्वार वन की तरह निर्जन तथा भयानक हो जायेगा तथा आँगन भादो की रात्रि के समान डरावना लगेगा ॥ ५ ॥

दूसरे दिन पुत्री के विदा होते समय उसके पिता फूट-फूटकर रोने लगे और कहने लगे कि ऐ बेटी मैं अब तेरे नूपुर के शब्द कहाँ सुनूँगा ॥ ६ ॥

आँगन मे यह कहकर माता रोने लगी कि ऐ बेटी तेरे बिना रसोईघर में अब मैं किसे देखूँगी ॥ ७ ॥

रसोईघर में भावज भी यही कहकर रोने लगी कि ऐ ननद तेरे बिना रसोईघर सूना हो जायगा ॥ ८ ॥

ननद और भावज में इस प्रकार का अकृत्रिम प्रेम आजकल नितान्त दुर्लभ है।

सन्दर्भ—पुत्री की विदाई का वर्णन

(११४)

बाव बहेला पुरवइया ए सजनी; करसिनि[1] सुनुगेला आगी।
चोलिया का कसेमसे सुतलों ओसरवा, दुवरा बिदेसी भइले ठाढ ॥१॥
खरचा के माँगत तडपी जे उठेला, करबी कवन मैं उपाय ॥२॥
केकरा ही रोवले रे गाँगा बढि अइली; केकरा ही रोवले अनोर।
केकरा ही रोवले चरन धोती भीजे; केकरा नयनवाँ ना लोर ॥३॥
बाबा के रोवले गाँगा बढि अइली, आमा के रोवले अनोर।
भइया के रोवले चरन धोती भीजे, भउजी नयनवाँ ना लोर ॥४॥

---

[1]करीष—सूखा गोबर।

केहु कहेला बेटी निति उठि आव, केहु कहेला छव मास ।
आरे केहु कहेला बहिना काल्हे परोजन, केहु कहेला दुर जाव ॥५॥
आमा कहेली बेटी निति उठि आव, बाबा कहेले छव मास ।
आरे भइया कहेले बहिना काल्हे परोजन, भउजी कहेले दुर
जाव ॥६॥
केहु जे देला राम लाहार पटोरवा, केहु दीहे धेनु गाई ।
केहु जे देला राम चढन के घोड़वा, केहु महुरवा के गाँठि ॥७॥
आमा जे देली राम लाहारा पटोरवा; बाबा दीहे धेनु गाई ।
भइया जे देले राम चढन के घोड़वा; भउजी महुरवा के गाँठि ॥८॥
आमा के लाहारा रे टुटि फाटि जइहें, सुखि जइहें बाबा धेनु गाई ।
भइया के घोडवा रे नगर पइसिहे; भउजी के अपजस हाय ॥९॥
किया तोरे भउजी रे नून भाड़ लवनी; किया कोठी लवनी पेहान ।
किया तोरे भउजी रसोइया झाँकि अइलीं, कथि मैं बैरिन तोर ॥१०
नाहीं तुहुँ ननदी नून भाड लवलू; नाहीं कोठी लवलू पेहान ।
आरे नाहीं तुहुँ ननदी रसोइया झाँकि अइलू, बतिया बैरिन
भइली तोर ॥११॥

वह अपने मायके मे है। उसका पति उसे लिवा लाने के लिये गया है। उसी समय का यह वर्णन है। वधू अपनी किसी सखी से कह रही है कि—

ऐ सखी! पुरवैया हवा वह रही है और प्रेम की आग मेरे हृदय में सुलग रही है। अपनी चोली को जोरो से कस करके मै वरामदे मे सोई थी, इतने मे पति मुझे लेने के लिये द्वार पर आ गया॥ १॥

सखी पूछती है कि किसके रोने से गगा मे वाढ आगई, किसके रोने से अँधेरा हो गया, किसके रोने से धोती भीग गई और किसकी आँखो मे आँसू भी नही आये॥ २। ३॥

तव वह स्त्री उत्तर देती है कि वावा के रोने से गगा मे वाढ आ गई; माताजी के रोने से अन्धेरा छा गया, भाई के अधिक रोने से उनकी धोती भीग गई परन्तु भावज की आँखो मे आँसू भी नही आये॥ ४॥

कोई कहता है कि ऐ बेटी फिकरी उठकर मायके नहीं आना; कोई कहता है कि छः मास के बाद आना। कोई कहता है कि जल्दी ही उत्सव है तथा कोई कहता है कि तुम दूर नहीं जाओ॥५॥

माता कहती है कि ऐ बेटी फिर उठकर तुम मायके नहीं आना; पिताजी कहते हैं कि छ मास के बाद आना, भाई कहता है कि जल्द ही उत्सव है उसमें आना परन्तु भावज कहती है कि जाओ कभी मत आना॥६॥

कोई मुझे कपड़ा देता है, कोई दूध देनेवाली गाय देता है; कोई घोड़ा तथा कोई अफीम की गाँठ खाने देता है॥७॥

माता मुझे पहिनने को कपड़ा देती है, पिताजी दूध पीने के लिये गाय देते हैं, भाई मेरे पति के चढ़ने के लिये घोड़ा देते हैं और भावज अफीम की गाँठ देती है॥८॥

माताजी के द्वारा दिया गया कपड़ा फट जायेगा, पिताजी की दी हुई गाय दूध देना बन्द कर देगी परन्तु भाई का दिया हुआ घोड़ा नगर को सुशोभित करेगा। अफीम देने के कारण भावज के अपयश हाथ आवेगा॥९॥

विदा होते समय ननद अपनी भावज से पूछती है कि ऐ भावज! क्या मैं तुमसे नमक चुराकर रखती थी, क्या अन्न के भण्डार को मैं ढककर रखती थी जिससे तुम्हें भोजन न मिल सके अथवा क्या मैं तेरी रसोई झाँककर देखती थी? किस कारण से तुम मुझसे बैर करती हो॥१०॥

भावज उत्तर देती है कि ऐ ननद! न तो तुमने नमक ही मुझसे चुराकर रक्खा, न अन्न-भण्डार को ही ढका और न रसोईघर में ही झाँकती थी। तुम्हारी कड़ी बातें ही सारे झगड़े की जड़ हो गईं॥११॥

देहातों में ननद और भावज की अनबन प्रसिद्ध है। दोनों में शाश्वतिक विरोध है। इसी झगड़े की झाँकी इस गीत में मिलती है। पुत्री के लिये माता का स्वाभाविक प्रेम भी इस गीत में दर्शाया गया है। पुत्री के भाई तथा पिता का प्रेम भी प्रशंसनीय है।

७. जाँत के गीत

(जँतसार)

आटा पीसने की चक्की का नाम जाँत है। चक्की, चूल्हा और चरखा देहातो मे घर-घर होते थे। चक्की मे आटा पीस लिया, चूल्हे पर रोटियाँ पका ली, इन कामो से अवकाश मिला तो चरखे पर कपडो के लिये सूत तैयार कर लिया। बस इन तीन चकारो की बदौलत देहात के लोग बहुत ही सुखी और स्वतन्त्र थे। स्त्रियाँ चक्की पीसती थी। इससे उनका स्वास्थ्य ठीक रहता था और उनके बच्चे हृष्ट-पुष्ट होते थे। चक्की पीसते समय वे जो गीत गाती थी, उनसे जीवन की धारा शुद्ध होती रहती थी, समय का सदुपयोग होता था, परिश्रम करने की आदत बनी रहती थी और पैसे की बचत भी होती थी।

हाथ की चक्की का काम अब देहातो मे भी मशीन की चक्की ले रही है। स्त्रियो के हाथ कोमल होते जा रहे हैं। परिश्रम करने की आदत छूटती जा रही है। स्त्रियो का स्वास्थ्य शिथिल पडता जा रहा है। गेहूँ की पिसाई के पैसे ही अब नही देने पडते, बल्कि मशीन की चक्की की बदौलत अब गृहस्थो के घरो मे डाक्टर भी घुसे चले आ रहे है और गृहस्थो पर उनकी फीस और दवा के दाम का भार भी बढता चला जा रहा है।

मशीने हमारे आटा पीसने के साथ ही साथ, जाँत के गीतो को भी पीसती चली जा रही है। इसे तो व्यक्तिगत हानि नही, बल्कि राष्ट्रीय हानि कहना चाहिए। क्योकि गीत हमारे घरो मे सच्चरित्रता के रक्षक, स्त्रियो के सदाचार के पोषक और शुद्धता के स्रोत थे। उनका नाश होना वैसा ही शोक-जनक है, जैसा घोर वन में पगडडी का छूट जाना या घोर अन्धकार मे हाथ से दीपक का छिन जाना। वह दिन निकट ही है, जब चरखे के लिये आज जैसा देशव्यापी आन्दोलन चल रहा है, वैसा ही, बल्कि उससे भी प्रबल आन्दोलन चक्की की रक्षा के लिये करना पडेगा।

जाँत पीसने का समय रात का तीसरा पहर है। स्त्रियाँ शाम को ही पीसने के लिये अनाज रख लेती हैं, और पहर छ घडी रात रहे उठकर वे जाँत लेकर बैठ जाती है। जाँत के दो ओर आमने सामने बैठकर जब दो स्त्रियाँ पीसती हैं, तब पीसने में अधिक आसानी होती है। गाँवो में जाँत पीसने सहयोग भी चलता रहता है। एक स्त्री दूसरी स्त्री का आटा पिसा आती है तो बदले में वह भी आकर पिसा जाती है। विवाह के अवसर पर तो सारे गाँव में दो या तीन पसेरी गेहूँ प्रत्येक घर के हिसाब से बाँट दिया जाता है। इस प्रकार सारे गाँव वाली स्त्रियो के सहयोग से कई मन आटा शीघ्र ही बडी आसानी से पिस जाता है। गरीब और कर्कशा स्त्रियो को इस प्रकार का सहयोग प्राप्त नही होता। क्योकि गरीब स्त्रियो को गरीबी के कारण इतना अवकाश ही नही मिलता कि वे ठीक समय पर बदला चुका आवें और कर्कशा स्त्री से किसी की पटती ही नही।

जाँत के गीत आटा पीसने की थकावट को दूर करते रहते हैं। साथ ही पीसने वालियो के मन को प्रेम, करुणा और उदारता से भिगोकर कुटुम्बियो के असहनीय बर्ताव के कारण पैदा हुए विक्षोभ को निकालते भी रहते हैं। जाँत के गीतो के एक-एक शब्द स्त्री सदाचार की नीव की एक-एक ईंट हैं।

जाडो की ठडी और लम्बी रात के सन्नाटे में, उषाकाल के मद-मद समीर में, जाँत के गीत दूर से सुननेवालो को बडे मधुर जान पडते हैं। देहात में किसी भी गाँव मे निकल जाइये, रात के पिछले पहर में बहुत से घरो से जाँत की घुर-घुर ध्वनि और उस ध्वनि के साथ एक-एक कडी पर दम लेकर गाया हुआ जाँत का गीत सुनने को मिल जायगा।

इन जाँत के गीतो में स्त्रियो की मानसिक भावनाओ का बडा ही सुन्दर चित्रण किया गया है। ऐसे ही कुछ गीत यहाँ दिये जाते हैं —

सन्दर्भ—पति के रुष्ट होने के कारण स्त्री का घर से भागना, रास्ते में मल्लाह का कुप्रस्ताव

(११५)

मोरा पीछुवारावा[1] रे सीरिसिया[2] हहरे झहर[3] करेले ए राम।
सीरिसि पात हहरे झहरे त नीनियो[4] ना आवेले ए राम ॥१॥
मोरा पीछुवारावा बढइया भइया बेगे चली आवनु ए राम
जरी से ना काटहु रे सीरिसिया त हहरे झहर करेले ए राम ॥२॥
मोरा पीछुवारावा पटहेरवा[5] भइया बेगे चली आवनु ए राम।
लाले पाटे[6] बिनु पटीहटिया[7] त रेसम ओरिचनवा[8] ए राम ॥३॥
एक ओरिया[9] सुतेला बलमुआ[10] त एक ओरिया हम सुतली ए राम।
बिरहा के मातल[11] रे बलमुआ त मुखहु ना बोलेला ए राम ॥४॥
बिरहा के मतली रे तिरियावा[12] त चलली जमुना मे दहे ए राम।
गोड़[13] तोरे लागों भइया केवट, नइया रे उतारि देहुपार ए राम ॥५॥
आजु की राति तीवई[14] रहि जाहु, बीहने[15] उतारि देवि पार ए राम।
आताना वचन तीवई सुनली, ना सुनहीना पवली ए राम ॥६॥
उभुकी[16] चुभुकी तीवई पार भइली, केवटा हाथ मीसे[17] ए राम ॥७॥

कोई स्त्री कह रही है कि मेरे घर के पीछे सिरिस का वृक्ष है जो सदा हरहराता रहता है। उस सिरिस वृक्ष के पत्तो के हिलने-डोलने से मुझे नीद भी नही आती ॥ १ ॥

ऐ मेरे प्यारे भइया बढई तुम शीघ्र आओ और तुम मेरे घर के पीछे स्थित सिरिस के वृक्ष को जडमूल से काट डालो जिससे इसके पत्ते फिर हरहराने की आवाज न करे ॥ २ ॥

---

[1]मकान के पीछे। [2]सिरिस का वृक्ष। [3]हरहराता है। [4]नीद। [5]पटहेरा। [6]कपडा। [7]पलग। [8]अधवाइन। [9]तरफ। [10]प्रियतम (पति)। [11]मतवाला। [12]स्त्री। [13]पैर। [14]प्रात काल। [15]डूबती हुई। [16]मलना (पछताना)।

ऐ मेरे घर के पीछे रहने वाले पटहेरा भइया तुम शीघ्र आओ। तुम लाल सूत से मेरे पलँग को बुन दो और उनमें रेशम के ओरिचन लगा दो॥ ३॥

उस पर पलँग पर एक ओर मेरा पति सोता है और दूसरी तरफ मैं सोती हूँ परन्तु क्रोध से मतवाला मेरा पति मुझ से मुख से बातें भी नहीं करता है॥४॥

पति के मुख से न बोलने के कारण क्रोधित स्त्री मतवाली होकर यमुना में डूबने के लिए चल पड़ी और नदी के किनारे स्थित केवट से कहा कि 'ऐ भइया केवट! मैं तुम्हारे पैरों में सिर झुकाती हूँ, नाव से मुझे पार उतार दो॥५॥

तब केवट ने कहा कि ऐ स्त्री! आज की रात तुम मेरे पास यहीं रह जाओ। मैं तुम्हें कल सवेरे पार उतार दूँगा॥ ६॥

इतना सुनते ही वह स्त्री नदी में कूद पड़ी और डूबती उतराती नदी के उस पार चली गयी। बेचारा मल्लाह हाथ मलता और पछताता ही रह गया॥ ७॥

इस गीत में स्त्री की बहादुरी और स्वाभिमान-रक्षा दर्शनीय है। यदि आज भी भारत में ऐसी बहादुर स्त्रियाँ पैदा हों तो इसके बुरे दिन शीघ्र लौट आवेंगे।

सन्दर्भ—किसी कुलटा का बाजार-भ्रमण, कामुक से वार्तालाप

(११६)

बिसिया[१] के तेलवा के भगीवति[२], माथावा[३] रे बन्हवलों[४]।
आरे तेलवे कचोरवें[५] ए भगीवति, पटिया[६] रे बन्हवलों॥१॥
आरे पहिरि पटोरवा[७] ए भगीवति, चललु रे बजरिया[८]।
आरे केकरीहि धियवा[९] ए भगीवति, केकरी रे बहिनिया॥२॥

---

[१]अलसी। [२]स्त्री का नाम। [३]सिर। [४]बँधाया। [५]कटोरा। [६]वेणी। [७]कपड़ा। [८]बाजार। [९]पुत्री।

आरे केकरी कहलिया ए भगीवति, घूमेलू रे वजरिया।
आरे राजावा के धियवा ए लोभिया, राजावा के पतोहिया।
आरे राजावा कहलिया ए लोभिया, घुमेलीं रे वजरिवा ॥३॥
आरे कतने सिखाओ ए पियवा, कत देहु उकितिया[1]।
आरे उकितिया ए पियवा, वान्हो सिर पगिया[2] ॥४॥

ऐ भगोवति! तुमने अलसी का तल अपने सिर में लगाकर अपना वाल वँधाया है तथा कटोरे में तेल भरकर अपनी वेणी सँवारा है॥ १॥

ऐ भगीवति तुम कपडा पहनकर वाजार को चल पडी। तुम किसकी लडकी हो तथा किसकी वहन हो तथा किसके कहने मे वाजार में घूम रही हो॥ २॥

तव उस स्त्री ने उत्तर दिया कि ऐ लोभी पुरुष! मैं राजा की लडकी हूँ तथा राजा की वहन हूँ। ऐ लोभी! मैं राजा के कहने से ही वाजार मे घूमने के लिये आई हूँ॥ ३॥

ऐ प्रिय! कितना भी सिखाओ तथा उपाय वतलाओ परन्तु अपनी वुद्धि के द्वारा ही मनुष्य अपने सिर पर पगडी वांधता है अर्थात् आदर को प्राप्त करता है॥ ४॥

सन्दर्भ—वाल्यावस्था में विधवा हो जाने वाली कन्या का अपने माता-पिता से विवाह करने की प्रार्थना

(११७)

साभावा वइठल तुहुँ आरे वावा हो वढइता।
आरे हमहू मायेनवा कतेक दिन कुँवारी नु जी ॥१॥
तोहरो वियहवा ए मायेना, आरे कइलों लरकइयाँ।
आरे तोहरो वियहवा दइव हरि लिहले रे जी ॥२॥
मचिया वइठलि तुहुँ आमा हो वढइती।
आरे हमहू मायेना कतेक दिन कुँवारी नु जी ॥३॥

---

[1] युक्ति, उपाय। [2] पगडी।

तोहरो बियहवा ए मायेना, आरे कइलों लरिकइयाँ।
आरे तोहरो बियहवा दइब हरि लिहले रे जी ॥४॥
पासावा खेलत तुहुँ आरे भइया हो बढ़इता।
आरे हमहू मायेनवा कतेक दिन कुँवारी नु जी ॥५॥
तोहरो बियहवा ए मायेना आरे कइलों लरिकइयाँ।
आरे तोहरो बियहवा दइब हरि लिहले रे जी ॥६॥

सभा में बैठे हुए पिता से लडकी ने पूछा कि ऐ पिताजी! कबतक क्वारी रहूँगी? ॥ १ ॥

पिता ने उत्तर दिया कि ऐ पुत्री मैंने तुम्हारा विवाह कर दिया था परन्तु दैव ने तुम्हारा विवाह हर लिया अर्थात् तुम्हारा पति दुर्भाग्य से मर गया॥ २ ॥

मचिया पर बैठी हुई माता से भी उसने यही पूछा और माता ने भी यही उत्तर दिया जो पिता ने दिया था॥ ३। ४॥

पाशा खेलते हुए भाई से भी उस लडकी ने यही पूछा और उसने भी वही उत्तर दिया॥ ५। ६॥

यह गीत उस समय की याद दिलाता है जब दुधमुँही बच्चियो का ब्याह हो जाता था और उन्हें इसकी सुधि भी नही रहती थी। इसी कारण से बाल-विधवाए भी अधिक होती थी।

सन्दर्भ—पुत्र के परदेश जाते समय माता का उससे परदेश जाने का कारण पूछना तथा कुशल-पत्र भेजने की प्रार्थना

(११८)

चीउरा[1] कूटू चीउरा कूटु सँवरो तिरियावा[2] रे।
आरे हम जइबों सँवरो मगहरे[3] देसवा रे ॥१॥
रोइ रोइ सँवरो रे चीउरा रे कूटेली।
आरे हँसि हँसि उमर[4] बान्हावेले[5] रे ॥२॥

---

[1]चिवरा (कूटा धान)। [2]स्त्री। [3]मगध। [4]पति। [5]बँधाया।

कई महीना ववुआ तोहरो रे पायेतवा[1] ।
कतेक दिन रहवो ववुआ मगहरे देसवा रे ॥३॥
छव महीना मातावा रहवों मगह देसवा ।
वरीस मातावा रे जइवों मोरँग देसवा रे ॥४॥
कहे रे लागि[2] ववुआ जइवो मोरँग देसवा ।
काहे रे लागि ववुआ मगहर देसवा रे ॥५॥
पान लागि मातावा रे जइवों मगह देसवा ।
सुपारि[3] लागि मातावा जइवों मोरँग देसवा रे ॥६॥
कथिके[4] सरवते[5] ववुआ मँगवो[6] रे सुपरिया ।
आरे कथि कँइची[7] वावुआ कटव पानावा रे ॥७॥
सोने के सरवते मातावा मँगवों रे सुपरिया ।
आरे रूपे[8] के कँइची मातावा कतरवि पानावा रे ॥८॥
जाहु तुहु जाहू ववुआ मगह रे देसवा ।
आपन कुसल सव भेजिह नु रे ॥९॥
मरले जनि मरहि ववुआ कटले जनि कटइह ।
आरे मुदई[9] ववुआ करिह जरि छारवा[10] रे ॥१०॥

कोई पति परदेश जाने के लिये तैयार है वह अपनी स्त्री से कह रहा है कि ऐ स्त्री ! तुम चिउरा कूटो। आज मैं मगह (मगध, विहार) देश को जाऊँगा॥ १॥

पति का परदेश गमन सुनकर उस स्त्री ने दुखी होकर तथा रो-रो कर चिउरा कूटा और उसके पति ने हँस-हँस कर उसको गठरी में वाँधा॥ २॥

पुत्र को परदेश जाता देख माता ने पूछा कि ऐ वेटा ! तेरा प्रस्थान कितने दिन का है ? तुम मगध देश में कितने दिन रहोगे ? ॥ ३॥

---

[1]प्रस्थान। [2]किस लिए (किस कारण) । [3]सुपारी। [4]किसका। [5]सरवता। (सुपारी काटने का औजार) । [6]काटना। [7]कैंची। [8]चाँदी। [9]शत्रु। [10]नष्ट कर देना।

तब पुत्र ने उत्तर दिया कि ऐ माता मैं छ महीने मगध (विहार) देश में रहूँगा तथा एक बरस मोरंग देश में निवास करूँगा ॥ ४॥

फिर माता ने कहा ऐ पुत्र! तुम किस लिये मोरंग देश जा रहे हो तथा किस कारण मगध देश जाने की सोच रहे हो? ॥ ५॥

पुत्र ने उत्तर दिया ऐ माता मैं पान के लिये मगध देश जाना चाहता हूँ और सुपारी के लिये मोरंग देश॥ ६॥

माता ने कहा ऐ पुत्र! किस चीज के सरौते से तुम सुपारी काटोगे और किस चीज की कैंची से पान काटकर सुधारोगे॥ ७॥

पुत्र ने उत्तर दिया ऐ माता सोने सरौते से मैं सुपारी काटूँगा और चाँदी की कैंची से मैं पान सुधारूँगा ॥८॥

तब माता ने कहा ऐ पुत्र! तुम मगध देश जाओ परन्तु अपना समाचार शीघ्र भेजते रहना॥ ९॥

ऐ पुत्र! न तो तुम किसी के मारने से मरना और न काटने से कटना। तुम अपने शत्रुओं को जलाकर नष्ट कर देना॥ १०॥

सन्दर्भ—विरह से पीड़ित स्त्री का पति को सन्देश भेजना परन्तु दुष्ट पति का अशिष्ट उत्तर

(११९)

जाहु हम जानितों ए ननदो[1], आरे भइया तोरे जइहें विदेसवा रे।
गगरीनि[2] कनिकी[3] पिसइतों, आरे बान्हि देति सँगवा रे ॥ १॥
सुनहु बाट बटोहिया रे, परदेस पति पहूँचो जाई।
हमरो सनेस लेले जइहे, कहिहे ते आसु समुझाई ॥२॥
आरे तोरे धनि[4] अलप[5] रे वयसवा।
कहिहे ते आसु समुझाई ॥३॥

---

[1]ननद। [2]गगरी, घड़ा। [3]आटा। [4]स्त्री। [5]अल्प, थोड़ा।

चाट[1] वटोहिया[2] रे सारावा[3], मोरे तुहुँ लगबे रे सारावा।
हमरो सनेस लिहले ते जइहे, कहिहे ते धनि समुझाई ॥४॥
आरे जाजीम झुलवा रे सीयइहे, रेसम चढइहे सानाजाप[4]।
आरे ताहि वीचे जोवना[5] रे छिपइहे, कुलवा रखिहे हमार ॥५॥
नइया तोरे डूबो प्रभु बीचही रे धारावा, वरधी[6] हिलेइ जासु चोर।
आरे तुहे आभो मारि डाले वीच वाटावारावा[7] तीरिया कइले
बिछोह ॥६॥
नइया मोरे जइहे सँवरो तीरे तीरे वरधी उतरि जइहे पार।
आरे तुहे धनियाँ वेचवों रे मोगलवा[8] करवों दोसरो वियाह ॥७॥

किसी स्त्री का पति परदेश चला गया है। वह दु खी होकर अपनी ननद से कहती है कि ऐ ननद ! मै जानती कि तुम्हारा भाई विदेश जायेगा तो मै घडे भरकर आटा पीसती और उनके साथ बाँध देती ॥ १ ॥

पति के वियोग से दु खी होकर वह स्त्री राह में चलनेवाले वटोही से कह रही है कि ऐ वटोही ! मेरा पति परदेश चला गया है। तुम मेरा सन्देश लेजाओ और मेरे पति को समझा कर कहना कि ऐ परदेशी तेरी स्त्री छोटी अवस्था वाली है अत तुम घर लौट जाओ॥ २। ३॥

वटोही के द्वारा अपनी स्त्री का समाचार सुन लेने पर उस पति ने कहा कि ऐ वटोही ! तुम मेरे साले लगते हो अत तुम मेरा सन्देश लेकर जाओ और मेरी स्त्री को समझा कर कहो कि "ऐ स्त्री तुम जाजिम का झूला (चोली) सिलाओ और उसमें रेशम की तोई लगाओ। उस चोली के बीच में अर्थात् भीतर अपने उभरेस्तन को छिपा करके रक्खो और इस प्रकार अपने सदाचरण से मेरे कुल की रक्षा करो अर्थात् अपना आचरण इतना शुद्ध रक्खो जिससे मेरे कुल में कलक न लगने पावे॥ ४। ५॥

---

[1]रास्ता। [2]पथिक। [3]साला। [4]तोई। [5]स्तन। [6]बैल। [7]वटमार, डाक। [8]मुसलमान।

इन गीत मे ज्ञात होता है कि पहिले समय में आजकल की भाँति अबोध बालिकाओ का भी विवाह हो जाता था जिन्हें यह भी नहीं मालूम होता था कि मेरा विवाह हुआ भी है या नहीं। उपर्युक्त गीत में एक ऐसी ही लडकी का वर्णन है। यदि ऐसी बात न होती तो वह अपने पिता से बालसुलभ ऐसे सीधे-सादे प्रश्न न करती। इसी गीत में हाजीपुर स्थान का उल्लेख है। यह स्थान बिहार प्रान्त में बी० एण्ड न० डब्लू० रेलवे के ऊपर सोनपुर जिला छपरा) के पास स्थित है। इसमें जिस मेले का उल्लेख है वह हाजीपुर में न लगकर वस्तुत सोनपुर नामक स्थान में लगता है और यह भारत का सर्वश्रेष्ठ मेला 'हरिहर क्षेत्र का मेला' के नाम से प्रसिद्ध है।

सन्दर्भ—स्त्री का पति से अन्य मालिन स्त्री से प्रेम न करने का आग्रह

(१२१)

एह पार गगा ए हरिजी, ओह पार जमुना।
ताहि बिच लवल ए हरिजी, तुलसी के गछिया[1] ॥१॥
हाथावा के लिहले ए हरिजी, लोटवा[2] के डोरिया[3]।
आरे काँखे जाँति[4] लिहल ए हरिजी, घरी[5] लागल धोविया ॥२॥
तेकरा[6] पीछे लवल ए हरि जी, मालिनी के बिटिया[7] ॥३॥
लेहुना आहो ए मालिनि बिटिया, डाल भरि सोनवा।
छोडि देहु आहो ए मालिनि बिटिया, हरिजी के सँगावा[8] ॥४॥
आगी लगइबों ए सँवरो, डाल भरि सोनवा।
नाहीं हम छोड़बों ए सँवरो, हरिजी[9] के सँगवा ॥५॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि इस पार गगा है और उस पार यमुना है। ऐ पति ! तुमने इन दोनो नदियो के बीच में अर्थात् सगम पर तुलसी का वृक्ष लगाया है॥ १॥

---

[1]गाँछी, वृक्ष। [2]लोटा। [3]डोरी। [4]दवाना। [5]कभी, पाठ। [6]उसके। [7]लडकी। [8]सग, साथ। [9]पति।

ऐ पति ! तुमने हाथ मे लोटा और डोरी ले लिया है और अपनी काँख में तुमने कन्नी लगी धोती दवा ली है॥ २॥

और उसके पीछे तुमने मालिनि की वेटी को अपने साथ मे ले लिया है (जो अत्यन्त अनुचित है)॥ ३॥

वह स्त्री अव मालिनि की वेटी से प्रार्थना कर रही है कि ऐ लडकी डाल (दौरी) भरकर मुझ से सोना ले लो । परन्तु तुम मेरे पति का सग छोड दो॥ ४॥

इस पर मालिनि की लडकी ने उत्तर दिया कि ऐ स्त्री ! तुम्हारे डाल भर सोने में आग लगा दूँगी अर्थात् मै उसे अत्यन्त तुच्छ समझती हूँ। ऐ साँवली स्त्री ! मै तुम्हारे पति का साथ कदापि नही छोड सकती॥ ५॥

सन्दर्भ--ससुराल के कष्टों का स्त्री के द्वारा वर्णन

(१२२)

वेरी[1] ही वेरी तोही वरजों ए बावा, आरे उतर[2] धिया[3] जनी लाउ।
उतर के लोग निरमोहिया[4] ए बावा, उलटी पुलटी दुःख देई॥१॥
रतिया पिसावे जव गेहुँआ ए बावा, दिनवा कतावे झीन[5] सूत।
सुतली[6] सेजियवा उठावे ए बावा, आरे ऑगाना घरेल सब छूँछ[7]॥२॥
साभावा वइठल तुहुँ ससुर हो वढइती, आरे सागर नियरा[8] की दूर।
मचिया वइठल तुहुँ सासु हो वढइती, दाहावा[9] वाटे नियरा की दूर॥३॥
पासावा खेलत तुहु भसुर हो वढइता, आरे सागर नियरा की दूर।
भडसल[10] पइसलि[11] तुहुँ गोतिनी[12] हो वढइती, दाहावा वाटे नियरा की दूर॥४॥

---

[1]वार वार। [2]उत्तर देश में। [3]लडकी। [4]निर्दयी। [5]पतला। [6]सोयी हुई। [7]खाली। [8]नजदीक, पास। [9]वडा तालाव। [10]भीतर घर में। [11]वैठी हुई। [12]दायादिनि।

आरे जेठ बइसाख केरे तफली[1] रे भुभुरिया[2], धनिया जइहें कुम्हिलाई।
अँगने में कुइयाँ[3] खानाइ द ये बबुआ, रेसम के डोरिया लगाई ॥५॥
नोनिया[4] ओलाई के कोठावा[5] उठाइ द ए बबुआ।
नाही त जइहें[6] धनिया कुम्हिलाई ॥६॥

कोई दुखिया लड़की जिनका विवाह उत्तर देश में (संभवतः गोरखपुर जिले में) हुआ है अपनी ससुराल गई हुई है। वहाँ पर जब उसे कष्ट होने लगा तब वह आप ही आप कह रही है कि "मैंने अपने पिताजी को बार-बार मना किया कि आप अपनी लड़की का विवाह उत्तर देश में न करें। क्योंकि उत्तर देश के लोग बड़े निर्दयी होते हैं और वे अनेक प्रकार से कष्ट देते हैं" ॥ १ ॥

वे लोग रात को अपनी स्त्रियों से जव और गेहूँ पिसवाते हैं और दिन में बहुत पतला सूत कतवाते हैं। ऐ पिता जी! वे सेज पर सोती हुई भी बहू को जगा देते हैं चाहे आँगन और घर में कोई काम करने को भले ही न रहे।२।

अपने दुःख से अत्यन्त व्यथित होकर वह लड़की अपनी आत्महत्या के लिये सोचती है और अपने ससुर से पूछती है कि ऐ इज्जतवाले ससुरजी यहाँ से समुद्र नजदीक है या दूर। मचिया पर बैठी हुई ऐ सास तुम बतलाओ कि बड़ा तालाब यहाँ से नजदीक है या दूर? ॥ ३ ॥

ऐ पासा खेलनेवाले ससुर जी! यहाँ से समुद्र नजदीक है या दूर। ऐ घर में घुसी हुई दायादिनि! यहाँ से बड़ा तालाब नजदीक है या दूर ॥ ४ ॥

संभवतः अपनी पतोहू की करुण दशा देखकर निर्दयी सास को दया आ गई और उसने यह समझ कर कि शायद बहू नहाने जाना चाहती है अपने पुत्र से कहा कि जेठ बैसाख की कड़ी धूप की भुभुरी हो रही है। तुम्हारी स्त्री

---

[1]अत्यन्त गर्म। [2]गर्म बालू। [3]कुँआ। [4]मिट्टी के घर बनाने वाले। [5]अटारी। [6]जावेगी।

कुँभिला जायेगी। अत ऐ बेटा घर में ही कुआँ खना दो तथा रेशम की डोरी लगा दो॥५॥

नोनिया बुलाकर मकान बना दो जिसमें वह सुख से रहे। नही तो वह गर्मी के मारे कुँभिला जायेगी॥६॥

इस गीत मे वर्णित वधू का दु ख पढकर पत्थर का भी कलेजा पसीज जायेगा। वधू ने जो उत्तर देश की निन्दा की है वह कुछ अशो में बहुत ही ठीक है। चूंकि इन गीतो की रचना-स्थली बलिया, गाजीपुर तथा आरा आदि जिले है अत यहाँ उत्तर देश से तात्पर्य गोरखपुर जिले से समझना चाहिये। वहाँ की स्त्रियाँ अभी भी पतला सूत नित्य कातती है यह इस अनुमान को और भी प्रमाणित करता है।

सन्दर्भ—सास के कष्ट देने के कारण वधू की अपने मायके पहुँचाने के लिये देवर से प्रार्थना

(१२३)

सासु का चोरिये[1] चोरिये भुजुना[2] भुजवलों[3] हो।
ननदिया बयेरिनी[4] धारावा लाहारा[5] लगवली हो॥१॥
ननदिया ए वैरिनी।
सासु मारे हुथुका[6]; ननदिया पारे[7] गारी हो।
ए चदरिया के अलोतवा[8] हो, देवरा हमरो ना॥२॥
देवरा हमरो ना।
चलना देवर हामारा नइहारावा[9] हो; अँचरा फारिकेना।
देवरा बेनिया[10] डोलइवों हो; अँचरा फारिके ना॥३॥
घुमि फिरि अइव देवर, गोडवा धोई लिहलों हो।
की साँझी रे वेरिया ना।
देवर जँतवों करुवा[1] तेलवा हो, की साँझी[12] रे वेरिया ना॥४॥

---

[1]छिपकर। [2]भरमल। [3]भुनाया। [4]शत्रु। [5]झगडा। [6]घूंसा, थप्पड। [7]देना। [8]परदे मे। [9]मायका। [10]पंखा। [11]मरमो। [12]सन्ध्या।

गोरी बधू सास के दुष्ट व्यवहार से दुखी होकर कह रही है कि सास ने चुराकर तथा छिपाकर खाना खाया। परन्तु मेरी बैरी ननद ने देख लिया और घर में झगड़ा मचा दिया ॥ १ ॥

इस झगड़े के कारण मेरी सास ने मुझे पकड़ तथा मूसे से मारना शुरू किया और ननद गाली देने लगी। परन्तु आँगन में परदे की आड़ में खड़े हुए मेरे देवर ने मुझे कुछ भी नहीं कहा ॥ २ ॥

सास की ताड़ना से दुखी उस स्त्री ने अपने देवर से कहा कि ऐ देवर! मुझे अपने मायके पहुँचा दो। इस उपकार के लिये मैं अपना आंचर फाड़कर तुम्हारे लिये पंखा झलूँगी ॥ ३ ॥

ऐ मेरे प्यारे देवर! जब घूम-फिरकर आओगे तब मैं तुम्हारे पैरों को धोऊँगी और शाम के समय तुम्हारे पैरों में सरसों का तेल मलूँगी ॥ ४ ॥

इस गीत में सास की दुष्टता, ननद का बैरपन तथा भावज का अपने देवर के प्रति अलौकिक प्रेम दर्शनीय है। ऐसा प्रेम आजकल बहुत ही दुर्लभ है। पंखा के स्थान पर आंचर फाड़कर पंखा झलना इस प्रेम की मात्रा को और भी अधिक बढ़ा रहा है।

सन्दर्भ—दुष्ट देवर की अपनी भावज से सुरत-सम्भोग की प्रार्थना

(१२४)

निहुरलि[1] निहुरलि भउजी[2] अँगना बहरली[3] हो।
देवरावा हमरो ना मुँहवा निरेखेले[4] हो ॥१॥
देवरा हमरो ना—
काहे[5] लागि भउजी हो मुँहवा सुखइले, काहे रे लागि ना।
काहे लागि भउजी ढरे[6] नयना लोरवा[7] हो, काहे रे लागि ना ॥२॥

---

[1]झुकी हुई। [2]भावज। [3]साफ किया, झाड़ दिया। [4]देखना। [5]किसलिये। [6]गिरता है। [7]आंसू।

काहे लागि भऊजी वारावा[1] वढवलू हो; काहे रे लागि ना ॥३॥
पान लागि देवर ओठवा झुरइले[2] हो; वलमुवा[3] लागि[4] ना।
देवर ! नयना ढरे लोरावा हो, वलमुवा लागि ना ॥४॥
माथ लागि देवर वारावा वढ़वलों हो, वलमुवा लागि ना।
देवर ! सचिले[5] जोवानावा हो; वलमुवा लागि ना ॥५॥
जवलग[6] भऊजी भइया हामार अइहे हो; कि तवलग[7] ना।
भऊजी जोर ना सनेहिया[8] हो; कि तवलग ना ॥६॥
अइसन[9] बोली[10] जनि वोलु देवरावा हो; काटाइरे देवों ना।
देवर ! अलफी[11] तोरि वहियाँ हो, काटाइरे देवों ना ॥७॥

इस गीत में भावज और देवर के वार्तालाप का वर्णन है। देवर कहता है मेरी भावज ने कमर को झुका करके सारा आँगन वुहार डाला। परन्तु हमने उसका मुंह तक नही देखा॥ १॥

ऐ भावज ! तुम्हारा मुँह किस लिये सूख गया है तथा ऐ भावज ! किस लिये तुम्हारी आँखो से आंसू वह रहा है॥ २॥

ऐ भावज ! तुमने किस लिये अपने वाल इतने लम्वे वढा रक्खे है॥ ३॥

इस पर भाँवज ने उत्तर दिया कि ऐ देवर ! मेरा पति परदेश चला गया है अत उसके वियोग में पान न खाने के कारण मेरा मुँह सूख गया है तथा उसी वालम (प्रिय) के विरह के हेतु आंखो से आँसू ढर रहे है॥ ४॥

वियोग में अपने सिर के वालो का सस्कार न कर सकने के कारण मैंने उन्हें वढा रक्खा है और अपने इन स्तनो को उसी प्रियतम के लिये सुरक्षित रख रही हूँ (जिससे आकर वह उनका उपभोग कर सके) ॥ ५॥

इस पर उस दुष्ट देवर ने उत्तर दिया कि ऐ भावज ! जवतक हमारे भइया घर पर नही आते तवतक तुम मुझी से प्रेम जोडो अर्थात् मुझसे प्रेम करो॥ ६॥

---

[1]वाल, केश। [2]सूख गया। [3]वालम, प्रियतम। [4]के लिये। [5]सचित करती हूँ। [6]जवतक। [7]तवतक। [8]स्नेह प्रेम। [9]ऐसी। [10]वात। [11]कोमल सुकुमार।

तब उस सती साध्वी भावज ने कहा कि हे देवर ! तुम ऐसी बुरी बात मत कहो। नहीं तो जब तुम्हारे भाई आयेंगे तब उनसे ये सारी बातें कहकर मैं तुम्हारे कोमल हाथों को कटवा लूँगी ॥ ७ ॥

इस गीत में किसी विरहिणी स्त्री का बड़ा ही रमणीय तथा हृदयस्पर्शी वर्णन किया गया है। विरहावस्था में वियोगिनी का दीन, मलीन तथा प्रसाधनहीन वर्णन करना प्राचीन कवियों की परम्परा रही है। इसी परम्परा का पालन इस गीत में किया गया है। यह स्त्री पति-वियोग के कारण न तो पान खा रही है और न अपने बालों को ही सुसज्जित कर रही है। अतः उसके बाल बिखरे पड़े हैं। आँखों से आँसुओं की झड़ी सदा लगी हुई है।

सन्दर्भ—विरह-विधुरा नायिका का वियोग-वर्णन; पति का घर लौटना। स्त्री की उक्ति, दुष्ट पति का उत्तर

(१२५)

मोरा पिछुवारावा[1] रे घनी बँसवरिया[2] ।
ताहि चढ़ि कोइल री बोले रे बिरहिया[3] ॥१॥
राम की ताहि रे चढी ना।
कोइलरी सवद[4] सुनि सँवरिया उठि बइठलि, राम बढनियाँ[5] लेइके ना ॥२॥
सांवरी आँगाना बहारि[6] के दुवारावा घुरवा[7] लवलों हो; राम घरीलवा[8] लिहले ना ॥३॥
साँवरी पनिया के चलली; राम घरीलवा लिहले ना ॥४॥
घोडवा चढल एक पातर सिपहिया, राम केकरि सुनरी[9] ना।
उजे पनिया के चलल, राम केकरि[10] सुनरी ना ॥५॥
ससुर भसुरजी के पान पनिहारीनी, राम बलमुवाजी के ना।
उजे पनिया के अइलों; राम बलमुवाजी के ना ॥६॥

[1]मकान के पीछे। [2]बाँसों का झुण्ड। [3]विरहिणी। [4]शब्द। [5]झाड़ू। [6]झाड़ू देकर। [7]कूड़ा करकट का ढेर। [8]घड़ा। [9]सुन्दरी स्त्री। [10]किसकी।

बरहो बरीसवा[1] पर लवटल[2] बनीजारावा[3]; राम की बारावा[4]
तारावा[5] ना।
मन के उछाहली[6] धनिया जेवना[7] बनवली; राम की बारावा
तारावा ना ॥७॥
हरी मोरे लोटिया[8] लगवले; राम की बारावा तारावा ना।
मन के उछाहली धनिया गेडुआ[9] भरवली; राम की बारावा
तारावा ना ॥८॥
हरी[10] मोरे कुइया खोनवले[11], राम की बारावा तारावा ना ॥९॥
मन के उछाहली धनिया सेजिया[12] डसवली; राम की बारावा
तारावा ना।
हरी मोरे पुवरा[13] डसवले[14]; राम की बारावा तारावा ना ॥१०॥
जाहु हम जनितों जे पिया बाडे अइसन[15]; राम की कइरे घलितों ना।
उजे[16] पतर[17] सिपहिया; राम की कइरे घलितों ना ॥११॥
जाहु हम जनितों जे धनिया बाडी अइसन; राम की कइरे
घलितों न॥
उजे पुरुब बॅगलिनिया[18]; राम की कइरे[19] घलितों ना ॥१२॥

किसी स्त्री का पति परदेश चला गया है। वह उसके वियोग में अत्यन्त दु खी होकर कह रही है कि मेरे मकान के पीछे घने बाँसो का झुण्ड है। उस पर चढकर विरह-दु ख को बढाने वाली कोयल बोलती है॥ १॥

रात्रि के पिछले पहर में कोयल का शब्द सुनकर यह स्त्री उठ बैठी और हाथ में झाडू लेकर आँगन झाडने लगी। आँगन साफ कर उसने कूडे को द्वार पर के घूर के ऊपर फेंक दिया॥ २। ३॥

इसके बाद वह अपने हाथो में घडा लेकर पानी भरने चल पडी॥ ४॥

---

[1]वर्ष। [2]लौटा। [3]बनजारा (व्यापारियो का झुण्ड)। [4]वटवृक्ष। [5]नीचे। [6]प्रसन्न। [7]भोजन। [8]मोटी तथा सूखी रोटी। [9]लोटा। [10]पति। [11]खनाया। [12]पलग। [13]पुआल। [14]बिछाया। [15]ऐसी। [16]कर लेती। [17]उसी। [18]पतला। [19]बंगाली स्त्री। [20]कर लेती।

जब वह पानी भरने जा रही थी उसी समय रास्ते में घोड़े पर चढ़ा हुआ एक पतला सिपाही मिला। उसने उस स्त्री से पूछा कि तुम किसकी सुन्दरी भार्या हो जो पानी भरने के लिये जा रही हो॥ ५॥

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं अपने ससुर और भसुर के (पति का बड़ा भाई) की पनिहारिन हूँ लेकिन अपने पति की पनिहारिन नहीं हूँ। इसीलिए मैं यहाँ पर पानी लेने के लिये आयी हूँ॥ ६॥

इतने में स्त्री को मालूम हुआ कि उसका पति बनजारा के साथ परदेस से लौटकर चला आया है। वह कहती है कि बारह वर्ष के बाद पति बनजारा के साथ लौटकर आया है और वह इसी गाँव के वट वृक्ष के नीचे ठहरा हुआ है। इस शुभ समाचार से स्त्री को बड़ी प्रसन्नता होती है और वह उसी वट वृक्ष के नीचे जाकर अपने पति के लिये भोजन बनाने लगती है॥ ७॥

परन्तु उस दुष्ट पति ने अपने लिये मोटी तथा सूखी रोटी बनानी शुरू कर दी। मन में प्रसन्न होकर स्त्री ने पति के लिये एक लोटा जल दिया। परन्तु विमनस्क पति ने उसी वट वृक्ष के नीचे कुँआ खनाना प्रारम्भ कर दिया ॥८॥ ॥९॥

मन में प्रसन्न होकर स्त्री ने पति के सोने के लिये पलँग बिछाया परन्तु पति ने उसी वट वृक्ष के नीचे सोने के लिये पुआल बिछा लिया॥ १०॥

पति के इस दुष्ट, नीच कर्मों तथा उलटे व्यवहारों से दुखी होकर वह स्त्री कहती है कि यदि मैं जानती कि मेरा पति इतना दुष्ट होगा तो मैं उस पतले सिपाही को ही अपना पति बना डालती॥ ११॥

इस बात को सुन वह पति कहता है कि यदि मैं जानता कि मेरी स्त्री ऐसी होगी अर्थात् दूसरा पति कर लेगी तो मैं भी पूरब देश में किसी बंगालिन स्त्री से विवाह कर लेता॥१२॥

आजकल भी देहातों में ऐसी सैकड़ों घटनायें देखने को मिलती हैं जिनमें पति अपनी सती स्त्री को भी छोड़कर पूरब में विशेषकर कलकत्ता और रंगून चला जाता है तथा वहीं पर किसी बंगालिन अथवा बर्मी स्त्री से

फँस कर विवाह कर लेता है। फलस्वरूप उसकी स्त्री आजीवन विरह के आँसू बहा . . . . . ।

सन्दर्भ—ससुराल में कष्ट होने के कारण कन्या का मायके जाने का वर्णन

(१२६)

ए राम तालवा[1] में रोवेला रे चकइया[2]।
त वटिया[3] में दूबि[4] जामे ए राम ॥१॥
ए राम ससुरा में रोवेले धिटुइया[5]।
त हमहु रे नइहरवा जइवों ए राम ॥२॥
ए राम मचिया वइठलि तुहूँ सासु जी।
सासु जी रे विरहिया[6] बोले ए राम ॥३॥
ए राम विनु रे ही माई वाप के ससुरा से हो।
कइसे नइहर जाला ए राम ॥४॥
ए राम गंगा हई हमरी ही मइया।
त देहवा[7] रे वहिनियाँ हई ए राम ॥५॥
ए राम चान[8] सुरुज[9] दुनो भइया।
रघुनाथ[10] हमरो वाप[11] हवे[12] ए राम ॥६॥

कोई स्त्री ससुराल गई हुई है परन्तु उसे वहाँ पर कष्ट हो रहा है अतएव वह मायके लौटना चाहती है। अपने दुःख से दुःखी होकर वह कहती है कि तालाब में पति-वियोग से चकई रो रही है जिससे रास्ते में दूब जम जाती है॥ १॥

मैं ससुराल में बैठी रो रही हूँ। मैं अपने मायके अवश्य जाऊँगी॥ २॥

---

[1]तालाव। [2]चकवी। [3]रास्ता। [4]दूब। [5]लडकी। [6]दुःख देने वाली बातें। [7]सरयू नदी। [8]चन्द्रमा। [9]सूर्य। [10]भगवान्। [11]पिता। [12]है।

मचिया पर बैठी हुई सास ने इस बात को सुन लिया और उसने अपनी पतोहू से इस प्रकार दु:ख भरी तथा कड़वी बातें कहना प्रारम्भ किया कि जिस लड़की का न पिता जीवित है और न माता, वह ससुराल से अपने मायके कैसे जा सकती है॥ ३।४॥

इस कड़वी बात को सुनकर उस पतोहू ने उत्तर दिया कि गंगा नदी ही मेरी माता है और सरयू नदी मेरी बहिन है॥ ५॥

चन्द्रमा और सूर्य ये मेरे दो भाई हैं और संसार का स्वामी भगवान ही मेरा पिता है।

सन्दर्भ—परदेस जाने वाले पति को रोकने के लिये स्त्री के द्वारा विविध बाधाओं के आने की प्रार्थना

(१२७)

बाव[1] बहेले पुरवइया, अलसी निनिया[2] अइली हो।
नीनी भइली बइरिनिया; पिया फिरि गइले हो ॥१॥
आवहु ए पियवा आवहु, मनवा मोरे राखहु।
भोरही होइहे विहान; आरे हम पाछे पछितइवों ॥२॥
होइतो में बबुरा के काँटावा; पयेड़िया[3] नीचे रहितों।
हरी मोरे जइतें कचहरिया; चुभुकि साले गड़ितों ॥३॥
होइतों मे बन के कोइलिया; बन ही बिरवे रहितों।
हरी मोरे जइते बिदेसवा, सबद आरे सुनइतों ॥४॥
होइतों में फुलवरिया के फुलवा; फुलवरिया में रहितों।
हरी मोरे जइतें फुलवरिया; गमक[4] देत रहितों ॥५॥
रहितों में जल के मछरिया, जलहि बिखे रहितों।

---

[1]वायु। [2]नींद। [3]पैर। [4]सुगन्ध।

हरी मोरे जइते आसानानावा[1]; चरन में लपटइतों ॥६॥
कारी वादरी डेरावन अवरु भाकासावन।
वरिसहु हरी का विदेसवा, समुझि घरवाँ अइहे ॥७॥
हथिया के भीजेला अमरिया, सुरहिया गाई के भाकर[2]।
भीजो वनजरवा के गोनिया[3]; समुझि घरवाँ अइहे ॥८॥

अर्थ स्पष्ट है।

सन्दर्भ—स्त्री का पति से परदेस जाने का कारण पूछना तथा चले जाने पर विलाप

(१२८)

मचिया वइठली ए सासु, सुनहु वचनीया।
राउर वेटा मोरँग चलले, कवना राम अवगुनिया[4] ॥१॥
भइसल पइसली ए गोतिनी, सुनहु वचनिया।
राउर[5] देवरा मोरंग चलले, कवना राम अवगुनिया ॥२॥
सुपुली[6] खेलती ए ननदी, सुनहु वचनिया।
राउर भइया मोरंग चलले; कवना राम अवगुनिया ॥३॥
वेरी[7] की वेरी तोहि वरजों ए लोभिया; जनी जो तुहु मोरंगवा
मोरंग पातर[8] पनिया; लगीहे रे करेजवा[9] ॥४॥
जाहु हमजनिवी ए लोभिया; जइवे तुहु मोरंगवा।
घोची[10] वान्ही वन्हितो ए लोभिया, रेसम के डोरिया ॥५॥
रेसम के डोरिया ए लोभिया; टुटि फाटि राम जइहें।
वचन के वान्हल पियवा, कतहीना राम जइहें ॥६॥
घारावा रोवे घरनी ए लोभिया; वाहारवा राम हरिनिया[11]।
दाहावा रोवे चाका[12] चकइया विछोहवा कइले निरवा[13] मोहिया ॥७॥

---

[1]स्नान। [2]गोशाला। [3]रस्सी या सामान। [4]अवगुण, दोष। [5]आपका [6]छाज। [7]वारवार। [8]पतला। [9]कलेजा। [10]खीचकर। [11]हिरन। [12]चकवा। [13]निर्मोही, प्रेम तथा दयाहीन।

किसी स्त्री का पति परदेश जाना चाहता है। इस पर वह स्त्री अपनी सास से पूछती है कि "मचिया पर बैठी हुई ऐ सास मेरी बात को सुनो। मेरे किस अवगुण के कारण आपका लडका मोरग देश जा रहा है" ॥ १ ॥

ऐ घर में बैठी हुई दायादिल मेरे किस अवगुण के कारण तुम्हरा देवर मोरग देश जा रहा है ॥ २ ॥

ऐ सुपली से खेलनेवाली ननद मेरे वचन को सुनो। यह बताओ कि मेरे किस दोष के कारण तुम्हारा भाई परदेश जा रहा है ॥ ३ ॥

पति के परदेश चले जाने पर वह स्त्री आप ही आप कह रही है कि ऐ लोभी ! तुम्हें बार-बार मना किया था कि तुम मोरग देश को मत जाओ। मोरग देश का पानी बहुत पतला लगता है और कलेजे में लग जाता है ॥४॥

ऐ लोभी ! यदि मैं जानती कि मोरँग देश को बार-बार मना करने पर भी चले जाओगे तो मैं रेशम की डोरी से खींचकर, बाँध करके तुम्हें रखती ॥५॥

कुछ सोचकर फिर वह स्त्री कहती है कि रेशम की डोरी तो टूट जायेगी। मैं तुम्हें वचन की डोरी से बाँधकर रखती जिससे तुम कही नही जाते ॥६॥

ऐ लोभी ! तुम्हारे वियोग के कारण घर में तुम्हारी स्त्री रो रही है, घर के बाहर पाली-पोसी हरिनें रो रही है, तालाब में चकवा और चकई रो रही है क्योकि ऐ निर्मोही तुमने इन सबसे अपना बिछोह कर लिया है।७।

इस गीत में पति के वियोग से उत्पन्न विरह का जो वर्णन किया गया है वह अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। इस वियोग के कारण उस पति की केवल प्राण-प्रिया स्त्री ही नही बल्कि पशु-पक्षी भी विलाप कर रहे है। देहाती ग्राम्य गीतो में इस प्रकार की कल्पना अत्यन्त चमत्कारकारिणी है महाकवि कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुन्तल' में शकुन्तला के पतिगृह जाने के समय उसके वियोग के कारण पशु-पक्षियो के द्वारा इसी प्रकार का विलाप कराया है। परन्तु इसमें इतनी विशेषता है कि यहाँ जड प्रकृति भी रो रही है। आप कहते है —

"उद्गलितदर्भकवलामृग्य., परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा, मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः ।।"

इस प्रकार हम देखते है कि इस गीत में विरही पत्नी के साथ ही प्रकृति तथा पशु-पक्षी भी रो रहे हैं।

सन्दर्भ—परदेश स्थित पति को पत्नी का सन्देश भेजना, पुनः पति का उत्तर

(१२९)

पियवा चलेले परदेश मंदिल[1] मोरे चुइ[2] रही।
ऊधो हो तू सनेसिया[3], सनेस[4] लेले जइह;
हरी जी से कहिह समुझाई, मदिल मोरे चुइ रही ॥१॥
ऊधो हो तू सनेसिया; सनेस लेले जइह ।
धनिया से कहिह समुझाइ; हम घरे नाहीं आइबि ॥२॥
इहवें[5] भइल मदिल छवइबों[6]; हम घरे नाहीं आइबि ॥३॥
ऊधो हो तू सनेसिया; सनेस लेले जइह ।
हरी जी से कहिह समुझाई; नउजी[7] रउरा[8] आइबि ॥४॥
पाकल[9] फाराठा[10] कटाइबि; गाडी लदवाइबि ।
रचि रचि मंदिल छवाइबि; नउजी रउरा आइबि ॥५॥
दस ही मासे मोहन जी होइहे, त गोदिया खेलाइबि ।
आपना मोहन के धिरजा बँधाइबि; नउजी रउरा आइबि ॥६॥
चनन काठ कटाइबि; पीढ़ई[11] गाढ़ाइबि[12] ।
ताहि पर मोहन झुलाइबि; नउजी रउरा आइबि ॥७॥

किसी स्त्री का पति परदेश जा रहा है उस समय वह स्त्री कह रही है कि "मेरा पति परदेश चला और मेरा घर चू रहा है। ऐ सन्देश वाहक ऊधो

---

[1]घर। [2]चू रहा है। [3]सन्देश-वाहक। [4]सन्देश। [5]यहाँ से ही। [6]मरम्मत कराऊँगा। [7]मत (निषेध)। [8]आप। [9]पक्का। [10]बाँस। [11]पीढ़ा। [12]बनवाऊँगी।

जी! मेरा यह सन्देश तुम ले जाओ और मेरे पति से कहना कि तुम्हारी स्त्री का घर चू रहा है॥२॥

ऊधो जी सन्देश ले गये और उस पति से जाकर सारा वृत्तान्त कहा। इस पर वह कहता है 'हे ऊधो! तुम मेरे इस सन्देश को ले जाना और मेरी स्त्री से कह देना कि मैं घर कदापि नहीं आ सकता परन्तु मैं यहीं से उस चूते हुए घर की मरम्मत करा दूँगा॥२।३॥

इस पर उस स्त्री ने उत्तर दिया कि हे ऊधो! तुम पति से मेरा यह सन्देश कह देना कि तुम मत आओ। हमें उनकी कोई चिन्ता नहीं है॥४॥

मैं पके हुए बाँस कटाऊँगी, उनको गाड़ी पर लदवाऊँगी और घर पर लाकर उससे अपना घर छवाऊँगी (मरम्मत कराऊँगी)॥५॥

दस ही महीने के अन्दर जब मुझे पुत्र पैदा होगा तब मैं उसे गोदी में खेलाऊँगी तथा अपने पुत्र को लेकर हृदय में धैर्य धारण करूँगी। तुम भले ही मत आओ॥६॥

मैं चन्दन की लकड़ी कटाऊँगी, उसका पीढ़ा बनाऊँगी और उसके ऊपर अपने लड़के को लेकर झुलाऊँगी तुम भले ही मत आओ॥७॥

यहाँ पर इस स्त्री की क्रिया-शीलता या सन्तोष का भाव देखने योग्य है। यदि भारत की नारियाँ ऐसी ही क्रियाशील बन जायँ तो उनका उद्धार होना अवश्यम्भावी है।

सन्दर्भ—विरह-विधुरा स्त्री के वियोग का वर्णन

(१३०)

आमावा मोजरि[1] गइले, महुवा[2] टपकले निरवामोहिया।
निपटे भइले निरवामोहिया, रे लोभिया निरवामोहिया॥१॥
मोरा पिछुवारा रे भीमला[3], मलहवा[4], निरवामोहिया।
एक ही चिठिया लिखि देहु, रे निरवामोहिया॥२॥
कथी[5] के करबो रे कारावा कागदवा[6], निरवामोहिया।
कथी के करबो मसीहनवा[7], निरवामोहिया॥३॥

[1]मौल आने लगा। [2]एक वृक्ष। [3]नाम विशेष। [4]केवट। [5]किस चीज का। [6]कागज। [7]स्याही।

आँचर[1] फारि चीरि कारावा; रे कागादवा निरवामोहिया।
नयन कजरवा[2] मसीहनिया; करवो निरवामोहिया ॥४॥
ए लोभी कहिया घरवा तें अइबे; दूरि रे नोकरिया निरवामोहिया।
आस-पास लिखिहे रे सनेसवा[3]; निरवामोहिया।
बीचे ठहियाँ बरहो वियोगवा; निरवामोहिया ॥५॥
तोहारा बलमुवा[4] ना चीन्हलों[5], जनलों निरवामोहिया।
कइसे[6] कहबि समुझाई, निरवामोहिया ॥६॥
हमरा बलमुवा के बड़ि बड़ि अँखियाँ निरवामोहिया।
हाथे मे धरेले गुरदेलिया[7]; निरवामोहिया ॥७॥
अस चले जस बाबू रे, जमीदरवा निरवामोहिवा।
आधा ही चिठी[8] बचलनि; मानावा मुसुकाई निरवामोहिया ॥८॥
बाट[9] बटोहिया रे सारावा; भोर आरे लगवे तें सारावा।
हमरो सनेस लिहले जइहे; धनी से कहिहे समुझाई॥
आरे दोसरो खसम[10] कइरे घालू; धनिया! निरवामोहिया ॥९॥
तोहरा ही धनिया के चिन्हलों, ना जनलों निरवामोहिया।
हामारा ही धनिया के लामी लामी केसवा निरवामोहिया ॥१०॥
बटिया चलेले अंग लाई; निरवामोहिया ॥११॥
दोसरो खसम करो माई रे बहिनियाँ; निरवामोहिया।
तोरा अइसन[11] राखों देवढ़ीदार[12]; निरवामोहिया ॥१२॥

किसी स्त्री का पति परदेश चला गया है। वह उसके वियोग मे पीडित होकर कह रही है कि ऐ निर्मोही मेरे पति! आम मे मौल (मञ्जरी) आने लगी। महुवे का वृक्ष अपना फल पृथ्वी पर गिराने लगा अर्थात् वसन्त ऋतु आ पहुँचा। परन्तु तुम इतने निर्दयी हो कि अभी तक नहीं आये॥ १॥

---

[1]आंचल। [2]काजल। [3]सन्देश। [4]प्रियतम। [5]पहिचानना। [6]कैसे। [7]धनुही (जिससे बन्दर आदि मारे जाते हैं)। [8]पत्र। [9]रास्ता। [10]पति। [11]तुम्हारे ऐसा। [12]पहरेदार।

मेरे मकान के पीछे रहने वाले ऐ भीमर नाम के केवट ! तुम एक चिट्ठी मेरे पति के पास लिख दो ॥ २ ॥

इस पर वह केवट उत्तर देता है कि मैं किस चीज का कागज बनाऊँ तथा किस चीज की स्याही ? तब स्त्री कहती है कि मेरा आँचर फाड़कर कागज बनेगा और मेरे काजल की स्याही होगी ॥ ३।४ ॥

स्त्री फिर कहती है कि ऐ केवट ! तुम पत्र के कोने में यह लिखना कि "ऐ निर्मोही ! तुम्हारी नौकरी बहुत दूर है। अतः यह बतलाओ कि तुम कब घर आओगे ? और उस पत्र के बीच में मेरे विरह की कहानी लिखना" ॥५॥

इस पर वह केवट कहता कि ऐ स्त्री तुम्हारे पति को न तो मैं जानता हूँ और न पहिचानता ही हूँ। अतएव यह सब बातें मैं उनको समझा करके कैसे कहूँगा (क्योंकि मैं उन्हें बिल्कुल ही नहीं पहिचानता) ॥ ६ ॥

इस पर वह स्त्री अपने पति की हुलिया बतलाती हुई कहती है कि "हमारे पति की आँखें बड़ी-बड़ी हैं। और वह अपने हाथ में गुन्देलि (धनुही) धारण करता है ॥ ७ ॥

वह इस प्रकार से गम्भीर भाव-भंगी से चलता है मानो कोई धनी जमींदार चलता हो ॥ ८ ॥

केवट उस चिट्ठी को लेकर उस पति के पास पहुँचा और उस पत्र को उसे पढ़ने को दिया। पति पत्र को आधा ही पढ़कर मन में मुसकराया और कहा कि बाट (रास्ते) में जाने वाले पथिक ! तुम मेरे साले लगोगे। अतएव हमारे इस सन्देश को लेते जाओ और मेरी स्त्री को समझा करके कह देना कि वह अपने लिये दूसरा पति कर ले या ढूंढ ले (क्योंकि मैं अब नहीं लौटूंगा) ॥ ९ ॥

इस पर पथिक ने कहा कि मैं तुम्हारे स्त्री को न तो जानता हूँ और न पहिचानता हूँ। तब पति ने उस बटोही से कहा कि मेरी स्त्री के बाल लम्बे-लम्बे हैं और वह रास्ते में अपने अंगों को समेट कर चलती है ॥ १० । ११ ॥

बटोही ने आकर उस स्त्री से पति का सन्देश सुना दिया। इस पर पतिव्रता तथा स्वाभिमानिनी वह स्त्री बहुत ही क्रुद्ध हुई और अपने पति को

सम्बोधित कर कहने लगी कि तुम्हारी माँ और वहिन दूसरा पति कर लें (पतिव्रता होने के कारण मैं नहीं कर सकती)। ऐ पति! तेरे ऐसे आदमी को तो मैं अपने यहां ड्योढीवान या पहरेदार रख सकती हूँ॥ १२॥

इस गीत में एक निर्दयी तथा निर्मोही पति का बड़ा ही सुन्दर खाका खींचा गया है। वह दुष्ट पति परदेश जाकर अपनी विरह-विधुरा पति-परायणा स्त्री की तनिक भी सुधि नहीं लेता। इस ठीक विपरीत पत्नी के सन्देश भेजने पर दूसरा खसम कर लेने के लिये उपदेश देता है। ऐसे नीच, पापी तथा दुष्ट पतियों की जितनी भी निन्दा की जाय थोड़ी है। परन्तु उसकी स्त्री भी स्वाभिमानिनी है। वह पति के सन्देश को सुन कर यदि गाली की वर्षा न करती तो स्वाभिमान में बट्टा अवश्य लगता। धन्य है ऐसी स्त्रियाँ।

संदर्भ—विरह-विधुरा नायिका के विषम वियोग का वर्णन

(१३१)

ए राम जेहि बने सिकियो[1] ना डोलेला।
बघवो ना गुरजेला[2] ए राम ॥१॥
ए राम ताहि बने हरी मोरे गइलें।
त केहु ना सनेसिहा[3] नु ए राम ॥२॥
ए राम मचिया बइठलि तुहुँ आमा।
त अवरु से आमा मोरी ए राम ॥३॥
ए राम विपतलि[4] धियवा[5] रे सँगेरू[6]।
त विपते गवने अइलों ए राम ॥४॥
ए राम पासावा खेलत तुहुँ भइया।
त अवरु से भइया मोरे ए राम ॥५॥

---

[1]पत्ता। [2]दहाड़ता है। [3]सन्देश-वाहक। [4]विपत्ति से युक्त। [5]पुत्री [6]रक्षा करो (पालो)।

ए राम वीपतलि वहिना रे सँगेरू।
त विपते गवने अइलों ए राम ॥६॥
ए राम भइसर[1] पइसलि[2] तुहु भऊजी[3]।
त अवरु से भऊजी मोरी ए राम ॥७॥
ए राम बीपतलि ननदी रे सँगेरू।
त विपते गवने अइलों ए राम ॥८॥
ए राम सम्पति रहिते त बँटितीं[4]।
विपति कइसे बाँटवि ए राम ॥९॥
त राम मीलहु सखिया रे सलेहरि।
अवरु सनेहरि[5] ए राम ॥१०॥
ए राम चलहु जमुना के तिरवा।
आसानानावा[6] करवों ए राम ॥११॥
ए राम बन में से नीकलु[7] रे बघिनिया।
त मोहि भच्छि[8] घालहु ए राम ॥१२॥
ए राम अतने में भौंवरा सरीखे प्रभु अइले।
त अब दिनवा लवटल[9] ए राम ॥१३॥

किसी स्त्री का पति परदेश चला गया है। उसके वियोग में दुःखी होकर वह स्त्री कह रही है कि मेरा पति उस वन में चला गया है जहाँ पर एक पत्ता भी नहीं हिलता और न सिंह ही दहाड़ मारता है॥ १॥

उसी वन में मेरा पति गया है परन्तु उसके पास मेरा सन्देश ले जाने वाला कोई नहीं है॥ २॥

वह स्त्री कहती है कि ऐ मचिया पर बैठी हुई मेरी माता! तुम विपत्ति की मारी हुई अपनी लड़की की रक्षा करो। मैं अपनी विपत्ति के कारण गवना होने के बाद ही चली आई हूँ॥ ३। ४॥

ऐ पासा खेलते हुए मेरे भाई! मैं विपत्ति की मारी हुई हूँ अतः ऐसी बहिन की रक्षा करो॥ ५। ६॥

[1]घर। [2]घुसी हुई। [3]भावज। [4]बाँट लेती। [5]स्नेह करने वाली। [6]स्नान। [7]निकलो (बाहर आओ)। [8]भक्षण कर डालो। [9]दिन बदल गये।

ऐ घर में घुसी हुई मेरी भावज ! मैं विपत्ति की मारी हुई तुम्हारी ननद हूँ। अतः ऐसी विपत्तिग्रस्त ननद की रक्षा करो ॥७। ८॥

अपनी पुत्री की इस करुणा-जनक वाणी को सुन कर उसकी माता कहती है कि ऐ पुत्री ! यदि सम्पत्ति (धन) होती तो मैं बाट सकती थी परन्तु विपत्ति कैसे बाट सकती हूँ ॥९॥

इस पर दुःखी होकर सभवत आत्महत्या की इच्छा से उस लड़की ने अपनी सखियों से कहा कि ऐ सखियो और मुझ से प्रेम करने वाली जमुना के किनारे मेरे साथ स्नान करने के लिये चलो ॥१०॥११॥

स्नान करने के लिये जाते समय वह रास्ते में कह रही है कि बाघ! जगल में से निकलो और खा डालो (जिससे मैं पति के विरह-दुख से मुक्त हो जाऊँ) ॥१२॥

इतने में भँवरा के समान उस स्त्री का पति चला आया और उस विरही स्त्री के दिन लौट आये अर्थात् उसके अच्छे दिन लौट आये ॥१३॥

इस गीत के प्रत्येक पद से करुण रस टपक रहा है। स्त्री का दुःख पाषाण हृदय को भी पिघलाने में समर्थ है।

सन्दर्भ—पत्नी का सन्देश पाकर पति का परदेश से आना परन्तु स्त्री की सुखी दशा देखकर पुनः लौट जाना।

(१३२)

तुहु त जइब ए बएकल[1], देस परदेसवा ए राम।
हामारा के काहि सँउपी[2] जइब; एकेलवा ए राम ॥१॥
ससुरा में संउपबि माई बापवा; राजावा नु ए राम।
नइहर सहोदर जेठ भइया, पियरवा[3] नु ए राम ॥२॥

× × × ×
× × × ×

---

[1]पति। [2]सौंपना। [3]प्यारा।

कत धनि लिखेली वियोगवा, एकेलवा ए राम।
देहु ना राजावा रे हमरी, तलबिया[1] ए राम ॥३॥
मोरी धनि अलप[2] वयसवा, एकेलवा ए राम।
वरहो वरिस पर वरवा, एकेलवा ए राम ॥४॥
वर तर ढारे जोरवा गोनिया[3], एकेलवा ए राम।
उहवाँ से उठवले चएकल, सेज पर टरले ए राम ॥५॥
कवन कवन दुःख तोरा, ए सवरिया ए राम।
से दु ख कह समुझाई, ए सवरिया ए राम ॥६॥
ससुर मोरा हउवें[4] ईसर, माहादेव नु ए राम।
सासु मोरी गंगा के गगाजल, बाड़ीं नु ए राम।
भसुर मोरे हउवें घिवही[5], लडुइया[6] ए राम।
गोतिनि[7] मोरि मुँहवा, नीहारें[8] ए राम ॥८॥
आताना[9] ही सुख तोरा बाटे; ए संवरिया ए राम।
लगली नोकरिया काहे छोड़वलू, ए सवरिया ए राम ॥९॥
टेढ़ी पगरिया जब बन्हलसि[10], चएकलवा ए राम।
उलटि के नयनवा नाहिं चितवेला[11], चएकलवा ए राम ॥१०॥

किसी स्त्री का पति परदेश जाने के लिये उद्यत है। ऐसे समय में वह स्त्री अपने पति से पूछ रही है कि ऐ मेरे प्यारे पति! तुम तो परदेश चले जा रहे हो। यह तो बताओ कि मुझ अकेली को तुम किसके पास सौंप कर जाओगे॥ १॥

इस पर पति ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारी ससुराल में अपने माँ, बाप के यहाँ तुम्हें सौंप जाऊँगा और तुम्हारे मायके में तुम्हारे प्यारे भाई के पास सौंप जाऊँगा॥ २॥

---

[1]तलब, मासिक वेतन। [2]अल्प, थोड़ी। [3]डेरा-डण्डा। [4]है। [5]है। [5]घी का बना हुआ। [6]लड्डू। [7]दायादिनि। [8]देखती है। [9]इतना। [10]बाँध लिया। [11]देखता है।

[पति के परदेश चले जाने पर वियोग-विधुरा उस स्त्री ने एक केवट से अपना सन्देश भेजा। उस सन्देश को पढ़कर पति मुसकराया और अपने नियोक्ता स्वामी से कहता है—]

हमारी स्त्री ने अपने वियोग का सन्देश भेजा है अत ऐ राजा! (मेरे स्वामी) मेरा मासिक वेतन दे दो जिससे मैं अपने घर जा सकूँ॥ ३॥

मेरी स्त्री की अल्पावस्था है और वह अकेली है। आज मैं बारह वर्ष के बाद घर लौट रहा हूँ॥ ४॥

जब पति परदेश से लौटकर आ गया तब उसकी स्त्री कहती है कि मेरे पति ने वट वृक्ष के नीचे अपना डेरा डाला है। वहाँ से उठकर वह मेरी सेज पर आ गया॥ ५॥

जब पति की स्त्री से मुलाकात हुई तब उससे पूछा कि ऐ साँवली! तुम्हें कौन-कौन सा दुख है उसे समझा कर स्पष्ट कहो॥ ६॥

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरा ससुर ईश्वर तथा महादेव के समान पूजनीय है और मेरी सास गंगाजल के समान शुद्ध तथा पवित्र है॥ ७॥

मेरा भसुर घी के लड्डू के समान मृदुभाषी है और मेरी दायादिनि सदा मेरा मुख देखा करती है॥ ८॥

इस पर पति ने उत्तर दिया कि ऐ स्त्री जब तुम्हें इतना सुख था तब तूने मेरी लगी हुई नौकरी क्यों छुड़ा दिया॥ ९॥

इतना कह कर पति परदेश चलने के लिये तैयार हो गया। उसने अपनी टेढ़ी पगड़ी बाँध ली और जब वह चलने लगा तब फिर उसने लौटकर भी नहीं देखा (और परदेश चला गया)॥१०॥

सन्दर्भ—पति के परदेश जाने पर उसकी स्त्री से किसी कामुक का प्रेम-प्रस्ताव; परन्तु स्त्री द्वारा उसकी अस्वीकृति

(१३३)

पीयवा चलेला परदेस, सरब[1] सुख ले ले गयो।
छतिया पर वजर[2] केवाड़, ताला कुञ्जी भरि के गयो॥१॥

---

[1]सर्व, सब। [2]वज्र।

तेल फुलेला न लगाइबि, लट[1] छुटकाइबि।
हम ऐसी धनिया अभागिनि; अकेली छोड़ी गयो ॥२॥
गंगा यमुन बीच रेतवा[2]; तेकर[3] बीच बाग लगी।
वाहि तर सुनरी भइली ठाढ़, नयन दुनो नीर ढरी ॥३॥
घोड़वा चढ़ल एक चेलिक[4]; काहे सुनरी नीर ढरी।
केकर[5] जोहेलु[6] बाट, नयन दुनो नीर ढरी ॥४॥
तोहरे अइसन पातर पियवा हो; परदेसे गयो।
उनकेरे[7] जोहिले बाट, नयन दुनो नीर ढरी ॥५॥
लेहु ना सुनरी डाल भरि सोनवा, मोती माँग भरी।
छोड़ि देहु अइसन बउराह[8], लगहु मोरा साथे हरी ॥६॥
आगी लगइबों तोरा डाल भरि सोना, मोती जरि जाहु।
लवटीहें[9] उहे[10] बउराह, लुटइबों तोरी बरधी[11] धनी ॥७॥

मेरा पति परदेश चला गया और अपने साथ मेरा रूप गुण लेता गया। वह अपनी छाती पर वज्र का किवाड़ लगा कर और उसमें ताला लगा कर गया है अर्थात् उसका हृदय वज्र के समान कठोर हो गया है ॥ १ ॥

मैं तेल तथा सुगन्धित द्रव्य अब अपने बालों में नहीं लगाऊँगी तथा जटा धारण करूँगी। मेरा पति मुझ जैसी अभागिनी स्त्री को अकेली छोड़कर परदेश चला गया ॥ २ ॥

गंगा और यमुना के बीच में रेती पर एक बगीचा लगा हुआ है। उसी बगीचे के नीचे वह स्त्री खड़ी है और उसकी दोनों आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी हुई है ॥ ३ ॥

इतने ही में वहाँ एक नौजवान आदमी आया जो घोड़े पर चढ़ा हुआ था। उसने उस स्त्री से पूछा कि ऐ स्त्री तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों गिर रहे हैं। तुम किसका रास्ता यहाँ खड़ी हुई देख रही हो ॥४॥

---

[1]जटा। [2]बालू। [3]उसके। [4]युवा। [5]किसकी। [6]खोजती हो। [7]उनका [8]पागल, कमअक्ल। [9]लौटेगा। [10]वही। [11]सामान, माल, असबाब।

तव उस स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरा पति तुम्हारे ही समान पतले शरीर वाला है। वह परदेश चला गया है। मैं उन्ही की बाट देख रही हूँ। इसीसे मेरी आंखो से आँसू गिर रहे हैं ॥ ५ ॥

इस पर उस युवक ने कहा कि ऐ स्त्री! डाल (छवडी) भर कर मुझसे सोना ले लो और मोती से अपनी माँग भरा लो। उस पागल का साथ छोड कर मेरे साथ चलो ॥ ६ ॥

तव क्रोध में आकर उस पतिव्रता स्त्री ने कहा कि मैं तेरे सोने में आग लगा दूंगी और मोती को जला दूंगी। यदि वह पागल मेरा पति लौट कर चला आये तो मैं तेरे सारे सामान को लुटवा लूंगी ॥ ७ ॥

सन्दर्भ—पत्नी की छोटी वात से क्रुद्ध हो पति का विरक्त हो जाना; अतः सास एवं ननद के द्वारा वधू को दण्ड।

(१३४)

चोलिया के कसे मसे, सुतलों आँगानवा हो राम।
पातर पियवा सुतेला[1] पीठिये लागिहो राम ॥१॥
आगे सुतु ओलरु[2] ससुर जी के धियवा हो राम
बावा के दीहल चोलिया पसेनवा[3] भीजेहो राम ॥२॥
आताना[4] वचन प्रभु सुनहीना पवले हो राम।
धनिया का वतिये सधुइया भइले हो राम ॥३॥
अवटन[5] लाई लाई सासु के जगवलों हो राम।
राउर वेटा होई गइले फकीरवा हो राम ॥४॥
तेलवा लाई लाई गोतिनी जगवलों हो राम।
राउर देवर भइलें वउराहावा[6] हो राम ॥५॥
चीऊँटी ही काटि काटि, ननदी जगवलों हो राम।
राउर भइया भइलें, फकीरवा हो राम ॥६॥

---

[1]सोता है। [2]पास मिल कर। [3]पसीना। [4]इतना। [5]उवटन। [6]पागल।

सासु धरे अट्का, बहिनियाँ धरे पट्का हो राम।
हम धनी ठाढी बानी, डुडुहिये हो राम ॥७॥
छोड़ु मइया अट्का हो; छोड़ु बहिना पट्का हो राम।
धनिया के बोलिये, सधुइया होइबों हो राम ॥८॥
सासु मारे हुटुका, ननदिया पारे गारी हो राम।
गोतिनी विरह बोलिया, सहलो ना जाला हो राम ॥९॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैं अपनी चोली को अच्छी तरह से कस कर, आँगन में सोई थी। मेरा पतला पति मेरी पीठ से लग कर सोया हुआ था ॥ १॥

मेरे पति ने कहा कि "ऐ मेरे ससुर की लडकी (मेरी स्त्री) मेरे पास और सट करके सोओ।" जब मैंने ऐसा किया तब मैंने कहा कि मेरे पिता के द्वारा दी गई मेरी चोली पसीने से भीग रही है ॥ २॥

मेरे इतने वचन को मेरे पति ने ठीक तरह से सुना भी नहीं कि वे (गुस्से में आकर) साधु होने चले ॥ ३॥

मैंने उबटन लगा-लगा कर अपनी सास को जगाकर उनसे कहा कि तुम्हारा लडका साधु होने जा रहा है ॥ ४॥

मैंने तेल लगा कर अपनी भावज को जगाया और उनसे कहा कि आपका देवर पागल हो गया है ॥ ५॥

मैंने अपनी ननद को चिकोटी काट कर जगाया और उनसे कहा कि आपका भाई फकीर बनने जा रहा है ॥ ६॥

इस बात को सुनकर मेरी सास ने अपने पुत्र का अंग (हाथ) पकडा और बहिन ने उसका कपडा पकड लिया। परन्तु मैं घर में खडी थी ॥ ७॥

तब मेरे पति ने अपनी माँ से कहा कि "ऐ माता तुम मेरा हाथ छोड दो तथा ऐ बहिन मेरा कपडा छोड दो। मैं अपनी स्त्री के कठोर वचन के कारण साधु हो जाऊँगा ॥ ८॥

मेरे पति के इन वचन को सुनकर मेरी सास ने मुझे थप्पड तथा मुक्का मारना शुरू किया और ननद गाली देने लगी। परन्तु सबसे अधिक भावज के विरह-द्वेष पूर्ण वचन असह्य थे क्योंकि वे सहे नहीं जाते थे ॥ ९॥

सन्दर्भ—वन्ध्या स्त्री की मनोवेदना, वन्ध्यत्व छूटने के उपाय का वर्णन

(१३५)

ऐ राम देसवा बाखानों[1] तिरहुतिया; त बेतवा[2] के छाजनि ऐ राम।
ऐ राम पियवा बाखानों आपन पियवा; जँतावा रे बेसाही[3] देला ऐ राम ॥१॥
ऐ राम जँतावा रे गाड़े गाजा[4] ओबरी; एकउना बयेरिया[5] वहे ए राम।
ऐ राम घर में से नीकलेले तीरीयावा; विरिछि[6] तरे ठाढ भइली ऐ राम ॥२॥
ऐ राम घोडवा चढल लहुरा[7] देवर; काहे भउजी बेदिल[8] ऐ राम।
ऐ बबुआ राउर भइया बोलेले रे विरहिया, त एकउरे बालक बिनु ऐ राम ॥३॥
भउजी काचही बँसवा[9] कटइह, बीनइह[10] डागाडालावा[11] ऐ राम।
ऐ भउजी ओहु मे भरइह तीली चाउर; अदीत[12] मानाइ लेहु ऐ राम ॥४॥
ऐ राम ए बेरिया[13] अदीत रे मनवली त, बबुआ के आसावा नु ऐ राम।
ऐ राम दुइ बेरिया अदीत रे मनवली त; बबुआ अवतार लिहले ऐ राम ॥५॥

---

[1]प्रणमा करती हूँ। [2]बेत। [3]खरीदना। [4]घन अँधेरे में। [5]हवा। [6]वृक्ष। [7]छोटा। [8]व्याकुल, उदासीन। [9]बाँस। [10]तैयार करना। [11]दौरी या छवडी। [12]सूर्य। [13]वार।

ऐ राम तीनि बेरिया अदीत रे मनवली त; भुइयां[1] बालक रोवे
ऐ राम।
ऐ राम जुगजुग[2] जीओ लहुरा देवर; जिन्हीं[3] हमें उपदेसवा देले
ऐ राम ॥६॥

कोई स्त्री कहती है कि तिरहुत (विहार) देश बड़ा ही अच्छा है। यहाँ बेंत की छाजन तैयार होती है। हमारा पति बहुत अच्छा है। उसने मेरे लिये जाँत खरीद दिया है॥ १॥

मैंने अपना जाँत अँधेरे कमरे में गाड़ रक्खा है जहाँ पर जरा भी हवा नहीं आती।

इस स्त्री को लड़का नहीं हो रहा था अतः उसके पति ने कुछ इस पर बुरा भला कहा। अतएव वह स्त्री घर में से निकल गई और वृक्ष के नीचे जाकर खड़ी हो गई॥ २॥

रास्ते में घोड़े पर चढ़ा हुआ उस स्त्री का देवर मिल गया। उसने पूछा कि ऐ भावज तू उदासीन क्यों है। इस पर भावज ने उत्तर दिया कि ऐ देवर! तुम्हारा भाई मेरी गोदी में लड़का न होने के कारण बड़े कठोर वचन कहता है॥ ३॥

इस पर देवर ने कहा कि ऐ भावज! कच्चा बाँस कटाना और उसकी एक दौरी बनाना, उसमें तिल और चावल भराना और सूर्य की प्रार्थना करना॥ ४॥

एक बार मैंने सूर्य की प्रार्थना की, उन्हें मनाया तो लड़का होने की आशा हुई। दूसरी बार जब सूर्य की प्रार्थना की तो लड़का गर्भ में आया॥ ५॥

तीसरी बार जब मैंने सूर्य की प्रार्थना की तो लड़का जमीन पर आकर रोने लगा अर्थात् लड़का पैदा हुआ। मेरा छोटा देवर चिरायु हो जिसने हमें ऐसा उपदेश दिया (जिससे मुझे पुत्र पैदा हुआ)॥ ६॥

इस गीत में पुत्र हीन स्त्री की जो दुर्दशा होती है उसकी सुन्दर झाँकी

---

[1]जमीन। [2]युग (बहुत दिन)। [3]जिसने।

मिलती हैं। आजकल भी देहातों में अनेक निर्दयी पुरुष अपनी सती-साध्वी स्त्री को पुत्र-हीन होने के कारण छोड़कर दूसरा विवाह कर लेते हैं।

सन्दर्भ—बहिन तथा भाई के आदर्श प्रेम का वर्णन

(१३६)

केकरे करनवे[1] ए गोपीचन्द, हाथ लेल तुमवा[2]।
केकरे करनवे हाथ सोटा[3] हो राम ॥१॥
तोहरे पर लिहलीं ए आमा, हाथ केर तुमवा।
कुकुरा[4] मरनवे हाथ सोटा हो राम ॥२॥
पुरुब तु जइह ए गोपीचन्द, पच्छिम जइह।
बहिनी नगरिया जनी जइह हो राम ॥३॥
पुरुब तेजवों ए माता, पच्छिम तेजवों।
बहिनी नगरिया ना हम तेजवों हो राम ॥४॥
भरि दीन गोपीचन्द, माँगी चहि अइले।
साँझि बेरिया बहिना कावारवा[5] ठाढ़े हो राम ॥५॥
कुछु देर रुकि के, गोपीचन्द बोलले।
हमें कुछु भोजन करावहु हो राम ॥६॥
आँगन बहरतीं[6] चेरिया लउड़िया[7]।
जोगीया के भीछा[8] देहि घालहु[9] हो राम ॥७॥
तोहारा ही हाथावा ए बहिनी, भीछा नाहि लेवों।
आरे जिन्ही रे बोलेली, तिन्ही आवसु[10] हो राम ॥८॥
तर[11] कइली सोनवा, ऊपर तिल चाउर[12]।
जोगिया[13] के भीछा देवे चलली हो राम ॥९॥

---

[1]कारण। [2]तुमड़ी। [3]डंडा। [4]कुत्ता। [5]घर के पास। [6]झाड़ू देती हुई। [7]लौंडी, दासी। [8]भिक्षा। [9]दे दो। [10]आवें। [11]नीचे। [12]चावल। [13]योगी।

तोहार[1] भीछवा ए बहिना, तोहरा के बाढसु[2]।
हमें कुछु भोजन करावहु हो राम ॥१०॥
गुरू भइया कीरिये गोवरधन कीरिये।
घारावा ना सीफली[3] रसोइया हो राम ॥११॥
गुरू भइया हमही, गोवरधन हमही।
झूठी किरियवा बहिना खालू[4] हो राम ॥१२॥
गुरू भइया तुहु ही गोवरधन तुहुही।
पिता, माता के नइया[5] बातालावहु[6] हो राम ॥१३॥
पिता के नामवा ए बहिना, होरिल सिंह राजवा।
माता के नामवा; मायेनवा हो राम ॥१४॥
आताना बचन बहिना; सुनही न पवली[7]।
सोने के थरीयवा[8] गोड़वा[9] धोवली हो राम ॥१५॥
आरावा चऊरवा अवरु[10] रहरी[11] के दलिया[12]।
आमृत[13] भोजन करवली[14] हो राम ॥१६॥

कोई माता अपने पुत्र से कह रही है कि ऐ मेरे पुत्र! गोपीचन्द! किस कारण से तुमने अपने हाथ में तुमडी लिया है और किस कारण से अपने हाथ में डण्डा लिया है॥ १॥

इस पर उस लड़के ने उत्तर दिया कि ऐ माता! मैंने तुम्हारे ही कारण हाथ में तुमडी (कमण्डलु) लिया है और कुत्ता मारने के लिए डण्डा लिया है॥ २॥

इस पर माता ने उत्तर दिया कि बेटा गोपीचन्द! तुम पूरब जाना, पश्चिम जाना लेकिन अपनी बहिन के गाँव में मत जाना॥ ३॥

---

[1]तुम्हारा। [2]वृद्धि को प्राप्त करे। [3]शपथ। [4]पकाना। [5]भोजन। [6]खाती हो। [7]नाम। [8]बताओ। [9]पाया। [10]थाल-बर्तन। [11]पैर। [12]और। [13]अरहर। [14]दाल। [15]अमृत (स्वादिष्ट तथा मीठा)। [16]कराया।

गोपीचन्द ने उत्तर दिया कि मैं पूरब जाना छोड दूंगा, पश्चिम जाना छोड दूंगा परन्तु अपनी वहिन के गाँव जाना नही छोड सकता ॥४॥

गोपीचन्द अपनी वहिन के गाँव गया। दिन भर वह गाँव में भिक्षा माँगता रहा और शाम को अपनी वहिन के घर के पास जाकर खडा हो गया॥ ५॥

कुछ देर ठहर कर गोपीचन्द ने कहा हमें कुछ भोजन करा दो॥ ६॥

यह सुनकर गोपीचन्द की वहिन ने कहा कि ऐ आँगन में झाड़ू देने वाली दासी! इस योगी को भिक्षा दे दो॥ ७॥

इस पर गोपीचन्द ने उत्तर दिया कि ऐ वहिन! (दासी) तुम्हारे हाथ से मैं भिक्षा नही लूँगा। जो स्त्री बोल रही है वही मेरे पास आवे॥ ९॥

तव गोपीचन्द की वहिन नीचे सोना छिपा कर तथा ऊपर तिल और चावल लेकर उस योगी को भिक्षा देने के लिये चली॥ ९॥

अपनी वहिन को पास आया देखकर गोपीचन्द ने कहा कि ऐ वहन! हमे कुछ भोजन करा दो॥ १०॥

वहन ने कहा कि गुरु तथा गोवरधन भाई की शपथ खाती हूँ। आज हमारे घर में रसोई नही वनी है॥ ११॥

गोपीचन्द ने उत्तर दिया कि गुरु तथा गोवरधन भाई मैं ही हूँ। ऐ वहन! तुम झूठा शपथ क्यो खा रही हो॥ १२॥

तव वहिन ने कहा कि यदि गुरू और गोवरधन भाई तुम्ही होतो अपने पिता और माता का नाम वतलाओ॥ १३॥

गोपीचन्द ने कहा कि मेरे पिता का नाम राजा होरिलसिंह तथा माता का नाम मायना है॥ १४॥

गोपीचन्द के इस वचन को सुनते ही वहन ने पहचान लिया कि यह मेरा भाई है और शीघ्र ही सोने का थाल पैर धोने के लिये लाई तथा पैर धोया॥ १५॥

अपने भाई को भोजन कराने के लिए वहन ने अरवा चावल का भात

तथा अमृत की धार बरसी तथा उसे बहुत ही स्वादिष्ट तथा मीठा मालूम कराया ॥ १६ ॥

इस गीत में पति और भाई के प्रेम का जो अद्भुत चित्र खींचा गया है वह निःसन्देह अनुपम है। इस गये-गुजरे जमाने में भाई का बहन के प्रति इतना उत्कट प्रेम दिखाना दुर्लभ है। इस भाई के प्रेम की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी थोड़ी है।

सन्दर्भ—परदेस में गये पति को लाने के लिये स्त्री का अपने भानजे को भेजना

(१३०)

छोटे छोटे तुलसी के बड़े बड़े पातावा[1]।
चलली रुकमीनि[2] निनिया[3] मोवन रे की ॥१॥
मलवनीं अवटन[4] रुकुमीनी कचोरवा[5]।
वेलवा मलत बुनवा[6] टपकेला[7] रे की ॥२॥
नाहीं देखो आहो ऐ रुकुमीनी, नाहीं देखो बारास्रा[8]।
कावाना[9] सरग[10] से बुनवा, टपकेला रे की ॥३॥
अपने त जइब ऐ हरीजी ओहि रे दुवरिका[11]।
हामारा के काहि[12] सँउपी[13] जइब नु रे की ॥४॥
छाई छुपी[14] जाइवि ऐ रुकमीनी, आरे चउखड[15] हवेलिया[16]।
राखी जइबों भागीरथ भायेनवा[17] नु रे की ॥५॥
ढहि दुहो[18] जइहें ए हरी जी, चाउखण्ड हवेलिया।

---

[1]पत्ता। [2]रुक्मिणी। [3]नींद। [4]उबटन। [5]कटोरा। [6]बूंद। [7]टपकता है, गिरता है। [8]वर्षा। [9]किन, कौन। [10]आकाश। [11]द्वारिका। [12]किसको। [13]सौंप जाओगे। [14]मरम्मत करके। [15]चौखूटा, चौकोर। [16]घर। [17]भगिना। [18]नष्ट हो जायेगा।

भागी जइहे भागीरथ; भायेनवा नु रे की ॥६॥
पीसहु आवहु ऐ मामी, आरे जीरवा[1] रे सतुइया[2]।
हम जइवो मामा के, लियावनु[3] रे की ॥७॥
एक बने गइलों ऐ भयने, दुसर[4] बने गइलों।
तीसर बने मामा धुँइयाँ[5] लावेले रे की ॥८॥
छोड़हु आहो ऐ मामा; वन केरि धुँइयाँ।
मामी रोवेले छतिया; माटेला रे की ॥९॥
ऊँचे रे झड़ोखवा[6] चढ़ि; मामी नीरेखेली[7]।
जस देखो मामा भयने[8]; आवेले रे की ॥१०॥
अइसन भयने के गोड़वा धोइके पीयवों।
उड़सलि[9] सेजिया भयने मोर डसावेले[10] रे की ॥११॥

घर में लगाये हुए एक तुलसी वृक्ष के बडे-बडे पत्ते थे। रुक्मिणी देवी सोने के लिये घर में चली गई॥ १॥

रुक्मिणी कटोरा में भर कर अपने पति को उवटन लगाने लगी। जब वह पति की देह मे तेल मल रही थी तब उसकी आँखो में से आँसू गिरने लगे। (क्योकि पति परदेश जाने वाला था)॥ २॥

पत्नी के गिरते हुए आँसू को देख पति ने पूछा कि ऐ रुक्मिणी! इस समय वर्षा भी नही है फिर किस कारण से किस आकाश से यें बूँदें गिर रही है॥ ३॥

तब स्त्री ने उत्तर दिया कि ऐ पति! तुम तो द्वारका (अथवा परदेश) चले जाओगे परन्तु मुझ को किसे सौंप जाओगे॥ ४॥

---

[1]पतला, महीन। [2]सत्तू। [3]लिवा लाने के लिए। [4]दूसरा। [5]धूनी [6]खिडकी। [7]देखती है। [8]भानजा। [9]विस्तर हटा हुआ। [10]बिछाया

पति ने कहा कि ऐ स्त्री ! मैं तुम्हारी चौपार हवेली की मरम्मत करके जाऊँगा जिसमें बरसात में न चुवे और अपने भागीरथी नामक भानजे को तुम्हारे पास रख जाऊँगा ॥ ५ ॥

स्त्री ने कहा कि ऐ पति ! मेरी हवेली गिर कर नष्ट हो जायेगी और भानजा भी भाग जायेगा ॥ ६ ॥

पति के परदेश चले जाने के कारण स्त्री की दुर्दशा देखकर भानजा ने मामी से कहा कि ऐ मामी ! तुम धतरा मत पीओ। मैं उसे लेकर मामा को लिवा लेने के लिये जाऊँगा ॥ ७ ॥

वह भानजा एक वन में गया, दूसरे वन में गया, तीसरे वन में उसने अपने मामा को धूनी रमाते हुए देखा ॥ ८ ॥

तब उसने अपने मामा से प्रार्थना की कि ऐ मामा ! तुम वन की इस धूनी को छोड दो। मेरी मामी इतनी रो रही है कि उसे सुन कर छाती फटी जाती है ॥ ९ ॥

सम्भवत पति आता होगा यह सोचकर वह स्त्री ऊँची खिड़की पर चढ कर देखने लगी कि शायद मामा और भानजा साथ-साथ आते हों ॥ १० ॥

पति को आता देख स्त्री ने कहा कि ऐसे भानजे का पैर धोकर पी लेना चाहिये क्योंकि इसने मेरी बिस्तर रहित खाट को उससे मुक्त कर दिया अर्थात् पति को लिवा कर मुझे भोग-विलास करने का अवसर प्रदान किया ॥ ११ ॥

सन्दर्भ—एक सती स्त्री के आदर्श-चरित्र का वर्णन

(१३८)

पनवा छेवढि छेवढि भजिया बनौलों।
लौंगन दिहलों धुँअरवा हू रे जी ॥१॥
सठिया कूटि कूटि भतवा रिन्हौलों।
उपरा मुँगौआ केरि दलिया हू रे जी ॥२॥

मचिया बइठलि तुँहुँ सासु बढ़ैतिन।
भसुरू जेवना कैसे टारब हू रे जी ॥३॥
आठों अङ्ग मोरि, हे बहुआ नेतेवँ ओहारिह।
लुलुआ सरिखहे, जेवना टारिह हू रे जी ॥४॥
जेवहिं बइठल भसुरू बढ़ैता।
हेठ ले उपरवा निहारेले हू रे जी ॥५॥
किअ तोर भसुरू जेंवना बिगारली।
किअ तुनआ लौली बिसभोरे हू रे जी ॥६॥
नाहिं मोर भवही जेंवना बिगारलू।
नाहिं तुनआ लौलू बिसभोरे हू रे जी ॥७॥
होत भिनुसरा भसुरू डगवा दिअवले।
छोट बड़ चलसु अहेर खेले हू रे जी ॥८॥
सभ केहू मारेला हरिना सावजवा।
भसुरू मारेले आपन भइया हू रे जी ॥९॥
मचिया बइठलि तुँहुँ सासु बढ़ैतिन।
हमरि टिकुलिया भुँइया गिरेला हू रे जी ॥१०॥
अइसनि बोलि जनि बोलू बहुरिया।
मोर बसती गइल बाड़े अहेरिया खेले हू रे जी ॥११॥
सभ कर घोरवा औरत दौरत।
बसती के घोरवा बिसमाधल हू रे जी ॥१२॥
सभ कर तरवरिया अलकत भलकत।
बसती तरवरिया रकतें चूड़ल हू रे जी ॥१३॥
घरी राति गइल पहर राति गइल।
भसुरू केवड़िया भड़कावे हू रे जी ॥१॥

दुर तुँ हुँ कुकुरा दुर रे विलरिया
दुर रे सहर सभ लोगवा हू रे जी ॥१५॥

नाहि हम कुकुरा नाहि रे विलरिया ।
नाहि रे सहर सभ लोगवा हू रे जी ॥१६॥

हम हुँ तँ वसती सिङ्ग रलवा हू रे जी ।
मोर वसतो जुझले लड़इया हू रे जी ॥१७॥

कहवाँ मारले कहवाँ लड़वले ।
कौना विरिछिया ओंठघवले हू रे जी ॥१८॥

बनहीं मरले बनहीं लड़वले ।
चनन विरिछिया ओंठघवले हू रे जी ॥१९॥

तोहरा छोड़ि भसुरू अनकर ना होइवों ।
इचि एक लोथिया देखाव हू रे जी ॥२०॥
अगिया ले आव हू रे जी ॥२१॥

जब लक भसुरू आगि आने गइले ।
फुफुनी से निकले अँगरवा हू रे जी ॥२२॥
सँगहि भइलीजरि छरवा हू रे जी ॥२३॥

इस मनोहर गीत में बसतीसिंह की पत्नी का पवित्र चरित्र सुन्दर शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है। बसतीसिंह को शिकार के बहाने उसका जेठा भाई जंगल में ले जाता है और धोखा देकर उसे मार डालता है। घर लौटकर उसकी पत्नी से विवाह करने का प्रस्ताव करता है। और उसे बसतीसिंह के युद्ध में मर जाने की खबर देता है। पति के शव को देखने के लिए व्याकुल पत्नी अपने जेठ से प्रार्थना करती है कि वह उसी की बन कर रहेगी परन्तु उसकी लाश पर एक बार नजर डालने दे। जेठ उसे जंगल में ले जाकर खून से लथपथ शरीर दिखलाता है। उसे आग लाने के लिए भेजती है तबतक उसकी साड़ी से आग पैदा हो जाती है और वह वहीं पति के साथ सती बन जाती है। कितना आदर्श है इस क्षत्राणी का चरित्र!!!

८. छठी माता के गीत

हिन्दू-जीवन मे त्यौहारो का वडा माहात्म्य है। ये त्यौहार हमारे धर्म के अग हो गये हैं। हमारे यहाँ सामाजिक त्यौहारो की अपेक्षा धार्मिक त्यौहारो पर विशेष जोर दिया गया है और इसका कारण है उनकी महत्ता। इसी कारण प्रत्येक हिन्दू के लिये इन त्यौहार को मनाना अत्यन्त आवश्यक है। हमारे यहाँ त्यौहारो का जितना महत्त्व है, सभवत उतना ससार के किसी भी देश में न होगा। कही-कही इन त्यौहारो की महत्ता प्रतिपादित करने के लिये इन्हे देवी या देवता का रूप प्रदान किया गया है। छठी का व्रत भी ऐसा ही त्यौहार है।

छठी का व्रत कार्तिक मास की शुक्लपक्ष की षष्ठी तिथि को किया जाता है। यह व्रत केवल स्त्रियो का ही है। इसे 'षष्ठी-व्रत'' कहते हैं। छठी शब्द इसी का अपभ्रश रूप है। महत्त्व प्रदान करने के लिये इस व्रत को माता कहते हैं। इस प्रकार इसका "छठी माता" नाम पड गया है। इस व्रत में पचमी और षष्ठी दोनो तिथियो में स्त्रियाँ उपवास रखती हैं और सप्तमी के प्रात काल सूर्य नारायण को अर्घ्य प्रदान कर भोजन ग्रहण करती है। इस तिथि को वडा पकवान पकाया जाता है और घर के सभी वाल-बच्चे उसे मिलकर खाते हैं।

देहातो में किसी नदी या तालाव के किनारे वे लडके जिनकी माताए और वहिने यह व्रत रखती हैं मिट्टी का एक छोटा-सा चवूतरा एक दिन पहिले जाकर वना देते हैं। जव वह चवूतरा सूख जाता है तव उसे गोवर-मिट्टी से लीप देते हैं। दूसरे दिन उनकी माताए और वहिनें आकर इसी चवूतरे पर वैठती हैं और सूर्य नारायण को अर्घ देती हैं। वाल-काल में इस चवूतरे का वनाना वालको के लिये वडे ही आनन्द और मनोरजन का विषय होता है। इस लेखक ने स्वय वाल्यावस्था में कई वार इस काम को वडे प्रेम से किया है।

जव षष्ठी का व्रत समाप्त हो जाता है तव सप्तमी को सवरे सूर्य को अर्घ-प्रदान करने के लिए स्त्रियाँ किसी जलाशय या नदी के किनारे जाती हैं

और उन्हीं चबूतरो पर बैठती हैं जिनको उनके पुत्रोने बनाकर तैयार किया है। वे एक बड़ी दौरी या छबटी में सूर्य को अर्घ देने के लिए केला, नीबू, नारंगी ईख तथा अनेक प्रकार के पकवान साथ लेकर जाती हैं। उस घाट पर मालिन की स्त्री फूल, फल, तथा ग्वालिन की लड़की या स्त्री दूध लाती है जिसका उपयोग सूर्य-नारायण को अर्घ देने में किया जाता है। इन गीतों में मालिन तथा ग्वालिन की लड़की के फूल और दूध लाने का वर्णन अनेक बार पाया जाता है। इस प्रकार जब सामग्री इकट्ठी हो जाती है तब सूर्य-नारायण को अर्घ दिया जाता है।

इस व्रत में स्त्रियाँ पञ्चमी और षष्ठी इन दोनो दिनो को उपवास रखती हैं तथा सप्तमी को सबेरे सूर्य-नारायण को बड़ी तैयारी के साथ अर्घ देने को उद्यत रहती हैं। एक तो उन्हें उदर की ज्वाला परेशान करती है, दूसरे सबेरे का जाड़ा तंग करता है, तीसरे सूर्य के उदय होने की प्रतीक्षा में उन्हें खड़ा रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में सूर्योदय होने में विलम्ब होनेके कारण उन्हें कितना कष्ट होता होगा इसका सहज ही में अनुमान किया जा सकता है। वे सूर्य के शीघ्र उदय न होने के कारण व्याकुल हो जाती हैं और उनसे बड़ी आतुरता से प्रार्थना करती हैं ऐ भगवान्! शीघ्र उदय लीजिये। छठी माता सबधी गीतों में ऐसे अनेक गीत पाये जाते हैं, जिनमें शीघ्र उदय लेने के लिये सूर्य भगवान् से प्रार्थना की गई है। स्त्रियाँ बड़ी आतुरता से प्रार्थना करती हैं कि ए भगवान्! उदय लेकर हमारे अर्घ को स्वीकार कीजिये। एक गीत में एक स्त्री सूर्य से प्रार्थना करती है कि—

"अहिरिनि बिटिया, दूधवा ले ले ठाढ़ी।
हाली देनी उग ए अदित मल, अरघ दिआउ।"

कहीं पर वह स्त्री यह प्रार्थना करती है कि ऐ भगवान्! खड़े-खड़े मेरे पैर दुखने लगे और कमर में पीड़ा होने लगी है। अतः कृपा कर अब तो शीघ्र उदय लीजिये।

"खड़े खड़े गोड़वा दुखाइलि; ए अदितमल डाँड़वा पिराइल।
हाली देनी उग ए अदितमल; अरघ दिआउ'॥

छठी माता का व्रत विशेष करके सन्तान- प्राप्त की कामना से किया जाता है। जिन स्त्रियो को पुत्र नही होता वे इस व्रत को विशेष रूप से करती हैं। कितनी स्त्रियाँ सूर्य निकलने के कई घटे पहिले से जल में खडी रहती है और सूर्य के निकलने पर अर्घ देती है। इस तपस्या के फलस्वरूप वे पुत्र-प्राप्त की कामना रखती है। कई गीतो में इस कामना का वर्णन मिलता है जिनमें स्त्रियाँ छठी माता से पुत्र देने की प्रार्थना करती हैं। एक स्त्री कहती है—

"खोंइछा अछतवा गडुववा जुड पानी।
चलली कवनि देई अदित मनावे॥
थोरा नाहिं लेवों आदित बहुत ना मॉगिले।
पॉच पुतर आदित, हमरा के दिहिती॥"

इन गीतो मे माता की पुत्र-लालसा का जितना सुन्दर वर्णन किया गया है, सभवत उतना अन्यत्र उपलव्व नही। पुत्र विहीन माता की व्याकुलता नीरस हृदय में भी करुणरस की धारा प्रवाहित करने लगती है। आगे कुछ चुने हुए छठी माता के गीत पाठको के मनोरजन के लिए प्रस्तुत किये जाते हैं—

सन्दर्भ—पुत्रहीन वधू का अपनी सास से पुत्र पैदा करने का उपाय पूछना

(१३६)

मोहि तोहि पुछिला[1] मायरि[2] हो; कवना तपे पवलु[3] गनपति
सुत रे॥१॥
कातिक मासे कतिकी छठि कइलों, अगहन कइलों अतवार[4]
वड़[5]ही जेठ के जवाब नाहि दिहलों, ओहि तपे पवली होसियार[6]॥२॥

---

[1]पूछती हूँ। [2]माता। [3]पाया। [4]रविवार। [5]श्रेष्ठ। [6]चतुर।

कोई पुत्रवधू अपनी सास से यह पूछ रही है कि तुमने कौन-सी तपस्या की है जिसके कारण तुम्हें गनपति (मेरा पति) जैसा पुत्र पैदा हुआ है ॥ १ ॥

इस पर सास ने उत्तर दिया कि कार्तिक के महीने में मैंने छठी माता का व्रत किया था और अगहन के महीने में रविवार का व्रत किया था। मैंने कभी अपने श्रेष्ठ लोगों को उत्तर नहीं दिया। इसी कारण गनपति के समान चतुर पुत्र प्राप्त किया है ॥ २ ॥

सास का यह उपदेश पुत्रवधू के लिए कितना उचित तथा उपयोगी है।

सन्दर्भ—छठी माता के प्रसन्नार्थ उपहार ले जाने के लिये स्त्री की पति से प्रार्थना

(१४०)

काचहि[1] बाँस के बँहगिया, बँहगी[2] लचकति जाइ।
रउरा भाराहा[3] होइना कवनराम; बँहगी घाटे[4] पहुँचाई ॥१॥
बाट में पूछेला बटोहिया; इ बँहगी केकरा के जाई।
वे[5] त अन्हरा[6] इवे रे बटोहिया, इ बँहगी छठि मइया[7] के जाई ॥२॥
हमारा जे बाड़ी छठिय मइया, इ दल[8] उनके के जाई ॥३॥

कच्चे बाँस की बँहगी लचकती हुई जा रही है। कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि तुम इस बँहगी को लेकर घाट पर पहुँचा आओ ॥ १ ॥

जब उस स्त्री का पति बँहगी पर बोझ लादकर घाट पर लिये जा रहा था तब किसी बटोही ने पूछा कि यह बँहगी कहाँ जायेगी। तब उसने उत्तर दिया कि ऐ बटोही! क्या तुम अन्धे हो देखते नहीं कि छठी माता के घाट पर यह बँहगी जा रही है ॥ २ ॥

---

[1]कच्चा। [2]बँहगी (काँवर)। [3]बोझ ढोने वाला। [4]घाट पर। [5]तुम। [6]अन्धा। [7]छठी माता। [8]सामान।

' हमारी जो छठी माता हैं उनके लिये ही यह सारा सामान जा रहा है॥ ३॥

सन्दर्भ—पुत्र तथा पति को कुशलपूर्वक रखने के लिये स्त्री का छठी माता को विविध उपहार देने की प्रार्थना

(१४१)

कलसुपवा[1] चढ़इबों छठिय मइया, छठी मइया के सुहाग।
खोरिया[2] रउरी बाहारों[3]; धन, सम्पत्ति हमरा के दीं ॥१॥
अमरुधवे[4] चढ़इबों छठिय मइया, छठि मइया के सोहाग।
खोरिया रउरी वहारवि; धन सम्पत्ति दी ॥२॥
खोरिया रउरी वहारवि, पुतवा[5] भीख[6] दीं ॥
मुरई[7] चढइबों[8] छठिय मइया; छठि मइया के सोहाग।
खोरिया रउरे वहारवि; भातार[9] भीख[10] दीं ॥३॥

कोई स्त्री कह रही है कि ऐ छठी माता! मैं आपके प्रसन्नार्थ कल कलसुप चढाऊँगी। मैं आपकी गली में झाड़ू दूंगी। कृपा कर आप मुझे धन और सम्पत्ति दीजिये॥ १॥

ऐ छठी माता! मैं आपको अमरूद भेंट करूँगी, आपकी गली मे झाड़ू दूंगी। आप मुझे धन, सम्पत्ति और पुत्र भीख में दीजिए॥ २॥

ऐ छठी माता! मैं आपके प्रसन्नार्थ मूली चढाऊँगी। आपकी गली मे झाड़ू दूंगी। कृपया आप मेरे पति के स्वस्थ रहने की भिक्षा दीजिये॥ ३॥

इस गीत में स्त्री का पुत्र और पति के स्वस्थ रहने की चिन्ता तथा उसके लिये देवी की प्रार्थना अत्यन्त मर्मस्पर्शी है।

---

[1]बाँस की छोटी टोकरी। [2]गली। [3]झाड़ू दूंगी। [4]अमरूद। [5]पुत्र। [6]भिक्षा। [7]मूली। [8]चढाऊँगी। [9]भर्ता (पति)। [10]भिक्षा।

सन्दर्भ—छठी का व्रत रखने वाली स्त्री की सूर्य से अर्घ्य देने के लिये शीघ्र उदय लेने की प्रार्थना

(१४२)

आरे गोड़े खरउवाँ[1] ए अदितमल[2], तिलका लिलार ।
आरे हाथावा में सोवरन साँटी[3] ए, अदितमल, अरघ[4] दिआउ ॥१॥
ए आमा के कोरा[5] सुतेले अदितमल; भोरे हो गइल विहान[6] ।
आरे हाली हाली[7] उग ए अदितमल; अरघ दिआउ ॥२॥
फालावा फुलवा लेले मालिनि, बिटिया[8] ठाढ़ ।
आरे हाली हाली उग ए अदितमल; अरघ दिआउ ॥३॥
दूधवा, घिउवा[9] लेले गवालिनि, बिटिया ठाढ़ ।
आरे हाली हाली उग ए अदितमल; अरघ दिआउ ॥४॥
धूपवा, जलवा रे लेके; बाभानवा[10] रे ठाढ़ ।
आरे हाली हाली उग ए अदितमल· अरघ दिआउ ॥५॥
गोड़वा दुखइले रे डाँड़वा[11]; पिरइले[12], कब से जे बानि हम ठाढ़[13] ।
आरे हाली हाली उग[14] ए अदितमल, अरघ दिआउ ॥६॥

कोई स्त्री छठी माता का व्रत करके अर्घ देने के समय कह रही है कि सूर्य तुम्हारे पैर में खड़ाऊँ है अर्थात् तुम अम्बररूपी खड़ाऊँ पर चढ़कर उदय लेते हो। तुम्हारे ललाट पर तिलक है। तुम्हारे हाथ में सोने का डण्डा है अर्थात् तुम्हारी किरणें सोने के समान सुनहली हैं। तुम उदय लो जिससे अर्घ दिया जा सके ॥१॥

ऐ सूर्य तुम रात्रि रूपी माता की गोद में सो जाते हो और सोते-सोते सवेरा कर देते हो। ऐ सूर्य ! तुम जल्दी-जल्दी उदय लो जिससे हम लोग अर्घ दे सकें ॥२॥

---

[1]खड़ाऊँ। [2]सूर्य। [3]डण्डा। [4]अर्घ। [5]गोदी। [6]सवेरा। [7]जल्दी। [8]लड़की। [9]घी। [10]ब्राह्मण। [11]कमर। [12]दुख रहा है। [13]खड़ी। [14] उदय लो।

फूल और फल लेकर मालिन की लडकी तथा घी, दूध लेकर ग्वालिन की लडकी खडी है। ऐ सूर्य तुम जल्दी उदय लो जिससे हम अर्घ दे॥ ३। ४॥

धूप और जल लेकर ब्राह्मण अर्घ दिलाने के लिये खडा है। अत जल्दी उदय लो॥ ५॥

वह कहती है कि खडे होने से मेरा पैर दुखने लगा है तथा कमर दर्द कर रही है। मै कब से खडी हूँ। ऐ सूर्य! जल्दी उगिये जिससे हम अर्घ दें॥ ६॥

इस गीत मे स्त्री सूर्य के उदय होने के लिये अत्यन्त चिन्तित है। उसकी यह चिन्ता अत्यन्त मर्मस्पर्शी है।

सन्दर्भ—पार्वती की सूर्य से पाँच पुत्र देने की प्रार्थना

(१४३)

खोंइछा[1] आछातावा[2] गेडुववा जुड हो पानी; चलली गउरा देई
अदित[3] मनाव।
आरे पलटहु पलटहु छठि परमेसरी[4], आजु हम अदित मनाव॥१॥
थोरा[5] नाहिं लेवों ए अदित बहुत ना माँगिले।
पाँच पुतरवा[6] ए आदित हमरा के दीहि॥२॥
पलटहु पलटहु छठि परमेसरि॥

कोई स्त्री कहती है कि गउरा देवी (पार्वती) अपने आँचल मे चावल और ठण्डा पानी लेकर सूर्य को प्रसन्न करने को चली। वह छठी माता से प्रार्थना करती है कि माता आप प्रसन्न होइये आज मै सूर्य को अर्घ दूँगी॥ १॥

फिर वह सूर्य से प्रार्थना करती है कि ऐ भगवान्! मै आपसे न तो थोडा मागूंगी और न अधिक। आप मुझे अधिक नही पाँच पुत्र दे दीजिये। ऐ छठी माता! प्रसन्न होओ! प्रसन्न होओ॥ २॥

---

[1]आँचल। [2]अक्षत। [3]आदित्य। (सूर्य) [4]परमेश्वरी। [5]थोडा। [6]पुत्र।

सन्दर्भ—घाट को पवित्र न रखने के कारण भक्त के ऊपर छठी माता का क्रोध

(१४४)

कोपि कोपि[1] बोलेली छठिय मइया; सुन ए महादेव।
मोरा घाटे दुबिया[2] उपरजि[3] गइले, मकड़ी बसेड़[4] लेली॥१॥
हँसि हँसि बोलेले महादेव, सुन ए छठिय मइया।
हम तोहरे[5] दुबिया छिलाइ[6] देबो, चनन छिरिकि[7] देबों॥२॥

छठी माता क्रोध करके अपने महादेव स्वामी से बात में कहती हैं कि ऐ महादेव! मेरे घाट पर घास निकल आई है और मकड़ी ने बसेरा (निवास) ले रखा है॥१॥

इस पर महादेव ने उत्तर दिया कि हे छठी माता सुनिये। मैं आपके घाट पर निकली घास कटवा दूंगा और वहाँ पर चन्दन छिड़क कर पवित्र तथा सुन्दर बना दूंगा॥२॥

सन्दर्भ—पूजा के लिये गई हुई किसी स्त्री को घाट पर जाने से घटवार का मना करना तथा उससे स्त्री की प्रार्थना

(१४५)

ए कवन देव पोखरा[8] खनावेले; घटिया[9] बान्हावेले रे।
ए कवन देवी छठी के बरत[10] कइली, कइसे जल जागाइबि रे॥१॥
ए घाट मोरे छेके घटवरवा; दुआरा पियदवा[11] लोग रे।
ए कोरा[12] मोरा छेकेली[13] गनपति; कइसे जल जागाइबि[14] रे॥२॥
ए रूपया त देहु घाटावरवा, मइया ढेबुआ[15] पियदवा लोग रे।
ए दही भात देहु गनपति पूता[16] कइसे[17] जल जागाइबि रे॥३॥

---

[1]क्रोध करके। [2]घास [3]पैदा हो गई है। [4]निवास। [5]आपका। [6]काट देना। [7]छिड़क देना। [8]तालाब। [9]घाट। [10]व्रत। [11]प्यादा (सिपाही)। [12]गोदी। [13]रोकता है। [14]अर्घ दूंगी। [15]पैसा। [16]पुत्र [17]कैसे।

कोई स्त्री कह रही है कि किसी आदमी ने तालाब बनवा करके उसके किनारे घाट बनवा दिया है। मैंने छठी माता का व्रत किया है। मैं कैसे सूर्य को अर्घ दूंगी॥ १॥

मुझे दरवाजे पर पुलिस के सिपाही रोक रहे हैं और तालाब के घाट पर घाट का मालिक मुझे रोक रहा है। मेरी गोदी को मेरा पुत्र छोडता ही नही। तब मैं कैसे जल जगाऊँगा? अर्थात् कैसे अर्घ दूंगी॥ २॥

वह स्त्री अपने पति से कह रही है कि घटवार को रुपया तथा सिपाही को कुछ पैसा दे दो, जिससे वे मुझे न रोकें। मेरे गनपति नामक पुत्र को दही-भात खाने को दो। नही तो मैं कैसे अर्घ दूंगी॥ ३॥

इस गीत मे स्त्री की सूर्य को अर्घ देने की चिन्ता कितनी प्रबल है। वह इसके लिये कितनी व्याकुल दीख पडती है।

सन्दर्भ—पार्वती का पुत्र कामना से छठी माता का व्रत करना

(१४६)

भीजेले माहादेव के धोतिया; गउरा[1] देई के चूनरि[2] ए।
कोरा पइसी भीजेले गनपति पूता, अवरु[3] गनपति पूव ए ॥१॥
माहादेव चाँदानवा[4] तानेले; पठिया[5] धुरे[6] बान्हेले ए।
गउरा पुतवा[7] भीखि मागेली; प्रसन्न[8] छठी मइया होख ए ॥२॥

महादेव अपनी स्त्री पार्वती के साथ छठी माता के घाट पर सूर्य को अर्घ दिलाने के लिए गये। परन्तु वहाँ अचानक वर्षा बरसने लगी। उस समय महादेव की धोती और पार्वती की साडी भीगने लगी तथा पार्वती की गोदी मे बैठे हुए गणेशजी भी भीगने लगे॥ १॥

उस समय महादेव वर्षा से बचने के लिये वितान तानने लगे। उन्होने छठी माता को प्रसन्न करने के लिये एक छोटी गाय दान देने के लिये बाँध रक्खी थी। पार्वतीजी छठी माता को प्रसन्न कर एक और पुत्र माँगती है॥२॥

([1]गौरी ४पार्वती)। [2]साडी। [3]और। [4]वितान। [5]बछडी। [6]नजदीक। [7]पुत्र। [8]प्रसन्न।

संदर्भ—पुत्रहीन स्त्री का छठी माता से पुत्र माँगना

(१४७)

मलहोरिन[1] बिटिया नीबू लेई आव; सरीफा[2] लेई आव।
आरे कव रे उगिहें अदितमल; अरघ दियाई[3] ॥१॥
ए छठी मइया करबि[4] राउर सेवा, करबि राउर सेवा।
हमरो के आजु ए छठी मइया, दिहिना राउरा मेवा ॥२॥
बुढ़िया माँगे नाती[5], तरुनिया माँगे बेटा।
बिटिया[6] जे माँगेले, भाई रे भतीजा ॥३॥

कोई स्त्री छठी का व्रत करके माली की लडकी से कह रही है कि तुम नीबू और शरीफा लाओ जिससे मैं सूर्य नारायण को अर्घदान दे सकूं। सूर्य कब उगेंगे और कब अर्घ दिया जायेगा॥ १॥

ऐ छठी माता मैं आपकी सेवा करूँगी। आज आप इसके फलस्वरूप मुझे मेवा खाने को दीजिये अर्थात् मुझे आशीर्वाद तथा वरदान दीजिये॥२॥

बूढी स्त्रियाँ अपने लिये पौत्र माँग रही हैं, युवती स्त्रियाँ पुत्र माँगती हैं तथा छोटी लडकियाँ अपने लिये भाई और भतीजा माँगती हैं॥ ३॥

छठी माता का व्रत किसी उद्देश्य को लक्ष्य करके किया जाता है। स्त्रियो के उद्देश्य प्राय पुत्र तथा पौत्र की प्राप्ति हुआ करते हैं। स्त्री हृदय की इन्हीं अभिलाषाओं का वर्णन यहाँ किया गया है।

सन्दर्भ—पुत्र प्राप्ति के लिये स्त्री की सूर्य से प्रार्थना

(१४८)

ए गोड़े[7] खरउवाँ ए दीनानाथ; हाथ में सोवरन के साँटी।
ए कान्हे जनेउवा[8] ए दीनानाथ, चनन बाटे लिलार ॥१॥
ए सब तिरियवा ए दीनानाथ; छेकेली[10] दुआरी[11]।
ए सब डलियवा[12] ए दीनानाथ; लिहली उठाई ॥२॥

---

[1]माली की स्त्री। [2]शरीफा। [3]दिया जायेगा। [4]करूँगी। [5]दो। [6]पौत्र। [6]पुत्री। [7]पैर। [8]यज्ञोपवीत। [10]रोकती है। [11]द्वार। [12]डाली (छवडी)।

ए बांझी[1] के डलियवा ए दीनानाथ; ठहरे तांवाई[2] ।।३।।
ए छोड़ु छोड़ु छोड़ु ए बाँझिनि; छोड़ु रे दुआरी।
ए कवना अवगुनवे ए बाँझिनि; छेकेलु दुआरी ।।४।।
ए सासु मोरे हुडुकाए[3] ए दीनानाथ; ननदिया पारे गारी[4] ।
ए सँगे लागल पुरुखवा[5] ए दीनानाथ; हमरा के डण्डा से मारी ।।५।।
ए असों[6] के कतिकवा ए तिरिया; घरवा चली जाई ।
ए अगीला[7] कतिकवा ए तिरिया; तोरा बेटा होई जाई ।।६।।

कोई स्त्री छठी-व्रत करके सूर्य नारायण को अर्घ देते समय उनसे प्रार्थना करती हुई कहती है कि सूर्य ! तुमने पैर मे खडाऊँ पहिन रक्खा है और हाथ मे सोने का डण्डा अर्थात् सुनहली किरणें है। तुम्हारे कन्धे में जनेऊ और ललाट मे चन्दन है।। १ ।।

ऐ भगवान् ! आपके द्वार पर सव स्त्रियाँ प्रार्थना करने के लिये खडी है। हे देव ! आपने सव की डाली को उठा लिया अर्थात् सव की प्रार्थना स्वीकार कर ली ।। २ ।।

लेकिन मुझे वन्ध्या की डाली वही पर पडी हुई है अर्थात् आपने उसे अभी तक स्वीकार नही किया ।। ३ ।।

तव भगवान् सूर्य कहते है कि ऐ वन्ध्या स्त्री तुम मेरे दरवाजे को मत रोको, उसे छोड दो। किस अवगुण के कारण तुम मेरे द्वार पर खडी हो ।।४।।

तव वह स्त्री कहती है कि वन्ध्या होने के कारण सास मुझे वहुत झिड-कती है, ननद मुझे गाली देती है और मेरा पति इस कारण मुझे डण्डे से मारता है ।। ५ ।।

भगवान् सूर्य ने उस स्त्री की प्रार्थना से प्रसन्न होकर कहा कि ऐ स्त्री तुम घर चली जाओ। इस साल के कार्तिक के वाद अगले कार्तिक में तुम्हे पुत्र रत्न पैदा होगा ।। ६ ।।

---

[1]वन्ध्या। [2]अस्वीकृत। [3]झिडकती है। [4]गाली। [5]पति। [6]इस साल। [7]अगला वर्ष।

देहातों मे प्राय वन्ध्या स्त्री को अनेक कष्ट दिये जाते है। पुत्र पैदा न करने के कारण उन्हें गालियाँ दी जाती हैं तथा पीटा जाता है। मनहूस तथा अभागिन कहना तो साधारण सी बात है। ऐसे ही एक वन्ध्या स्त्री का ऊपर वर्णन किया गया है जिसकी मानसिक वेदना का पता उसकी प्रार्थना मे लगता है।

सन्दर्भ—सूर्य को अर्घ्य देने के लिये व्याकुल स्त्री की सूर्योदय में विलम्ब के कारण की कल्पना

(१४९)

गेहुँआ बेसहलों[1] में अवध नगरिया; उगीना[2] अदित मल लिहिना अरघिया[3]।

कवना अवगुनवा अदित नाहीं उगले; बसकोरिनि[4] जुठवा कलसुपवा दिहले[5] ॥१॥

ओही[6] अवगुनवे[7] अदित नाहीं उगले ॥२॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैंने अवध नगरी में गेहूँ खरीदा है और उसका पकवान बनाया है। ऐ सूर्य! उदय लो और मेरे अर्घ को स्वीकार करो॥१॥

जब सूर्य नारायण बहुत देर तक उदय नही लेते हैं तब वह स्त्री कहती है कि ऐ भगवान्! आप किस कारण से आज उदय नही लेते हैं। ज्ञात होता है कि चमारिन ने जो बाँस का सूप बनाकर दिया था वह जूठा था। उसी कारण से आज सूर्य अभी तक नही निकले॥२॥

---

[1]खरीदा। [2]उदय लो। [3]अर्घ। [4]चमार की स्त्री। [5]दिया। [6]उसी। [7]अवगुण (दोष) से।

९. शीतला माता के गीत

चेचक को शीतला देवी के नाम से पुकारते है। यह कहना कठिन है कि ऐसी भयकर बीमारी को जिसमे शारीरिक गर्मी की विशेष प्रधानता रहती है शीतला क्यो कहते है। डा० तारापुर वाला ने लिखा है[1] कि मनुष्य की यह प्रवृत्ति होती है कि वह नीच तथा भयकर वस्तु को किसी सुन्दर नाम से पुकारने का प्रयत्न करता है। जैसे रसोई बनानेवाले ब्राह्मणो को महाराज बहुत बडा राजा कहते है। इसी प्रकार से इस भयकर बीमारी को शीतला कहने लगे हो तो कुछ आश्चर्य नही। कुछ काल के अनन्तर इसी शीतला देवी को अधिक महत्त्व देने के लिये माता देवी के नाम से पुकारने लगे। सारी बीमारियो मे सभवत चेचक ही ऐसी बीमारी है जो देवी या देवता के रूप में पूजी जाती है इसका कारण सभवत इसकी भयकरता ही है। शीतला देवी का वाहन गधा है जो उनकी भयकरता तथा वीभत्सता को सूचित करने के लिये पर्याप्त है।

हमारे यहाँ जब किसी को शीतला की बीमारी होती है तो उसकी कुछ भी दवा नही की जाती। वह बेचारा आदमी माता देवी की दया पर छोड दिया जाता है। उसकी बीमारी के अच्छा होने के लिये माता देवी की प्रशसा में गीत गाये जाते है और उनसे यह प्रार्थना की जाती है कि रोगी को नीरोग कर दें। रोगी के झाड-फूंक के लिये मालिन आती है और वह नीम की डाली या टहनी से रोगी को झाडती है जिससे शीतला माता प्रसन्न होकर बीमार को नीरोग कर दे। मालिन माता देवी की प्रिय सेविका समझी जाती है और उसके द्वारा किया गया झाड-फूंक नीरोग होने का साधन समझा जाता है। इसी कारण से इन गीतो में बार-बार मालिन का वर्णन मिलता है।

---

[1]एलिमेन्ट्स आव दि साइन्स आव लैंग्वेज।

जब किसी पुरुष के ऊपर शीतला देवी का प्रकोप होता है तब उसके घर वालों को अनेक नियमों का पालन करना पड़ता है जैसे बालों का न कटाना, दाढ़ी का न बनाना, घर में छौंकी न लगाना, साग-भाजी को न छौंकना, जूता न पहिनना, स्त्री का प्रसाधन न करना तथा स्त्री-पुरुष का संग न होना। कहते हैं कि इन नियमों का पालन करने से देवी प्रसन्न होती हैं और रोगी को आरोग्य प्रदान करती हैं। इसलिये उनकी प्रार्थना करना तथा इन उपर्युक्त नियमों का पालन करना नितान्त आवश्यक समझा जाता है।

यहाँ पर माता देवी के जो गीत दिये जा रहे हैं उनमें रोगी को नीरोग कर देने के लिये देवी से प्रार्थना की गई है। रोगी के घर वाले माता से प्रार्थना करते हैं कि ए माता! इसे आरोग्य की भिक्षा दीजिये। एक गीत में स्त्री अपने पुत्र की आरोग्य-कामना के लिये माता से प्रार्थना करती हुई कहती है—

"पटुका पसारि भीखि माँगेली बालकवा के माई।
हमरा के बालकवा भीखी दीं।
मोरी दुलारी हो मइया, हमरा के बालकवा भीखी दीं"॥

अर्थात् कपड़ा—आंचल—फैला कर बच्चे की माता यह प्रार्थना करती है कि ऐ माता! मेरे बालक को भिक्षा दीजिये। चूंकि चेचक का रोग बालकों को ही अधिक हुआ करता है अतः बालकों की रक्षा के लिये की गई प्रार्थना ही अधिक मिलती है। कहीं-कहीं मालिन को झाड़-फूंक के लिये भी कहा गया है। इन गीतों में करुण-रस की मात्रा विशेष रूप से पायी जाती है। अपने प्यारे लाडिले पुत्र को नीरोग कर देने की माता की प्रार्थना किस पाषाण हृदय को नहीं पिघला देती? फिर माता देवी इन प्रार्थनाओं से प्रसन्न क्यों न हों?

नीचे कुछ माता देवी के गीत दिये जाते हैं —

सन्दर्भ—भक्त के द्वारा शीतला माता के वाहन के रंग को पूछना

(१५०)

कवने वरने[1] तोरा घोड़वा ए सीतलि कवना वरने असवार ।
बाँगालिनि देवी हो; लीहींना[4] पुजवा हमार ॥१॥
लाल वरने मोरा घोड़वा ए सेवका; सुरुज वरने असवार ।
भइया रंग रसियारे हाथ ले ले वसिया; नीतील[5] ले ले जोडियाई[6]
बागालिनि देवी हो ॥२॥

कोई सेवक भगवती से पूछ रहा है कि ऐ शीतला माता तुम्हारा वाहन घोड़ा (गधा) किस रंग का है और उस पर चढ़नेवाला अश्वारोही किस रंग का है? ऐ बंगालियों की पूजनीय देवी। तुम मेरी पूजा को स्वीकार करो ॥१॥

इस पर भगवती माता ने उत्तर दिया कि मेरा घोड़ा लाल रंग का है और उस पर चढ़ने वाला सूर्य के समान चमकता हुआ है। तब सेवक कहता है कि मेरा भाई बड़ा प्रेमी है और वह आपको समर्पण करने के लिये एक तित्तिर लिये हुए है। ऐ बंगालिन देवी! उसे स्वीकार करो ॥ २ ॥

शीतला माता की सवारी घोड़ा नहीं बल्कि गधा है। बुरा लगने के लिये सेवक ने शायद उसे घोड़ा कह दिया है। बंगाल सदा से शक्ति-पूजा का केन्द्र रहा है। आज भी बंगाल में काली या भगवती की उपासना प्रधान है। इसीलिये इस गीत में देवी को बंगालियों की देवी कहा गया है ॥

सन्दर्भ—शीतला (चेचक) के प्रचण्ड आक्रमण से पीड़ित बालक की रक्षा के लिये पिता की प्रार्थना देवी से

(१५१)

आँचारा पसार भीख माँगेला; बालाका के बाबा ।
आरे मइया हमरा के; बालकवा भीख दीं ॥१॥

---

[1]वर्ण (रंग)। [2]शीतला माता। [3]घुड़सवार। [4]लो। [5]तित्तिर। [6]जोड़ा (दो)।

मोर मनवा राखवि मइया, हमरा के बालकवा भीख दीं ॥२॥

अब स्पष्ट है। भक्त माता देवी से पुत्र मांग रहा है।

सन्दर्भ—भक्त पुरुष का माता देवी के मन्दिर को स्वच्छ करना

(१५२)

होत भिनुसारावा[1] मुरुगवा,[2] बोलिया बोलवे हो की।
उठ ए देवी बहारीं,[3] राउर मन्दिर हो की ॥१॥
कथि के बढ़निया[4] ए मइया; कथि लागलि मुठियारे[5] की।
कावाना रे रूपे बाहारीं; बउठ मन्दिर हो की ॥२॥
सोने का बढ़निया रे सेवका, रूपे लागल मुठिया हो की ॥३॥

सवेरा होते ही मुर्गा अपनी बोली बोलने लगता है। तब भक्त, माता देवी की प्रार्थना करता हुआ कहता है कि ए देवी! उठो, मैं तुम्हारे मन्दिर को साफ करूँ ॥ १ ॥

ए माता! मैं किस चीज का झाड़ू बनाऊँ और किस वस्तु की मूठ लगाऊँ ॥ २ ॥

देवी ने उत्तर दिया कि सोने का झाड़ू बनाओ, उसमें चाँदी की मूँठ लगाओ। तब मेरे मन्दिर को साफ करो ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—चेचक से पीड़ित पुत्र की रक्षा के लिये माता द्वारा शीतला देवी का आवाहन

(१५३)

केकरा आँगानवा ए मइया, दानावा मड़ुववा हो।
केकरा आँगानवा नीमी गाछि, जोगिया मइया बिलमवि[6] हो ॥१॥

---

[1]सवेरा। [2]मुर्गा। [3]झाड़ दूँ। [4]झाड़ू। [5]मूँठ। [6]विलम्ब करती हो।

बाट बटोहिया हो तुहु मोर भइया।
एहि बाटे देखलो सीतलि[1] मइया हो ॥२॥
मोरी मइया काहाँवा[2] बिलमेलि हो।
देखलों में देखलों हाजीपूर के हटिया[3] में हो ॥३॥

ऐ माता! किसके आँगन में महुआ का अन्न भरा पडा है और किसके आँगन में नीम का वृक्ष है। ऐ माता! तुम मेरे यहाँ आने मे क्यो विलम्ब कर रही हो॥ १॥

वह स्त्री किसी बटोही मे कहती है कि तुम मेरे भाई हो। क्या तुमने शीतला माता को कही देखा है॥ २॥

इसके उत्तर मे वह कहता है कि हाँ हमने हाजीपुर के बाजार मे देखा है॥ ३॥

सन्दर्भ—बन्ध्या स्त्री की शीतला देवी से पुत्र देने की प्रार्थना

((१५४)

चारु ओरिया जल थल, बीचवा गम्हीरवा ए देवी हो।
ताहि बीच मदिरवा तोहार, दुःखवा हर देवी हो ॥१॥
ऊँच रे मदिलवा के नीची रे दुवरिया हो,
मइया मोती जड़ल वा केवार ॥२॥
सासु मारे हुदुका ननदिया पारे गारी हो मइया;
गोतिनी बँझिनिया धइली नाव ॥३॥
मोर गोद भरनी मइया, गोतिनी बँझिनिया धइली नांव ॥४॥

चारो ओर जल है और बीच में गहरा पानी है। ऐ दुःख को हरने वाली देवी! उमी के बीच में तुम्हारा मन्दिर है॥ १॥

ऐ माता! तुम्हारे ऊँच मन्दिर का दरवाजा बहुत नीचा है और उसमे मोती के दरवाजे जडे हुए है॥ २॥

---

[1]शीतला। [2]कहाँ। [3]बाजार॥

मेरी सास मुझे सताती है और ननद मुझे गाली देती है। मेरी रात-दिन मुझे बन्ध्या कहकर पुकारती है॥३॥

हे मेरी गोदी को भरने वाली माता! मेरा नाम बन्ध्या पड़ गया है अब मुझे पुत्र दो॥४॥

सन्दर्भ—शीतला के प्रसन्नार्थ भक्त स्त्री का विभिन्न पदार्थ उपहार में देना

(१५८)

लेई आउ सकर[1] लडुवा[2], आरे लेइ आउ दुधवा हो।
आरे लेइ आउ लीली[3] चढ़ेड़वा; जइबों मइया दुरिया[4] हो॥१॥
कहाँ पइवों सकर लडुवा, कहाँ पइवों[5] हम दुधवा हो।
आरे कहाँ पइवो लीली चढ़ेड़वा, जइबु मइया दुरिया हो॥२॥
हलुवइया[6] घर के सकर लडुवा, आरे अहिरा[7] घर के दुधवा हो।
आरे छतिरी[8] घर के लिली चढ़ेड़वा, जइहें मइया दुरिया हो॥३॥
बान्हल बाड़े सकर लडुवा, आरे अँवटल बाड़े दुधवा हो।
आरे लिहली[10] बाड़ी लिली चढ़ेड़वा; जइबु मइया दुरिया हो॥४॥

माता देवी अपनी भक्तिन से कह रही हैं कि मेरे लिए चीनी के लड्डू और दूध ले आओ तथा मेरे चढ़ने के लिये एक घोड़ी लाओ क्योंकि मुझे दूर जाना है॥१॥

तब भक्तिन कहती है कि ए माता! मैं शक्कर का लड्डू और दूध कहाँ पाऊँगी तथा आपके चढ़ने के लिये घोड़ी कहाँ से लाऊँगी॥२॥

इस पर देवी जी उत्तर देती हैं कि हलुवाई के यहाँ से शक्कर के लड्डू लाओ, अहीर के यहाँ से दूध लाओ और क्षत्री के घर से घोड़ी लाओ॥३॥

भक्तिन जाकर उक्त स्थानों से ये चीजें लाई। तब वह देवी से कहती है कि आपके लिये लड्डू बँधा हुआ तैयार रक्खा है, दूध गरम किया गया है और घोड़ी बँधी है। हे माता आप मजे से अब जा सकती है॥४॥

---

[1]शक्कर। [2]लड्डू। [3]घोड़ी। [4]दूर। [5]पाऊँगी। [6]हलुवाई। [7]अहीर। [8]क्षत्री। [9]गर्म किया गया है। [10]लिया गया है।

सन्दर्भ—भक्त पुरुष का शीतला माता को अपने घर रखने के लिये उनसे प्रार्थना

(१५६)

घोड़वा के पाग[1] धइले; ठाढ भइले कवन राम।
आरे मइया हमरा घर; लिहिना[2] बसेढ[3] ॥१॥
को तोरा बालक घोडवा; घासि कटिहें।
केई तोरा मइया के; आरती उतरिहे ॥२॥
हम राउर बालक घोड़वा घासि काटवि।
बहुवा[4] हमार राउर; आरति उतरिहे ॥३॥

जब माता घोडे पर सवार होकर अपने स्थान को जाने लगी तब किसी भक्त ने उनसे कहा कि ऐ माता! आप मेरे घर मे आकर वास लीजिये (रहिये) ॥ १ ॥

तब माता देवी ने उत्तर दिया कि मेरे घोडे के लिये कौन घास काटेगा और मेरी आरती कौन उतारेगा ॥ २ ॥

तब भक्त ने उत्तर दिया कि मैं आपका बालक हूँ। मै आपके घोडे के लिये घास काटूंगा और मेरी स्त्री आपकी आरती उतारेगी ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—शीतला माता को अपने घर बुलाने के लिये किसी स्त्री की प्रार्थना

(१५७)

कथि[5] बिनु सुन भइली बगिया; कथिय बिनु आँगन हो।
कथि बिनु सुन[6] देव घरवा; घारावा हमरो ना भावे[7] हो।
कोइलरि बिनु सून भइली बगिया; बालकवा बिनु आँगन हो।
ए मइया रउरा बिनु सुन देव घरवा, घारावा हमरो न भावे हो ॥२॥

---

[1]लगाम। [2]क्यो नही लेती। [3]निवास। [4]वधू। [5]किस वस्तु। [6]शून्य [7]अच्छा लगता है।

कोइलरी¹ बोले लागली बोलिया; बालकवा डुरे² आँगन हो।
ए मइया रउरा ना गरजीं देव घरवा, हमरो दीप जरेला हो ॥३॥

कोई स्त्री अपने सखी से कह रही है कि किस वस्तु के बिना मेरा घर और आँगन सूना पडा हुआ है। मेरा घर क्यो सूना है? मुझे यह घर अच्छा नहीं लगता॥ १॥

तब सखी ने उत्तर दिया कि कोयल के बिना बाग, बालक बिना आँगन और माता देवी के बिना घर सूना लगता है॥२॥

सखी से वह स्त्री कहती है माता देवी के प्रसाद से मेरे बगीचे में कोयल बोलने लगी। आँगन में अब लडका खेल रहा है। ऐ माता! मेरे घर में दीप जल रहा है, आप आकर अब रहिये॥ ३॥

सन्दर्भ—वन्ध्या स्त्री की पुत्र-प्राप्ति के लिये शीतला से प्रार्थना

(१५८)

काहे लागी ठाढ़ भइली, बारी भगतिया³ ए मइया।
आवाला मोरी जोगिनिया⁴ ए मइया; काहें लागी ठाढ ॥१॥
काहे लागी ठाढ़—टेक

जस⁵ लेहु ठाढ भइली बारी भगतिया ए मइया, पूत⁶ लागी ठाढ़।
आवाला मोरी मन राखनी⁷ मइया, के पूत लागी ठाढ ॥२॥
आन्हारा⁸ के आँख देहु, कोढिया के काया देहु; बाझिनि के पूत देहु जी।
जस लेहु जस लेहु भगतिया ए मइया, पूत लागी ठाढ ॥३॥

माता देवी के द्वार पर बहुत सी भक्तिन खडी हैं। तब देवी उनसे पूछती हैं कि तुम लोग यहाँ क्यो खडी हो॥ १॥

एक भक्तिन इनका उत्तर देती हुई कहती है कि ऐ माता! हम लोग पुत्र-प्राप्ति के लिये खडी हैं। ऐ भक्तो की इच्छाओ की पूर्ति करने वाली माता! आप हमें पुत्र देकर यश की भागी बनिये॥ २॥

¹कोयल। ²खेलना है। ³भक्तिन। ⁴योगिनी। ⁵यश। ⁶पुत्र। ⁷मन को रखने वाली अर्थात् मन की इच्छाओ की पूर्ति करने वाली। ⁸अन्धा।

आप अन्धो को आँख दीजिए, कोढी को सुन्दर शरीर दीजिये और वन्ध्या स्त्री को पुत्र दीजिये। ऐ माता आप हमें पुत्र देकर यश प्रप्त कीजिये ॥३॥

सन्दर्भ--शीतला माता के द्वारा वाटिका में पुष्प-चयन

(१५९)

सिंकिया[1] ही चीरि मइया करेली दिउलिया[2];
आरे बीनेली[3] पचरंग डलिया रे ना ॥१॥
डलिया ही लेइ मइया चलली फुलवरिया;
आरे लोहेंली[4] चम्पा के फुलवा रे ना ॥२॥
फूलवा लोहीं मइया भरेली चंगेलिया[5];
आरे आइ गइलि मालिनि बिटिया रे ना ॥३॥
रोवेले मालिनि बिटिया, धुनेले कपारवा[6];
आरे फुलवा के कइलु विधनसवा[7] रे ना ॥४॥
जनि रोउ मालिनि बिटिया, जनि धुनु कपरा;
आरे बिहने[8] से उगिहे[9] काचानारवा[10] रे ना ॥५॥

पतली सीको को चीर करके माता देवी ने स्वय पाँच रग की एक डाली बीन कर तैयार किया॥ १॥

उस डाली को लेकर वे फुलवारी मे चली गई और चम्पा का फूल चुनने लगी॥ २॥

जब उन्होने फूल चुनकर अपनी टोकरी भर ली, उसी समय मालिन की लड़की वहाँ आगई॥ ३॥

वह यह दृश्य देखकर रोने लगी तथा अपना सिर पीटने लगी और उसने माता देवी से कहा कि आपने मेरे बगीचे को आज विध्वस कर दिया॥ ४॥

---

[1]सीक। [2]पतली। [3]तैयार किया। [4]चुनती है। [5]टोकरी। [6]सिर। [7]विध्वस, नष्ट करना। [8]सवेरे। [9]खिलेगा। [10]कचनार का फूल,।

तब माता देवी ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा कि ऐ मालिन की पुत्री रोओ मत और अपना सिर मत पीटो। कल सवेरे ही तेरे बगीचे में कचनार के फूल खिल जायेंगे॥ ५॥

सन्दर्भ—बेला का रस चूस कर भौंरे का शीतला के पास जाना

(१६०)

केकरा[1] हि आँगाना बेइलिया[2] बेइलिया हो लाल।
रसे[3] ही रसे रस चुवे, रसकलिया[4] हो लाल॥१॥
मलिया आँगनवा ऐ सेवका, बेइलिया हो लाल।
रसे रसे रस चुवे; रसकलिया हो लाल॥२॥
रसे ही रसे रस पीये ले; भँवारा मतवलवा हो लाल।
माती[5] गइले सीतली मइया के, दरवरवा हो लाल॥३॥

कोई स्त्री पूछ रही है कि किसके आँगन में बेला का फूल खिला है। उससे रस धीरे-धीरे चू रहा है॥ १॥

तब कोई स्त्री कहती है कि माली के आँगन में बेले का फूल खिला है। उससे रस चू रहा है॥ २॥

भँवरा धीरे-धीरे उसके रस को चूस कर पीता है तथा पीकर मतवाला हो जाने पर माता देवी के समीप जाकर घूमता फिरता रहता है॥ ३॥

सन्दर्भ—अपनी प्रबल भक्ति के कारण मालिन के द्वारा शीतला की कृपा से पुनः पुत्र प्राप्ति

(१६१)

सँउसे[6] नगर मइया घुमि फिरि अइलों, केहुना[7] जागेला सारी राती।
एक त जागेले मालिनि बिटिया; हारावा गुथेले सारी राती॥१॥

---

[1]किसके। [2]बेला का वृक्ष। [3]धीरे-धीरे। [4]रस से भरी कली। [5]मतवाला हो गया। [6]समग्र, सब। [7]कोई नहीं।

मोहि तोहि पूछेले मालिनि बिटिया; गोद के बालाकवा काइ[1] भइले।
गोद के बालाकवा मइया इवे बदमसवा[2]; खेलन गइले रनबनवा॥२॥
गोद के बालाकवा मालिनि हम भछि[3] गइलीं; रोदन के मत करु
पवनार[4] ॥३॥

रोवति जाले मालिनि बिटिया, हकरत[5] जाला मलहोरिया।
चुप होखु चुप होखु मालिनि बिटिया; फेनसे[6] बालक तोहिं देवहु ॥४॥
हँसति आवेले मालिनि बिटुइया; बिहँसत[7] आवे मलहोरिया[8] ॥५॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैंने सारे नगर में घूम फिर कर देख लिया कोई सारी रात नहीं जगा है। एक केवल मालिन की लडकी फूल की माला गूँथती हुई सारी रात जग रही है॥ १॥

माता देवी उससे पूछती है कि तुम्हारी गोद का बालक क्या हुआ? तब मालिन उत्तर देती है वह लडका बदमाश था और किसी कारण मर गया॥ २॥

इस पर माता देवी कहती है कि मैंने तेरे लडके को खा लिया है। तुम रोओ नहीं॥ ३॥

मालिन की लडकी रोती जाती है और माली विलाप कर रहा है। तब माता देवी कहती है कि ऐ पुत्री! तुम रहो मैं फिर से तुम्हे पुत्र दूँगी॥४॥

इस पर मालिन की लडकी अत्यन्त प्रसन्न हो गई और माली विहँसने लगा (क्योंकि माता के प्रसाद से उसकी लडकी ने पुत्र-रत्न को प्राप्त किया) ॥५॥

सन्दर्भ—झूले पर झूलती हुई प्यासी शीतला को मालिन का पानी पिलाना तथा प्रसन्न होकर माता का आशीर्वाद

(१६२)

नीमिया[9] की डाढ़ी[10] मइया लावेली हिलोरवा[11];
कि झुलि झुलि मइया गावेली गीत ॥१॥

[1]क्या हो गया। [2]बदमाश। [3]भक्षण कर दिया। [4]अधिक जल। [5]विलाप करना। [6]फिर से। [7]हँसना। [8]माली। [9]नीम। [10]शाखा। [11]झूला।

झुलत झुलत मइया का लगली पियसिया[1];
कि चलि भइली मलहोरिया[2] आवास ॥२॥
सुतलु बाड़ु[3] कि जागलि ए मालिनि;
उठि के मोहि के पनिया पिआउ[4] ॥३॥
कइसे में पनिया पियावों ए सीतली मइया,
मोरा गोदी बाड़े लरिका[5] तोहार ॥४॥
मोरा गोदी लरिका सुताउ ए मालिनि,
तब उठि पनिया पिआउ ॥५॥
मालिनि उठि के एक हाथ लेले झझर पनिया,
दूसर हाथ गेडुवा जुड हो पानी ॥६॥
अब बइठि पनिया पियहु ए सीतली मइया;
बोलुना नगर कुसलात[6] ॥७॥
तोहरी नगरिया मालिनि कुसल से बाटे,
कुसल मालिन चाहिले तोहार ॥८॥
जइसनि मालिनि हमें जुडवलु[7];
कि ओइसन[8] तोरि पतोहिया[9] जुडासु ॥९॥
धियवा त बाडी मइया आपाना ससुरवा;
पतोहिया मोर आपन नइहरवा ॥१०॥
धियवा जुडासु मालिन आपन ससुरवा;
पतोहिया तोर[10] जुड़ासु नइहरवा ॥११॥

नीम के पेड की शाला पर माता देवी ने झूला लगाया और उस पर झूल-झूलकर गीत गाने लगी ॥ १ ॥

झूलते-झूलते माता को प्यास लग गई और वे पानी पीने एक मालिन के घर चली गई ॥ २ ॥

---

[1]प्यास। [2]मालिन। [3]हूँ। [4]पिलाओ। [5]लड़का। [6]कुशल समाचार। [7]सन्तुष्ट कर दिया। [8]उसी प्रकार। [9]पुत्रवधू। [10]तुम्हारा।

वहाँ जाकर माता ने मालिन से पूछा कि तुम सोई हो अथवा जगी हो ? मुझे उठकर पानी पिलाओ ॥ ३ ॥

मालिन ने उत्तर दिया कि आपके प्रसाद से प्राप्त किया गया मेरी गोदी मे एक बालक है। इसलिये मैं आपको पानी कैसे पिला सकती हूँ ॥ ४ ॥

माता देवी ने कहा कि मेरी गोदी मे बालक को सुला दो और तब उठ कर मुझे पानी पिलाओ ॥ ५ ॥

तब मालिन ने उठकर एक हाथ मे झझर का पानी लिया और दूसरे हाथ मे ठडा पानी लिया ॥ ६ ॥

उसने माता से कहा कि अब आप जल पीजिये और मेरी नगरी का कुशल समाचार कहिये ॥ ७ ॥

माता ने कहा कि ऐ मालिन तुम्हारे नगर में सब कुशल है और मै तुम्हारा कुशल चाहती हूँ ॥ ८ ॥

ऐ मालिन ! तुमने जल पिलाकर जैसे मुझे सन्तोष प्रदान किया है उसी प्रकार से तुम्हारी पुत्रवधू सन्तुष्ट हो ॥ ९ ॥

मालिन ने कहा ऐ माता मेरी लडकी अपनी ससुराल है और पुत्र-वधू मायके में है ॥ १० ॥

माता ने कहा कि ऐ मालिन तुम्हारी लडकी अपनी ससुराल मे सुख पूर्वक रहे और तुम्हारी पुत्रवधू मायके मे सन्तुष्ट रहे ॥ ११ ॥

शीतला माता की पुजारिन मालिन समझी जाती है। जब कभी शीतला माता का प्रकोप होता है तब मालिन ही आकर झाड फूंक करती है। अत॰ दोनो में बडा घनिष्ट सबध है। इसलिये इस गीत में प्यासी हुई शीतला देवी का पुजारिन मालिन के घर जाने का वर्णन किया गया है।

सन्दर्भ—शीतला माता की कृपा से बन्ध्या स्त्री की पुत्र-प्राप्ति का वर्णन

(१६३)

सिकिया चिरिय चिरि बीन लों डलियवा हो।
आरे डलिया लिहले ठाढ, भइलों मइया दरबरिया हो ॥१॥

सव के डलियवा ए मइया; आरे लिहलू परीछी हो।
आरे हमरी अभागिन के डलिया; काहें फिरि[1] आइलि हो ॥२॥
आरे आरे बाँझि[2] तिरियवा; आरे डलिया तो असुद्ध हो।
आरे तोहारे असुधवा[3] ए बाँझिनि; आरे डलिया तोर असुद्ध हो ॥३॥
पइसबि[4] ननन[5] वनवा; आरे छेवइबि[6] चानानावा[7] हो।
आरे चिरियां[8] साजि मरबों; मइया अपजस[9] तोरा होई हो ॥४॥
जनि पइसु ननन वनवा; जनि छेवु चानानावा हो।
आरे चिरिया साजि जनि जरहु; अपजस जनि देहु हो ॥५॥
आरे आरे बाँझि तिरियवा; आरे जनि रोई मरहु हो।
आरे आपन वालाकवा ए बाँझिनि; तोहरा के देबों हो ॥६॥
पनिया भरत भरत ए मइया; चनिया[10] खियाइल[11] हो।
आरे देव घर लिपत[12] ए मइया, हथवा खियाइल हो ॥७॥
आरे तव हू ना छुटेले ए मइया; बाँझिनि केरि नंइया[13] हो ॥८॥
सूतल[14] देवमुनि आरे उठेले चिहाइ[15] हो।
आरे कवना चरित्रे[16] ए मइया; बाँझिनि घरवा वालक हो ॥९॥
का तुहुँ देव मुनि आरे उठल चिहाइ हो।
आरे मइया का चरित्रे ए देवमुनि; बाँझिनि घरवा वालक हो ॥१०॥

कोई वन्ध्या स्त्री पुत्र की प्राप्ति के लिये शीतला माता का व्रत करके उनकी पूजा के लिये सामान एकत्रित करती हुई कह रही है कि मैंने सींक को पतली पतली चीर करके एक डाली तैयार किया है। मैं उस डाली को लेकर शीतला माता के दरवार में गई और वहाँ जाकर खड़ी हो गई ॥ १ ॥

वह स्त्री कहती है कि ऐ माता तुमने सब की डाली को स्वीकार कर लिया लेकिन मुझ अभागिन की डाली को तुमने क्यों लौटा दिया ॥ २ ॥

---

[1]लौट आई। [2]वन्ध्या। [3]अशुद्ध होने से। [4]प्रवेश करूँगी। [5]नन्दन वन। [6]काटूँगी। [7]चन्दन। [8]चिता। [9]अपयश। [10]सिर का ऊपरी भाग। [11]घिस गया। [12]लीपते लीपते। [13]नाम। [14]सोते हुए। [15]आश्चर्यित होकर। [16]प्रभाव।

इस पर माता कहती है कि ऐ वन्ध्या स्त्री! तुम्हारी डाली अशुद्ध है। चूंकि तुम्हें लड़का नही है अत तुम अशुद्ध हो और इसी कारण से तुम्हारी डाली भी अशुद्ध है॥ ३॥

तब स्त्री कहती है कि आज मैं नन्दन वन में जाकर चन्दन का वृक्ष काटूंगी और अपनी चिता बनाकर मैं उसमें जल मरूंगी। इस प्रकार ऐ माता! आपको बहुत बड़ा अपयश मिलेगा॥ ४॥

माता ने उत्तर दिया कि तुम नन्दन वन मे मत जाओ, चन्दन के पेड़ मत काटो और अपनी चिता जलाकर मत जलो। तुम मुझे अपयश मत दो॥ ५॥

ऐ वन्ध्या स्त्री! तुम रो-रो कर मत मरो। मैं अपना पुत्र तुम्हें दूंगी॥६॥

तब स्त्री ने कहा कि पुत्र-प्राप्ति के लिये ऐ माता! पानी भरते-भरते मेरा सिर घिसकर चिकना हो गया। देवता का घर लीपते-लीपते मेरा हाथ घिस गया॥ ७॥

तौ भी ऐ माता! पुत्र न होने के कारण मेरा वन्ध्या नाम नही गया अर्थात् लोग मुझे वन्ध्या कहते ही रहे॥ ८॥

इस प्रार्थना से माता प्रसन्न हो गई और उन्होने तत्काल उस स्त्री को एक पुत्र-रत्न दिया। इस अलौकिक बात को देखकर देवता और मुनि आश्चर्यित हो उठे और उन्होने माता देवी से पूछा कि किस अलौकिक चरित्र के कारण इस वन्ध्या स्त्री के घर बालक पैदा हुआ है॥ ९॥

तब माता ने उत्तर दिया कि आप लोग आश्चर्यित क्यो हो रहे है। माता देवी के चरित्र अथवा प्रभाव के कारण ही इस वन्ध्या स्त्री को पुत्र-रत्न पैदा हुआ है॥ १०॥

इस गीत मे किसी वन्ध्या स्त्री की दुर्दशा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है। घर की स्त्रियाँ तो उसे वन्ध्या कहकर पुकारती है बल्कि माता देवी जैसी देवता भी उसे अशुद्ध तथा अछूत समझती है और उसकी डाली स्वीकार नही करती। अन्त में वह स्त्री आत्महत्या करने के लिये तैयार हो जाती है। पुत्र-प्राप्ति के लिये उसकी कठोर तपस्या अत्यन्त

मर्मस्पर्शी है। अपने वन्ध्या नाम को दूर करने के लिये उनका चित्त अत्यन्त व्याकुल है जो स्वाभाविक ही है।

सन्दर्भ—चेचक से पीड़ित बालक को नीरोग करने के लिए शीतला देवी से माता की प्रार्थना

(१६४)

मइया दाया ना करीं। टेक—
कहँवा[1] उपजेला मइया के झालरी[2] बिरवा ए मइया।
काहँवा उपजेला बँगाला[3] पान; मइया दाया ना करीं ॥१॥
कुरुखेते[4] उपजेला मइया के झालरी बिरवा ए मइया।
मलिये बगीये उपजेला[5] बँगाला पान ॥२॥ मइया दाया॰
कइसे पटइबो[6] तोर झालरि बिरवा ए मइया।
कइसे पटइबो बँगाला पान ॥४॥ मइया दाया॰
पनिये पटइबों मइया के झालरि बिरवा।
दुधवे पटइबों बागाला पान ॥३॥ मइया दाया॰
रूपे छुडिया[7] कटइबों मइया झालरि बिरवा।
सोने छुडिया कटइबों बँगाला पान ॥५॥ मइया दाया॰
केई मोरा खइहें मइया झालरि बिरवा।
केई मोरा खइहें बँगाला पान ॥६॥ मइया दाया॰
बचवा[8] जे खइहें मइया झालरि बिरवा हो।
सीतली[9] मइवा खइहें[10] बागाला पान ॥७॥ मइया दाया॰

कोई भक्त स्त्री माता देवी से प्रार्थना करती हुई कहती है कि झालरी पौवा और पान कहाँ उत्पन्न होता है॥ १॥

माता देवी उत्तर देती है कि कुरुक्षेत्र में झालरि बिरवा उत्पन्न होता है और माली के बगीचे में पान पैदा होता है॥ २॥

---

[1]कहाँ। [2]एक प्रकार का पौवा। [3]बगाल का पान। [4]कुरुक्षेत्र। [5]———— [6]सींचूंगी। [7]चाकू। [8]लडका। [9]शीतला। [10]खायेंगी।

ऐ माता ! मैं इस पौधे और पानी को कैसे सीचूंगी। माता ने कहा कि पानी से इस पौधे को सीचना और दूध से इस पान को सीचना ॥ ३४ ॥

ऐ माता ! मैं चाँदी के चाकू से इस पौधे को काटूंगी और सोने के चाकू से इस पान को काटूंगी। लेकिन इस पौधे तथा पान को कौन खायेगा ॥ ५। ६ ॥

फिर वह स्त्री स्वत उत्तर देती है कि मेरा लडका इस पौधे को खायेगा और शीतला माता जी इस पान को खायेगी ॥ ७ ॥

सन्दर्भ—वन्ध्या स्त्री का मार्मिक दुःख तथा शीतला की कृपा से पुत्र-प्राप्ति

(१६५)

ससुरा के रूसलि[1] तिरिया; आरे नइहर चलले जाले हो।
आरे ताहि बीचे सीतली[2] हो मइया, खेलसु मन्दिलवा में हो ॥१॥
किया[3] तोरे आहो ए तिरिया, सासु दुःख दिहली हो।
किया तोरे आहो तिरिया, सामी गइलें विदेसवा हो ॥२॥
आरे कवना कारनवे ए तिरिया; नयेना ढरे लोरवा[4] हो ॥३॥
नाहीं मोरा आहो ए मइया, सासु दुःखवा दिहली हो।
नाहीं मोरा आहो ए मइया; सामी[5] गइले विदेसवा हो ॥४॥
आरे कोखिया[6] कारनवे[7] ए मइया; हम बउरइनीं[8] हो।
आरे निरवे[9] ढरत नयेनवा; रहतियो[10] ना सूझेला हो ॥५॥
बालाकावा हम देवों ए तिरिया; आरे गोदवा भरि देवों हो।
आरे हमरा के आहो ए तिरिया; किया तू चढइबु[11] हो ॥६॥
आरे हमरा के पूजवा ऐ तिरिया; किया तू चढइबु हो ॥७॥
बालाका जाहु देवू[12] ए मइया, आरे गोदवा भरि देवू हो।
आरे तोहरा के आहो ए मइया, जइया[13] से पूजबि हो ॥८॥

---

[1]क्रुद्ध। [2]शीतला माता। [3]क्या। [4]आँसू। [5]स्वामी [6]कोख। [7]कारण। [8]बावली। [9]आँसू। [10]रास्ता। [11]चढाओगी। [12]दोगी। [13]जई। [14]पूजूंगा।

ससुराल से कोई स्त्री क्रुद्ध होकर अपने मायके चली आ रही थी। इसी बीच में उसने शीतला देवी का मन्दिर देखा जिसमें माता देवी खेल रही थीं ॥ १ ॥

माता देवी ने उस स्त्री से पूछा कि क्या तुमको सास ने दुःख दिया है अथवा तुम्हारा स्वामी (पति) परदेश चला गया है ॥ २ ॥

माता ने पूछा ऐ स्त्री! किस कारण तुम्हारी आँखों से आँसू गिर रहे हैं ॥ ३ ॥

स्त्री ने उत्तर दिया कि ऐ माता! न तो मेरी सास ने मुझे दुःख दिया और न मेरा पति ही परदेश गया है ॥ ४ ॥

ऐ माता! पुत्र न होने के कारण से ही मैं बावली हो रही हूँ। मेरी आँखों से आँसू गिर रहे हैं और इस कारण मुझे रास्ता भी नहीं सूझ रहा है ॥ ५ ॥

तब माता देवी ने उसके दुःख से द्रवित होकर कहा कि ऐ स्त्री! मैं तुम्हें पुत्र-रत्न देकर तुम्हारी गोद भर दूँगी। परन्तु तुम मुझे क्या चढ़ाओगी और मुझे क्या पूजा दोगी ॥ ६ ॥ ७ ॥

स्त्री ने कहा कि ऐ माता यदि आप मुझे पुत्र देंगी तो मेरी गोदी भर जायेगी और ऐ माता! मैं तुम्हें भीगे हुए चने से पूजूँगी ॥ ८ ॥

इस गीत में पुत्र-विहीन स्त्री की दुर्दशा का पूरा बहुत ही करुणा-जनक चित्र खींचा गया है। पुत्र न होने से इस स्त्री की आँख से आँसुओं की झड़ी लगी हुई है। कितना कारुणिक दृश्य है। वास्तव में हिन्दू समाज में स्त्री का वन्ध्या होना एक अभिशाप है। इसीलिये यह स्त्री माता देवी की प्रार्थना करती है और अन्त में पुत्र-रत्न प्राप्त कर प्रसन्न होती है।

१०. झूमर

झूमर उन मिश्रित गीतो को कहते हैं जो विभिन्न अवसरो पर गाये जाते हैं। कभी तो ये यज्ञोपवीत के अवसर पर सुनाई पडते है और कभी विवाह के अवसर पर गाये जाते हैं। इसीलिये इनको जनेऊ तथा विवाह के गीतो से मैंने पृथक् कर दिया है। विषय की दृष्टि से विचार करने पर यद्यपि ये विवाह के गीतो के अन्तर्गत आ सकते हैं परन्तु इन गीतो मे अन्य विषयो का भी मिश्रण होने के कारण विवाह के अन्तर्गत इन्हें रखना मैंने उचित नही समझा।

झूमर के गीतो मे सयोग तथा वियोग दोनो प्रकार के शृगार का वर्णन पाया जाता है। कही पर पति के साथ भोग-विलास करने का वर्णन पाया जाता है तो कही पर वियोग के कारण विरह-विधुरा स्त्री का प्रलाप पाषाण-हृदय को भी पिघला देता है। पति के परदेश जाते समय एक स्त्री का अपने पति से निवेदन कितना मर्मस्पर्शी है।

"पियवा जे चलेला उतरि वनिजरिया, कि केई रे छइहे ना।
मोरा उजड़ल बँगलवा, कि केई रे छइहे ना॥"

जहाँ पर वियोग की विषाद-रेखा नही है वहाँ पर बडे ही मनोरजक भाव देखने को मिलते है। अपनी नाक की झूलनी के भूल जाने पर कोई स्त्री कहती है कि —

"ना जानो यार झूलनी मोरा कहाँ गिरा।
पनिया भरन जाऊँ राजा ना जानो,
वहाँ गिरा न जानो, यहाँ गिरा ना जानो॥"

कही पर सयोग और वियोग के पचडे को छोडकर हम किसी बाजार का रोचक वर्णन इन गीतो मे पाते है। जैसे—

'कदम बजार में क्या क्या विकतु है,
एक निबुआ, एक अनार दिल जनिया।
काहे करन को निबुआ बिकतु है,
काहे करन को अनार दिल जनिया।'

यहाँ पर कुछ चुने हुए झूमर पाठको के सन्मुख प्रस्तुत किये जाते है—

सन्दर्भ—परदेश जाते हुए पति से स्त्री की प्रार्थना तथा दुष्ट देवर की निन्दा

(१६६)

पियवा जे चलेला उतर बनिजरिया,[1] कि केई रे छइहें[2] ना।
मोरा उजड़ल बँगलवा, कि केई रे छइहें ना ॥१॥ टेक
घरवा त बाड़ी घनी छोटका रे भइया; कि उहे छइहें ना।
तोरा उजड़ल बँगलवा कि उहे छइहें ना ॥२॥
देवरा के छावल मन ही ना भावे,[3] कि तीलि[4] तीलि ना।
देवर बूना[5] टपकावे, कि तीलि तीलि ना ॥३॥
जब तुहुँ ए पिया जइब बिदेसवा, कि केई रे सोइहें ना।
मोरा डासलि[6] सेजिया, कि केई रे सोइहें ना ॥४॥
घरवा त बाड़े घनी छोटका देवरवा, कि उहे रे सोइहें ना।
तोरी डासलि सेजिया, कि उहे रे सोइहें ना ॥५॥
देवरा के सोवला मन ही ना भावे कि तीलि तीलि ना।
देवरा डाँड़वा[7] चलावे, कि तीलि तीलि ना ॥६॥
जब तुहुँ ए पिया जइब बिदेसवा कि केई रे चभिहें[8] ना।
मोरा लावल बिरवा, कि केई रे चभिहें ना ॥७॥
घरवा त बाड़े घनी छोटका देवरवा, कि उहे[9] रे चभिहें ना।
तोरा लावल बिरवा, कि उहे रे चभिहें ना ॥८॥
देवरा के चाभल मन ही ना भावे, कि तीलि तीलि ना।
देवर मुसुकि[10] चलावे, कि तीलि तीलि ना ॥९॥

---

[1]बनजारा, व्यापार करने के लिये। [2]मरम्मत करेगा। [3]अच्छा लगता है। [4]बार बार। [5]बूँद। [6]बिछायी हुई। [7]कमर। [8]खायेगा। [9]वही। [10]मुस्करा करके।

किसी स्त्री का पति परदेश जा रहा है। तब वह स्त्री कह रही है कि पति उत्तर देश को वाणिज्य कर्म अर्थात् व्यापार करने को जा रहा है। मेरे उजड़े हुए बंगले की कौन मरम्मत करायेगा॥ १॥

तब पति ने उत्तर दिया कि घर में मेरा छोटा भाई है। वही तुम्हारे उजड़े हुए बँगले की मरम्मत करा देगा॥ २॥

स्त्री ने कहा कि देवर के द्वारा की गई मरम्मत मुझे अच्छी नही लगती क्योंकि बँगला मरम्मत करने पर भी चूना रहता है और उससे बूँद गिरा करती है॥ ३॥

स्त्री ने फिर पूछा कि जब तुम विदेश जाओगे तब मेरे पास कौन सोवेगा। मेरी बिछाई हुई सेज को कौन सुशोभित करेगा। पति ने कहा कि घर में तुम्हारा देवर है वही तुम्हारे साथ सोयेगा॥ ४। ५॥

इस पर स्त्री ने उत्तर दिया कि देवर के साथ सोना मुझे अच्छा नही लगता। वह मेरे मन को नही भाता। क्योंकि वह सुरत अवसर पर बार बार अपने डाँर (कमर) को चलाया करता है॥ ६॥

स्त्री ने फिर पूछा कि जब तुम विदेश जाओगे तब मेरे द्वारा लगाये गये पान के बीड़े को कौन खायेगा। पुरुष ने कहा कि घर में तुम्हारा छोटा देवर है। वही उस पान को खायेगा॥ ७। ८॥

स्त्री ने उत्तर दिया कि देवर का पान खाना मुझे अच्छा नही मालूम होता। क्योंकि वह बार-बार मुझे देख कर मुसकराता रहता है॥ ९॥

सन्दर्भ—पति के धन कमाने पर स्त्री का शृङ्गार तथा धन न रहने पर शृङ्गार का अभाव

(१६७)

जब रे सोनरवा के लगली नोकरिया, उठावे लगले कोठा बँगलवा रे।
सियावे लगले चोली बन्द अँगिया, गढ़ावे लगले बाजुबन
अँगिया रे॥१॥
जब रे सोनरवा के छुटली नोकरिया; ढाहाएं लगले कोठा बांगाला रे।
बेचाये लगले चोली बन अँगिया रे, तुरावे लगले बाजुबन तिलरी रे।२।

जब सोनार की नौकरी लग गई तब वह कोठा और बँगला उठाने लगा। अपनी स्त्री के लिये चोली सिलाने लगा और बाजूबन्द गढ़ाने लगा॥ १॥

जब सोनार की नौकरी छूट गई तब वह गरीबी के मारे कोठा और बँगला ढहाने लगा, और उसने चोली बेंच दी तथा हाथ का बाजूबन्द तुड़वा दिया॥ २॥

सन्दर्भ—पत्नी की पति से सुन्दर घर बनाने की प्रार्थना

(१९८)

चार महीना जाडाकाल पड़तु है, थर थर काँपे करेजवा।
बलमु[1] जड़ा कोठा उठा दो जी॥१॥
चार महीना गरमी पड़तु है, टप टप चुवेला[2] पसेनवा।
बलमु जड़ा[3] पंखा डोला[4] दो जी॥२॥
चार महीना बरसात पड़तु है, टप टप चुवेला बुनवा[5]।
बलमु जड़ा बंगला छवादो[6] जी॥३॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि चार महीना सख्त जाडा पड़ता है और मेरा कलेजा थर-थर काँपता है। अतएव ऐ पति! मेरे लिये एक कोठा उठा दो जिसमें मैं सुख-पूर्वक रह सकूँ॥ १॥

वह फिर कहती है कि चार महीना गर्मी पड़ती है और टप-टप पसीना चूता रहता है। ऐ पति! जरा पखा झला करो॥ २॥

चार महीने तक वर्षा होती रहती है। वर्षा के कारण पानी की बूंदे गिरती रहती हैं। घर मे रहने का स्थान नहीं है अतएव ऐ पति! मेरे बँगले की मरम्मत करवा दो जिससे सुख पूर्वक रहूँ॥ ३॥

---

[1]पति। [2]चूता है, गिरता है। [3]जरा। [4]हिलाना। [5]पानी की बूँदें। [6]मरम्मत करा दो॥

सन्दर्भ--प्रोषितपतिका का विरह वर्णन

(१६९)

आकडि फोरि फोरि महला उठवलों, कंचन के दरवाजा हो।
नाहिं आवे नाहिं आवे; नाहिं आवे सहिजादा[१] हो ॥१॥
आपु ना आवे पिया चिठियो[२] ना भेजे; मोरे जियरा[३] ललचावे हो।
नाहीं आवे पक्की सड़क पर घोड़ा; दउरावे[४] पगड़ीके पेचवा हो ॥२॥
नाहीं आवे सुरुकी चिलमिया[५] तलफी; तमकुवा[६] गुड़गुड़ावे हो
नाहिं आवे नाहिं आवे; नाहिं आवे सहजादा हो ॥३॥
लँवग चुनि चुनि सेज डसायों;[७] ओपर फूल छितरावे हो।
सेजियो ना सोवेला, मुखहुँ ना बोले; मोर जियरा ललचावे हो ॥४॥
नाहिं आवे नाहिं आवे; नाहिं आवे सहजादा हो ॥

किसी स्त्री का पति परदेस चला गया है। उसके वियोग मे वह कह रही है मैंने बड़े परिश्रम से महल उठाया। उसमे सोने का दरवाजा लगाया। परन्तु फिर भी मेरा पति नही आता है॥ १॥

न तो वह स्वय आता है और न कोई चिट्ठी ही लिखता है। मेरे चित्त को वह ललचाता है। पक्की सडक न होने से इस गाँव तक घोडा भी नही आ सकता (जिस पर चढ कर मेरा पति आ सके)। न मालूम कहाँ वह घूमता फिरता होगा॥ २॥

वह यहाँ नही आ रहा है। कही पर वह गुड-गुड करता हुआ तम्बाकू पी रहा होगा। वह कितना हू बुलाने पर नही आता॥ ३॥

स्त्री कहती है कि मैंने लँवग के फूलो को चुन-चुन कर यह सेज डसाया है और उन फूलो को इस सेज पर बिखरा दिया है। न तो मेरे सेज पर सोता है और न मुख से बोलता है॥ ४॥

---

[१]शाहजादा (कुँवर)। [२]पत्र। [३]हृदय। [४]दौडाता है। [५]चिलम। [६]तम्बाकू। [७]बिछाया।

सन्दर्भ— सौत को लेकर परदेश से लौटे हुए पति को पत्नी का उलाहना

(१७०)

आरे वरहो वरिस पर आना; पींजड़ा लिये साथ ॥१॥
दिल का दरद ना जाना—टेक ।
आरे पिजड़ा खुटिन[1] पर टाँगो; जहाँ रहो तहाँ साथ ॥२॥
दिल का दरद०
आरे वरहो वरिस पर आना; गजरा लिये साथ ॥३॥
दिल का दरद०
आरे यह गजरा[2] खुटिन पर टाँगो; जहाँ रहो तहाँ साथ ॥४॥
दिल का दरद०
आरे वरहो वरिस पर आना; सवतिनि[3] लिये साथ ॥५॥
दिल का दरद०
आरे सवती महल वैठाया; जहाँ रहो वहाँ साथ ॥६॥
दिल का दरद ना जाना।

कोई स्त्री अपने परदेस से आये हुए पति से कह रही है कि तुम अपने साथ पिंजड़ा लेकर आज बारह वर्ष के बाद आ रहे हो। तुम मेरे दिल के दर्द को नहीं जानते हो ॥ १ ॥

उस पिंजडे को खूंटी पर टांग दिया है और जहाँ जाते हो साथ लिये फिरते हो ॥ २ ॥

तुम बारह वर्ष के बाद आये और अपने साथ सुन्दर माला लेते आये हो ॥ ३ ॥

इस माला को खूंटी पर टांग दिया है और जहाँ जाते हो साथ लिये फिरते हो ॥ ४ ॥

---

[1]खूंटी। [2]माला। [3]सपत्नी।

तुम तो बारह वर्ष के बाद आये और उस पर भी अपने साथ मेरी एक सौत लेते आये हो तुम मेरे दिल के दर्द को बिलकुल नही जानते हो ॥५॥

तुमने सौत को महल में रख दिया है और जहाँ जाते हो उसे अपने साथ लिये फिरते हो इस प्रकार तुम मेरे दिल के दर्द को बिल्कुल ही नही जानते हो ॥६॥

इस गीत में कितनी करुणा भरी हुई है। करुण रस की धारा से यह आप्लावित हो रहा है। पति का स्त्री के जीते हुए सौत को लाना उसकी हृदय-हीनता का सूचक है। इसके लिये स्त्री का उपालम्भ कितना मधुर तथा व्यंग्य पूर्ण है।

सन्दर्भ—एक सखी की उक्ति दूसरी भाग्यशालिनी सखी के प्रति

(१७१)

गोरी के भसुर कचहरी में झलकेला, जइसन डिपिटी दरोगा।
गोरिया तोरे नैना नींद भये मतवाले ॥टेक॥
गोरी के ससुर कचहरी में चमकेला, जइसन वलिस्टर दरोगा।
गोरी तोरे नैना० ॥२॥
गोरी के देवर शहरिया में झलकेला, जइसन कलट्टर दरोगा।
गोरिया तोरे नैना नींद भये मतवाले ॥३॥

एक सखी किसी से कह रही है कि इस स्त्री का ससुर कचहरी में काम करते हुए ऐसा सुशोभित होता है जैसे डिप्टी और पुलिस के दरोगा अच्छे लगते है। ऐ गोरी! तेरी आँखें नींद के कारण मतवाली हो रही है ॥ १ ॥

इस गोरी का भसुर वैरिस्टर और दारोगा की तरह और इसका देवर शहर में ऐसा अच्छा लगता है जैसे कलक्टर और दारोगा अच्छा लगते है ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—अन्यत्र दुःख पूर्वक दिन काटकर भी बुरे शहर में न रहने का एक सखी का दूसरी सखी को उपदेश

(१७२)

बदनामी सहरिया[1] में न रहना ॥टेक॥
पुड़ी मिठाई के गम[2] मत करना, सुखली सतुइया[3] गुजर करना।
बदनामी०
साला, दोसाला को गम मत करना, लुगरी[4] फटहिया गुजर करना। बदनामी०
कोठा अमारी के गम मत करना, टुटही मेडुकिया[5] गुजर करना। बदनामी सहरिया०

जिस शहर में रहने से बदनामी हो उसमें नहीं रहना चाहिये। पूड़ी और मिठाई की चिन्ता नहीं करनी चाहिए बल्कि सत्तू खाकर ही अपना गुजर कर लेना चाहिए॥ १॥

शाल तथा दोशाले की परवाह न कर फटे हुए कपड़े पहिन कर समय बिताना अच्छा हैं परन्तु बदनामी शहर में नहीं रहना चाहिये॥ २॥

कोठा तथा सुन्दर मकान में रहने की चिन्ता नहीं करनी चाहिये बल्कि टूटे हुए छोटे मकान में ही अपना गुजर कर लेना चाहिये लेकिन जिस शहर में रहने से बदनामी हो वहाँ कदापि न रहे॥ ३॥

सन्दर्भ—झूलनी का कहीं गिर जाना। स्त्री की उक्ति पति के प्रति

(१७३)

ना जाने यार झुलनी[6] मोरा काहाँ गिरा ॥टेक॥
पनिया[7] भरन जाऊँ, राजा ना जानो।
यहाँ गिरा ना जानो, वहाँ गिरा ना जानो॥
ना जानो यार डोरियें[8] में लिपट गया॥१॥

---

[1]शहर। [2]चिन्ता। [3]सत्तू। [4]फटा कपड़ा। [5]टूटा मकान। [6]नाक का गहना। [7]पानी। [8]रस्सी।

रोटिया पोवन[1] जाऊँ, राजा ना जानो।
यहाँ गिरा ना जानो; वहाँ गिरा ना जानो॥
ना जानो यार बेलने[2] में लिपट गया॥२॥
सेजिया सोवे जाऊँ राजा ना जानो।
यहाँ गिरा ना जानो, वहाँ गिरा ना जानो॥
ना जानो यार सेजिया[3] में लिपट गया॥३॥
ना जानो यार झुलनी मोरा काहाँ गिरा॥

किसी स्त्री की नाक की झुलनी खो गयी है। इस पर वह कह रही है कि मैं नही जानती कि मेरी झुलनी कहाँ गिर गई। वह कहती है कि ऐ पति! मैं पानी भरने के लिये कुवे पर गई थी। शायद मेरी झुलनी रस्सी में लिपट कर गिर गई॥ १॥

ऐ पति! मैं रोटी पकाने के लिये गई थी। मुझे यह नही मालूम कि मेरी झुलनी कहाँ पर गिर पडी। शायद वह बेलने में लिपट गई हो॥ २॥

ऐ पति! मैं सेज पर सोने के लिये गई थी। शायद मेरी झुलनी चारपाई के विस्तर मे कही लिपट गई है। अत मुझे मालूम नही कि मेरी झुलनी कहाँ खो गई है॥ ३॥

इस गीत में जो मिठास है उसे इस जड लेखनी द्वारा व्यक्त करना कठिन है। इसकी मिठास का अनुभव तभी हो जब दो-चार स्त्रियाँ कोरस में इसे गावें।

संदर्भ—किसी कुलटा का कुकर्म वर्णन

(१७४)

माह सडक पर बाँगाला[4], चढि बइठे नवाब।
कइसे के मारो नजरिया॥टेक॥

---

[1]रोटी बनाना। [2]रोटी बेलने का लम्बा, चिकना गोला काठ-खण्ड। [3]सेज (चारपाई)। [4]बँगला।

वैरी सब लोग, वैरी सब लोग, कइसे के मारो नजरिया।
बारह बन्ने की अँगिया, बन[1] लागे हजार ॥१॥
कइसे के मारो नजरिया ॥

सासु का अइली जड़इया[2] ननदी का बोखार[3]।
सइयाँ का होला रतवन्ही[4]; दिन सूझे न राति ॥२॥
कइसे के मारो नजरिया ॥

कथी[5] से झाड़ों जडइया, कथी से झाड़ों बोखार।
कथी से झाड़ो रतवन्ही; दिन सूझे न राति ॥३॥
कइसे के मारो नजरिया ॥

झाड़ू से झारों जड़इया, बढनी से बुखार।
योवन[6] से झारों रतवन्ही; दिन सूझे न राति ॥४॥
कइसे के मारो नजरिया ॥

कोई स्त्री कहती है कि सडक के ठीक ऊपर नवाब साहब का बँगला है जिसमें वह बैठा रहता है अत मैं अपने कटाक्ष से किसी को कैसे मारूँ॥

मेरे कपडे में हजारो बन्द लगे हुए हैं। सब लोग मेरे वैरी हो गये हैं, अत: नजर कैसे चलाऊँ॥ १॥

मेरी सास को जाडा लग गया है—जडैया आ रही है। ननद को बुखार आ रहा है। पति को आँख से दिखाई नही पडता अत: दिन, रात में कुछ भी नही सूझता॥ २॥

मैं जडया किस चीज से झाड़ूँ। बुखार को कैसे उतारूँ। किस चीज से अपने पति की रतौंधी दूर करूँ क्योंकि उसे दिन तथा रात में कुछ भी नही सूझता है॥ ३॥

फिर कुछ कर वह कहती है कि मैं सास की जूडी तथा ननद के बुखार को झाड़ू से उतारूँगी। अपने स्तनो के द्वारा पति की रतौंधी (अन्धेपन) को दूर करूँगी॥ ४॥

---

[1]बन्द। [2]जूडी। [3]बुखार। [4]रात को कम दिखाई पडने वाला रोग। [5]किस वस्तु से। [6]जवानी या स्तन।

सन्दर्भ--मार्ग में जाते समय पत्नी की उक्ति पति के प्रति

(१७५)

रसिया[1] गाड़ी चलत मोरा भूख लगतु[2] है, पेड़ा हैं मथुरा को।
रसिया गाडी चलत मोरा प्यास लगतु है, गडुवा[3] है गंगा को ॥१॥
रसिया गाड़ी चलत मोरा ओठ सुखतु है; ककडी है आगरे को।
रसिया गाड़ी चलत मोरा नींद लगतु है; सेज[4] है पटने को ॥२॥

कोई स्त्री कह रही है कि ए प्रेमी पति ! गाडी चलते समय मुझे भूख लग रही है। तब पति कह रहा है कि मथुरा का पेडा रक्खा है, उसे खाओ। फिर स्त्री कहती है कि मुझे प्यास लगती है तब पति उसे गंगाजल पीने को देता है ॥ १ ॥

पत्नी के यह कहने पर कि मेरा ओठ सूख रहा है पति उसे आगरे की ककटी खाने को देता है। जब स्त्री नीद लगने की बात कही है तब पति कहता है कि पटना मे पलँग मँगा कर मैंने रक्खा है उस पर सो जाओ ॥ २ ॥

इस गीत में भौगोलिक महत्त्व की एक वस्तु है और वह है अनेक शहरो में होने वाली प्रसिद्ध चीजो का नाम। पति ने मथुरा से पेडा, आगरा से ककडी, पटना से पलँग तथा गंगाजल मँगाकर रक्खा है। आज भी ये उपर्युक्त स्थान इन वस्तुओ के लिये प्रसिद्ध है। मथुरा के पेडे को कौन नही जानता ? इनकी प्रसिद्धि दूर तक फैली हुई है। आगरे की ककडी पतली तथा मुलायम होने के लिये बहुत दिनो से प्रसिद्ध है। आज से कई सौ वर्ष पहिले होने वाले उर्दू के एक कवि ने निम्नाकित पंक्तियो मे आगरे की ककडी का क्या ही सुन्दर वर्णन किया है।

"हैं कैसी प्यारी प्यारी ये आगरे की ककड़ी—टेक
लैला की अँगुलिया है, मजनूँ की पसलियाँ हैं।
हैं कैसी प्यारी प्यारी, ये आगरे की ककड़ी।"

---

[1]प्रेमी। [2]लगता है। [3]जल। [4]पलग।

सन्दर्भ—स्त्री के शरीर तथा लावण्य का वर्णन पति की उक्ति पत्नी के प्रति

(१७६)

तुम्हें कोई ले ना जाई—टेक

केसिया[1] तो है तोरे रेसम के लरछा[2], तेलवा के बडी अतिवार[3]।
आँख तो है तोरे आम के कतरा, सुरमा के बडी अतिवार ॥१॥
तुम्हें कोई०

दाँत तो हैं तोरे अनार के दाना, मीसिया[4] के बडी अतिवार।
जोबन तो है तोरे सुइया नखुनवा[5], चोलिया के बडी अतिवार ॥२॥
तुम्हे कोई ले ना०

डाँड[6] तो है तोरे सींकी[7] अइसन[8] पातर[9], लाहँगा[10] के बडी
अतिवार तुम्हें कोई ले ना जाई ॥३॥

कोई पति अपनी प्रेमिका से कह रहा है कि मुझे डर है कि कोई तुम्हारे सौन्दर्य पर मुग्ध होकर लेकर न चला जाय। ऐ प्रिये! तुम्हारे बाल तो रेशम के सूत के समान लम्बे हैं जिनमे तेल लगाने पर बडा सुन्दर मालूम होता है। तुम्हारी आँख आम के टुकडे के समान है जिनमें सुरमा बडा अच्छा लगता है॥ १॥

तुम्हारे दाँत अनार के दाने के समान है जिनमे काली मिस्सी अच्छी लगती है। तुम्हारे स्तन सुई के समान तेज तथा नोकीले है जो चोली पहिनने पर सुन्दर लगते है॥ २॥

हे प्रिये! तुम्हारी कमर इतनी पतली है जितनी सींक जो लहँगा पहिनने पर अत्यधिक सुशोभित होती है। इन्ही सुन्दरताओ के कारण मुझे डर है कि कोई तुम्हे लेकर भाग न जाय॥ ३॥

---

[1]बाल। [2]लम्बा सूत। [3]अच्छा लगना। [4]दाँत मे लगाने का काला पाउडर। [5]नाखून, तीक्ष्ण। [6]कमर। [7]सरकण्डा। [8]ऐसा। [9]पतला। [10]लहँगा।

सन्दर्भ--पति-पत्नी का कलह वर्णन

(१७७)

संवलिया से हम से नाहीं वनी रे। टेक—
बोलाव सोनरा के गढ़ाव ककना रे।
बोलाव दरजी के सियाव चोलिया रे ॥१॥ सँवलिया०
बोलाव मलिया के गुलाव गजला रे।
बोलाव देवरा के लगाव बीढवा रे ॥२॥ सँवलिया०
बोलाव ननदी के डँड़िया फानाव रे।
हम जाइव नइहरवा आजु रे ॥३॥ सँवलिया०

स्त्री कहती है कि पति से मुझ म नही पटता है। दरजी को वुला कर मैं अपनी चोली सिलाऊँगी तथा सोनार को वुलाकर ककना वनवाऊँगी॥ १॥

माली को वुलाकर माला तथा देवर को वुलाकर पान का बीड़ा वनाऊँगी॥ २॥

ननद को वुलाकर पालकी में बैठ जाऊँगी क्योंकि आज मैं अपने मायके जाऊँगी॥ ३॥

सन्दर्भ—कुलटा का चरित्र-चित्रण

(१७८)

बेर बेर बरजों[1] यार निबुआ[2] जनि लगाव रे। टेक—
नीबू चार गिरे यार मोरे अँगनइया[3]।
निबुआ के डाढ[4] यार मोरे अँगनइया ॥१॥
बेर बेर वरजों यार मोरे अँगनइया।
बेर बेर बरजों यार कुँइयाँ[5] जनि खनाव[6] रे।
घरिल[7] चार गिरे यार मोरे अँगनइया ॥२॥
बेर बेर बरजों यार पोखरा[8] जनि खोनाव रे।
धोती चार गिरे यार, मोरे अँगनइया ॥३॥

---

[1]मना किया। [2]नीबू। [3]आँगन मे। [4]शाखा। [5]कुँआ। [6]खनाना। [7]घड़ा। [8]तालाब।

वेर वेर वरजों यार, वहिन जनि वोलाव रे।

गुण्डा चार आवें यार मोरे अँगनिया ॥४॥

अर्थ स्पष्ट है। अन्तिम दो पक्तियो में पत्नी की परिहास-प्रियता देखने योग्य है।

सन्दर्भ—प्रेमी-प्रेमिका का वार्तालाप

(१७९)

तोरे कारन वदनाम रे सँवलिया—टेक

जैसे कचहरी में कलम चलतु है।

वैसे चलवि तोरा साथ रे सँवलिया ॥१॥

जैसे सडक पर एक्का चलतु है।

वैसे चलवि तोरा साथ रे सँवलिया[1] ॥२॥

जैसे कुँवन[2] में घड़ा डुवतु है।

वैसे डुववि[3] तोरे साथ रे सँवलिया ॥३॥

तोरे कारन वदनाम रे सँवलिया॥

कोई प्रेमिका अपने प्रेमी से कह रही है कि मैं तुम्हारे कारण ही इतनी वदनाम हो गई हूँ।

जिस प्रकार कचहरी मे कलम सदा चलती रहती है अर्थात् हाथ में लगी हुई चलती है उसी प्रकार मै तुम्हारे सग में लगकर साथ-साथ चलूँगी॥ १ ॥

जिस प्रकार सडक पर इक्का चलता है उसी प्रकार मैं तुम्हारे साथ चलूँगी ॥२॥

जिस प्रकार कुएं मे घडा डूब जाता है उसी प्रकार मै तुममें डूब जाऊँगी अर्थात् तुममें तल्लीन हो जाऊँगी॥ ३ ॥

सन्दर्भ—किसी कुलटा का कामुक से निवेदन

(१८०)

ए राजा पइयाँ परूँ। टेक

मुझे दे दो एक सुन्दर रूमाल, ए राजा पइयाँ परूँ।

---

[1]प्रियतम। [2]कुआँ। [3]डूब जाऊँगी।

खाने को चाही राजा पूडी मिठाई, पिये को चाही सराव ॥१॥
ए राजा पइयाँ परूँ।
सोने को चाही राजा लाली पलँगिया, उस पर सुन्दर जवान।
मुझे दे दो एक सुन्दर रूमाल, ए राजा पइयाँ परूँ ॥२॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि ऐ पति तुम्हारे पैरो पर पडती हूँ। मुझे एक सुन्दर रूमाल दे दो। ऐ राजा मुझ खाने के लिये पूडी और मिठाई चाहिये और पीने के लिये शराब चाहिये॥ १

मुझे सोने के लिये एक लाल पलँग चाहिये और उस पर मेरे साथ सोने के लिये तुम्हारे समान एक सुन्दर जवान चाहिये। मै तेरे पाँव पडती हूँ। मेरी इस इच्छा की पूर्ति कर दो॥ २॥

सन्दर्भ—पत्नी का पति से निवेदन

(१८१)

मोरे जाड़ा लागेला—टेक
गवना करवले, घर बइठवले, अपने चलेले परदेश।
जाड़ा लागेला महाराज जी, मोके वैदा[1] बोला[2] दे ॥१॥
काहाँवा के हवे रे वैदा छोकडावा,[3] काहावा के हवे हकीम।
मोरे जाड़ा लागेला ॥२॥
कासी के हवे वैदा छोकरवा, दिल्ली के हवे[4] हकीम।
वैदा बोलादे महाराज जी, मोरे जाडा लागेला ॥३॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरा पति गवना करा करके और मुझे घर बैठा करके स्वय परदेश चला गया है। वह रसोइया से कहती है कि मुझे जूडी बुखार आ रहा है। अत कोई वैद्य अथवा हकीम बुला दो ॥ १ ॥

मालकिन के कहने पर महाराज ने वैद्य तथा हकीम को बुला दिया। तब वह स्त्री पूछती है कि यह नवयुवक वैद्य तथा हकीम कहाँ के रहने वाले है॥ २॥

---

[1]वैद्य। [2]बुला दो। [3]नवयुवक। [4]है।

महाराज ने उत्तर दिया कि वैद्य जी काशी के हैं और हकीम जी दिल्ली से बुलाये गये हैं॥ ३॥

सन्दर्भ—धन गर्विता स्त्री का पति से निवेदन

(१८२)

मैं राजा रानी की बेटी; कहो जुरमाना करा दो जी।
पक्की सड़क पर कंकड़ बिछा दो; उस पर चले मोटर गाड़ी॥१॥
दिल्ली से खबरिया मँगा दो जी।
बाग लगा दो, बगइचा लगा दो, उस पर बैठा दो कोइलिया जी।
प्रेम की सबदिया सुना दो जी॥२॥

मैं राजा तथा रानी की बेटी हूँ। मैं किसी पर जुर्माना करा सकती हूँ। ऐ पति! पक्की सड़क पर कंकड़ बिछा दो और उस पर मेरी मोटर गाड़ी चला दो। दिल्ली से नई नई खबरें मँगा दो॥ १॥

ऐ पति! मेरे लिये बाग लगा दो तथा उस पर एक सुन्दर कोयल बैठाओ जिससे मैं उसकी प्रेम भरी मधुर आवाज सुन सकूँ॥ २॥

सन्दर्भ—किसी कुलटा का अपने रूप का वर्णन

(१८३)

मोरा गोरा बदन पर सब ललची[1]। टेक—
बगइचावा[2] में जाऊँ बगइच ललची।
बजरिया[3] में सब लोग ललची॥१॥
मोरा गोरा बदन०
राह चलत सब लोग ललची।
आँगन चलत तो देवरवा ललची॥२॥
मोरा गोरा बदन०
सेजिया पर जाऊँ तब सइयाँ ललची।
जब पान खाऊँ बलमुआँ[4] ललची॥३॥
मोरा गोरा बदन पर सब ललची॥

---

[1]लालच करना। [2]वाटिका। [3]बाजार। [4]प्रेमी पति।

कोई रूप गर्विता स्त्री कह रही है कि मेरे सुन्दर वदन को देखकर सब लोग लालच करते हैं। जब मैं बगीचा में जाती हूँ तब बगीचा का रक्षक मुझे देखकर लालायित होता है तथा बाजार में जाने पर सब लोग लालच करते हैं ॥ १ ॥

रास्ते में चलते समय सब लोग लालायित होते हैं तथा जब आँगन में घूमती हूँ तो दुष्ट देवर भी देखकर लालच करता है ॥ २ ॥

जब शय्या पर सोने के लिये जाती हूँ तब मेरा पति ललचता है और मेरे पान खाने पर बलमा मुझे पाने की इच्छा से लालायित रहता है ॥ ३ ॥

इस स्त्री का सौन्दर्य कितना अधिक है जिसे पाने के लिये सब लोग लालच करने लगते हैं।

संदर्भ—कन्या का ससुराल के कष्टों का वर्णन

(१८४)

नइहरवा मे ठंडी बयार, ससुरवा मैं ना जाऊँ हो।
ससुरा में मिलेला जउवा[1] के रोटिया, नइहरवा मे पूडी हजार ॥१॥
ससुरवा मैं ना जाऊँ हो।
ससुरा मे मिलेला साग सतुइया[2], नइहरवा में धाने[3] के भात।
नइहरवा में अजब बहार; ससुरवा मैं ना जाऊँ हो ॥२॥
ससुरा मे मिलेला फटही लुगरिया[4]; नइहरवा मे सोरहो सिंगार।
नइहरवा हमेसा[5] बहार; ससुरवा मैं ना जाऊँ हो ॥३॥
ससुरा मे मिलेला लात[6] अवरू मूका[7], नइहरवा में मीठी सी बात।
नइहरवा मे भरल[8] उछाह[9], ससुरवा मैं ना जाऊँ हो ॥४॥

किसी स्त्री का विवाह एक गरीब घर में हो गया है। वह वहाँ के कष्टों का वर्णन करते हुए यह कहती है कि मैं अब अपनी ससुराल नहीं जाऊँगी

---

[1]जौ। [2]सत्तू। [3]चावल। [4]कपड़ा। [5]सर्वदा। [6]पैर। [7]घूँसा। [8]भरा हुआ। [9]आनन्द।

क्योंकि मायके में ठण्डी हवा खाने को मिलती है परन्तु ससुराल में पर्दे में रहने के कारण हवा भी कभी शरीर में नहीं लगने पाती है॥ १॥

मेरी ससुराल में जौ की रूखी रोटियाँ खाने को मिलती है परन्तु मायके में पूरी प्रचुर मात्रा में भोजन के लिये मिलती है। ससुराल में साग और सत्तू (भुने हुए चने का आटा) मिलता है परन्तु मायके में चावल का भात (जौ, सावा आदि का नहीं) खाने को मिलता है इस प्रकार मायके में अजब बहार रहती है॥ २॥

ससुराल में पहिनने को फटा हुआ कपड़ा मिलता है परन्तु मायके में सोलहो शृंगार की वस्तुएँ उपलब्ध है। इस प्रकार मायके में सर्वदा बहार रहती है॥ ३॥

ससुराल में ननद और सास सदा पैर और घूंसे से मारती रहती है परन्तु मायके में सर्वदा मीठी-मीठी बातें सुनने को मिलती है। इस प्रकार मायके में सर्वदा आनन्द ही आनन्द रहता है। अतः अपनी ससुराल में अब कभी नहीं जाऊँगी॥ ४॥

इस गीत में किसी स्त्री की दुखी आत्मा पुकार रही है। स्त्री के द्वारा ससुराल का दिया गया वर्णन कितना दुख-जनक है। जहाँ न खाने को अन्न मिलता है और न पहिनने को सुन्दर कपड़ा, ऐसे स्थान को न जाना उस स्त्री के लिये अत्यन्त स्वाभाविक ही है। उस पर भी सास तथा ननद का लात और घूंसा ऊपर से खाने को मिलता है। कितना दुखी जीवन है!

सन्दर्भ—पति-पत्नी का मिलन

(१८५)

नदिया तक हरी जी साथे चलीं। टेक—
उस नदिया पर भूख लगतु है, घीव के लड्डुइया लेकर चली!
उस नदिया पर प्यास लगतु है, गडुआ के पानी लेकर चलीं॥१॥
नदिया तक हरी जी०

उस नदिया पर ओठ सुखतु है, पान के बीरा लेकर चलीं
उस नदिया पर नींद लगतु है, तोसक तकिया लेकर चलीं ॥२॥
नदिया तक हरी जी साथे चलीं।

इसका अर्थ अत्यन्त स्पष्ट है।

सन्दर्भ—पिता के घर से बिदा होती हुई कन्या का पति से निवेदन

(१८६)

बलमुआ नइहरवा छोड़ा दिया रे। टेक
आमा छोडा दिया, बाबा छोडा दिया; चाचा छोडा दिया रे।
काका छोडा दिया, काकी छोडा दिया; भइया छोड़ा दिया रे। १॥
बलमुआ नइहरवा०
भइया छोड़ा दिया, भऊजी छोड़ा दिया; सखिया छोड़ा दिया रे।
गाँव छोड़ा दिया, नगर छोड़ा दिया; सब कुछ छोड़ा दिया रे ॥२॥
बलमुआ नइहरवा छोड़ा दिया रे ॥

जब किसी स्त्री का पति अपना गवना कराकर अपनी स्त्री के साथ जा रहा है तब वह स्त्री कह रही है कि मेरे पति ने मेरी माता, पिता, चाचा, काका, काकी तथा भाई मे मेरा वियोग करा दिया॥ १॥

उसने मुझे अपने भाई, भावज, सहेलियाँ, गाँव तथा नगर सब से पृथक् कर दिया क्योकि वह आज मुझे अपने साथ लिये जा रहा है॥ २॥

वास्तव में विवाह के बाद जब लडकी की विदाई होती है तब लडकी को बडा ही दु ख मालूम होता है। अपने माता-पिता तथा सगे-सबंधियो के सग को छोड कर एक नवीन, अपरिचित युवक से नाता जोडना असभव सा प्रतीत होता है। स्त्री के हृदय के उपर्युक्त भाव कितने स्वाभाविक हैं।

सन्दर्भ—गर्मी के कारण वधू का ससुर से पंखा माँगना

(१८७)

सँकरी[1] मोरी अँगनइया[2] हवा नहीं आवे। टेक—
कही पठाओ ओहि वारे ससुर से, घरवा में पखा लगावे।
कही पठाओ ओहि वारे भसुर से, दुअरा[3] पर कोठा उठावे ॥१॥
सँकरी मोरी०
कही पठाओ ओहि वारे देवर से, कोठा पर पंखा डोलावें[4]।
कही पठाओ ओहि वारे बालम से, फूल के सेजिया डसावें[5] ॥२॥
सँकरी मोरी अँगनइया हवा नहीं आवे।

कोई स्त्री कह रही है कि मेरा आँगन बहुत छोटा है उसमें जरा भी हवा नही आती है। वह नौकर से कह रही है कि जाकर ससुर जी से कह दो कि घर में पखा लगवा दो तथा ससुर जी को यह सूचित कर दो कि वे द्वार पर (मैदान में) मेरे लिए पक्का मकान बनवा दें ॥१॥

देवर से जाकर कहो कि कोठा पर मुझको पखा झले तथा पति को सूचित कर दो कि मेरे लिये एक सुन्दर पलँग बिछा दें जिस पर आराम से मैं सो सकूँ ॥२॥

सन्दर्भ—पति से पत्नी की बात-चीत

(१८८)

काहाँ से कूच किया, काहाँ पड़ाव किया,
काहाँ डेरा डाल दिया, हाय रे सँवलिया ॥१॥
छपरा से कूच किया, आरे पडाव किया;
बक्सर डेरा डाल दिया, हाय रे सँवलिया ॥२॥
आटा भी सान दिया, पूडी भी छान दिया;
ऊपर मिठाई दिया, हाय रे सँवलिया ॥३॥
सेज भी डास दिया, नींद से सो लिया;
सवतो सब रस ले लिया सँवलिया ॥४॥

---

[1]तंग। [2]आँगन। [3]दरवाजा। [4]झलना। [5]बिछाना।

अर्थ स्पष्ट है।

इस गीत में विहार प्रान्त के तीन शहरो के नाम आये है। वे है छपरा, आरा और वक्सर। यदि छपरा से यात्रा की जाय तो पटना होकर पहिले आरा आना होता है फिर बक्सर मिलता है। अत इस गीत मे वर्णित यात्रा का क्रम बिल्कुल ठीक है।

सन्दर्भ—पति के द्वारा परित्यक्ता स्त्री को अपना हक लेने के लिये मुकदमा करना

(१८९)

सुन हो सखि हम तो अदालत[2] करबों। टेक—
पहिली अदालत बक्सर मे करबों; ससुर राउर माला उतार हम लेबों।
दूसरी अदालत आरा मे करबों; भसुर राउर टोपी उतार हम लेबों ॥१॥
सुनहो सखि हम०
तीसरी अदालत पटना में करबों; देवर राउर पगरी[3] उतार हम लेबों।
चौथी अदालत कलकत्ता में करबों; सइयाँ राउर सेखी[4] उतार हम लेबों[5] ॥२॥
सुन हो सखि हम तो अदालत करबों।

अपने घर वालो से सतायी हुई कोई नितान्त दु खिता स्त्री कह रही है कि ऐ सखि! सुनो आज मैं (अपने पालन-पोषण के लिये उचित धन पाने के लिये) कचहरी मे मुकदमा करूँगी। पहिला मुकदमा मैं वक्सर में करूँगी और अपने ससुर की माला (मर्यादा) को नष्ट कर दूँगी। दूसरा मुकदमा आरे में करूँगी तथा भसुर की टोपी उतार लूँगी अर्थात् उन्हे वेइज्जत करूँगी।

तीसरा मुकदमा मैं पटने मे करूँगी तथा देवर की पगडी (इज्जत) उतार लूँगी। चौथा मुकदमा मैं कलकत्ता में करूँगी और अपने पति के घमण्ड को चूर-चूर कर दूँगी॥ २॥

[1]सुनो। [2]मुकदमा। [3]इज्जत। [4]शेखी (घमड)। [5]लूँगी।

देहातों में कभी-कभी ऐसी मुकदमेबाजियाँ देखने में आती हैं जहाँ एक पक्ष में एक धर्षिता अबला रहती है और दूसरी ओर उसके ससुर, भसुर और देवर आदि सारा परिवार। मुकदमेबाजी होती है एक बहुत ही तुच्छ वस्तु के लिये और वह है स्त्री के लिए भोजन खर्च का देना जिसे हमारी पूरब की भोजपुरी बोली में "खोरिस" कहते हैं।

सन्दर्भ—अन्य स्त्री के प्रेमपाश में फँस जाने के डर से कामुक पति से बगीचे या बाजार में न जाने के लिये स्त्री का निवेदन

(१९०)

मोह लेगी मलिनियाँ तुमको । टेक
सजन तुम बाग में मति जाना, मलिनियाँ[1] तुमको ।
मोह लेगी मलिनियाँ तुमको ॥१॥
पेन्हाई[2] के फूल के गजरा[3] रे, आपन दिल तुमको ।
कर लेगी मलिनियाँ तुमको ॥२॥
सजन तुम चौक में मति जाना, तमोलिनि[4] तुमको ।
मोह लेगी तमोलिनि तुमको ॥३॥
चभाई[5] के पान के बिरवा[6] रे, आपन दिल तुमको ।
कर लेगी तमोलिनि तुमको ॥४॥
सजन तुम चौक में मति जाना, पतरिया[7] तुमको ।
मोह लेगी पतरिया तुमको ॥५॥
सुलाई के फूल के सेजिया[8] रे, आपन दिल तुमको ।
कर लेगी पतरिया तुमको ॥६॥
मोह लेगी मलिनियाँ तुमको ॥

कोई स्त्री अपने प्राण प्रिय पति से कह रही है कि ऐ पति ! तुम बगीचा

---

[1]मालिन। [2]पहना कर। [3]माला। [4]तमोलिन (पान बेचने वाली स्त्री) [5]खिला कर। [6]बीडा। [7]वेश्या। [8]शय्या (सेज)।

(वाटिका) में मत जाना क्योंकि वहाँ की सुन्दर मालिन तुम्हारे मन को मोह लेगी ॥ १ ॥

फूल की सुन्दर तथा सुगन्धित माला पहिना कर वह तुम्हारे हृदय को अपने वश में कर लेगी ॥ २ ॥

ऐ पति ! तुम चौक मे मत जाना क्योंकि वहाँ की तमोलिन (पान बेचने वाली स्त्री) तुम्हारे मन को मोह लेगी ॥ ३ ॥

वह पान का बीडा तुम्हे खिला कर तुम्हारे दिल को अपने वश में कर लेगी ॥ ४ ॥

ऐ पति ! तुम चौक मे मत जाना क्योंकि वहाँ सुन्दरी वेश्याये तुमको मोह लेगी ॥ ५ ॥

तुमको सुन्दर सेज पर सुलाकर, सब प्रकार का आनन्द देकर तुम्हारे हृदय को अपने वश मे कर लेगी ॥ ६ ॥

सती स्त्री की अपने पति को पथ-भ्रष्ट न होने देने की चिंता कितनी मर्मस्पर्शिनी है। इस गीत से मधुरता तथा सरसता चुई पडती है।

सन्दर्भ—कुलटा के द्वारा किसी राही को मोह लेना तथा राही का उससे निवेदन

(१९१)

चलत मोसाफिर[1] मोह लिया रे पींजडे वाली मुनिया। टेक०
उड़ उड़ बइठि हलुवइया दोकनिया[2], आरे बरफी के सब रस ले लिया रे। पींजडे वाली मुनिया ॥१॥
उड उड़ बइठि बाजाजवा दोकनिया, आरे कपडा के सब रस ले लिया रे। पींजडे वाली मुनिया ॥२॥
चलत मोसाफिर मोह लिया रे, पींजडे वाली मुनिया ॥३॥
उड उड़ बइठि पनहेरिया[3] दोकनिया, आरे बीरा के सब रस ले लिया रे। पींजडे वाली मुनिया ॥४॥

---

[1]मुसाफिर (राही)। [2]दूकान। [3]पनहेरी (पान बेचने वाला)।

उड़ उड़ बैठ साहुकारवा[1] दोकनिया, आरे छतिया के सब रस दे
दिया रे। पींजड़े वाली मुनिया[2] ॥५॥
चलत मोसाफिर मोह लिया रे; पींजड़े[3] वाली मुनिया ॥६॥

कोई पथिक पुरुष राह चलते समय किसी स्त्री को देखकर मोहित हो जाने पर उससे कह रहा है कि पीजडे अर्थात् घर रूपी पीजडे में रहने वाली मुनिया (स्त्री) तुमने मुझे राह चलते मुसाफिर के मन को मोह लिया है।

तुमने हलुवाई की दुकान पर बैठकर बरफी आदि सारी मिठाइयो का स्वाद चख लिया है॥ १॥

बजाज की दूकान पर बैठ तुमने कपडे का रस लिया है अर्थात् सुन्दर सुन्दर कपडो को पहिन कर आनन्द उठाया है॥ २॥

ऐ परदे मे रहने वाली स्त्री! तुमने मेरे जैसे मुसाफिर के चित्त को भी मोह लिया है॥ ३॥

तुमने पान बेचने वालो की दूकान पर बैठ कर खूब पान खाया है और उसका स्वाद चखा है॥ ४॥

तुमने धनी साहूकार की दूकान पर बैठकर उसके साथ उपभोग कर बड़ा ही आनन्द उठाया है॥ ५॥

ऐ परदे में रहने वाली स्त्री! तुमने मुझ राह चलते मुसाफिर के चित्त को मोह लिया है॥ ६॥

सन्दर्भ—किसी स्त्री का अपने पति से निवेदन

(१९२)

मैं अलबेली खड़ी हो अकेली; हलुवइया गलिन में जी। टेक०
हमको खिला दो जरा पूड़ी मिठाई, मन राखो गलिन में जी ॥१॥
मैं अलबेली०
हमको पिला दो जरा गडुवा के पानी, मन राखो गलिन में जी।
हमको सुलादो जरा फूल की सेजिया; मन राखो गलिन में जी॥२॥
मैं अलबेली०

---

[1]साहुकार (सेठ)। [2]मुनिया-पक्षी (स्त्री)। [3]परदा।

इमको चभा दो जरा पान के बीरा, मन राखो गलिन मे जी।
मै अलबेली खड़ी हो अकेली, हलुवइया गलिन मे जी ॥३॥

कोई स्त्री कह रही है कि मै अकेली हलुवाई की गली मे खडी हूँ। वह कहती है कि मुझे पूडी और मिठाई खिला दो और मेरा मन रक्खो ॥ १ ॥

वह फिर कहती है कि मुझे पानी पिला दो फूल की सेज पर मुझे सुला दो तथा मुझे पान का बीडा खाने के लिये दो और इस प्रकार मेरे मन को रक्खो ॥२। ३ ॥

सन्दर्भ—किसी राही का कुलटा स्त्री के यौवन का वर्णन

(१९३)

जेलखाना में ठाढ[1] गोरी का करेलू। टेक
आरे चलत मुसाफिर के जान मारेलू ॥१॥ जेलखाना०
आरे छोटे छोटे जोवना[2] उतान[3] चलेलू ॥२॥ जेलखाना०
आरे भुवर भुवर[4] आँखिया नजर मारेलू[5] ॥३॥
जेलखाना में ठाढ़ गोरी का करेलू ॥

जेलखाना अर्थात् घर के परदे मे रहने वाली ऐ स्त्री ! तुम यह क्या करती हो ॥

तुम चलते हुए मुसाफिरो को मोहित करके उनके प्राण को हर लेती हो ॥ १ ॥

तुम अपने छोटे-छोटे स्तनो को आगे निकाल करके चलती हो ॥ २ ॥

तुम अपनी सुन्दर आँखो के द्वारा कटाक्ष चला कर लोगो को घायल करती हो। इस प्रकार परदे मे रह कर भी तुम बडा अनर्थ कर रही हो ॥ ३ ॥

घर को जेलखाना कहना कितना व्यग्य पूर्ण है।

---

[1]खडी। [2]स्तन। [3]निकाल कर। [4]सुन्दर आँखे। [5]मारती हो॥

सन्दर्भ—सौत को लेकर परदेश से आये हुए पति को देख, स्त्री की आत्महत्या का यत्न

(१९४)

जब हम रहितीं जी बारी[1] लिड़िकिया, ए राजा, ए राजा ए राजा हो।
सँइया माँगे गवनवा ॥१॥
बरहो[2] बरिस पर हरि[3] मोर अइलें, ले अइलें, ले अइले, ले अइलें हो।
हमरे पर सवतिया[4] ले अइले हो ॥२॥
सवतीहि लेइ सामि[5] सुतले अँगनवा, ना माने,[6] ना माने, ना माने हो।
गुलजारी[7] नयनवा ना माने हो ॥३॥
देहू ना सासू हो छुड़िया[8] कतरिया[9], हति घलवों[10], हति घलवों,
हति घलवों हो।
सासु आपन परानवाँ[11] हति घलवों हो ॥४॥
काहे के हतवे[12] बहुआ[13] आपन परानवाँ, तोरे सामी, तोरे सामी,
तोरे सामी हो।
बहुआ बाड़े[14] निमनका[15] तोरे सामी हो ॥५॥

कोई स्त्री कह रही है कि जब मैं छोटी लडकी थी उसी समय मेरा पति गवना कराने के लिये कहने लगा ॥ १ ॥

जब गवना करा कर वह मुझे घर लाया तब वह स्वयं परदेश चला गया। बारह वर्ष के बाद वह परदेश से लौटकर आया और अपने साथ हमारी सौत लेता आया ॥ २ ॥

मेरी सौत को लेकर मेरा निर्लज्ज पति आँगन में सो गया। वह सुन्दर आँख वाला पति कितना मना करने पर भी नहीं माना ॥ ३ ॥

तब दु:खी होकर अपने पति के कुकर्मों से पीडित होकर वह स्त्री अपनी

---

[1]छोटी। [2]बारह। [3]पति। [4]सौत। [5]पति। [6]नहीं मानता है। [7]सुन्दर। [8]चाकू। [9]कटार। [10]मार डालूँगी। [11]प्राण। [12]मारोगी। [13]वधू। [14]है। [15]अच्छा, योग्य।

सास से कह रही है कि ऐ सास! मुझे चाकू और कटार दो। मैं अपने प्राणो को आज अपने हाथो ही नष्ट कर दूंगी ॥ ४ ॥

इस पर सास उसे समझाती हुई कहती है कि ऐ वधू! तुम अपने प्राणो को क्यो नष्ट कर रही हो? तुम्हारा पति बडा ही योग्य तथा अच्छा आदमी है ॥ ५ ॥

इस गीत मे अपने पति के बुरे चरित्र से लज्जित तथा पीडित होने वाली एक स्त्री की मानसिक वेदना की झाँकी हमे मिलती है, जिससे प्रेरित होकर वह स्त्री आत्महत्या करने पर उतारू हो जाती है। पति की निर्लज्जता का सुन्दर चित्रण हुआ है।

सन्दर्भ—सौत को लेकर परदेश से लौटे हुए पति को स्त्री का उपालम्भ

(१९५)

मैं तो तोरे गले को हार राजावा, काहे को लायो सवतिया। टेक
जाहु हम रहितीं बाझ बँझिनिया[१]; तब आइति[२] सवतिनिया।
राजावा हमरो दो दो है लाल[३]; काहे को लायो सवतिया ॥१॥
जब हम रहितीं लँगड लूली[४]; तब आइति सवतिनिया।
राजावा हमरो सोटा[५] अइसन देह; काहे को लायो सवतिया ॥२॥
जब हम रहितीं काली कोइलिया[६]; तब आइति सवतिनिया।
राजावा हमरो लाले लाले गाल, काहे[७] को लायो सवतिया ॥३॥
मैं तो तोरे गले को हार राजावा[८], काहे को लायो सवतिया।

कोई दुश्चरित्र पुरुष परदेश से एक स्त्री को ब्याह लाया है। इस पर उसकी पहली स्त्री दु खी होकर कहती है कि ऐ पति! मै तो तेरे गले का हार थी अर्थात् तुम मुझको बहुत प्यार करते थे, तब तुम इस सौत को क्यो लाये।

यदि मै वन्ध्या होती अर्थात् मेरे बाल-बच्चे पैदा न होते तो तुम

[१]वन्ध्या। [२]आती। [३]पुत्र। [४]लुन्ज। [५]लाठी। [६]कोयल। [७]किसलिये। [८]पति।

सन्तानोत्पत्ति के लिये सौत को ला सकते थे। परन्तु ऐ पति ! मेरे एक नही दो-दो सुन्दर पुत्र है। ऐसी दशा में तुम इस सौत को क्यो लाये ॥ १ ॥

यदि मैं लुञ्ज-पुञ्ज होती और गृहकार्य करने में असमर्थ होती तो तुम सौत ला सकते थे। परन्तु मेरा शरीर तो लाठी के समान सुडौल और मज-बूत है फिर तुम सौत क्यो लाये ? ॥ २ ॥

यदि मैं कोयल के समान काली-कलूटी होती तो तुम सौत को ला सकते थे। परन्तु ऐ पति ! मेरे तो गाल लाल-लाल है अर्थात् मैं अत्यन्त सुन्दर हूँ। ऐसी दशा में मेरी सौत को तुम किसलिये लाये ? ॥ ३ ॥

इस गीत मे कितनी करुणा भरी हुई है। एक हिन्दू स्त्री की आत्मा करुण क्रन्दन कर रही है। इस गीत मे उस दुखिया स्त्री का मार्मिक चित्रण किया है जिसका पति उसके जीते रहते ही एक सौत को घर में ला बैठाता है। ऐसी घटनायें आजकल साधारण हो गई है।

सन्दर्भ—बंगालिन के द्वारा मोह लिये जाने के कारण पति को परदेश न जाने का स्त्री का आग्रह

(१९६)

कलकत्ता तू जनि जा राजा, हमार दिल कइसे लागी। टेक
ओहि कलकत्ता हलुवाइनि बिटिया, बरफी खिलावे दिन राती ॥१॥
हमारा दिल कइसे०
ओहि कलकत्ता पनेहेरिन बिटिया, बीरा चभावे दिन राती।
हमार दिल कइसे० ॥२॥
ओहि कलकत्ता बंगालिन बिटिया, जादो चलावे दिन राती।
हमार दिल कइसे लागी ॥३॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि ऐ पति ! तुम कलकत्ता मत जाओ क्योंकि तुम्हारे बिना मेरा दिल नही लगेगा।

उस कलकत्ता में हलुवाई की लड़कियाँ रहती है जो रात-दिन मिठाई खिलाकर लोगो का मन मोह लेती है ॥ १ ॥

उस कलकत्ते मे पान बेचनेवाली की लड़कियाँ रहती है जो पान खिला कर लोगो को अपने वश में कर लेती है ॥ २ ॥

उन कलकत्ते में बंगालिनि की लड़कियाँ रहती हैं जो जादू करके लोगों के मन को वशीभूत कर लेती हैं। अतएव ऐ पति! तुम कलकत्ते मत जाओ नहीं तो वे तुमको भी अपने वश में कर लेंगी॥ ३॥

सन्दर्भ—कामुक पति का नायिका के रूप का वर्णन

(१९७)

गोरी पिछुआरा को जाना छोड़ि द। टेक

तोर बार[1] जइसे काली नगिनिया[2], गोरी अतरे[3] को लगाना छोड़ि द।

गोरी के आँख जइसे आम के फारी[4] गोरी सुरमा के लगाना छोड़ि द॥१॥

गोरी पिछुआरा०

गोरी के दांत जइसे[5] अनार के दाना, गोरि मिसिया[6] के लगाना छोड़ि द॥२॥

गोरी पिछुआरा[7] के जाना छोड़ि द।

कोई पुरुष अपनी स्त्री से कह रहा है कि तुम गाँव में इधर उधर जाना छोड़ दो। ऐ स्त्री! तुम्हारे बाल काली साँपिन के समान हैं, उनमें इत्र का लगाना छोड़ दो। तुम्हारी आँखें आम के टुकड़े के समान हैं अतः उनमें सुरमे का लगाना छोड़ दो॥ १॥

ऐ स्त्री! तुम्हारे दाँत अनार के दाने के समान सुन्दर हैं। उनमें मिस्सी (काला पाउडर) का लगाना छोड़ दो। नहीं तो लोग तुम्हारी सुन्दरता पर मुग्ध हो जायेंगे॥ २॥

सन्दर्भ—पति संभोग से सुखी स्त्री का अपने मायके न जाना

(१९८)

अब ना जाइबि नइहरवा जान। टेक

अथवा बन्हवलों, मँगिया टिकवलों, चढि गइले राजा अटरिया जान।

---

[1]केश। [2]नागिन। [3]इत्र। [4]टुकड़ा। [5]जिस प्रकार। [6]मिस्सी। [7]मकान का पीछे का भाग।

आ गइल डोली, आ गइल कँहरवा, आ गइले भइया हजरिया जान॥१
अब ना जाइबि०

दिनवा में मोर पिया चीनिया गलावे, रतिया बनावे लड़ुइया जान।
खूब माजा देले अटरिया जान, अब ना जाइबि नइहरवा जान॥२॥
अब ना जाइबि०

दिनवा में मोर पिया रुइया धुनावे, रतिया भरावे रजइया जान।
तनियेक घिच घाच हमको ओढ़ावे, खूब मजा देला रजइया जान॥३॥
अब ना जाइबि नइहरवा जान।

कोई स्त्री कह रही है कि अब मैं अपने मायके नहीं जाऊँगी। मैंने अपना बाल बधाया, अपनी माग में सिन्दूर भर लिया। मेरा पति मुझे लेकर महल में चला गया। इतने में मेरा भाई कहार और पालकी लेकर चला आया। परन्तु अब मै अपने मायके नहीं जाऊँगी॥१॥

दिन मे मेरा पति चीनी तैयार करता है और रात मे लड्डू बनाता है। उस पति के साथ अटारी पर मुझे बड़ा आनन्द आता है अतः मैं मायके नहीं जाऊगी॥२॥

दिन में मेरा पति रुई धुनवाता है और रात में वह अपनी रजाई (लिहाफ) को रुई से भरवाता है। वह उस रजाई को थोड़ा मुझे भी ओढ़ने को देता है। उसकी रजाई मे साथ सोने पर मुझे बड़ा आनन्द आता है। अतः अब मैं अपने मायके नहीं जाऊँगी॥३॥

सन्दर्भ—पत्नी के मना करने पर भी पति का परदेश जाना

(१९९)

सोने के थाली जेवना[1] परोसलों[2]; जेवना ना जेवें अलवेला[3]।
बलमु[4] कलकत्ता निकल गयो जी॥१॥
झाझर गडुवा[5] गंगाजल पानी, पनिया ना पिये अलवेला।
बलमु कलकत्ता०॥२॥

---

[1]भोजन। [2]परोसा गया। [3]सुन्दर पति। [4]पति। [5]लोटा।

फुलवा चुनि चुनि सेजिया डसवलो, सेजिया ना सोवे अलवेला।
लागल जोवनवा के धाका', वलमु कलकत्ता निकल गयो जी ॥३॥

अर्थ स्पष्ट है। पति के परदेश जाने का वर्णन है।

सन्दर्भ---नौकरी न छोड़ने के लिये माता, पिता का अपने पुत्र को पत्र लिखना

(२००)

पहिले ही चिट्ठी चाचा भेजायी, ववुआ' नोकरि जनि छोड़।
रुपया वडा ही चीज ॥१॥
दूसरी ही चिट्ठी चाची भेजाओ; वचवा नोकरि जनि छोड़।
तीसरी चिट्ठी आमा भेजायो; ववुआ नोकरि जनि छोड ॥२॥
रुपया वडा ही चीज ॥
चौथी ही चिट्ठी पिता भेजायो, ववुआ नोकरि जनि छोड।
रुपया वडा ही चीज ॥३॥
पाँचवी चिट्ठी धनिया भेजायो, सइयाँ नोकरि तुम छोड़।
रुपया है कुछ ना चीज ॥४॥
धनिया' के चिट्ठी सुनि सँइया जी अइले, सवके मन को तोड़।
रुपया है कुछ ना चीज ॥५॥

कोई पति परदेश मे जाकर नौकरी कर रहा था। समवत उसके नौकरी छोडने की इच्छा को जान कर उसके चाचा और चाची ने यह लिखा कि ऐ वेटा! नौकरी मत छोडना क्योकि रुपया वहुत वडी आवश्यक वस्तु है ॥१।२॥

जव उसके ऊपर कुछ असर न हुआ तव उसके माता और पिता ने इसी वात को फिर लिख भेजा कि रुपया वहुत जरुरी चीज है अत नौकरी मत छोडो ॥३॥

पाचवी चिट्ठी उसकी स्त्री ने भेजा जिसमे यह लिखा था कि आप नौकरी छोड घर चले आइये। रुपया कुछ भी चीज नही है ॥४॥

'धक्का। 'वेटा, वच्चा। 'नौकरी। 'स्त्री।

यह पत्र पढते ही वह पति अपनी स्त्री के अनुरोध मे अपने माता, पिता की आशाओ पर पानी फेरता हुआ और उनके मन को तोडता हुआ घर आ पहुँचा ।। ५ ।।

इस गीत में पति का उत्कट पत्नी-प्रेम दिखलाया गया है। जो असर उनके माँ, बाप के पत्र न कर सके पत्नी का पत्र उसके विपरीत असर कर दिखलाता है। परन्तु यह कार्य माता, पिता की आज्ञा के विरुद्ध है अत आदरणीय नही कहा जा सकता। फिर भी इस पति का प्रेम उत्कट अवश्य है।

सन्दर्भ—पत्नी का पति से प्रेम होना

(२०१)

पहिली इयारी[1] रसोइया में लागे, हमें चौखट को चोट लागे।
हमें न इयरिया नीक[2] लागे ।।१।।
दूसरे इयारी वेलनवा पर लागे, हमे वेलनन को चोट लागे,
हमें न इयरिया० ।।२।।
तीसरी इयारी सेजरिया पर लागे; हमें फुलनन[3] को चोट लागे
हमें न इयरिया० ।।३।।

कोई स्त्री कहती है कि पति के साथ प्रथम मित्रता रसोई घर मे भोजन कराते समय होती है परन्तु वहाँ की मित्रता चौखट से चोट लग जाने के कारण मुझे अच्छी नही लगती ।। १ ।।

दूसरी मित्रता रोटी वनाते समय वेलना पर होती है परन्तु वेलना से चोट लग जाने से मुझे वहाँ की मित्रता भी अच्छी नही लगती ।। २ ।।

तीसरी मित्रता पति से सेज के ऊपर होती है। परन्तु उस पर फूल विछे होने के कारण मुझे चोट लगती है। अत मुझे सेज पर की मित्रता भी पसन्द नही है ।। ३ ।।

इस गीत मे मित्रता के क्रम में व्यतिक्रम दिखाई पडता है। मेरी समझ में तीसरी मित्रता सर्वप्रथम होती है।

---

[1]मित्रता। [2]अच्छा। [3]फूलों का।

सन्दर्भ—रुष्ट पति का अन्न जल न ग्रहण करना

(२०२)

सोने के थारी मे जेवना परोसलों, जेवना न जेवें मोर।
पपिहरा काहे मचायो सोर ॥१॥
आमावा में डाढी कोइलिया बोले; वनावा में बोले मोर।
पपिहरा काहे मचायो सोर ॥२॥
झंझर गड्डुआ गगाजल पानी, पियवा न पीये मोर।
पपिहरा काहे मचायो सोर ॥३॥

कोई स्त्री कहती है कि सोने की थाली में मैंने भोजन परोसा परन्तु मेरा पति उसे नही खाता है॥ १॥

आम के वन में कोयल बोल रही है और वन मे मोर बोल रहा है। ऐ पपीहा! तुमने क्यो शोर मचा रक्खा है॥ २॥

लोटे में गगाजल भरा पड़ा है परन्तु मेरा पति उसे नही पीता है। ऐ पपीहा! तुमने इतना शोर क्यों मचाया है—क्यों इतने जोर से बोल रहे हो॥ ३॥

सन्दर्भ—वधू की अँगूठी का गिरना और सास ससुर के द्वारा उसे खोजना

(२०३)

कलकत्ता बाजार मे मोरे अँगुठी गीरे रे। टेक—
सासु मोरें खोजें, ननद मोरे खोजे, सइयाँ खोजे रे।
मसाल दिया बारी बारी सइयाँ खोजे रे ॥१॥
सासु मोरा पीसे, ननद मोरे पीसे, सइयाँ पीसे रे।
बहियाँ गले डाल डाल, सइयाँ पीसे रे ॥२॥
सासु मोरा मारे, ननद मोरा मारे सइयाँ मारे रे।
बबूर डण्टा तानि तानि, सइयाँ मारे रे ॥३॥

---

[1]खोजना। [2]मशाल। [3]बबूल का वृक्ष। [4]डण्डा। [5]उठाकर।

कलकत्ता बाजार में मोरे अगूठी गीरे[1] रे।
सासु मोरा रोवे, ननद मोरा रोवे, सइयाँ रोवे रे।
रूमाल मुख डाल डाल, साइयाँ रे ॥४॥

कोई स्त्री कहती है कि कलकत्ता शहर के बाजार में मेरी अँगूठी खोगई। उस अँगूठी को मेरी सास और ननद खोजने लगी और मेरा पति भी मसाल और दीपक जलाकर उसे खोजने लगा ॥ १ ॥

मेरी सास आटा पीसती है, ननद भी पीसती है और मेरा पति भी मेरे गले में हाथ डालकर मेरे साथ आटा पीसता है ॥ २ ॥

अगूँठी को खो देने के कारण मेरी सास मुझे मारती है, ननद भी मारती है और मेरा निर्दयी पति भी बबूल वृक्ष के डण्डे को तानकर मुझे पीटता है ॥३॥

कलकत्ते में अगूँठी के गिर जाने के दुःख से दुःखी होकर मेरी सास तथा ननद रोती है और मेरा पति भी मुख में रुमाल देकर (जिससे अधिक आवाज न निकले) खूब रोता है ॥ ४ ॥

इस गीत में पति के प्रेम तथा निर्दयता—दोनों—का वर्णन किया गया है। एक छोटे से अपराध के कारण उसे इतनी यातना देना कहाँ तक उचित है? ऐसी घटनाये साधारण होने के कारण यह वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होता है।

सन्दर्भ—किसी कुलटा का कामुक पति से निवेदन

(२०४)

जब तुम ए यार सहर को जाना; दोना के बरफी ले आना।
ताखे[2] ऊपर रख जाना ए यार तुम, हमरी गली होके जाना ॥१॥
जाहु जाहु ए यार बाग को जाना; फुलवा के गजरा ले आना।
खूँटिन ऊपर रख जाना ए यार तुम; हमरी गली होके जाना ॥२॥
जाहु जाहु ए यार सहर को जाना, आरे सुन्दर सेज[4] ले आना।
पलंग ऊपर रख जाना ए यार तुम; हमरी गली होके जाना ॥३॥

---

[1]गिर गई। [2]दियरखा (आला)। [3]माला। [4]बिछौना।

जाहु मोरा ए यार आवे जड़इया[1]; आरे कासी के वैदा[2] बोलाना।
नटिक[3] हमारो धरवाना ए यार तुम; हमरी गली होके जाना ॥४॥
जाहु हम ए यार मरि हरि[4] जइबों; आरे हड्डी के चूना बनवाना।
बाकस[5] के भीतर रख जाना ए यार तुम, हमरी गली होके जाना ॥५॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि ऐ यार जब तुम शहर को जाना तब दोना में मेरे खाने के लिये बरफी लेते आना। उसे लाकर ताखा पर रख देना और हमारी गली में होकर जरूर जाना॥ १ ॥

ऐ पति! जब तुम बगीचे में जाना तब मेरे लिये एक सुन्दर माला लेते आना और उसे ले आकर मेरे घर की खूँटी पर टाँग देना॥ २॥

ऐ पति! जब तुम शहर को जाना तब मेरे लिये सुन्दर बिछौना लाना और उसे लाकर मेरे पलग पर रख जाना तथा मेरी गली में जरूर आना॥३॥

जब मुझे जूडी, बुखार आवे तब तुम काशी से वैद्य बुलाना और मेरी नाडी को उसे जरूर दिखलाना॥ ४॥

ऐ पति! जब मैं मर जाऊँगी, तब मेरी हड्डी से बने हुए चूने को सुन्दर बाक्स के भीतर रख देना और मेरी गली में सदैव आते जाते रहना ॥५॥

इस गीत में स्त्री की मनोभिलाषा का क्या ही सुन्दर चित्रण किया गया है। मरने पर भी वह यही चाहती है कि उसका पति उसे सदा स्मरण किया करे। प्रेम की सचमुच यह उत्कट सीमा है।

सन्दर्भ—पति-पत्नी का रति-वर्णन

(२०५)

कहाँ से घटा उमडइले कहाँ जल बरिसे हो।
धीरे धीरे कहाँ जल बरिसे हो ॥१॥
पूरब से घाटा उमडले, पछिम जल बरिसे हो।
धीरे धीरे पछिम जल बरिसे हो ॥२॥

---

[1]जूडी। [2]वैद्य। [3]नाडी। [4]नष्ट हो जाना। [5]ट्रंक।

खोल पिया सोवरन[1] केवड़िया[2], अकेला डर लागे हो।
धीरे धीरे अकेला डर लागे हो॥
ओढाव पिया लाली रजइया[3], करेजा[4] मोर काँपे हो।
धीरे धीरे करेजा[4] मोर काँपे हो॥४॥

कहाँ से यह घटा उमड कर आयी है और कहाँ आज जल बरसेगा। धीरे-धीरे कहाँ जल बरस रहा है॥ १॥

पूरब से घटा उमड कर आई है और पश्चिम में जल बरसा रही है। धीरे-धीरे पश्चिम में जल बरस रहा है॥ २॥

स्त्री अपने पति से कह रही है कि तुम केवाड़ को खोलो। मुझे अकेले में डर मालूम हो रहा है॥ ३॥

ऐ पति! अपनी रजाई को थोड़ा हमको भी ओढ़ाओ, शीत तथा वर्षा के मारे मेरा कलेजा काँप रहा है॥ ४॥

सन्दर्भ—पति का सौत लाना, कुलटा का कदाचरण

(२०६)

जब रे मेंहदिया[5] बोवन लागे राजा; चलेले परदेसवा रे।
अब रे मेंहदिया मे पाता[6] लगेला; राजा नयन[7] रस लेइ रे॥१॥
जब रे मेंहदिया फरन[8] लागे, राजा ले आवे सवतिया रे।
बेरिहि बेरि तोहि बरजों[9] ननदिया, नील चुनरि जनि पेन्हु रे॥२
ननदी नील के चुनरि जब पेन्हवे, राजा दुआरे जनि जाऊ रे।
राजा दुआरे बनारस के गुण्डा, ताके गरभ[10] रहि जाई[11] रे॥३॥

अर्थ स्पष्ट है। इस गीत में काशी के गुण्डों का उल्लेख है जिनकी प्रसिद्धि आज भी वैसी ही है।

---

[1]सोना। [2]दरवाजा (किवाड़)। [3]रजाई। [4]कलेजा, हृदय। [5]मेंहदी। [6]पत्ता। [7]आँखो से देखता है। [8]फल। [9]मना किया। [10]गर्भ। [11]रह जावेगा।

सन्दर्भ—प्रेमी पति के द्वारा स्त्री की इच्छा-पूर्ति

(२०७)

दाल भात खइवु की पूडी मँगा दीं; मोर जीव व्याकुल कइलु पतरको।
भुइये चलवु कि पालकी मँगा दीं; मोर जीव हलचल कइलु पतरको ॥१॥
हमरा संगे सोइवु कि भइया बोला दीं; मोर जीव व्याकुल कइलु पतरको।
भुइये सुतवु कि पलग मगा दीं, मोर जीव व्याकुल कइलु पतरको॥२॥

कोई पति अपनी स्त्री से पूछ रहा है कि तुम दाल, भात खाओगी या तुम्हारे लिये पूडी मँगा दूं। तुमने मेरे चित्त को व्याकुल कर दिया है। तुम पैदल चलोगी या तुम्हारे लिये पालकी मँगा दूं। तुमने मेरे जी मे हलचल पैदा कर दिया है ॥१॥

ऐ स्त्री! तुम मेरे साथ सोओगी कि अपने भाई के साथ। कहो तो उसे बुला दूं। तुम जमीन पर सोओगी कि तुम्हारे लिये पलँग मँगा दूं। तुमने मेरे चित्त को व्याकुल कर दिया है ॥२॥

संदर्भ—पत्नी का दुष्ट पति के साथ ससुराल न जाना

(२०८)

तोरा सगे ना जइवों, तोरा संगे न जाइवों[1], भूखन[2] मरि जइवों।
मोरा बावा का पूडी मिठाई; तोरा सगे ना जइवों, तोरा सगे ना जइवों ॥१॥
प्यासनि[3] मरि जइवों।
मोरा बावा का कोठा[4] अमारी, तोरा सगे ना जइवों, तोरा सगे ना जइवों।
मोरा बावा का लाली पलंगिया; तोरा संगे ना जइवों, तोरा सगे ना जइवों ॥२॥
भूखन मरि जइवों।

कोई स्त्री अपने पति मे कह रही है कि मै भूखो मर जाऊँगी परन्तु तुम्हारे साथ ससुराल नही जाऊँगी। मेरे पिता के यहाँ पूडी और मिठाई खाने को मिलती है अत. मै तुम्हारे साथ नही जाऊँगी ॥१॥

[1]नही जाऊँगी। [2]भूख। [3]प्यासा। [4]ऊँचा मकान।

मेरे पिता का मकान कई मन्जिल का है। उसमें मेरे सोने के लिये लाल पलँग बिछी हुई है। अतएव मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी चाहे मैं भूख और प्यास के कारण मर ही जाऊँ ॥ २ ॥

सन्दर्भ—सुरत-सभोग से दुर्बल स्त्री का पति को उपालम्भ

(२०९)

सोनवा अइसन हम पियरी रे; पातर कई दिहल।
मोरे राजा पातर[1] कई दिहल ॥१॥
फुलवा अइसन हम सुनरी रे; धुमलि[2] कई दिहल[3]।
मोरे राजा धुमिल कई दिहल ॥२॥
पानावा अइसन[4] हम पातरि रे; कमर लचकवल।
मोरे राजा कमर लचकवल ॥३॥
आपना मैं बाबा के दुलारी रे नइहरवा[5] छोड़ावल।
मोरे राजा नइहरवा छोड़ावल ॥४॥

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि मैं सोने के समान पीली थी परन्तु तुमने मेरे साथ उपभोग कर मुझे पतली बना दिया ॥ १ ॥

मैं फूल के समान प्रसन्न और सुन्दर थी परन्तु तुमने मुझे मसल कर कान्तिहीन बना दिया ॥ २ ॥

मैं पान के समान पतली थी परन्तु तुमने मेरी कमर को टेढ़ा कर दिया ॥ ३ ॥

ऐ पति! मैं अपने पिता की प्यारी लड़की हूँ। परन्तु तुमने गवना कराकर मेरा मायका छुड़ा दिया ॥ ४ ॥

सन्दर्भ—रूपगर्विता स्त्री का सौन्दर्य वर्णन

(२१०)

टीकवा[6] है अतरस की मोती; बाचावा[7] झोंपेदार[8]।
मोर मन ले गया बसी; तुम अइह इयार[9] ॥१॥
मोर मन ले गया बसी।

---

[1]पतली। [2]कान्तिहीन। [3]कर दिया। [4]तरह। [5]मायका। [6]सिर का गहना। [7]कान का गहना। [8]मधुर ... हुआ। [9]मित्र।

नथिया[1] है अतरस की मोती, झूलनी[2] झोंपेदार।
मोर मन ले गया बंसी, तुम अइह[3] इयार ॥२॥
मोर मन०

कंठवा[4] है अतरस की मोती, तीलरी[5] झोंपेदार।
मोर मन ले गया बंसी, तुम अइह इयार ॥३॥
मोर मन०

काड़वा[6] है अतरस की मोती, छड़वा[7] झोंपेदार।
मोर मन ले गया बंसी[8], तुम अइह इयार ॥४॥
मोर मन ले गया बंसी ॥

अर्थ स्पष्ट है। स्त्री अपने विभिन्न आभूषणों का वर्णन कर रही है।

सन्दर्भ—परदेस से बहुत दिनों पर लौटे हुए पति से स्त्री की बातचीत

(२११)

गवना कराइ सइया घर बइठवलें[9], अपने चलेला परदेस।
बरहो बरिस पर पिया मोर अइले, अब ना जइहें[10] बिदेस ॥१॥
गोरिया[11] रस चुवेला।

दुरु दुरु[12] कुकुरा[13] रे, दुरु रे बिलरिया[14], दुरु रे सहरवा[15] के लोग।
गोरिया रस चुवेला ॥२॥

नाहि हम हई रे कुकुरा, बिलरिया; नाहिं रे सहरवा के लोग।
आरे हम तजे हई रे नान्हें[16] बिहवा[17] तोरा साथे करबि[18] उपभोग।
गोरिया रस चुवेला ॥३॥

---

[1]नाक का गहना। [2]नाक का गहना। [3]आना। [4]गले का गहना। [5]हार। [6]पैर का गहना। [7]पैर का गहना [8]बंशी बजाने वाला। [9]बैठा दिया। [10]जायेगा। [11]स्त्री। [12]दूर भगो। [13]कुत्ता। [14]बिल्ली। [15]शहर। [16]बच्चा। [17]विवाहित। [18]करूँगा।

जाहु तुहुँ हवे रे नान्हें के वियहुवा, भिति[1] में से चिपरी[2] ओदार[3]।
चिपरी ओदरइति काली विछि[4] मरलसि; सइयां करेला पुकार ॥
गोरिया रस चुवेला ॥४॥
आरे कहिया[5] के वदला सधवलु[6] ऐ गोरिया, कहिया के देवता मनाव।
गवना कराइके घर वइठवले; ओहि दिन के वदला[7] सधाव ॥
गोरिया रस चुवेला[8] ॥५॥

कोई स्त्री कह रही है कि मेरा पति गवना कराकर और मुझे घर वैठाकर स्वय विदेश चला गया है। आज वारह वर्ष के वाद लौट कर आया है। अव कभी विदेश नहीं जायगा॥ १ ॥

पति ने आकर स्त्री के घर का दरवाजा खटखटाया। इस पर सशंकित होकर वह कहती है कि कुत्ता हो या विल्ली दूर भग जाओ। यदि शहर का का कोई वदमाश आदमी है तो वह भी चला जाव ॥ २॥

इस पर पति उत्तर देता है कि न तो मैं कुत्ता हूँ और न विल्ली और न शहर का ही कोई वदमाश आदमी हूँ। मैं तो बचपन में व्याहा गया तुम्हारा पति हूँ तथा परदेश से तुम्हारे साथ उपभोग करने के लिये आया हूँ॥ ३ ॥

स्त्री ने कहा कि यदि तुम मेरे पति हो तो मेरी दीवाल में उपले (गोंइठा) चिपके पड़े हैं। उन्हें उसमे अलग निकालो। उपले को निकालते समय पति को काले विछू ने काट खाया और वह जोर से रोने लगा ॥ ४ ॥

उसने स्त्री से पूछा कि तुम किस दिन के अपराध का वदला चुका रही हो तथा किस कारण इस दिन के देवता को प्रसन्न कर रक्खा था? स्त्री ने उत्तर दिया कि तुमने मेरा गवना कराकर मुझे घर में वैठा दिया और स्वय परदेश चले गये। उसी दिन का वदला मैं आज चुका रही हूँ॥ ५ ॥

---

[1] दिवाल। [2] उपला। [3] अलग करो। [4] विच्छू। [5] किस दिन का। [6] निकालना। [7] वैर, शत्रुता। [8] चूता है।

सन्दर्भ—युवती ननद को देख भौजाई का सास, ससुर से उसके लिए पति खोजने की प्रार्थना

(२१२)

सभवा बइठल रउरा ससुरा बड़इता,
ननदो जोगे खोजु वर सेयान। कठिन दिन सावन हो ॥१॥
अइसन बोलिया जनि बोलिह हे बहुआ,
मेरी बेटी लरिका नदान। कठिन दिन सावन हो ॥२॥
मचिया बइठल रउरा सासु बढाइतिन,
ननदो जोगे खोजु वर सेयान। कठिन दिन सावन हो ॥३॥
अइसन बोलिया जनि बोलिहे रे बहुआ,
मेरी बेटी लरिका नदान। कठिन दिन सावन हो ॥४॥
हरवा जोतइते मेरा सामी हो बड़इता,
ननदो जोगे खोजु वर सेयान। कठिन दिन सावन हो ॥५।
पुरुब खोजलों मे पछिम खोजलों, कतहुँ ना मिले वर सेयान।
कठिन दिन सावन हो ॥६॥
गइलों में गइलों में तिरहुत देसवा, ओतही जे मिले वर सेयान।
कठिन दिन सावन हो ॥७॥
उनहीं के तिलक चढाव, कठिन दिन सावन हो ॥८॥

इसी गोत मे भौजाई अपनी ननद को सयानी देख कर पहले अपने ससुर और बाद अपनी सास और पति से कहती है कि सभा मे बैठे हुए ऐ मेरे श्रेष्ठ ससुर! मेरी ननद के लिए तुम वयस्क वर खोजना। क्योंकि सावन का महीना बडा ही कष्ट दायक होता है॥ १॥

ससुर उत्तर में कहता है कि ऐ मेरी वधू! तुम ऐसी बात मत कहो क्योंकि मेरी लडकी बहुत छोटी है॥ २॥

तब बहू सासु से कहती है कि मचिया पर बैठने वाली ऐ मेरी सास! मेरी ननद सयानी है। इसके लिये युवा वर खोजना॥ ३॥

मान उत्तर देती है कि तुम ऐसी बात मत कहो मेरी लड़की बहुत छोटी है ॥४॥

अपने पति को सम्बोधित करके कहती है कि ऐ मेरे हल जोतने वाले पति। मेरी ननद के लिये सयाना पति खोजना ॥५॥

पति उत्तर में कहता है कि मैंने पूर्व और पश्चिम दोनो दिशा में वर खोज लिया परन्तु कहीं भी सयाना वर नहीं मिला ॥६॥

मैं तिरहुत देश में गया और वहाँ पर सयाना वर मिल गया ॥७॥

उसी को मैंने तिलक चढा दिया अर्थात् वर के रूप में स्वीकृत कर लिया ॥८॥

टिप्पणी —उपर्युक्त गीत से पता चलता है कि प्राचीन काल में भी युवती कन्या के लिये युवा वर खोजने की प्रथा थी। तिरहुत में युवा वर मिलने से पता लगता है कि इस प्रान्त में प्रौढ विवाह की प्रथा प्रचलित थी।

सन्दर्भ—पत्नी के द्वारा घर न छोड़ने की पति से प्रार्थना परन्तु दुष्ट पति की अस्वीकृति

(२१३)

साँप छोडेले सांप केचुलि गंगा छोड़ेलि अरारि।
तूहूँ सैया तेजल निज ग्रिह् धनी अरारि ॥१॥
घोडवा का देवों घोडसरिया[1] हथिया के देवों हथिसार[2]।
तूहूँ प्रभु देवों अटरिया रहवों नैना के हजूर ॥२॥
घोडवा के देवहुँ महेलवा[3] हथिया के लवंग कपूर।
तुहुँ प्रभु देवों घिउ[4] खीचड़ कर जोरि रहवों हजूर ॥३॥
नैया तोर बूडो महा घरवा वरदी[5] ले जासु चोर।
तुहुँ प्रभु मारे वटवरवा होइवों चौकवा[6] के राँड़ ॥४॥

---

[1] घोडे के रहने के स्थान। [2] हाथी के रहने के लिये जगह। [3] उत्तम भोजन। [4] घी। [5] बैल। [6] विवाह होते ही (बाल-विधवा)।

नैया मोर लगिहें सुरुज घाट बरदी उतरेले पार।
धनि बेचवों मोगल हथवा दूसर करवों बिआह ॥४॥

सर्प अपनी केंचुल को छोड़ता है और गंगाजी अपने किनारे को छोड़ती हैं। मेरे प्रियतम अपने प्रिय स्त्री को छोड़ते हैं और अपने स्थान को भी छोड़ देते हो॥ १॥

मैं घोड़ो के लिये घुड़सार दूँगी और हाथियों के लिये हाथीखाना दूँगी। हे प्रभु मैं तुमको अटारी दूँगी और इस तरह सर्वदा तुम्हारे नेत्रों के सामने रहूँगी॥ २॥

मैं घोड़ो के लिये उत्तम भोजन दूँगी और हाथी के लिए लवंग और कपूर दूँगी। मैं तुमको घी और खिचड़ी दूँगी तथा सर्वदा हाथ जोड़कर खड़ी रहूँगी॥ ३॥

तुम्हारा जहाज बड़े समुद्र में डूब जाय, बैल को चोर चुरा ले जाय, तुम्हें डाकू मार डाले, हे प्रिय मैं विधवा हो जाऊँगी॥ ४॥

मेरा जहाज सूरज घाट पर लग जायेगा और बैल नदी को पार कर लेगा। हे प्रिये! मैं तुम्हे मुगल के हाथ बेच दूंगा और फिर दूसरी शादी कर लूँगा॥५॥

सन्दर्भ—किसी कामुक का कुलटा स्त्री से निवेदन

(२१४)

काहे मन मारी खड़ी गोरी अगना। टेक
धरती के लहंगा, बादरी के चोली।
जोन्हीं के बटम, कसवी दुनों जोबना॥ काहे मनमारी०
रूपे के बाजू बन, सोने के कँगना।
रेशम के चोली, ढकबी दुनों जोबना॥ काहे मनमारी०
टुटी जइहे बाजूबन, फूटी जइहें कंगनवा।
फाटी जइहें चोली, लटकी जइहे जोबना॥ काहे मनमारी०

बनी जाई बाजूबन, जुटी जाइ कँगना।
सिया जाई चोली, उठाई देवों जोबना। काहे मनमारी०

श्रृंगार रस का कैसा सुन्दर वर्णन किया गया है। गाने का भाव बड़ा ही मनोहर है? अर्थ सीधा है। इसलिए अर्थ नही दिया जाता है। पाठक-गण इसे पढकर आनन्द लूटें।

सन्दर्भ--पत्नी की उक्ति पति के प्रति

(२१५)

पूरब जइह राजा पछिम जइह।
आरे टिकुली ले अइह राजा चमके लिलार हो ॥१॥
आरे जलदी से अइह राजा जड़वा की राति हो।
नथिया ले अइह राजा झुलनी लगाइ हो ॥२॥
अँगवा के पातरि धनिया, मुँहवा के दुरहुर हो।
आरे तोके कइसे तेजवों राजा जड़वा की राति हो ॥३॥
हसुली ले अइह राजा हलकी लगाइ हो।
बजुआ ले अइह राजा झबिया लगाइ हो ॥४॥
अंगवा के पातरि धनिया; मुँहवाँ के दुरहुर हो।
आरे तोके कइले छोड़बि धनिया, जड़वा की राति हो ॥५॥

पत्नी पति से कहती है कि यदि तुम परदेश जाना तो मेरे लिये अमुक-अमुक वस्तुएं ले आना। परन्तु पति कहता है कि ऐ सुन्दरी स्त्री! मैं तुम्हे जाड़े की रात में अकेले छोड़कर परदेश कैसे जा सकता हूँ?

११ बारहमासा

'बारहमासा' उन गीतो को कहते है जिनमे बारहो महीनो का वर्णन रहता है। भोजपुर प्रान्त मे बारहमासा का प्रचुर प्रचार है। देहात के लोग इन गीतो को गाना और सुनना बहुत पसन्द करते है क्योकि उन्हे एक साथ ही बारहो महीने के सुख-दुख का दृश्य सामने दिखाई पडने लगता है। बारहमासा प्राय करके आषाढ मास के वर्णन से प्रारम्भ होता है और ज्येष्ठ मास के वर्णन मे समाप्त होता है। इन बारहमासो मे कही तो प्रिय के परदेश चले जाने से पत्नी की विरह-वेदना का मार्मिक चित्रण पाया जाता है तो कही सयोग शृंगार का हृदय हारी वर्णन। शृगार रस मे ओत-प्रोत होने के कारण ये बारहमासे किस के मन को बरबस नही हरते? पाठक अब कुछ बारहमासो का आनन्द ले।

सन्दर्भ—परदेश जाने के लिये उद्यत पति को रोकने के लिये स्त्री की प्रार्थना तथा पति का उसे स्वीकार न करना

(२१६)

बरिसहु[1] आहो ए देव; आरे घरी[2] रे पहर[3] राती।
आरे पिया के पायेतावा[4]; घरे बेलमावहु[5] रे की॥१॥
जाहु तुहुँ आहो ए धनिआ; देव के मनइबु[6]।
आरे छातावा लगाइबि; पंथ हम जाइबि रे की॥२॥
आरे कहाँवा हउवे[7] रे, डोम[8] रे डोमिनिया।
आरे कावाना सहरिया; छातावा बीनेला[9] रे की॥३॥

---

[1]वर्षा करो। [2]घटी। [3]प्रहर। [4]प्रस्थान (यात्रा)। [5]रोक दो। [6]प्रार्थना करना। [7]है। [8]भगी। [9]बुनता है।

पुरुब नगरिया के; रे डोमनिया।
आरे पछिम सहरिया; छातावा बीनेला रे की ॥४॥
लेहु ना रे डोमवा भइया; डाल[1] भरि सोनवा।
आरे पिया हाथे छातावा; जनि वेचहु रे की ॥५॥
जाहु तुहुँ आहो ए धनिया; आरे डोमवा वरिजबु[2]।
आरे भीजत पंथ, जाइवि रे की ॥६॥
लेहु ना मलहवा भइया, आरे डाल भरि सोनवा।
आरे पियवा तू नइया, जानि चढ़ावहु रे की ॥७॥
जाहु तुहुँ आहो ए धनिया, आरे मलहवा वरिजवु।
आरे अवरीं[3] पँवरि पन्थ हम जाइवि रे की ॥८॥

किसी स्त्री का पति परदेश जा रहा है। उसकी स्त्री उसे मना कर रही है परन्तु वह नहीं मानता है। इस पर वह प्रार्थना कर रही है हे देव! एक प्रहर रात्रि मे ही तुम वर्षा करने लगो जिससे मेरे पति का प्रस्थान घर में ही रुक जाय अर्थात् वह वर्षा के कारण यात्रा न कर सके॥ १॥

तब वह पुरुष कहता है कि ऐ स्त्री! यदि तुम भगवान् की प्रार्थना कर वर्षा बरसा कर मेरी यात्रा रोकना चाहती हो तो मैं छाता लगाकर परदेश चला जाऊँगा॥ २॥

वह पुरुष कहता है कि डोम और डोमिन कहाँ रहती है और किस शहर में बाँस का छाता बुनती है॥ ३॥

पूरब के नगर में डोम और डोमिन रहती है और पच्छिम के शहर में छाता बुनती है॥ ४॥

स्त्री उस डोम से कह रही है कि ऐ मेरे भाई डोम! तुम मुझ से एक डाली सोने की ले लो और मेरे पति के हाथ छाता मत बेचो। नहीं तो उसे लेकर वर्षा होने पर भी वह परदेश चला जायेगा॥ ५॥

तब पति ने उत्तर दिया कि ऐ स्त्री यदि तुम डोम को छाता देने से मना कर दोगी तब मैं भीगते ही परदेश चला जाऊँगा॥ ६॥

[1] डाली या छबड़ी। [2] मना करना। [3] तैर करके।

स्त्री मल्लाह से कहती है कि ऐ भइया मैं तुमको भी डाल भर सोना दूँगा। तुम मेरे पति को अपनी नाव पर चढ़ाकर पार मत करना ॥ ७ ॥

तब पति कहता है कि ऐ स्त्री यदि तुम मल्लाह को मना करोगी तब मैं तैर कर नदी पार कर लूँगा और परदेश चला जाऊँगा ॥ ८ ॥

इस गीत में स्त्री का उत्कृष्ट पति-प्रेम बड़ी सुन्दर रीति से दर्शाया गया है। पत्नी पति को परदेश जाने से मना कर रही है और उसके न मानने पर नाना प्रकार के प्रयत्न करती है। वह इस काम के लिये डाल भर सोना भी देने के लिए तैयार है। धन्य है स्त्री का यह आदर्श प्रेम। जहाँ इस गीत में पत्नी का उत्कृष्ट प्रेम दर्शाया गया है वहाँ पति की निष्ठुरता भी स्पष्ट रूप से झलक रही है।

सन्दर्भ—बारहों महीने की विशेषताओं का वर्णन। प्रोषितपतिका स्त्री की उक्ति अपनी सखी के प्रति

(२१७)

प्रथम मास असाढ़[1] सखि हो, गरजि गरजि के सुनाई।
सामी के अइसन कठिन जियरा[2], मास असाढ़ नहिं आय ॥१॥
सावन रिमझिमि बुनवा[3] बरिसे, पियवा भींजेला परदेस।
पिया पिया कहि रटेले कामिनि, जंगल बोलेला मोर ॥२॥
भादो रइनी[4] भयावन सखि हो, चारु ओर बरसेला धार[5]।
चकवी त चारु[6] ओर मोर[7] बोले दादुर सबद[8] सुनाई ॥३॥
कुवार[9] ए सखी कुंवर विदेसे गइलें, तीनि निसान।
सीर सेनुर[10], नयन काजर, जोवन जीव के काल ॥४॥
कातिक ए सखी कतिकी[11] लगलु है, सब सखि गंगा नहाय।
सब सखि पहिरे पाट पीतम्बर, हम धनि लुगरी[12] पुरान[13] ॥५॥

---

[1] आषाढ़। [2] हृदय। [3] बूँद। [4] रात। [5] पानी की धारा। [6] चारो ओर। [7] मेरे। [8] शब्द। [9] आश्विन। [10] सिन्दूर। [11] कातिक का स्नान। [12] फटा कपड़ा। [13] पुराना।

अगहन ए सखि गवना करवले; तब सामी गइलें परदेस।
जब से गइलें सखि चिठियो ना भेजलें, तनिको खबरियो[1]
न लेस[2] ॥६॥
पुस ए सखि फसे फुसारें[4] गइलें, हम धनि बानी अकेली।
सून मंदिलवा, रतियो न बीते, कब दों न होइहें बिहान[5] ॥७॥
माघ ए सखि जाड़ा लगतु है, हरि बिनु जाडो न जाई।
हरि मोरा रहिते त गोद में सोवइते[6], असर न करिते जाड़[7] ॥८॥
फागुन ए सखि फगुआ मचतु हैं, सब सखि खेलत फाग।
खेलत होली लोग करेला बोली, दगधत[8] सकल सरीर ॥९॥
चैत मास उदास सखि हो, एहि मासे हरि मोर जाई।
हम अभागिनि कालिनि साँपिनि अवेला समय बिताई ॥१०॥
बइसाख[9] ए सखि उखम[10] लागे, तन में से ढरेला[11] नीर।
का कहों अहि जोगिनिया के, हरिजी के राखेले लोभाई ॥११॥
जेठ मास सखि लूक[12] लागे, सर[13] सर चलेला समीर।
अबहूँ ना सामी घरवा गवटेला[14], ओकरा[15] अखियो ना नीर॥१२॥

कोई स्त्री जिनका पति परदेश चला गया है अपनी सखी से कहती है कि ऐ सखी यह पहिला महीना आषाढ का है। बादलों का गरजना सुनाई पड रहा है। परन्तु मेरे पति का हृदय इतना कठोर है वह इस महीने में भी नहीं आया॥ १ ॥

ऐ सखी! सावन के महीने में रिमझिम करके बूंदें बरस रही हैं। मेरा पति परदेश में कहीं भीगता होगा। मैं पिया-पिया करके रट लगा रही हूँ और जंगल में मोर बोल रहा है॥ २ ॥

ऐ सखी! भादो की रात बडी भयानक लगती है और चारो ओर से पानी की धारा गिर रही है। मेरे चारों ओर मखी बोल रही है और मेढक का शब्द सुनाई दे रहा है॥ ३ ॥

---

[1]खबर,परवाह। [2]लेता है। [3]पौष। [4]पानी बरसता है। [5]सवेरा। [6]सुलाना। [7]जाडा। [8]जलाना है। [9]बैसाख। [10]उष्मा, गर्मी। [11]गिरना है। [12]लू। [13]जोर से। [14]लौटता है। [15]उनको।

हे सखी ! कुआर (आश्विन) के महीने में मेरा पति विदेश चला गया तथा जाते समय वह सिर से सिन्दूर, आँखों से काजल और स्तन ये तीन चीजें चिह्न के रूप में ले गया है ॥ ४ ॥

हे सखी ! कार्तिक के महीने में गंगा-स्नान का मेला लगता है और हमारी सखियाँ गंगा-स्नान कर रही हैं। वे तो पीताम्बर वस्त्र पहिनती हैं और मैं पति-वियोग के कारण फटा-पुराना वस्त्र पहिनती हूँ ॥ ५ ॥

हे सखी ! पति ने अगहन के महीने में गवना कराया और गवना कराते ही वह परदेश चला गया। जब से पति गया है तब से कोई भी पत्र उसने नहीं भेजा। वह मेरी कुछ भी खोज-खबर नहीं लेता ॥ ६ ॥

हे सखी ! पौष के महीने में कभी-कभी वारिश हो जाती है। मैं अकेली हूँ, मेरा घर सुनसान पड़ा है। दुःख के कारण मेरी रात भी नहीं कटती। न मालूम सवेरा कब होगा ॥ ७ ॥

हे सखी ! माघ के महीने में बहुत जाड़ा लगता है। पति के साथ बिना सोये जाड़ा नहीं जाता। यदि मेरा पति घर में होता तो मैं उसे अपनी गोद में स्वयं सुलाती। तब जाड़ा मुझे जरा भी असर नहीं करता ॥ ८ ॥

हे सखी ! फागुन के महीने में फगुआ (होली) होता है और सब सखियाँ फाग खेल रही हैं। मेरी सखियाँ होली खेलते हुए मुझ से बोली अर्थात् मजाक करती हैं जिससे मेरा सारा शरीर जला जाता है ॥ ९ ॥

हे सखी ! चैत का महीना बड़ा उदास लगता है। वसन्त ऋतु के इसी सुखी समय में पति परदेश चला गया है। मैं अभागिन काली सर्पिणी के समान हूँ। मेरा पति वसन्त का समय बिताकर घर आयेगा ॥ १० ॥

हे सखी ! बैसाख के महीने में बड़ी गर्मी लगती है और शरीर में से पसीना गिरता रहता है। मैं उस योगिनी को क्या कहूँ जिसने मेरे पति को परदेश में लुभा रक्खा है ॥ ११ ॥

हे सखी ! जेठ के महीने में लू लगती है क्योंकि हवा बड़े जोरों से चल रही है। परन्तु मेरा पति अभी तक भी घर लौटकर नहीं आया। मालूम होता है कि उसकी आँखों में अब पानी (शर्म) नहीं रहा ॥ १२ ॥

इस एक ही गीत में बारहो महीने का वर्णन बडी सुन्दर रीति से किया गया है। यह वर्णन आषाढ के महीने से शुरू होकर जेठ मे समाप्त होता है। भिन्न-भिन्न ऋतुओ के आने पर विरह-विधुरा इस स्त्री के हृदय मे जो-जो मधुर भाव उठते है उनका बहुत ही सुन्दर वर्णन यहाँ मिलता है। पौष की रात्रि सचमुच बडी होती है फिर पति-वियोग से दु खिता स्त्री के लिये उसे बिताना तो नितान्त कठिन है। ऐसी ही एक वियोगिनी स्त्री के दुःख का वर्णन करते हुए हिन्दी के एक कवि ने लिखा है—

"बीती औधि आवन की, लाल मनभावन की।
डग भई बावन की, सावन की रतियाँ" ॥

माघ के महीने में स्त्री कहती है कि पति के बिना जाडा नही जाता यह कथन अक्षरशः ठीक है। देहातो मे एक कहावत प्रचलित है कि "जाड जाई दुई कि रुई कि धूई" अर्थात् जाडा जोडे (स्त्री और पुरुष) के एक साथ मिलकर सोने से जाता है अथवा रूई अर्थात् लिहाफ से जाता है अथवा धुई अर्थात् अग्नि से भागता है। इस स्वतः सिद्ध तथ्य में भला किसे सन्देह हो सकता है।

सन्दर्भ—विरहिणी स्त्री के द्वारा बारहमासे का वर्णन

(२१८)

प्रथम मास आसाढ हे सखि, साजि चलले जलधार हे।
सबके बलमुआ राम-घर-घर अइलें, हमरो बलमु परदेस हे ॥१॥
सावन हे सखि सरब सोहावन, रिमझिमि बरसले देव हे।
बारि उमिरि परदेस बालम, जीअवों कवना अधार हे ॥२॥
भादों हे सखि रइनि भयावन, सूझलेआर ना पार हे।
लवका जे लवके राम बिजुली जे चमकेला, कड़केला जियरा हमार हे ॥३॥
असिन हे सखि आस लगायल, आसो न पूरल हमार हे।
आस जे पूरे राम कुबरीजोगिनिया के जिन कन्त राखे बिलमायहे॥४

कातिक हे सखि पुनित महीना, सखि सब चले गङ्गा असनान हे।
सब सखि पेन्हे राम पाट पीताम्बर, मैं धनि लूगरी पुरानी हे ॥५॥
अगहन हे सखि अगर सोहावन, चहुँ दिसि उपजेला धान हे।
हंस चकेउआ राम केर करतु हैं, तइसे जग ससार हे ॥६॥
पूस हे सखि ओस परतु है, भिजेला अँगिया हमार हे।
एक त जे भींजे राम नवरंग चोलिया दूसरे भीजेला लामी केस हे ॥७॥
माघ हे सखि पाला पडतु हैं, बिना पिया जाड़ो ना जाइ हे।
पिया जे रहितें घरे रुइया भरइते, खेपि जइतों मघवा के जाड हे ॥८॥
फागुन सखि सब फाग खेलतु हैं, घर-घर उड़ेला अबीर हे।
सब सखि खेले राम अपना बलमु-सग, हमरो बलमु परदेस हे ॥९॥
चइते हे सखि चित मोरा चञ्चल, जिअरा[1] जे भइले उदास हे।
कलिया[2] में चुनि-चुनि सेजिया डसबलों, पिया बिनु सेजिया उदास ॥१०॥
बैसाख हे सखि बॅसवा कटाइले, रचि-रचि बॅगला छवाई हे।
हुनि[3] पिया राम लाली पलॅगिया[4], हम धनि बेनिया[5] डोलाई हे ॥११
जेठ हे सखि भेट भइले, पूरि गइले बारहमास मास मासहे।
रामनरायन, सूरदास गायन, गाइ-गाई[6] सखि समुझाई हे ॥१२॥

किसी स्त्री का पति परदेश चला गया है उसके विरह में वह स्त्री अपनी एक सखी से कह रही है कि ऐ सखी! आषाढ का पहिला महीना आ गया, जल की धारा जोरो से चलने लगी अर्थात् वर्षा ऋतु आ गई। सब स्त्रियो के प्रियतम अपने घर पर आ गए परन्तु मेरा पति परदेश मे ही है॥ १॥

ऐ सखि। सावन का महीना बडा सुहावना लगता है। रिमझिम पानी बरसता है। मेरी यौवनावस्था आगई है परन्तु प्रियतम परदेश मे है। मैं किस अवलम्ब से जीऊँगी॥ २॥

ऐ सखि! भादो की रात्रि भयावनी होती है। आर पार कुछ भी नही

---

[1]हृदय। [2]कली। [3]सोना। [4]पलग। [5]पखा। [6]गाकर।

दिखाई देता। बिजली के चमकने ही पर कुछ दिखाई पड़ता है। परन्तु बिजली के कड़कने से प्रिय के लिए मेरा हृदय भी तड़पने लगता है॥ ३॥

ऐ सखि! आश्विन के महीने में मुझे आशा थी कि प्रियतम घर आवेंगे। परन्तु वह मेरी आशा पूरी न हुई। मालूम होता है कि उस कुबड़ी स्त्री की आशा पूरी हो गई—जिसने मेरे पति को अपने माया-जाल में फँसा रखा है॥ ४॥

ऐ सखि! कार्तिक महीना बड़ा पवित्र है। सब लोग गंगा-स्नान के लिए जाते हैं। सब लोग रेशमी और पीताम्बर वस्त्र पहनते हैं। परन्तु मैं गरीबिनी फटी पुरानी साड़ी पहनती हूँ॥ ५॥

ऐ सखि! अगहन का महीना बड़ा सुहावना है। इस समय चारों दिशाओं में धान पैदा होता है। हंस और चकोर क्रीड़ा करते हैं तथा संसार के लोग भी आनन्द मनाते हैं॥ ६॥

ऐ सखि! पूस मास में ओस पड़ती है—जिससे मेरी अँगिया (पहनने का वस्त्र) भीग जाती है। एक तो मेरी चोली भीग जाती है और दूसरे मेरे लम्बे-लम्बे केश॥ ७॥

ऐ सखि। माघ में जाड़ा पड़ता है। बिना प्रियतम के जाड़ा नहीं जाता अगर मेरे पति घर होते तो मैं लिहाफ में रुई भरवाती और मैं माघ के जाड़े को इस प्रकार सह लेती॥ ८॥

ऐ सखि! फागुन के महीने में फाग खेला जाता है। परस्पर गुलाल लगाया जाता है। सब स्त्रियाँ अपने पति के साथ फाग खेल रही हैं। परन्तु दुख है कि इस समय मेरा पति परदेश में है॥ ९॥

ऐ सखि! चैत के महीने में मेरा चित्त चंचल है तथा मेरा मन अत्यन्त उदासीन है। कलियों को चुन-चुन कर मैंने सेज सजाया था। लेकिन प्रियतम के बिना मेरी शय्या उदास मालूम होती है॥ १०॥

ऐ सखि! बैसाख में बाँस को कटवा कर मैं एक सुन्दर बँगला बनवाऊँगी। जब मेरे पति आकर पलंग पर बैठेंगे तो मैं धीरे-धीरे पंखा करूँगी।११।

ऐ सखि ! ज्येष्ठ का महीना आगया। प्रियतम को परदेश गये अब पूरे बारह मास हो गये। परन्तु फिर भी वे लौट कर नहीं आए। अब मैं सूरदास आदि कवियों के पदों को गा-गाकर अपने हृदय को सान्त्वना दूंगी ॥१२॥

टिप्पणी—उपर्युक्त गीत में प्रोषितपतिका स्त्री का कितना सुन्दर चित्र चित्रित किया गया है। पति के वियोग में उसे सारी प्रकृति ही भयावनी मालूम पड़ती है तथा सावन का मनभावन महीना भी उसे सुहावना नहीं मालूम पड़ता। यह विरह-वर्णन कितना मर्मस्पर्शी तथा हृदय-द्रावक है। इस गीत में विरह का वर्णन कितना सादा और स्वाभाविक है।

सन्दर्भ—विरहिणी स्त्री के द्वारा प्रकृति की भयंकरता का वर्णन

(२१६)

भादों भवन सोहावन न लागे। आसिन मोहि न सोहाइ।
कार्तिक कन्त विदेस गइल हो। समुझि समुझि पछताई ॥१॥
अगहन आइल न कहि गइल ऊधो। पूस बितल भरि माँस।
माघ माँस जोवन के मातल। कैसे धरब जिउ[1] आस ॥२॥
फागुन फरकेले नैन हमार। चैत मास सुनि पाइ।
पियवा जे अइतन एहि बइसाखे। फुलवन सेजवा बिछइती ॥३॥
जेठ माँस बेआकुल[2] जइसे राधे। नहिं है शाम हमार।
तुलसिदास प्रभु तोहर दरस[3] के। कइसे खेपों[4] माँस असाढ़[5] ॥४॥

पति परदेश चला गया है। उसके वियोग में कोई भी महीना सुहावना नहीं लग रहा है। यहाँ तक की श्रावण का महीना उसके लिए शत्रु हो गया है—

भादो के महीने में मुझे घर सुन्दर नहीं लगता है। आश्विन मास भी मुझे सुहावना नहीं लगता। कार्तिक महीने में मेरा प्रेमी दूर चला-गया है। जब मैं उसे बार-बार स्मरण करती हूँ तब मुझे बहुत उदास होना पड़ता है ॥१॥

---

[1]जीव (प्राण)। [2]व्याकुल। [3]दर्शन। [4]बिताना। [5]आषाढ़।

ऐं ऊवों अगहन मास में उसने आने के लिए कहा था। लेकिन नहीं आया। पूरा पूस महीना बीत गया। माघ के महीने में मैं यौवन से मतवाली हो गई। अत मैं किस तरह से जीवन की आशा कर सकती हूँ॥ २॥

फाल्गुन मास में मेरे नेत्र फड़कने लगते हैं और मैं चैत्र के महीने में समाचार सुनती हूँ। यदि प्रियतम इस वैशाख में आ जाते तो मैं फूल की सेज तैयार करती॥ ३॥

जेष्ठ में रावे के सदृश मैं व्याकुल हो जाती हूँ क्योंकि मेरे श्याम (पति) उपस्थित नहीं हैं। तुलसीदास प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु तुम्हारा दर्शन कैसे होगा। किस तरह से आषाढ़ मास व्यतीत होगा॥ ४॥

१२. कजली

सावन के मनभावन महीने में जो गाने गाये जाते है उन्हे 'कजली' कहते हैं। इन गीतो का वर्ण्य विषय पति-पत्नी का प्रेम होता है। इनमे नायिका के विरह का बडा ही मार्मिक चित्रण पाया जाता है। सयोग तथा विप्रलम्भ-शृगार का बडा ही सुन्दर वर्णन इनमे होता है।

सावन का महीना सचमुच ही बहुत सुहावना होता है। नीले आकाश में बादल घिरे रहते हैं। घटाये हाथियो के समूह के समान क्षितिज पर से उमडती हुई चली आती है। वायु के द्वारा वे एक ओर से दूसरी ओर उडाई जाती है। बीच-बीच मे बक-पक्ति की शोभा चित्त को मोह लेती है। कभी-कभी घटा घहराती है, बिजली चमकती है, रिमझिम-रिमझिम बूंदे गिरने लगती हैं। वृक्ष, लता और पौधे धुल जाते हैं। सबके पत्ते निखर आते है। खेत और जगल सब हरियाली से भर जाते हैं। इस समय का दृश्य ऐसा सुहावना लगता है जिसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। जिन लोगो ने किसी पहाडी प्रदेश में रहकर सावन का महीना बिताया है वे इसके आनन्द का अच्छी तरह से अनुभव कर सकते है। पहाडी प्रदेशो मे वर्षा में न तो कही कीचड दिखाई पडता है और न किसी प्रकार की गन्दगी ही रहती है।

परन्तु गाँवो का दृश्य कुछ दूसरा ही दिखाई पडता है। इस समय नाले बहने लगते है। नदियाँ उमड पडती है और तालाब भर जाते है। पृथ्वी पर तरह-तरह के नये जीव पैदा हो जाते है। सब अपनी-अपनी बोलियाँ बोलने लगते है। झींगुर की 'झीं' 'झीं' और मेढक की 'टर्र' टर्र' की आवाज से दिशाये गूंज उठती है। पशु कलोल करने लगते हैं। पक्षी कलरव करते हैं। कही मोर जगल में कलरव करता हुआ नाचने लगता है तो कही पपीहा 'पी' 'पी' की रट लगाता है। पक्षियो के कलरव से जगल में ऐसा जान पडता है मानो सोई हुई प्रकृति जाग पडी हो।

किसान अपने हरे-भरे खेत के किनारे अपने भविष्य की कल्पनाओं में मस्त दिखाई पड़ता है। ग्वाला मैदान में अपनी गाय और भैंस को चराता हुआ बिरहा गाने में बेसुध रहता है। कहार डोलियों में कन्याओं को उनके नैहर की ओर लिये जाते हुए और मर्मभेदी गीत गाते हुए दिखाई पड़ते हैं।

इस प्रकार से सावन के महीने में प्रकृति सर्वत्र हरी दिखाई पड़ती है और मेघों के आगमन के साथ ही साथ प्रकृति में एक विचित्र तरह की मादकता पाई जाने लगती है। सम्भवतः महाकवि कालिदास ने "मेघालोके भवति सुखिनोप्यन्यथा वृत्तिचेतः" लिख कर इसी मादकता या मस्तीपन की ओर संकेत किया है। महाकवि सूरदास को तो सारी प्रकृति ही हरी-हरी सूझ रही है—आप कहते हैं—

"जित देखो तित स्याम मयी है।
स्याम कुंज, वन, यमुना स्यामा;
स्याम स्याम नव घटा छई है॥
जित देखो तित स्याम मयी है।

सावन के महीने में हर एक गाँव में, बाग में या तालाब के किनारे झूले लगाये जाते हैं जिनमें गाँव के स्त्री-पुरुष झूला झूलते रहते हैं। इन झूलों को लगाने के लिये बड़ी तैयारी की जाती है। सुन्दर रंगीन रस्सी होती है और काठ के तख्ते में उसे बाँधकर पेड़ की किसी शाखा से लटका देते हैं। इसी सुसज्जित झूले पर बैठकर नर-नारी आनन्द उठाते हैं और सावन के गीत गाते जाते हैं। कोई पुरुष झूले पर खड़े होकर उसे झटका देकर जोर से चलाता रहता है इसे पेंग बढ़ाना कहते हैं। इस प्रकार सावन में झूले का दृश्य बड़ा ही आनन्द-दायक होता है।

सावन के मनभावन महीने में भोजपुर प्रान्त में भी कजली गाने का बहुत प्रचार है। मिर्जापुर जिले की कजली प्रसिद्ध है। वहाँ सावन के दिनों में कजली के दंगल भी हुआ करते हैं जिनमें दो पार्टियाँ बड़ी अदा के साथ कजली सुनाती हैं। सचमुच ही यह दृश्य देखने योग्य होता है। जब

गवैये अपने मधुर कण्ठ से "घिरी आई री बदरिया सावन की" गाने लगते हैं तब वास्तव में समा बँध जाता है।

नीचे कजली के जो गीत दिये जाते हैं उनमे कही तो सावन के सुहावन महीने मे झूला झूलने का वर्णन किया है तो कही इस आनन्दोत्सव पर प्रियतम के विरह के कारण दुःख की व्यंजना की गई है। सखियो के साथ झूला झूलने मे जो आनन्द मिलता है उसका बडा ही सुन्दर वर्णन है परन्तु साथ ही पति के वियोग से उत्पन्न व्यथा का वर्णन भी कुछ कम मनोरम नही है। नीचे हम पाठको के मनोरंजन के लिये कुछ कजली दे रहे है —

सन्दर्भ—स्त्री के द्वारा पति से काम-क्रीड़ा की प्रार्थना

(२२०)

सोने के थारी[1] में जेवना[2] परोसलों[3]; जेवना न जेवे[4]।
राजावा लागल फूलन की तोसक, मुझको हवा खिला दो ना॥१॥
हवा खिला दो, सहर घुमा दो; राजवा वेसरि[5] गीरे मधुवन में,
मुझको हवा खिला दो ना ॥२॥
झंझर गड़ुवा, सुराही के पानी; पनियां[6] न पीये।
राजावा झूला लागे मधुवन में; मुझको झूला झुला दो ना ॥३॥
झूला झुला दो, सहर घुमा दो, राजावा बेसर गीरे मधुवन में,
मुझको हवा खिला दो ॥४॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैंने सोने की थाली मे अपने पति को भोजन दिया था परन्तु उसने उसे नही खाया। ऐ पति! मेज पर फूल बिछे है, मुझे टहलाने के लिये ले चलो॥ १॥

मुझे हवा खिलाओ और शहर मे घुमाओ। ऐ पति! मेरी नाक का वेसर वृन्दावन (मधुवन) मे गिर गया है उसे ढूंढ लाओ॥ २॥

सुराही का पानी मैंने तुमको पीने के लिये दिया है परन्तु तुम उसे नही पीते हो। ऐ पति! मधुवन मे झूला लगा हुआ है। मुझे झूले पर हिलाओ ॥३॥

---

[1]थाली। [2]भोजन। [3]परोसा। [4]खाता है। [5]नाक का गहना। [6]पानी को।

मुझे झूला झुला दो और शहर में घुमा दो और मुझे हवा खिलाओ ॥४॥

सोने की थाली में भोजन देने की कल्पना बडी ही भव्य तथा सुन्दर है। स्त्री अपने पति के लिये किसी भी वस्तु को अनमोल नही समझती। यह उसके उत्कट प्रेम का परिणाम है।

सन्दर्भ—साथ साथ काम-क्रीड़ा न करने के कारण स्त्री का पति को उलाहना

(२२१)

सोने के थाली में जेवना परोसलों; जेवना ना जेवे।
जेवना जेवें राधिका प्यारी; साथे गिरधारी ॥१॥
चनन के पीढई रेसम के डोरी; झूलना ना झूले।
झूलवा झूलें राधिका प्यारी; साथे गिरधारी ॥२॥
फूलवा हजारी के सेजिया डसवलों, सेजिया ना सोवे।
झूलवा झूलें राधिका प्यारी, साथे गिरधारी ॥३॥

सोने की थाली में भोजन परोसा गया है परन्तु पति भोजन नही करता है। राधिकाजी कृष्ण के साथ भोजन कर रही है॥ १॥

चन्दन का पीढा है और उसमें रेशम की डोर लगी हुई है। उस झूले पर बैठकर राधिकाजी कृष्ण के साथ झूला झूल रही है॥ २॥

हजारो फूलो को चुनकर सेज डसाया गया है। परन्तु कृष्णजी उस पर नही सोते है और राधिकाजी के साथ झूला झूलते है॥ ३॥

सन्दर्भ—सावन के महीने में प्रोषितपतिका स्त्री की व्याकुलता का वर्णन

(२२२)

बादल बरसे बिजुली चमके, जियरा ललचे मोर सखिया।
सइयाँ घरे ना अइले पानी; बरसन लागेला मोर सखिया ॥१॥
सब सखियन मिल धूम मचायो मोर सखिया।
हम बैठी मनमारी[1] रग, महल में मोर सखिया ॥२॥

[1]चित्त को उदास किये हुए।

सावन का महीना है। बादल बरस रहे हैं और बिजली चमक रही है। पति अभी तक परदेश से लौटकर नही आया। उसके लिये मेरा हृदय तरस रहा है॥ १॥

सावन में आनन्द के कारण सब सखियाँ शोर मचा रही है और मैं अपने महल मे पति-विहीन होने के कारण चित्त को खिन्न किये बैठी हूँ॥२॥

सचमुच सावन मे पति का वियोग असह्य होता है।

सन्दर्भ—ससुर की अपनी वधू के ऊपर कुदृष्टि

(२२३)

सासु के दाँत रे बतीसी;[1] बहू का बाँही गोदना[2]।
ससुर जेवना ना जेवेले; मोर नीहारें[3] गोदना॥१॥
जाहु हम जनीतीं ससुर, नीहरब तू गोदना।
ससुर नाहीं रे गोदइतों; आपन बाहीं गोदना।

सासु के दाँत मे मिस्सी (काला पाउडर) लगा हुआ था और वधू के हाथ में गोदना गोदा हुआ था। ससुर जब खाने के लिये घर आया तब उसकी दृष्टि वधू के गोदने के ऊपर गयी और उसे टकटकी लगाकर देखने लगा॥ १॥

वधू ने कहा कि यदि मै जानती कि तुम मेरा गोदना देखोगे तो मैं अपने हाथ मे गोदना बिल्कुल नही गोदवाती॥ २॥

सन्दर्भ—अल्पवयस्का स्त्री को घर छोड़ पति का परदेश जाना

(२२४)

सोने के थाली में जेवना परोसलों; जेवना ना जेवे।
हरि मोरा चलले बँगाला॥१॥
दर्जी बेटवना[4] चोलिया सियवली[5], डिठिया[6] जनि लगाऊ।
मोके लरिका रे गदेलवा[7]; हरि छोड़ि गइले ना॥२॥

---

[1] मिस्सी। [2] काली पक्की शरीर मे लिखी रेखा। [3] देखता है। [4] लड़का, बेटा। [5] सिलाया। [6] दृष्टि। [7] छोटा बच्चा।

सोने की थाली में मैंने भोजन परोसा था परन्तु मेरा पति बिना भोजन किये ही बंगाल चला गया ॥ १ ॥

स्त्री दर्जी के लड़के से अपनी चोली सिला रही है और उससे कहती है कि तुम मेरे ऊपर दृष्टि न गड़ाओ। मेरा पति मुझे छोटी अवस्था में घर छोड़ कर आप परदेश चला गया है ॥ २ ॥

सन्दर्भ—सावन मास में बाहर न निकलने की पति की प्रार्थना स्त्री से

(२२५)

जनिया[1] मति खोलु खिरकिया[2]। अइली सावन की बहार।
सावन महिनवा में बड़ी रे घुघेड़ी[3]; लेई जइहें उड़ाई[4] ॥१॥
जनिया मति खोलु०
पुड़ी, मिठाई अवरू कचौड़ी, जनिया लेके अइबों ना।
जानि मति खोलु खिरकिया, अइली सावन की बाहर ॥२॥

पति अपने स्त्री से कह रहा है कि सावन मास का आनन्द अब आ गया है अतः खिड़की मत खोलो। सावन के महीने में बड़ी धूम मचती है कोई तुम्हें लेकर चला न जाय ॥ १ ॥

मैं तुम्हारे लिये पूड़ी, मिठाई और कचौड़ी खाने के लिये लाऊँगा अतः तुम खिड़की मत खोलो ॥ २ ॥

सन्दर्भ—प्रोषितपतिका स्त्री की सावन मास में व्याकुलता का वर्णन

(२२६)

सोने के थारी में जेवना परोसलों; जेवना ना जेवे हो।
सखिया साझे भये बेरी[5] बिसवे[6]; सामी घरे ना अइलें हो ॥१॥

---

[1] स्त्री। [2] खिड़की। [3] धूम। [4] भगा ले जायेगा। [5] बेला, समय। [6] व्यतीत गया।

बोलु बोलु कागवा रे सुलछन[1] बोलिया।
घेरि घेरि आयो रे बादरवा[2]; घटा कारी कारी[3] ना ॥२॥
बरसे बरसे रे बदरवा; बिजुरी चमके ना।
काली काली रे अँधेरिया; हरि ना अइले ना ॥३॥

सोने की थाली में भोजन दिया था परन्तु पति ने उसे नही खाया तथा वह परदेश चला गया। ऐ सखि! आज शीघ्र ही सूर्यास्त हो गया परन्तु पति घर नही लौटा ॥ १ ॥

स्त्री कहती है कि ऐ कौआ! तुम सुन्दर बोली (पति का आगमन-सूचक) बोलो। ऐ सखी! अब काली-काली घटाये घिर आई ॥ २ ॥

वह सखी से कहती है कि बादल बरस रहे है और बिजुली चमक रही है। काली-काली अँधेरी रात छाई हुई है परन्तु हाय! पति अभी तक नही आया ॥ ३ ॥

सन्दर्भ—प्रोषितपतिका स्त्री का विरह-वर्णन

(२२७)

घिरि आइलि रे बादरिया[4] सावन की। टेक
सावन की मनभावन की; घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥१॥
रिमझिम रिमझिम बुनवा[5] बरसे।
आजु अवधि पिया आवन की ॥२॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की।
बादर बरसे, बिजुली तड़पे।
आवत मोहि डरावन की ॥३॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की।
कड़कड़ गरजे, पड़पड़[6] बरसे।
धीरज मोर नसावन की ॥४॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥

---

[1] सुलक्षण, सुन्दर। [2] बादल। [3] काली काली। [4] बादल। [5] बूंद। [6] जोर से।

भई अँधियारी, कुछु नाहिं सूझै[1]।
जियरा[2] मोर कँपावन की ॥५॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥
अति निरमोही[3] पिय ना अइलें[5]।
आसा अब ना आवन की ॥६॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥
प्रीतम आज बिदेसे बइठल।
पाती ना पायो मनभावन की ॥७॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥
बन मे आजु पपीहा बोले।
पी, पी नाहिं सुहावन की ॥८॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥
दादुर दुरमुख[6] टर टर बोलत।
साहस मोर भगावन की ॥९॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥
सखियाँ झूला हिलि मिलि झूलत।
मोर जियरा तरसावन[7] की ॥१०॥
घिरि आइलि रे बादरिया सावन की ॥

सावन के बादल घिर आये। मन को सुहावने लगने वाले बादल घिर आये ॥ १ ॥

बादल रिमझिम-रिमझिम करके बरसने लगे। आज हमारे प्रियतम के आने का समय है (इसी सावन के महीने में उन्होंने आने को कहा था) ॥२॥

बादल बरस रहे हैं और बिजली कड़-कड़ की आवाज जोरों से कर रही है। ये बादल मुझे डराने के लिये चले आ रहे हैं ॥ ३ ॥

---

[1] दिखाई पड़ता है। [2] हृदय। [3] निर्मोही, निर्दयी। [4] चिट्ठी। [5] पति। [6] दुर्मुख, दुष्ट। [7] तरसना, ललचाना।

बिजुली आवाज कर रही है और बादल मूसलाधार वृष्टि कर रहे हैं। ये मेरे धीरज को नष्ट कर रहे हैं॥ ४॥

चारो तरफ अन्धेरा हो गया है और कुछ दिखाई नही पडता। मेरा हृदय डर से और प्रियतम के न आने की आशका से काँप रहा है॥ ५॥

मेरा प्रियतम अत्यन्त निर्दयी है क्योकि वह अब तक लौटकर नही आया। अब उसके आने की बिल्कुल ही आशा नही है॥ ६॥

मेरा पति आज परदेश में बैठा हुआ है। उसने अभी तक अपनी कुशल का एक भी पत्र नही भेजा॥ ७॥

वन मे आज पपीहा पी, पी बोल रहा है परन्तु उसका बोलना मुझे जरा भी अच्छा नही लगता है॥ ८॥

आज कठोर शब्द उच्चारण करने वाला मेढक 'टर टर' की आवाज लगा रहा है। इस कारण मेरा बचा हुआ साहस और भी नष्ट होता चला जा रहा है॥ ९॥

आज मेरी सखियाँ हिल-मिल करके झूले पर झूल रही है तथा मेरे हृदय को वे तरसा रही है क्योकि पति-वियोग के कारण मेरा चित्त दुःखी है और मै झूला झूलने मे असमर्थ हूँ॥ १०॥

इस गीत में विरह-विधुरा स्त्री का बडा सुन्दर वर्णन किया गया है। सचमुच सावन के सुहाने महीने में प्रियतम का वियोग असह्य होता है।

१३. चैता या घाँटो

वसन्त का आगमन कितना मनोहर होता है। इस बात को दुहराने की आवश्यकता नहीं है। भीषण जाड़ा के अनन्तर ऋतु परिवर्तन नितान्त हृदय हारी प्रतीत होता है। इस समय भोजपुरप्रदेश की देहात में चित्त बहलाने के लिए जो गीत गाए जाते हैं वे चैता या घाटो के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन गीतों के गाने का ढग भी बिल्कुल निराला होता है। इनके आरम्भ में "रामा" और अन्त में "होरामा" शब्दों का प्रयोग किया जाता है। आरम्भ उच्चस्वर में किया जाता है, बीच में अवरोह (उतराव) आता है और फिर अन्त में आरोह (चढ़ाव) आता है। स्वरों के इस आरोहावरोह क्रम से इन गायनों की संगीत माधुरी श्रोताओं के कानों में आनन्दोल्लास प्रकट करती है और विरहिणियों के दुःखित हृदय को प्रफुल्लित बनाने में विशेष रूप से सफल होती है। भोजपुरी गीतों में चैता अपनी मधुरिमा तथा कोमलता में सानी नहीं रखता। इसके गाने में एक विशेष प्रकार की हृदय-द्रावकता रहती है जो श्रोताओं के चित्त को मुग्धकर देती है। चैत मास में होने वाले भोजपुरी मेलों में जब कोई चैता गाने लगता और जब

"आरे हमरी अटरिया हो रामा
सुगना बोले हो।"

का राग अलापने लगता है तब श्रोताओं की भीड़ लग जाती है। ये चैता के गीत अशिक्षित जनता के हृदय को स्पर्श करने में जितने समर्थ होते हैं उतने अन्य गीत नहीं। इसीलिये ये गीत इतने सर्वप्रिय है।

सन्दर्भ—क्रुद्ध होकर सोये हुए पति को जगाने के लिये भावज की अपनी ननद से प्रार्थना।

(२२८)

राम साँझहि के सूतल, फूटलि किरिनिया ॥ हो रामा ॥
तबो नाहिं जागेलें हमरो बलमुआ ॥ हो रामा ॥१॥

राम चुर-घीचीं मारलीं पइरिया-घींची मारलीं ॥हो रामा ॥
तवो नाहिं जागेले सैंयाँ अभागा ॥हो रामा ॥२॥
राम गोड़ तोरा लागीला लहुरि ननदिया ॥ हो रामा ॥
रचि एक आपन भैया देहू ना जगाई ॥हो रामा ॥३॥
राम कैसे के भौजी भैया के जगाइबी ॥ हो राम ॥
हमरो भैया निंदिया के मातल ॥ हो रामा ॥४॥
राम तोरा लेखे ननदी तोर भैया निनिया के मातल ॥हो रामा ॥
मोरा लेखे चान सुरुज दूनो छपित भइले ॥ हो रामा ॥
राम चढले चैत घाँटो गावे ॥ हो रामा ॥
गाइ गाइ विरहिन सखि समुझावे ॥ हो रामा ॥६॥

यह वियोग का गाना है। स्त्री और पुरुष के क्षणिक वियोग का कैसा सुन्दर वर्णन किया गया है—

पति (शाम) सध्या को ही सो गया। इस समय सूर्य की किरणें निकल रही है। लेकिन इस समय तक मेरे प्रिय सोये हुए हैं ॥१॥

खाट के चूर को निकाल कर मारती है और तेल के निकालने की पैंरो से भी मारती है। तब भी मेरे पति जागते नही ॥२॥

ऐ छोटी ननद मैं तुम्हारे पैंरो पर गिरती हूँ। जरा जाकर अपने भाई को जगा दो ॥३॥

ननद कहती है कि मेरा भाई अच्छी तरह सोया हुआ है। अत उसे मैं कैसे जगा सकती हूँ॥४॥

स्त्री कहती है कि तुम्हारे लिए तुम्हारा भाई नीद मे मतवाला हो गया है। मेरे लिए चन्द्रमा और सूर्य दोनो छिप गये हैं ॥५॥

चैत्र मास के चढने पर घाँटो गाया जाता है। गा-गाकर सखी विरहिन को समझाती है ॥६॥

नोट—घाँटो—चैत्र मास मे गाने योग्य गीत। इसे कोई "चैता" और कोई घाँटो कहकर पुकारते है।

सन्दर्भ—ननद और भावज का पानी भरने जाना और किसी कामुक का उनके साथ व्यभिचार करने का प्रयत्न

(२२९)

रामा ननदी भौजिया दुनु पनिहारिन ।। हो रामा ।।
मिलि जुलि सागर पानि भरे चलली ।।हो रामा ।।१।।
रामा भरि घूठि पनिया घरिलवो ना डूबे ।। हो रामा ।।
कौन रसिकवे घरिल जुठिअवले ।। हो रामा ।।२।।
रामा घरिला भरि भरि अररा चढवलीं ।। हो रामा ।।
केहूँ नाहिं घरिला मोर अलगावे ।। हो रामा ।।३।।
रामा घोडवा चढल आवे हन्सराज ।। हो रामा ।।
रचि एक घरिला मोर अलगाव ।। हो रामा ।।४।।
रामा एक हाथ हन्सराज घरिला अलगवलें ।।हो रामा ।।
दूजा रे हाथे आँचर धई वेलमावे ।। हो रामा ।।५।।
राम छोड छोड़ हन्सराज मोर अँचरवा ।। हो रामा ।।
मोरा घरे सासु ननदि बाडी दारुन ।। हो रामा ।।६।।
रामा जो तोर सुन्दरी, सासु ननदि घरवा दारुन ।।हो रामा ।।
काहे लागि सागर पनिया के अइलू ।। हो रामा ।।७।।
रामा देवरा भुखाइल आरे भैया पाहुन ।। हो रामा ।।
ओहि लागि सागर पनिया के अइलीं ।। हो रामा ।।८।।
रामा चढला चइतवा चइत-घाँटो गावे ।।हो रामा ।।
गाइ गाइ विरहिन सखि समुझावे ।। हो रामा ।।९।।

ननद और भौजाई अपने शिर पर जलकुम्भ रखकर एक साथ पानी लेनें के लिए तालाव को जा रही हे ।।१।।

घुटने भर तक पानी था। इसलिये घडे में पानी नही भर सकता था। वह कौन रसिक था जिसने मेरे घडे को जूठा कर दिया ।।२।।

मैंने [illegible] कोई नहीं दिखाई पड़ा ॥३॥

इतने में [illegible] लिए उनसे कहा ॥४॥

[illegible] हाथ में [illegible] उठा लिया और [illegible] ॥५॥

मैंने कहा कि [illegible] ॥६॥

[illegible] उसने कहा कि [illegible] पानी भरने के लिए आई ॥७॥

[illegible] ॥८॥

सन्दर्भ—किसी ग्वालिन का दही बेचने जाना एवं किसी कामुक कुँवर की उस पर कुदृष्टि

(२३०)

रामा छोटि मुटि ग्वालिनि सिर लो मटुकियाँ[1] ॥ हो रामा ॥
चलि भइलि मथुरा नगर दही बेचन ॥ हो रामा ॥१॥
रामा जहाँ जहाँ ग्वालिनि धरेले मटुकिया ॥ हो रामा ॥
तहाँ तहाँ कुँअर तमुआ तनावे ॥ हो रामा ॥२॥
रामा आगू होख आगू होख राजा के कुँअरवा । हो रामा ॥
परि जइहें दही के छिटिकवा ॥ हो रामा ॥३॥
रामा तोरा लेखे ग्वालिनि दही के छिटिकवा ॥ हो रामा ॥
मोरा लेखे अगर चनन देव बरिसे ॥ हो रामा ॥४॥

---

[1][illegible] ([illegible]) । [2][illegible] ।

रामा चढ़ले चइतवा, चइत-घांटो गावे ॥ हो रामा ॥
गाइ गाइ बिरहिन सखि समुझावे ॥ हो रामा ॥५॥

छोटी आयु की ग्वालिन शिर पर मटका (दधि-पात्र) लेकर दधि वेचने के लिए मथुरा नगर में जा रही है ॥१॥

जहाँ-जहाँ ग्वालिन अपना मटका रखती है तहाँ-तहाँ कुअर अपना तम्बू तानता है ॥२॥

ऐ राजा के कुअर ! आगे चलो, आगे चलो (मुझे रोको मत) नही दधि का छीटा तुम्हारे ऊपर पड जायेगा ॥३॥

कुअर ने उत्तर दिया कि हे ग्वालिन ! तेरे ही लिए दधि के छीटे है मेरे लिए तो जान पडता है कि देवता लोग अगर (अगुरु)और चन्दन बरसा रहे है ॥४॥

चैत का महीना है। लोग घाँटो गा-गाकर विरहिन को समझा रहे है ॥५॥

सन्दर्भ—मूँग को लेने वाली स्त्री के साथ खेत के रखवार का अनाचार वर्णन

(२३१)

रामा नदिया किनरवा मुँगिया बोअवलीं ॥ हो रामा ॥
सेहू मुँगिया फरेले घवघवा[1] ॥ हो रामा ॥१॥
रामा एक फाँड[2] तुरलीं दोसर फाँड़ तुरलीं ॥ हो रामा ॥
आइ गइले खेत रखवरवा[3] ॥ हो रामा ॥२॥
रामा एक छडी मारले दोसर छडी मारले ॥ हो रामा ॥
लूटि लेले हन्स परेवआ[4] दूनों जोवना[5] ॥ हो रामा ॥३॥
रामा दास बुलाकी चैत घाँटो गावे ॥ हो रामा ॥
गाइ गाइ बिरहिन सखि समुझावे ॥हो रामा ॥४॥

---

[1]गुच्छ। [2]आचल, अचल। [3]खेत की रखवाली करने वाला अर्थात् मालिक। [4]कबूतर। [5]स्तन।

मैं। मृग नहीं हैं जिनका गला है और मेरे गुरु का गुरु देश में है ॥१॥

हे राम! तुम आकर मन मन्दिर द्वारा में बैठ लिया और फिर तुमने अन्दर में भी घर बना लिया। तब मन मेरा का मालिक आ गया ॥२॥

आकर उसने मन तरह से मुझको जमाया और फिर दर्शन दर्शन भी चखाया और मैंने तन और मन बुनकर, दोनों आँखों को भी लूट लिया ॥३॥

बुल्लाकीदास चौथ माग में पाते जाते हैं और उस गीत का गा-गाकर नदियाँ विरहिन को समझा रही हैं ॥४॥

१४. बिरहा

बिरहा भोजपुरी गीतो मे विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बरसात के दिनो मे तथा शादी आदि के शुभ अवसरो पर अहीर लोग बिरहा गाकर अपना तथा श्रोताओं का पर्याप्त मनोरजन करते है। यह बडा ही उत्साह वर्धक होता है परन्तु वीर-रस के मसान अन्य रसो का भी समावेश इनमे दीख पडता है। इनमे अहीरो के जीवन —सादी रहन सहन, गौओ की चरवाही, उनके लिए तत्परता—की मधुर झाकी दिखाई पडती है। इनके विषय मे विशेष जानने के लिए भूमिका मे 'बिरहा की बहार' देखिये।

सन्दर्भ—कमल के पौधे की ईश्वर से प्रार्थना

(२३२)

पुरइन[1] विनवेलि[2] एकल राम के;
दहवा[3] में परलीं अकेलि।
पतवा तूरि तूरि[4] जाला भोज-सरवा[5],
फूल चढ़े लेकर महादेव।

कमलिनी राम से प्रार्थना करती है कि मैं तालाब मे अकेली पड़ी हुई हूँ। राम ने उसकी प्रार्थना सुन ली। उसका पत्ता भोजनालय में पवित्र समझ कर जाने लगा और उसका फूल महादेव के सिर पर चढाया जाने लगा।

नोट—पुरैन का पत्ता भोजन के लिये पत्तल के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा बडा पवित्र माना जाता है।

---

[1]कमलिनी। [2]प्रार्थना करती है। [3]तालाब। [4]तोड-तोड करके। [5]भोजनशाला (रसोई घर।)

सन्दर्भ—सेमल के वृक्ष का अपनी निरुपयोगिता पर दुःख प्रकट करना

(२३३)

मने मने झखेला[1] फेड़वा[2] सेमरवा[3] के;
काहे फुलवा मोर लाल।
काहे फुलवा न चढ़े इसरी[4] देवतवा के;
काहे मलिया ना गुहे[5] माल॥

सेमल (शाल्मली) का वृक्ष अपनी निरुपयोगिता पर हृदय में खिन्न होकर कह रहा है कि मेरा फूल लाल क्यों हुआ! क्यों यह दुर्गा के मस्तक पर नहीं चढाया जाता और माली इसका हार क्यों नहीं गूंथता?

नोट—सेमल का फूल खूब लाल मनोमोहक तथा सुन्दर परन्तु गन्धहीन होता है। इसीलिये वह भड़कीली परन्तु बेकाम की चीजों का उपमान माना जाता है।

सन्दर्भ—देवी को पिलाने के लिये दूध लाने का प्रयत्न

(२३४)

हमरी देविया भुखइली रे भइया;
मँगेली पियनवा[6] के दूध।
बरवा[7] दूहों कि बरोहिया[8] रे यरवा[9];
मोरि गइया गयलि बा बड़ी दूर॥

कोई भक्त अपने मित्र से कह रहा है कि ऐ भाई! मेरी ही बार देवी को भूख लगी है और वह पीने के लिये दूध माँग रही है। ऐ मित्र! मैं वट वृक्ष को दूहूँ या बरोह को! मेरी गायें बड़ी दूर चली गई हैं अर्थात यदि गायें होतीं तो दूध मिल सकता था। बरोह दूहने से दूध थोड़े निकल सकता है।

---

[1]दुःख करता है। [2]पेड। [3]सेमल। [4]ईश्वरी (दुर्गा)। [5]गूंथता है। [6]पीने के लिये। [7]बरगद का पेड। [8]बरोह अर्थात् बरगद के पेड से लटकने वाली लम्बी जटायें। [9]मित्र।

सन्दर्भ—भक्त द्वारा सरस्वती को दूध देने की प्रार्थना

(२३५)

देविया देविया पुकारे देवी सारदा;
देवी सरगे[1] मॅडराइ[2]।
तोहरा के देवों देवी दूधवा के धारवा,
सरग लेना[3] उतरि न आउ[4]॥

भक्त पुकार कर कह रहा है कि हे देवी शारदे। आओ परन्तु देवी स्वर्ग में घूम रही है। फिर भक्त कहता है कि हे देवी! मैं तुम्हें दूध की धारा दूंगा, तुम स्वर्ग से उतर आओ।

सन्दर्भ—ग्राम-देवता की पुकार

(२३६)

डिहवा, डिहवा पुकारे डिहवरवा[5]।
डीह सुतले हा निरभेद[6]॥
तोहरा गरभ[7] चढि अइलीं रे डिहवा।
पहिल बोलिया न राखे मोर॥

ग्राम का देवता पुकार कर कह रहा है—गाव-गाव। परन्तु गाव अचेत सो रहा है। इस पर देवता कह रहे है कि तुम्हारे अभिमान पर ही तो मैं यहाँ आया, तुम मेरी पहली ही बोली का जवाब नही दे रहे हो।

सन्दर्भ—कृष्ण का गोपी-प्रेम-वर्णन

(२३७)

वने वने गइया चरावेले[1] कन्हइया।
घरे घरे जोरेले[1] पिरीति॥
अनका मउगि[8] के सानि[10] मारि अइले।
आखिरो त जाति अहीर॥

---

[1]स्वर्ग। [2]चक्कर काटना। [3]मैं। [4]आओ। [5]गाव। [6]ग्राम के देवता [7]अचेत। [8]गर्व। [9]स्त्री। [10]इशारा।

कृष्ण जी वन-वन में जाकर गौ चराया करते हैं और प्रत्येक घर में प्रेम जोड़ा करते हैं। दूसरे की स्त्री के ऊपर इशारा करते हैं। ठीक ही है वे तो जाति के अहीर ही हैं।

सन्दर्भ—कलि में धर्म की विपरीतता का वर्णन

(२३८)

सुअरिया गंगा जुठारलि, ए रामा।
भगत भइले चमार॥
रामजी का हथवा का तुलसी के मलवा।
कलऊ जपेला कलवार॥

कलियुग में क्या क्या होता है। इसका वर्णन किया गया है। गंगाजी के जल को सूअर जूठा कर देती है। चमार (शूद्र जाति) ईश्वर के भक्त होते हैं। कलवार हाथ में तुलसी की माला लेकर राम राम जप रहा है।

सन्दर्भ—स्त्री के गोदना गोदाने का वर्णन

(२३९)

गोरि गोरि बँहियाँ गोरि गोदना गोदावेले।
सुइया साले अल्हर[1] करेज।
अइसन गोदना गोदू गोदनरिया।
जइसे चूँनरी रँगेला रँगरेज॥

गोरी (सुन्दरी) अपने गोरे-गोरे हाथों पर गोदना गोदा रही है। सुई उसके सुकुमार हृदय को छेद रही है। इतने कष्ट होने पर भी वह गोदना गोदने वाली से कह रही है कि ऐसा गोदना गोदो जैसे रंगरेज चूँनरी रंगता है। इसी विषय में पद्माकर की यह सुन्दर सवैया अत्यन्त प्रसिद्ध है जिसमें राधा गोदने वाली से अपने शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों पर कृष्ण के भिन्न भिन्न रूप को गोद देने की प्रार्थना कर रही है।

---

[1] सुकुमार।

दे लिख बाँहन में ब्रजचन्द्र गोल कपोलन कुंज बिहारी।
त्यों पद्माकर याही हिये, हरि गो से गोविन्द गरे गिरधारी॥
या विध से नख से सिखलों लिख नाम अनन्त भवैभव प्यारी।
साँवरे की रंग गोद दे गात अरी गुदनान की गोदनहारी॥

सन्दर्भ—कामुक के द्वारा चौर्य्यरति वर्णन

(२४०)

पिसना के परिकल[1] मुसरिया तुसरिया।
दुधवा के परिकल बिलारि॥
आपन आपन जोवना सम्हारिहें बेटिउआ।
रहरि में लागल बहुँड़ार[2]।

चूहे वगैरह आटा खाने के आदी होते हैं। बिल्ली दूध पीने की आदी होती है। ऐ लड़कियो अपने-अपने जोवन को होशियारी से रक्खो। अरहर के खेत में भेड़िया छिपा हुआ है।

सन्दर्भ—स्त्री के यौवन का वर्णन

(२४१)

अमवा के लागेले टिकोरवा, रे सँगिया।
गुल्लरि फरेले हड़-फोर॥
गोरिया का उठले हो छाती के जोवनवा।
पिया के खेलवना रे होई॥

हे मित्र! आम में छोटे-छोटे फल लगते हैं। प्रत्येक पेड़ में गूलर फूलता है। गोरी के वक्षस्थल पर यौवन उठ रहा है। वह प्रियतम का खेलवना होता है।

सन्दर्भ—युवती स्त्री के ऊपर किसी कामी की कुदृष्टि

(२४२)

बगसर से गोरिया अकसर चलली।
भरि माँग मोतिया गुहाई॥

---

[1]अभ्यस्त। [2]भेड़िया।

कवना चेलिकवा के नजरी परली,
मोरि मोतिया गिरेले भहराई ॥

माँग भर मोती गुहाकर स्त्री (गोरी) बगसर मे अकेले जा रही है। जिस रसिक की नजर उस पर पड गई कि घबडाहट मे मेरे मोती टूट-टूट कर जमीन पर गिरने लगे।

सन्दर्भ—कुलटा का अन्य पति से प्रेम-वर्णन

(२४३)

बहे पुरुवइया अइली जम्हुअइया[1]।
ठाढि देहिया रे साहियाए।
कवना चेलिकवा[2] के नजरी परली।
मोरा घरवा बनवा एको न सोहाए।

पुरवैया हवा वह रही है और जम्हाई आ रही है। मेरा शरीर आलस्य युक्त है। न जाने किस रसिक की नजर मेरे ऊपर पड गई है कि मुझे न घर न वन कोई भी सुहावना नहीं लगता।

सन्दर्भ—पुत्र न होने से युवती स्त्री का दुःख करना

(२४४)

कछुई बिअइलि हा कछुआ, ए रामा।
गंगाजी बिअइलि हा रेत।
छोटि छोटि बेटिया तँ बेटवा बिआइलि हा।
बजरि परीना एहि पेट।

कछुई कछुआ को पैदा करती है। गंगा जी रेत को पैदा करती है। छोटी लडकियाँ पुत्रों को पैदा करती है। हमारी कोख पर वज्र पड़े क्योंकि इससे कोई भी लड़का नहीं पैदा हुआ।

---

[1]जम्हाई। [2]रसिक।

सन्दर्भ—कामुक पति से युवती स्त्री की प्रशंसा

(२४५)

बड निक लागेले गइया के गएरिया।
जौं त भुँइयाँ परती होए॥
बड निक लागले मेहरी के गोदवा।
जब ले लरिकवा नाँ होए॥

गाय की चरवाही बडी ही अच्छी लगती है जब कि चरागाह बहुत ही लम्बा होता है। स्त्री की गोद बहुत ही सुन्दर लगती है जब तक पुत्र उत्पन्न नही होता अर्थात वह युवती बनी रहती है। 'प्रसवान्त हि यौवनम' के सिद्धान्त पर यह उक्ति अवलम्बित है।

सन्दर्भ—धन गर्विता स्त्री की उक्ति

(२४६)

बइठलि साजेले बटलोहिया गोरिया।
तूरेले गेडुअवा[1] पर तान॥
जेतिनाँ के सइयाँ हमार करले नोकरिया।
हम ओतिनाँ के कचरीला पान॥

गोरी (स्त्री) बैठी हुई है और बटलोही (भोजन-पात्र) साफ कर रही है और गेडुआ बजाकर गा रही है कि जितना उसका पति नौकरी करके रुपया कमाता है, उतना वह पान खाने में ही खर्च कर देती है।

सन्दर्भ—स्त्री का पूर्वानुराग वर्णन

(२४७)

पिया पिया कहत पीअरि भइलि देहिया।
लोगवा कहेला पिड़-रोग॥
गँउआ के लोगवा मरमिओ न जानेले।
भइले गवनवाँ ना मोर॥

---

[1]बडा जलपात्र।

पिय का नाम लेते-लेते हमारा शरीर पीला पड गया है। पडोसी कहते है यह पियरी का रोग हो गया है। परन्तु गाव के लोग इस मर्म को नही जानते कि गवना न होने के कारण ही ऐसी मेरी दशा है।

सन्दर्भ—गृहहीन अहीर की दुर्दशा का वर्णन

(२४८)

गैया छूटलि गएरिया गएरिया।
गङ्गा जी के छुटले नहान॥
पकड़ी तर के छुटले उठका वइठका।
तीनो न छोडवले भगवान्॥

गृहहीन अहीर अपनी दुर्दशापर रो रहा है कि गायो की रखवाली अब मेरी छूट गई। गगास्नान भी छूट गया और पकडी के पेड के नीचे की वातचीत (उठना वैठना) छूट गया। भगवान ने इन तीनो चीजो को मुझसे छीन लिया है।

सन्दर्भ—रमते योगी की पवित्रता का व्यंग्य से वर्णन

(२४९)

गङ्गा जी हँवीं मर खौकी[1] ए रामा।
काँचे पकले मर खाईं॥
गङ्गाजी के हवी ना निरमल जलवा।
राति दिनवा वहि जाईं॥

गगा मरे हुए शरीर को खाती है और कच्चे पक्के मास को खाती है। तो भी गगा जी का जल निर्मल रहता है क्योंकि वह दिन रात वहा करता है। इस विरहे मे घर छोड कर इधर-उधर घूमने वाले साधु सन्त के जीवन को निर्मल होने का कारण अच्छे ढग से बताया गया है।

---

[1]मरे को खाने वाली।

सन्दर्भ—पति का स्त्री को घोड़े पर ले जाना

(२५०)

हथवा में डारले वरेखआ[1] रम-रेखवा;
गरवा में डारले रुदराछ[2]।
ललकी पगरिया वान्हि के यरवा;
जानी के उढ़रले बा जात ॥

रामरेखा अपने हाथों पर कडा (वरेखी) पहने हुए है और गले में रुद्राक्ष की माला है। प्रियतम अपने माथे पर लाल पगडी बाँधकर अपनी प्यारी को उडाए लिए जा रहा है।

सन्दर्भ—अहीर के बालक का वर्णन

(२५१)

धुरिया लगावे धुरियाहावा कहाले;
गिरही मारेले फरिवाह।
चलटा दोकछवा मारे अहिरा वलकवा;
जिनकर बटुरी नँवेले करिहाँव[3] ॥

यह अहीर के लडके का वर्णन है। धूर लगाने पर वह धूरिआह कहलाता है। गिरह मारने पर वह 'फरिवाह' कहलाता है। अहीर का वालक जब लँगोटा कस कर पीछे नवता है तब उसकी कमर झुक जाती है।

संदर्भ—युवती स्त्री के स्तनों को देखकर किसी कामुक की उक्ति

(२५२)

गोरि के छतिया पर उठेला जोवनवा;
हँसेला सहरिया के लोग।
लेवू गोरि दमवा देवू हो जोवनवा;
तोरा स जतनवा न होई ॥

---

[1]बरेखी (हाथका कडा)। [2]रुद्राक्ष। [3]कमर।

गोरी स्त्री के वक्षस्थल पर यौवन का उदय होता है। शहर के रहने वाले लोग उस पर हँसते हैं। हे गोरी दाम ले लो और अपना यौवन मुझे दे दो क्योंकि तुमसे उसके लिए यत्न नहीं हो सकता।

सन्दर्भ—दूर विवाह करने के कारण बेटी का पिता को उपालम्भ

(२५३)

सबके बियहले बाबा एडवा[1] से गोएडवा[2],
से हमके बियहले बड़ी दूर।
चलत चलत मोर पइयां पिरलैं[3],
से लहँगा में लागि गइले धूर।

इसका अर्थ स्पष्ट है। दूर विवाह करने के कारण बेटी का अपने पिता को उलाहना देना उचित ही है।

---

[1]नजदीक। [2]पास। [3]दर्द करना।

१५. भजन

स्त्रियाँ केवल शृंगार और करुण रस के ही गीत नही गाती बल्कि समय-समय पर भक्ति से ओत-प्रोत भजन भी गाया करती है। जहाँ उनका हृदय शृंगार तथा करुण रसो से लबालब भरा रहता है वहाँ उसमे भक्ति की भी कुछ कम मात्रा नही रहती। घर के झंझटो से जब उन्हे अवकाश मिलता है तब वे भगवान् की स्तुति मे दो चार भजन बडे प्रेम से गाती है। ये भजन या तो रात को सोने के पहले गाये जाते है अथवा प्रातःकाल। जब स्त्रियाँ तीर्थ-यात्रा को अथवा गगा नहाने रेल या बैलगाडी मे बैठकर जाती है तब प्राय वे भजन ही गाया करती है। उनके कलकठ से इन भजनो को सुनकर भक्ति का जैसा उद्रेक मनुष्य के मन मे होता है उसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है।

ये भजन भक्ति मे ओत प्रोत होते है जिनमे भगवान की स्तुति रहती है। कही पर इन भजनो मे किसी तीर्थ-यात्रा मे चलने का वर्णन है तो कही राधिका और कृष्ण का मिलन। कही पर भगवान् के नाम-स्मरण करने का उपदेश है तो कही पर पापी मन को भगवान् का भजन न करने के लिये कोसा गया है। उदाहरण के लिये एक भजन ही पर्याप्त है —

ऐ मनवा पापी भजन कब करबे।
जिनगी बितानी भजन कब करबे॥

× × × ×

राम नाम मुख बोलु ऐ भाई।
छोड़ु अब जग चतुराई॥

इस प्रकार से ये भजन बडे ही सुन्दर तथा भक्ति का उद्रेक करने वाले है। इनको जितनाही पढा जाय उतना ही आनन्द आता है।

सन्दर्भ—राम के वन जाते समय सीता का विलाप-वर्णन

(२५४)

ठुमुकि ठुमुकि जानकी नाचसु, दसरथ जी आँगनवाँ।
राम हमारे तपोवन चलले, कइसे के रहो भवनवाँ ॥१॥
आरे केकरा पर करवों सोरहो सिंगारवा, केकरा पर पहिरवि गहनवाँ।
राम हमारे तपोवन चलले० . . .. . ॥२॥
रामे पर पहिरवि सोरहो सिंगरवा, रामे पर पहिरवि गहनवाँ।
राम हमारे तपोवन चलले० ॥३॥

ठुमक ठुमक कर दसरथ के घर में व्याकुल होकर इधर उधर घूमती हुई जानकी जी कह रही हैं कि हमारे राम अब कैकेई की आज्ञा का पालन करने के लिये वन को जाने वाले हैं। अब मैं घर में कैसे रह सकती हूँ ॥१॥

अब मैं किनके ऊपर शृंगार करूंगी तथा किनकी प्रसन्नता के लिये गहना पहनूंगी क्योंकि रामचन्द्र वन को जा रहे हैं ॥२॥

मैं राम के लिये ही शृंगार करूँगी और राम के लिये ही आभूषण पहिनूंगी। मेरे राम अब जंगल को जा रहे हैं अब मैं कैसे घर पर रहूँगी ॥३॥

सन्दर्भ—गोपी-कृष्ण वार्तालाप

(२५५)

ए पार गोलाघाट ओह[1] पार मठिया,
बीच बहेले पानारावति[2] नदिया[3] ॥१॥
बिसरत नाहीं बिहारी जी के मठिया।
आरे राउर मटुका[4] अपन सिरे धरिलें,
आपाना वारवा[5] के बीठा[6] बनाइलें ॥२॥
आरे राउर पटुका अपन सिरे धरबी,
आपन अँचरा रउरा के ओढ़ाइबि ॥३॥

राउरा सांगवा[1] साम[2] बँसिया बजाइबों
अरु दहि बेचे चलबि हो मथुरा नगरिया ॥४॥
बिसरत नाहीं बिहारी जी के मठिया।

कोई गोपी कृष्ण जी से कह रही है कि इस पार तो गोलाघाट है और उस पर रहने के लिये एक झोपड़ी बनी हुई है। बीच में चन्द्रावती नदी बह रही है। हे कृष्ण तुम्हारी झोपडी मुझे विस्मरण नही होती है ॥१॥

ऐ कृष्ण अपने बालो का बीठा बनाकर मै तुम्हारे घड़े को अपने सिर पर रखकर ले चलूंगी ॥२॥

तुम्हारा वस्त्र अपने सिर पर रक्खूंगी और अपना अँचरा तुम्हें ओढ़ाऊँगी ॥॥३॥

हे कृष्ण तुम्हारे साथ मे बंशी बजाऊँगी तथा तुम्हारे साथ ही मथुरा को दधि बेचने चलूंगी ॥४॥

कृष्ण के प्रति इस गोपी का प्रेम जो स्वाभाविक और निस्वार्थ है देखते ही बनता है।

सन्दर्भ—माता-पिता के बिना घर की और सास, ससुर के बिना ससुराल की निस्सारता का वर्णन

(२५६)

बाप, भइया जहाँ माता नाहीं,
तवन नइहरवा तियागे के परी ॥१॥
आपाना मानवा के धीरज धरे के परी।
सासु, ससुर, जहाँ सामीजी नाहीं,
तवन ससुरवा तियागे के परी ॥२॥ आपना०
तोसक तकिया जाहाँ गलइचा डासी;
अब बनवा में खरई डासावे के परी ॥३॥ आपना०
टिकरी, जलेबी जहाँ बरफी बनी,
अब बनवां मे बनफल खाये के परी ॥४॥ आपना०

---

[1]साथ। [2]कृष्ण।

जहाँ पर माता, पिता तथा भाई न हो उन मायके को छोडना पडता है तथा अपने मनमे धीरज रखना पडता है ॥१॥

जहाँ सास, ससुर और पति न हो ऐसी ससुराल भी छोडनी पडती है ॥२॥

जहाँ पर सुख के दिनो में तोसक, तकिया और कालीन बिछे रहते थे वहीं अब दुर्दिन आने पर जगल मे झोपडी लगानी पडती है ॥३॥

जहाँ पहिले टिकरी, जलेबी तथा बरफी (मिष्ठान्न) खाने को मिलती थी वहाँ अब जगल मे कन्दमूल फल खाना पडता है ॥४॥

समय के परिवर्तन का कितना विषम परिणाम इस गीत मे दिखाया गया है।

सन्दर्भ—गुरु के उपदेश से प्रबुद्ध शिष्य के हृदय में पुण्य कर्म न करने से पश्चात्ताप का वर्णन

(२५८)

सूतल[1] रहलो ओसारावा[2] हो; गुरुजी दीहले जागाई।
गवना के दिन नियरा[3] गइले हो, मन गइले घबराई ॥१॥
गुरुजी गुरुजी पुकरलीं हो, गुरुजी सरन[4] तोहार।
रचे एक दीहितीं हुकुमवा हो, धकरल[5] कर अइतीं दान ॥२॥
आरे पानवटा[6] भरल गाहना छोडि अइलों, कुछु ना कइलों दान।
रचे[7] एक दीहितीं हुकुमवा हो, धऊरल करि अइतीं दान ॥३॥
कोठिला[8] भरल बाटे चउरा[9] हो, गुरुजी करि अइतीं दान।
बाकस भरल बाटे कपडा हो, गुरुजी करि अइतीं दान ॥४॥
संग ही सखिया उतर गइलीं पार, हम बैतरनी मे ठाढ[10]।
रचे एक दीहितीं हुकुमवा हो, गुरुजी करि अइतीं दान ॥५॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैं अपने बरामदे मे सोई हुई थी। इतने मे

---

[1]सोयी हुई। [2]बरामदा। [3]नजदीक आ गया। [4]शरण। [5]दौड करके। [6]गहना रखने का बाक्स। [7]थोडी देर के लिये। [8]अन्न रखने का स्थान। [9]चावल। [10]खडा।

मेरे गुरु आये और उन्होने मुझे जगा दिया अर्थात् सद्गुरु के उपदेश से मेरी मोह निद्रा भग हो गई। गवना का दिन नजदीक आ गया है अर्थात् परम प्रियतम परमात्मा के पास जाने का समय करीव है इस वात को सोचकर मेरा मन घवरा गया। क्योकि अभी तक मै सासारिक मोह माया मे फँसी थी और मंने कुछ भी पुण्य कार्य नही किये थे ॥१॥

मै उठी और 'गुरु जी' 'गुरु जी' पुकारने लगी तथा कहा कि ऐ गुरु जी मै आपकी शरण मे हूँ। अर्थात् हे परमेश्वर मै आपके शरण मे हूँ, मुझे अपनाइये यदि आप थोडी देर के लिये आज्ञा दे तो मै दौडकर कुछ दान पुण्य कर लेती ॥२॥

मैंने पनवट्टे में अपना सारा गहना छोड दिया है। मंने कुछ भी दान पुण्य नही किया है। यदि आपकी आज्ञा हो तो दान कर आऊँ ॥३॥

हे गुरु जी मेरे कोठिला मे चावल तथा वाक्स मे कपडा भरा पडा है। मुझे दान कर लेने दीजिये ॥४॥

हमारे सग की सारी सखियाँ इस भवसागर से पार उतर गई परन्तु मैं दान-पुण्य न करने के कारण अभी तक वैतरणी में खडी हूँ (अर्थात् अभी तक पार नही जा सकी) । हे गुरु जी यदि आप आज्ञा दें तो मैं दान कर लेती ॥५॥

इस गीत मे हमें सच्चे रहस्यवाद की एक मनोहर झाँकी मिलती है। परमेश्वर को पति के रूप में देखना तथा इस ससार से अन्तिम प्रयाण को परम प्रियतम परमेश्वर से मिलने के लिये गवने का रूपक देना सच्चे रहस्यवादियो की प्राचीन परम्परा रही है। सद्गुरु के उपदेश से ही सच्ची जागृति होती है इसे भी रहस्यवादी मानते है। हिन्दी के प्राचीन कवियो में—विशेष कर जायसी और कवीर में इस प्रकार का वर्णन अधिक पाया जाता है।

सन्दर्भ—मनुष्य जीवन की नश्वरता का वर्णन

(२५८)

का देखि, मन भइले हो दिवाना का देखि के। टेक पद
मानुख देह देखि जनि भूल, एक दिन माटी होई जाना ॥१॥
का देखि के०

आरे ई देहिया कागद[1] की पुड़िया; बून[2] पड़त मिहिलाना[3] ॥२॥
का देखि के०

एहि देहिया के मलि मलि धोवलों, चोवा चनन लगाई।
ओहि देहिया पर कागा भिनके, देखत लोग घिनाई[4] ॥३॥
का देखि के०

ऐ मन तुम किस वस्तु को देखकर आज मतवाले बने हुए हो। मनुष्य के शरीर को देखकर उसकी क्षण-भगुरता को तनिक देर के लिये भी मत भूलो क्योंकि यह एक दिन मिट्टी में मिल जायेगा ॥१॥

यह शरीर कागज की पुड़िया की तरह कोमल तथा क्षण-भगुर है। पानी की बूंद पड़ते ही यह नष्ट हो जायेगा, इसी प्रकार मे हमारा शरीर भी मृत्यु के तनिक झोंकोरे मे नष्ट हो जाने वाला है ॥२॥

इस शरीर को चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्यो को लगा कर रोज मल-मल कर हम धोते है परन्तु मृत्यु के बाद उसी शरीर के ऊपर कौए बैठकर चोंच चलाते है जिसे देखकर सब लोग घृणा करते है। इसलिये हे मन तू घमण्ड न कर ॥३॥

इस गीत में कितना मार्मिक उपदेश भरा पड़ा है।

सन्दर्भ—राम के वन-गमन के अवसर पर माता सीता का विलाप

(२५९)

आरे पिता वचन प्रभु मान लियो जी, जाइ रथ बइठे।
माता कोसीला[1] बियाकुल[2] भइली, दसरथ प्रान तियागे ॥१॥
एहि तन से कब अइब ए रघुवर कातना दिनन पर आरे।
माता हमारे प्रान तियागे[3], पिता मरन को तयार।
लोग धावेला नगर अजोधा, बियाकुल भइल सब ठाढ ॥२॥

---

[1]कागज। [2]बूंद। [3]नष्ट हो जाना। [4]घृणा करना। [1]कौशिल्या [2]व्याकुल। [3]छोड़ देना।

इस गीत का अर्थ स्पष्ट है।

सन्दर्भ—गंगा स्नान करने से पुण्य-प्राप्ति का वर्णन

(२६०)

मीलहु सखिया रे मीलहु सलेहरी;
आरे सुनु सखिया चल देखे गांगाजी के लहरिया ॥१॥
देस देस से जात्री अइहें, राजा अइहें नयपलिया,
आरे सुन सखिया चल देखे गागाजी के लहरिया ॥२॥
गांगा नहइला से पाप कटीत होइहे, निरमल होइहें देहिया,
आरे सुन सखिया चल देखें गागाजी के लहरिया ॥३॥

ए सखियो! आज आओ हम सब लोग मिल करके गंगाजी की लहर को देखने चलें ॥१॥

वहाँ पर देश-देश के यात्री आयेंगे और नैपाल देश का राजा भी आयेगा ॥२॥

गंगाजी में स्नान करने से पाप कट जायेगा तथा शरीर निर्मल हो जावेगा अतएव हे सखि! चलो गंगा स्नान आज कर आवें ॥३॥

इस गीत में गंगा के मेले के अवसर पर नैपाल के राजा का सम्मिलित होना 'अखण्ड हिन्दुस्तान' का द्योतक है।

सन्दर्भ—राम के वन से लौटकर अयोध्या आने पर कौशिल्या की प्रसन्नता तथा भरत आदि से राम की भेंट

(२६१)

जब आवन सुने कोसीला माता दूध से आँगन लिपाई;
सोने के कलसा धराइचि अवध में सोर भयो
गीरिहि[1] आवत लछुमन राम अवध में सोर भयो ॥१॥
पहिले भेंट भरत सब भाई तब कोसिला माई;
तेकरा पीछे सन्तन[2] सब नीहुरि[3] के हिरदय[4] लगाइ ॥२॥

---

[1]गृह। [2]सन्त लोग। [3]झुक करके। [4]हृदय।

देखन को नारी घर से निकलीं हाथ कंचन की थारी,
मुठी मुठी हीरा लुटाओ, राम लछुमन बलिहारी ॥३॥

रामचन्द्र तथा लक्ष्मण वन से अयोध्या को लौट रहे हैं उसी समय का यह वर्णन है । जब कौशिल्या ने सुना कि राम, लक्ष्मण अयोध्या को आ रहे हैं तब वह गोबर के बदले दूध से ही आँगन को लिपाने लगी तथा उस आँगन में सोने का घडा राम के स्वागत के लिए रखने लगी। रामचन्द्र और लक्ष्मण घर आ रहे हैं इस समाचार के कारण सारी अयोध्या में हल्ला मच गया ॥१॥

राम ने पहिले अपने प्रिय भ्राता भरत से भेंट की। फिर अपनी माता कौशिल्या से मिले। उसके बाद अयोध्या के सब सज्जनों से मिले और उन्हें झुककर हृदय से लगाया ॥२॥

रामचन्द्रजी के दर्शन के लिये पुरजन की स्त्रियाँ अपने हाथों में सोने की थाली लेकर घर से निकल पडीं। राम के आने की खुशी में उन्होंने मुट्ठी भर-भर के हीरा, जवाहिरात लुटाया तथा अपना भाग्य सराहा ॥३॥

इस गीत में कौशिल्या का पुत्र-प्रेम उमडा पडता है। दूध से आँगन लिपाने में कितना भाव भरा पडा है। अयोध्या की स्त्रियों की राम-दर्शन लालसा भी अद्वितीय है। उनके आने की खुशी में हीरा लुटाना स्त्रियों के गाढ प्रेम को डंके की चोट से बतला रहा है। माताओं को छोडकर राम का भरत से पहिले भेंट करना उनके प्रगाढ भ्रातृ-प्रेम का परिचय दे रहा है।

सन्दर्भ—राधा का कृष्ण के पास उद्धव द्वारा सन्देशा भेजना

(२०७)

राधे जी चललीं साम[1] मिलन को, बीच में जमुना धार,
बिनु रे कन्हइया नइया डगमग करे, कइसे के उतरबि पार ॥१॥
अब त कन्हइया गोरिहिं छाडि देले, लेले हो मथुरा में बास,
हमरो सुरति[2] बिसरा देले हो, लिहले मथुरा में बास ॥२॥
सुख सब अपना साथ ले गइले हो, दुख दे गइले गात;
दुसह विरह मोके दे गइले हो, तलफें[3] दिन रात ॥३॥

[1]श्याम। [2]स्मृति। [3]कष्ट पाना।

ऊधो जी हमरो सनेसिया[1] हो, तू त मथुरा मे जाई;
हरि सं कहिह समुझाइके हो, कवन चूकिया[2] हमार ॥४॥
ऊधो जी हमरो सनेसिया हो, तू त गोकुल में जाई;
धनिया[3] से कहिह समुझाइके हो, कवनो चूकि ना तोहार ॥५॥
धिरिजा[4] धरहु मोरे राधाजी हो, सुख होइहे[5] मुरार ॥६॥

राधाजी कृष्णजी से मिलने के लिये चली परन्तु बीच में जमुना की धारा आ पड़ी। नाव पर चढ़ने पर वह कहने लगी कि कृष्ण के विना मेरी नाव डगमग कर रही है, अब मैं पार कैसे उतरूंगी ॥१॥

अब तो कृष्ण ने घर (गोकुल) आना छोड दिया है और अब वे मथुरा में रहने लगे है। हमारी स्मृति को भी उन्होंने भुला दिया है। अब जरा सुधि भी नहीं लेते ॥२॥

वे मारा सुख अपने साथ लेते गये और मेरे शरीर को दुःख दे गये। उन्होंने मुझे न सहने योग्य विरह दिया। जिसके कारण से मेरा हृदय दिन रात व्याकुल रहता है ॥३॥

राधाजी कहती है ए ऊधो! तुम मेरा सन्देश लेकर मथुरा मे जाओ और कृष्ण से समझा करके कहना कि मेरा कौनसा दोष है (जिसके कारण उन्होंने मेरी सुधि विसार दी है ॥४॥

ऊधो ने राधा का सन्देश कृष्ण को सुनाया। उसके उत्तर में कृष्णजी कहते है कि ऊधो तुम गोकुल में जा करके मेरा सन्देश राधा से कह देना कि तुम्हारा कोई भी दोष नहीं है ॥५॥

ऐ मेरी राधा! तुम धैर्य को धारण करो। तुम्हें सुख अवश्य होगा।६।

सन्दर्भ—राम के वन जाने पर कौशल्या का विलाप

(२६३)

सावन बरसे भादों गरजे, पवन बहे चउवाई[6]।
कवन विरिछ[7] तर भीजत होइहे, राम लखन सिया लाई ॥१॥
वानावा के दीहल रे माई ॥टेक

[1]सन्देश। [2]दोष। [3]स्त्री। [4]धैर्य। [5]होगा। [6]चारो तरफ से। [7]वृक्ष।

राम विना मोर सून, अजोधा, लछमन विनु ठकुराई।
सीता विनु मोर सून रसोइया, के मोरा भोजन बनाई॥२॥
बानावा के दीहल[२] रे माई॥

रामचन्द्रजी अयोध्या से वनवास के लिए चले गये हैं उनके विरह में कौशिल्या जी विलाप करती हुई कहती हैं—

सावन के दिन में बादल बरस रहे हैं। तथा भादो मास में बादल गरज रहे हैं। हवा चारो ओर से चल रही है। किस वृक्ष के नीचे राम, लक्ष्मण और सीता भीगते होंगे? ए माता! राम को वनवास किसने दिया॥१॥

राम के विना अयोध्या मेरे लिये शून्य हो रही है और लक्ष्मण के विना ठकुराई व्यर्थ है। सीता के विना मेरा रसोई-घर सूना दिखाई दे रहा है क्योंकि अब मुझे कौन भोजन बना के खिलायेगा॥२॥

इस गीत में माता का पुत्र के प्रति स्वाभाविक प्रेम कितना मार्मिक है। माता की ममता अवर्णनीय है।

सन्दर्भ—वन गमन के समय राम का माता से आज्ञा माँगना; कौशिल्या तथा सीता का विलाप

(२६४)

सोने का खरउवाँ[३] राजा रामचन्द्र, ठाढ वाड़े माँह आँगाना।
राम हुकुम दीहिना हमरी माताजी, हम जइवों वनरटना[४]॥१॥
जाहु तुहुँ जइव हो वनरटना।
कटवो में रघुपति छुरिया, में हववों पारान[५] आपाना॥२॥
जव राजा रामचन्द्र नगर से वाहर भइलें।
फिरि के ना चितवें मन्दिल[६] आपाना॥३॥
राम मन्दिर हमरी उदास सिया जी करेली रोदना॥४॥

---

[१]शून्य। [२]दिया। [३]खड़ाऊँ। [४]वन में घूमना। [५]प्राण। [६]घर।

गर मे से गढले पटुकवा[1], सीयाजी के लोर[2] पोंछि कहले
फोरिजा ना।
जाहु अपना बाबा घर, नाहीं तुहुँ मरि जइबु अन्न बिना ॥५॥
आगि लगइवों मे नगर अजोधा, बजर परसु दसरथ अँगना।
जेकर राम अइसन पति बन गइले, ओकरो धिरिक[4] जियना[5] ॥६॥
तुलसीदास सँगही रहना रे सँगही रहना।
जे विधि लिखल लिलार से भुगुत[6] करन आपाना ॥७॥

रामचन्द्रजी वन मे जाने के लिये तैयार है। वे अपनी माता से आज्ञा लेना चाहते है। उसी समय का यह वर्णन है।

सोने के खडाऊँ के ऊपर रामचन्द्रजी खडे होकर आँगन के वीच में विराजमान है। अपनी माता से वे कहते है कि ऐ माता मुझे वन मे जाने की आज्ञा दो॥१॥

तब उनकी माता कहती है कि ऐ राम! यदि तुम वन को जाओगे तो मै छुरी से अपने प्राणो को नष्ट कर दूंगी॥२॥

जब रामचन्द्रजी अयोध्या से वाहर निकलने लगे तव उन्होने फिर अपने घर को एक वार भी नही देखा॥३॥

कौशल्या जी उनसे कहती है कि ऐ राम! तुम्हारे विना हमारा घर उदास दिखाई दे रहा है॥४॥

तब राम ने सीता की यह दशा देखकर अपनी रुमाल निकालकर सीता के आँसू पोछे और उनसे कहा कि तुम वन को न जाओ तुम मेरे पिताजी के पास चली जाओ नही तो मेरे साथ वन मे अन्न के विना मर जाओगी॥५॥

तब सीता ने कहा कि मै अयोध्या नगरी मे आग लगा दूंगी तथा दशरथ के घर मे वज्र पड जाय (क्योकि मुझसे अब क्या सबध)! जिसका राम जैसा पति वन को चला जाय उसका जीना भी धिक्कार ही है॥६॥

तुलसीदासजी कहते है कि पति के सग मे ही रहना अच्छा है तथा ब्रह्मा ने जो ललाट में लिख दिया है उसे भोगना ही पडता है॥७॥

---

[1]वस्त्र। [2]आँसू। [3]पिता। [4]धिक्कार। [5]जीना। [6]भोगना।

इस गीत मे पुत्र के प्रति माता की ममता तथा सीता का पति प्रेम दर्शनीय है। सचमुच सीता जैसी पति-परायण स्त्री का मिलना दुर्लभ है। इसमें 'तुलसीदास' का नाम आया है वह इस गीत में प्राचीनता का पुट देने के लिये ही है। ये तुलसी, गोस्वामी तुलसीदास से सर्वथा भिन्न है।

सन्दर्भ—राम नाम का महत्व तथा लौकिक चतुराई की निःसारता

(२६५)

राम राम मुख बोलु ए भाई। टेक
राम नाम मुख बोल ए भाई, छोड़ु अब जग चतुराई ॥१॥
जग चतुराई बहुत दुःख पाई, गादाहा सरीखे जम्हुआई ॥२॥
राम राम०
मारि काटि जब बोझा बन्हले, ले नरकन में डुबाई ॥३॥
राम राम०
राम नाम में बहुत सुख होइहें, गुरू सरीखे जम्हुआई ॥४॥
राम राम०
माला फेरत तुम्हें लेई जइ हें, ले पलँगे बइठाई ॥५॥
राम राम०

हे भाई ससार की चतुरता को छोड कर अपने मुँह से राम का नाम बोलो ॥१॥

ससार की चतुरता के कारण बडा दुःख होता तथा यमराज गदहे के समान आता है ॥२॥

और मनुष्य को बाँधकर नरक में ले जाकर ढकेल देता है जहाँ वह पडा दुःख सहता है ॥३॥

राम के नाम लेने मे सुख होता है और यमराज गुरु के समान आता है।

वह मनुष्य को पलँग में बैठाकर बडे आराम से माला फेरते समय स्वर्ग को ले जाता है ॥५॥

सन्दर्भ—शिव के मन्दिर में पूजा करने के लिये जाना

(२६६)

चल देखि आई भोला के लाल गली । टेक
चल देखि आई भोला के सोलह गली ॥१॥
केहू चढ़ावेला अच्छत चन्दन,
केहू चढ़ावेला सुन्दर चूनरी ॥२॥ चल देखि०
राजा चढावेला अच्छत चन्दन,
रानी चढ़ावेली सुन्दर चूनरी ॥३॥ चल देखि०
राजा चढावेला फूल के गजरा,
रानी चढावेली सुन्दर चूनरी ॥४॥ चल देखि०

इसका अर्थ अत्यन्त स्पष्ट है ।

सन्दर्भ—राम नाम लेने का उपदेश

(२६७)

रस पीओ ए सन्तो जल नाम हरी । टेक
सब सन्तन के लागल कचहरी, रस पियावत घोरी घोरी ॥१॥
पीयत सुभागा[1] तजत अभागा[2], खल नाहीं पीयत घूँट भरी ॥२॥
रासावा के पियले गगन[3] चढि गइले । रस पीओ०
जातो नाहीं लागेला घंटा भरी ॥३॥ रस पीओ०

ऐ सज्जन मनुष्यो अथवा भक्त लोगो! हरि के नाम रूपी रस का पान करो अर्थात भगवान के नाम को भजो। सब सन्त लोगो का समाज इकट्ठा हुआ है तथा वे लोग भगवान् के नाम को घोल-घोल कर बड़े प्रेम से पीते हैं ॥१॥

सज्जन तथा भक्त लोग भगवान् के नाम रूपी रस को पीते हैं परन्तु अभागे आदमी उसे नही पीते हैं। तथा दुष्ट मनुष्य तो रस को एक घूट भी नही पीते हैं, अर्थात् भगवान् का नाम जरा भी नही लेते ॥२॥

---

[1]सौभाग्यवान् । [2]अभागा । [3]स्वर्ग ।

राम नाम रुपी रस को पीने से भक्त लोग स्वर्ग को प्राप्त कर लेते हैं जहाँ जाने मे एक घटा भी नही लगता ॥ ३ ॥

इस गीत में राम नाम की महिमा का वर्णन है। कलियुग मे नाम कीर्तन ही श्रेयस्कर है "कलौ तद्धरि कीर्तनात्"।

सन्दर्भ—राम के बालरूप के स्मरण की प्रार्थना

(२६८)

रउरा रामजी हरी, रउरा नाहीं विसरीं घंटा भरी। टेक
छोटे छोटे बालक साँवर रूप, बड़ी बड़ी अँखिया सुरति अनूप।१।
बायाँ हाथे धेनुही दहिना हाथे तीरवा;
खेलत खेलत गइलों सरजू के तीरवा ॥२॥ रउरा राम०
टुटि जइहें धेनुही टुटि जइहें तीरवा,
रोवत आवेलें माहावीर अइसन बीरवा ॥३॥
रउरा राम जी हरी, रउरा नाहीं विसरी घटा भरी।

हे रामचन्द्र जी! तुम्हारा एक घटे के लिए भी कभी विस्मरण न हो। तुम छोटे बालक हो तथा तुम्हारा रूप सावला है। आखे बडी-बडी है तथा तुम्हारा सौंदर्य अलौकिक है॥ १ ॥

ऐसा सुन्दर बालक बायें हाथ मे धनुप लेकर तथा दाहिने हाथ में तीर (बाण) लेकर सरयू नदी के किनारे खेलते-खेलते गया॥ २ ॥

परन्तु खेल में वह धनुप तथा बाण टूट गया। तब बालक राम एक वीर की भाँति रोता घर चला आया है। ऐसा राम मेरे मन से एक क्षण के लिये भी विस्मृत न हो॥ ३ ॥

सन्दर्भ—पापी मन को भजन करने का उपदेश तथा भजन न करने से नीच योनि में जन्म

(२६९)

ऐ मनवा पापी भजन कब करबे। टेक
जिनगी[1] बितानी भजन कब करबे ॥१॥

[1]जिन्दगी।

ोबी का घरे गादाहा होइबे, छीलल[1] घास नाहिं पइबे।
स देस के नरक बटोरबे, ले घटिया[2] पहुँचइबे ॥२॥ ऐमनवा पापी०
ली का घरे नाटा[3] होइबे, दुनों आँखि छोपनी[4] दीअइबे।
दारी के घरे बानर होइबे, नाक कान छेदवइबे ॥३॥ ऐ मनवा पापी०
कल पंच में दाँत चिअरबे[5] माँगत भीख गिरि परबे ॥४॥
ऐ मनवा पापी०
बालापन में खेलि गँवइबे, तरुना[6] मे जोरू रमइबे।
बेरिघा[7] में तन काँपन लागे समुझि समुझि पछतइबे ॥५॥
ऐ मनवा पापी०

ऐ पापी मन ! तुम भगवान का भजन कब करोगे। सारी जिन्दगी बीत गई अब तुम ईश्वर को कब भजोगे॥ १ ॥

भजन न करने के कारण से ऐ पापी मन ! तुम धोबी के घर गदहा बनोगे और खाने को घास भी नहीं मिलेगी। देश-देश से गन्दे कपड़े को अपनी पीठ पर लादकर तुम्हें धोबी के घाट पर ले जाना होगा॥ २ ॥

ऐ मन ! भजन के अभाव में तुम तेली के घर में बैल बनोगे तथा तुम्हारी दोनो आँखों पर परदा लगा दिया जायगा जिससे कोल्हू को अच्छी तरह से खींच सको। मदारी के घर में तुम बन्दर बनोगे तथा तुम्हारी नाक और कान छेदा जायगा ॥ ३ ॥

मदारी तुम्हें नचायेगा, उस दशा में तुम्हें अपना दाँत निपोरना होगा। तुम बन्दर का खेल दिखलाते समय लोगों से भीख माँगते समय गिर गिर पड़ोगे॥ ४ ॥

ऐ पापी मन ! तुमने बाल्यावस्था को खेल ही में बिता दिया, युवावस्था में स्त्री के साथ भोग विलास में फँसे रहे। जब वृद्धावस्था में शरीर कांपने लगेगा तब तुम अपने कुकर्मों को सोच सोच कर पछताओगे (कि हमने व्यर्थ ही अपना जीवन गवाँ दिया तथा भगवान् का कुछ भी भजन नहीं किया) ॥५॥

इस गीत में भगवान् से विमुख जनो के लिए कितनी गहरी चेतावनी

[1]काटी हुई। [2]घाट। [3]बैल। [4]परदा। [5]निपोरना। [6]युवावस्था। [7]वृद्धावस्था।

दी गई है। परन्तु इस पर भी कोई न चेते तो उसकी फिर कोई भी दवा नहीं है। जैसा पहले कहा गया है कलियुग में भगवान् के भजन की महिमा बहुत अधिक है। यहाँ चेतावनी की भाषा हृदय पर चोट करने वाली तथा दिल में चुभने वाली है। इसी आशय का एक श्लोक भगवान शंकराचार्य की 'चर्पटपंजरिका' स्तोत्र में है जिसको यहाँ उद्धृत करना कुछ अनुचित न होगा।

"भज गोविन्दं भज गोविन्द, गोविन्दं भज मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे, नहि नहि रक्षति डुक्रिञ् करणे ॥१॥
बालस्तावत् क्रीड़ासक्तः, तरुणस्तावत् तरुणीरक्तः।
वृद्धस्तावत् चिन्तामग्नः, परमे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥२॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दम्" ॥

सन्दर्भ—कृष्ण के विरह में यशोदा का विलाप

(२७०)

मोहन बिना सून[1] लागेला भवनवा ए हरी ॥टेक॥
दूध अँवटलों, दही जमवलों, अमृत जोरन लाई।
कवन लाल दहिया मोरे खहिहें मनवा लगाई ॥१॥
केकरा के मखन चोराइबि मोहन बिना,
केकरा के सीतल बेनिया डोलाईब मोहन बिना ॥२॥
सोने के गड़वा[2] गंगाजल पानी, कवन लाल मोरे पीहें ॥३॥
सोने के थारी में जेवना[3] परोसलों, चनन[4] ठहर दीआई।
कवन लाल जेवना मोरे जइहें, सीतल बेनिया डोलाई ॥४॥
मोहन खातिर बिरवा[5] लगवलों, ओ में लवंग लगाई।
कवन लाल मोरे बिरवा चभिहें प्रेम की बतिया बनाई ॥५॥
कलिया चुनि चुनि सेजिया[6] डसवलों,
ओह पर फुलवा छितराई ॥६॥
कवन लाल सेजिया मोरि साइहें,
सीतल बेनिया डोलाई ॥७॥

---

[1]शून्य। [2]लोटा। [3]भोजन। [4]चन्दन। [5]पान। [6]शय्या।

माता यशोदा अपने पुत्र के प्रेम में विवश होकर कह रही हैं कि मुझ बिना कृष्ण के सारा घर सूना मालूम पड रहा है। मैंने दूध गर्म किया है और उसमें अमृत का जोरन डालकर दही जमाया है। मेरा पुत्र इसी दही को मन लगाकर कब खायेगा॥ १ ॥

बिना कृष्ण के मैं किसके लिये मक्खन रखूंगी तथा किसको शीतल पखा झलूंगी॥ २ ॥

सोने के लोटे में गगाजल भर के तथा चन्दन का चौका लगाकर सोने की थाली में मैंने भोजन परोसा है। देखें मेरा लडका उसे कब आकर खाता है। ॥३ ।-४ ॥

कृष्ण के लिये मैंने लवग लगाकर पान का बीरा तैयार किया है प्रेम की बातें करता हुआ कृष्ण ! उसे कब खायेगा॥५ ॥

कलियो को चुन-चुनकर, मैंने सेज डसाया है तथा उस पर फूलो को छितरा दिया है॥ ६ ॥

मेरा पुत्र उस सेज पर शीतल पखा झलते हुए कब सोयेगा ॥ ७॥

सन्दर्भ—राम को वनवास देने के कारण कैकेयी को कौशल्या के द्वारा भर्त्सना

(२७१)

आछा[1] काम ना कइलू ऐ केकई
आछा काम ना कइलू जी। टेक०
तू भली बान से मरलू[2] ऐ केकई
आछा काम ना कइलू जी ॥१॥
हमरा लछुमन राम के धववलू[3] ऐ केकई
आछा काम ना कइलू जी ॥२॥
ए जी पूछेली कोसिला रानी सुनो ऐ केकई,
हम तोहार कुछ ना बिगरनी जी ॥३॥

---

[1]अच्छा, शुभ। [2]मारा। [3]दौडाया (भेजा)।

बसल[1] भवनवा उजरलू ऐ केकई
आछा काम ना कइलू जी ॥४॥
हमरा लछुमन राम के धववलू ऐ केकई
आछा काम ना कइलू जी ॥५॥
एक वर मँगितू दूसर वर मँगितू
माँगलेलू सोलहो सिंगार[2] ॥६॥
आपाना भरत जी के राजगद्दी देके
राख लेतू वचन हमार ॥७॥
आछा काम न कइलू०
जरि जाय घर, अरु जरि जाय सम्पति,
हरि विना जरेला[3] अजोध्या जी ॥८॥
तुलसीदास विसवास[4] राम के
भला बान से मरलू जी ॥९॥ आछा काम०
चित्रकूट दिखलवलू[5] ए केकई
आछा काम ना कइलू जी ॥१०॥

कैकेई के 'तापस, भेस विशेष उदासी, चौदह वरस राम वनवासी' इस वर के कारण से रामचन्द्र जी वन को चले गये है उनके वियोग से दु:खी होकर कौशल्या जी कैकेई से कह रही है ऐ कैकेई ! तुमने राम को वन में भेजकर अच्छा काम नही किया। तुमने मुझे तीखे वाणों से मारा है क्योंकि राम वियोग का दु:ख मुझे तीखे वाणो की तरह दु:ख दे रहा है ॥१॥

ऐ कैकेई तुमने मेरे प्रिय लक्ष्मण और राम को वनवास देकर उन्हें खूब दौड़ाया। इस प्रकार तुमने अच्छा काम नही किया॥ २ ॥

रानी कौशल्या कैकेई से पूछ रही है कि हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ? (जिसके कारण तुमने मेरे पुत्र को वनवास दे दिया) ॥ ३ ॥

ऐ कैकेई तुमने मेरा बसा हुआ घर उजाड़ कर अच्छा काम नहीं किया ॥ ४ ॥

---

[1]बसा हुआ। [2]श्रृंगार। [3]जल रहा है। [4]विश्वास। [5]दिखलाया।

ऐ कैकेई तुमने मेरे लछुमन और राम को बडा ही घवाया अर्थात वनवास देकर परेशान किया॥ ५ ॥

तुम एक वर मांगती, दूसरा वर भी माँग लेती तथा सोलहो शृंगार भी मांग लेती (तो मुझे कुछ भी दुख न होता)॥ ६॥

तुम अपने पुत्र भरत को राजगद्दी दिलाकर मेरे बचन की (अर्थात् रामचन्द्र वन न जायें) रक्षा कर लेती। (राम को वन न भेजती) ॥ ७॥

घर जल जाय, सारी सम्पत्ति जल जाय, राम के वियोग के कारण तो मुझे सारी अयोध्या जलती दिखाई दे रही है॥ ८ ॥

तुलसीदास जी कहते है अब केवल राम ही का विश्वास है अर्थात उन्ही के लौटने पर शान्ति मिलेगी। ऐ कैकेई तुमने मुझे तीखे बाणों से मारा है ॥ ९ ॥

ऐ कैकेई तुमने राम को व्यर्थ ही चित्रकूट दिखलाया है अर्थात् वनवास दिया। इस प्रकार तुमने अच्छा काम नही किया॥ १० ॥

इस गीत मे माता का पुत्र के प्रति स्वाभाविक प्रेम छलका पडता है।

कौशिल्या का पुत्र-प्रेम भारतीय इतिहास मे अपना सानी नही रखता। पुत्र के प्रति यही अकृत्रिम प्रेम भारतीय माताओ की अपनी खास विशेषता है।

परिशिष्ट (क)

भोजपुरी-शब्द-कोष

अ

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
अइसन	ऐसा	१७६	८
अउसना	गर्मी के कारण किसी वस्तु का खराब होना	६८	५
अगिला	अग्रिम	१४८	१२
अजोरिया	उजाली, ज्योत्सना	८०	१
अठिली	गुठली	७५	७
अतना	इतना	१७	२
अतर	इत्र	११२	२
अतरस	वस्त्र विशेष	९७	१
अतवार	रविवार	१३९	२
अतिवार	विश्वास	१७६	४
अदितमल	आदित्य, सूर्य	१४२	१
अवही	आवा	३	४
अनघा	बहुत	२३	१४
अनन्द	आनन्द	६२	७
अनसुन	शून्य, निश्चल	५	६
अनोर	अधेरा	११४	४
अन्हरा	अन्धा	१४०	४

परिशिष्ट

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
अन्हार	अन्धकार	११०	२
अन्हियारी	अँधेरी	९१	४
अरार	किनारा	२२९	५
अलगाना	बोझ उठाना, अलग करना	२२९	९
अलफी	सुकुमार	१२४	१४
अलोत	परदा, आड़	१७	४
अलोपित	लुप्त, छिप जाना	२९	१०
अल्हर	छोटा, कोमल	२३९	२
अवरु	और	५	३२
असवार	सवार	१५०	१
असवारी	सवारी	८६	५
असाढ़ं	आषाढ	२१९	८
असो	इस वर्ष	१४८	११
अँकवार	आलिंगन	८३	१२
अँगवना	सहना	३३	२
अँटवना	गर्म करना	५५	८
आ			
आगू	आगे	२३०	५
आछातवा	अक्षत	१४३	१
आनका	अन्य	२५	६
आरार	किनारा	६	१
आराराना	गिरना	१०५	६
आसापति	गर्भवती	५	१९
इ			
इसरी	ईश्वरी	२३३	६

शब्द	शब्दार्थ	गीत सख्या	पक्ति सख्या
	उ		
उखम	उष्ण, गर्मी	२१७	२१
उगरह	ग्रहण से रहित	८१	२
उछाह	आनन्द	१०	१२
उछाहल	प्रसन्न	१२५	१४
उडामना	हटाना	१३७	२२
उतरही	उत्तर की हवा	२५	१
उतराहुत	उत्तर की ओर	५	१३
उनुकर	उनका	२७	३०
उपराजना	कमाना	१४४	२
उमर	पति	११८	४
उरेहना	चित्र खीचना	५	३
	ए		
एहवात	सौभाग्य	५	६
	ओ		
ओइसन	वैसा	१६	२
ओखद	दवा	३०	५
ओगसुल	अलग	६३	४
ओटिनी	बकवादी	११३	१
ओठघाना	रखना	१३८	२६
ओढन	ओढना	७	१२
ओढनिया	चादर	९	४
ओदर	पेट	५	५
ओदारना	अलग करना	२११	१०
ओबरि	अंधेरा घर	९	३

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
ओरमाना	झुराना	५६	४
ओरहन	उलाहना	२६	८
ओराइल	समाप्त	१८	४
ओरिचन	अदवाइन	११५	६
ओरी	छप्पर का अगला भाग	६३	३
ओलरना	झुकना	१३४	३
ओसारा	दालान	३	७
ओहार	पालकी का परदा	५	२४

क

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
ककही	कघी	११२	१
कचरना	खाना	२४६	४
कचोरा	कटोरा	११६	२
कतिकी	कार्तिकी	२१७	९
कथक	गवैया	२२	१२
कनिकी	आटा	११९	२
करसिनि	करीप, सूखा गोवर	११४	१
करइलिया	करैला	१	२
करिया	काला	८५	३
करिहाव	पेट	२५१	४
करेजवा	कलेजवा	७	२९
कलसवा	घडा	११	४
कलसूप	छोटा सूप	१४१	१
कवन	कोना	३०	१४
कसबिनि	वेश्या	२२	११
काकाना	कंकण	१०	९

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
कापार	सिर	५	५
काँच	कच्चा	१४०	१
काँहार	एक जाति	१०	३
किरिनिया	किरण	२२८	१
किरिया	शपथ	८९	८
कीनना	खरीदना	११२	१२
कुकुर	कुत्ता	२११	३
कुटनहरि	कूटनेवाली	२८	१३
कुठेंठि	झगड़ा	२७	१५
कुनेला	बनाया	५२	८
कुवति	शक्ति	१३	१३
कुसुम	कुसुम्भ	१	१४
कुसुमिया	कुसुम्भी रंग	३१	२
केकर	किसका	४६	२
केन	क्रेय वस्तु	११२	१०
कोखिया	कुक्षि	१६५	९
कोठिला	अन्न स्थान	२५७	७
कोरा	गोद	१०४	६
कोहनाना	क्रुद्ध होना	९२	७
कोहबर	भीतरी घर जहाँ वर-वधू साथ बैठते हैं	६९	८

ख

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
खखनवा	इच्छा	३६	६
खरचिया	खर्चा	९८	४
खियाना	घिसना	१६३	१३

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
खुदियन	टूटा चावल	६९	१७
खुखुडी	अन्नरहित भुट्टा	१६	१०
खेपना	निवहना	२१९	८
खोरि	गली	१४१	२
खोइछा	अचल	१४३	१
खोरा	कटोरा	३०	९

ग

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
गउरा	गौरी	१४६	१
गजरा	माला	१७०	८
गड़ुआ	लोटा	१७५	१
गडोरना	एकटक देखना	७९	९
गदेलवा	नादान	२२४	४
गम	दुःख, परवाह	१७२	८
गमक	गन्ध	१	२
गयरिया	चरवाही	२४५	१
गयेण	समीप	७३	३
गढ़ीना	बनाना	१५	४
गहुंवा	भारी	७	५
गवाना	खोना	६३	९
गेंहकी	ग्राहक	९९	५
गाछी	वृक्ष	५	१४
गाजाओवर	अंधेरा घर	५	८
गाहागहि	प्रकाशित	२९	९
गिहिथिनि	चतुर गृहस्थिन	८५	७
गुजारना	आवाज करना	१३१	२

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
गुनना	विचारना	७३	१०
गुरदेलि	धनुप	१३०	१४
गूहना	गूथना	१७३	२
गोजर	जीवविशेप	१२	११
गोठहुल	उपले रखने का स्थान	२८	१६
गोड	पैंर	११५	१०
गोतिनि	दायादिन	१	१८
गोदनरिया	गोदनेवाली	२३९	४
गोदना	गोदना	२३९	१
गोनतारी	खाट के पैंरवाला स्थान	१०२	२
गोनिया	रस्सी	१२७	१६
गोत्रिन	पुत्र	१०	८
गोमइयाँ	पति	२३	१२
गोहारना	पुकारना	९४	२
	घ		
घरील	घडा	२३	२
घरुवरिया	घरेलू	७०	४
घवद	फलों का झुण्ड	११	४
घाम	धूप	५४	१२
घिनावन	घृणा	७१	४
घीचना	खींचना	२२८	३
घुमना	चक्कर करना	३	३
घुठि	घुटना	२२९	३
घूर	कूडा, करकट	१२५	५
	च		
चउसउ	चतुष्कोण	१३७	९

शब्द	शब्दार्थ	गीत सख्या	पक्ति सख्या
चउपरिया	चौंपाल	३४	२
चउवाई	चारो ओर की	२६३	१
चकई	चकवी	६९	१
चनिया	चादी	१६३	१३
चवोल	मजाक	९९	४
चाभना	खाना	१६६	१३
चिचुहिया	पक्षी विशेष	८०	८
चिरकुट	फटा कपडा	७०	८
चिरिया	वस्त्र, पक्षी	१६३	८
चिलिकना	दु खना	५	५
चिहाना	आश्चर्यित होना	९१	३
चीखना	स्वाद लेना	१२०	३
चीन्हना	पहिचानना	१२	१०
चुकिया	भूल, गलती	२६२	८
चुभुकना	डूबना	११५	१३
चूदरी	चुनरी	२३९	४
चेरिया	स्त्री	५	१
चेलिक	युवक	१२	२
चगेली	छवडी	२	३

छ

शब्द	शब्दार्थ	गीत सख्या	पक्ति सख्या
छनिया	छप्पर	१३	१२
छपित होना	अस्त होना	८९	७
छवाना	मरम्मत करना	१३	१२
छाहाराना	गिरना, वरसना	६५	५
छितराना	बिखराना	९४	४

शब्द	शब्दार्थ	गीत सख्या	पक्ति सख्या
छीलना	तराशना	१४४	४
छूंछ	खाली	११२	४
छेंकना	रोकना	१४५	४
छेवडना	काटना	१६३	७
छोपनी	आँखों का ढक्कन	२६९	३

ज

शब्द	शब्दार्थ	गीत सख्या	पक्ति सख्या
जडया	जई	१६५	१४
जनि	मत, नहीं	२	८
जनिया	स्त्री	२२५	१
जम्हु	यम	२६५	२
जम्हुअइया	जम्हाई	२४३	१
जरिछार	खाक	११८	२०
जलिया	जाल	१२	८
जामना	जम जाना	७९	१०
जार	शान, दु ख	१५	५
जियरा	हृदय	२१७	२
जीग्वा गोनिया	डेरा डण्डा	१३२	९
जूड	ठढा	१४३	१
जुडाना	ठढा होना	५२	१
जूझना	काम में लगे रहना	१३८	३४
जेवना	भोजन	२२०	१
जेवनार	भोजन	५५	७
जोखना	तौलना	३०	१२
जोन्ही	तारा	२१४	३
जोरन	जामन	२७०	२

शब्द	शब्दार्थ	गीत सख्या	पक्ति सख्या
जोहना	खोजना	१३३	८
	झ		
झपरना	लहरना	१६	१
झहरना	लहराना	६२	१
झालरि	किनारा	१६४	१
झाखना	कष्ट प्राप्त करना	२३३	१
झीन	पतला	१२२	३
झोंप	फलो का झुण्ड	१०१	१
	ट		
टट्टर	टाट	५	१५
टनकना	दुखना	५	५
टिकाना	ठहराना	८५	२
टिकोरा	छोटा आम	२४१	१
टूंगना	ऊपर से काटना	९	४
	ठ		
ठनकना	दुखना	७१	९
ठनगन	हठ	४	५
ठुमुकना	बच्चो का रोना	२	५
	ड		
डहरिया	रास्ता	२६	५
डागा	बडा	२३	११
डाल	छबडी	२१६	९
डासना	बिछाना	३	१
डील डावर	निवास स्थान	१०	५

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
डीह	ऊँचा खण्डहर	२७	१६
डीहवार	डीह का मालिक	२३६	१
डुगुरना	धीरे से चलना	७७	२
डोंटी	डोंटी, धार	६४	७
	ढ		
ढुनमुनि	सुन्दर	२४	१
ढनमुनु	धीरे धीरे	२	१
ढरहुर	सुन्दर	१	३
ढूरना	नाचना	१५७	५
ढेबुजा	पैसा	१४५	५
ढेर	अधिक	६	५
	त		
तड़िवन	गहना	८४	८
तलफना	गर्म होना	२६२	६
तवाँना	नष्ट होना	१४८	६
तानना	फैलाना	२०३	६
तास	झिड़कना	४	५
तीतील	तित्तिर	१५०	४
तीवई	स्त्री	११५	११
तुमवाँ	तुमड़ी (कमण्डल)	१३६	४
तुराना	बन्धन से रहित होना	१६७	४
तूरना	तोड़ना	२३२	३
	थ		
थार	थाल	४८	९
	द		
दगधना	जलाना	२१७	१८

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
दल	पत्ता	१४०	६
दह	तालाब	१६	७
दिउलिया	पतली	१५९	१
दियरा	दीप	३३	१
दुरदुर	हट, हट	२७	१६
दुलरी	हार	१०	९
दुलरुवा	प्यारा	४२	३
दुलारना	प्यार करना	१७	५
दूवर	पतला	१०३	९
देहवा	सरयू नदी	१२६	१०
दोकछा	धोती काछना	२५१	३
दोहाई	बडाई	९६	११

ध

धगडिनि	वाय	५	८
धनि	स्त्री	५	४
धनिया	स्त्री	१३	१३
धपधप	सफेद	८५	८
धवरना	दौडना	१३	८
धवरवा	दौड	७६	३
धियवा	लडकी	२८	१५
धुधेडी	धूम	२२५	२
धुरियाह	धूसरित	२५१	१
धुरे	पास	१४६	३
धूमिल	उदास	६४	४

न

नइहर	मायका	९०	१२

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
नउजी	मत	१३९	८
ननदिया	ननद	३४	११
ननदोइया	ननद का पति	३३४	१२
ननन वन	नन्दन वन	१६३	७
नवगुन	जनेऊ	४८	३
नाटा	ठिगना	२६९	३
नार	नालि	१८	८
निनरि	नींद	१६	६
नियरा	समीप	१२२	५
नियराना	समीप आना	२५७	२
निरवनी	पुत्रहीन	३०	१९
निरनेद	निश्चिन्त	२३६	२
निरेखना	देखना	१२	२
निसुराति	निस्तब्ध रात्रि	११३	१०
निहारना	देखना	२३३	२
निहुरना	झुकना	९२	२
नीक	अच्छा	२४५	३
नीकि	प्रत्युपकार	६६	८
नीमन	सुन्दर	१	१३
नीमु	अत्यन्त	९१	४
नेग	उपहार	८४	७
नेवतना	निमन्त्रण देना	४५	६
नोनिया	मिट्टी का घर बनाने वाला कारीगर	१२२	११
	प		
पइयाँ	पैर	१८०	१

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
पइरी	माप विशेष	२२८	२
पइसना	घुसना	१३१	१३
पछिमाहुत	पश्चिम की ओर	५	१३
पटडेहरि	चौखट	१४	३
पटहेरा	गहना गूथने वाला	१२	७
पटीहटिया	पलग	११५	६
पटुका	वस्त्र	९६	५
पटोरवा	वस्त्र या सूत	११६	३
पठिया	बछडी	१४६	३
पतुरिया	वेश्या	१९०	१३
पतियाना	विश्वास करना	२७	२५
पयेंडिया	पैर	१२७	५
पराना	भागना	८४	१४
परिकना	अभ्यस्त होना	२४०	१
परीछना	लोढा घुमाना	५१	४
परेउआ	कबूतर	२३१	६
परोजन	उत्सव	११४	९
पवनार	पनाला	१६१	५
पसगियाँ	पासग	१६	६
पहरुवा	पहरा देने वाला	७१	९
पाइच	उवार	३२	६
पाख	दीवाल का पक्ष	६४	६
पाग	पगडी	१५६	१
पातर	दुबला पतला	२४	१
पायेतवा	पाँयत	३	७
पाराते	प्रात काल	१०६	३

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
पाँवेत	पाँयन	२१६	२
पिछुआरा	घर का पृष्ठभाग	४३	१
पिण्डरोग	पाण्डुरोग	२४७	७
पियराना	पीला होना	७८	११
पिराना	दुखना	१४२	११
पिसनहरी	पीसने वाली	७८	१३
पीरवा	दुःख	१३	७
पुतरी	चित्र	८	२
पुवरा	पुआली	२५	२०
पुरल	पूरा होना	४१	७
पुरहथ	पूर्ण हस्त, चौंक पूरने का आटा	९०	८
पुलुई	अग्रभाग	७६	१
पूजनार	पूजा	२४	६
पेन्हाना	पहिनना	९०	४
पेवारना	बिखेर देना	५	१५
पेहान	ढक्कन	११०	६
पोवना	पकाना	१७३	५

फ

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
फानना	कूदना	७	७
फारठा	फटा हुआ बाँस	१२९	९
फारी	टुकड़ा	१५७	३
फाँड	आँचल	२	३
फींचना	निचोड़ना	४८	३
फुदेना	सूत का फूल	७०	४
फुफड	आँचल	२	३

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
फुफुनी	फुफुन्दी	१३८	४४
फुमारना	पानी बरसना	२१७	१३
फूहड़	फूहड़	१९	४
फेंकरना	रोना	३१	४
फेड़	पेड़	६१	१
फेन	गाज	१६१	८

ब

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
बउराह	पागल	९०	३
बगकल	पति	१३२	१
बछरू	बछड़ा	१०४	१
बटइनि	बटोही, रास्ता	५	९
बटवार	दुष्ट	२६	४
बटोरना	एकत्रित करना	१००	३
बढ़इता	श्रेष्ठ	११७	१
बढ़निया	झाडू	१५२	३
बताम	हवा	६४	१
बतीसी	दांत	२२३	१
बधाव	आनन्द	२२	१०
बनजरिया	बनजारा	१६६	१
बनरुटना	वन जाना	२६४	२
बनसपति	वन के वृक्ष	७	१०
बरजना	मना करना	२६	९
बरधी	बैल	९२	१
बरिनिया	जाति विशेष	९	१
बरुआ	ब्रह्मचारी	४१	२
बरेउवा	बरेखी (हाथ का कड़ा)	२५०	१

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
बरोहि	बड की लटकती पतली शाखा	१५३	३
बनफोरिन	जाति विशेष	१४९	७
बसवारि	बासों का जन्म-स्थान	१२५	१
बनहर	बास का बन।	२८	१८
बसहा	बैल	९४	२
बसुलिया	बाँसुरी	९८	१
बसेढ	रहना	१४४	७
बहतर	वस्त्र	१८	११
बहारना	झाड़ू देना	१४१	२
बहुरि	फिर	२३	४
बँहगी	बींवध, (काँवर)	१४०	१
बाँगाला	बँगला	१७४	१
बाजूबन	एक गहना	२१४	६
बाँझिनि	बन्ध्या	१७	२
बाढना	उन्नति करना	९६	१२
बारना	जलाना	३३	१
बारी	पारी	८७	३
बाव	हवा	२५	१
बाँचना	पढना	८	५
बिचरवा	विचार	८९	१०
बिटिया	लडकी	१४२	५
बिनवना	प्रार्थना करना	२३२	१
बिनूली	बिन्दी	७६	१८
बिरवा	पौधा, बीड़ा	१३	९
बिरह	वियोग	२३	९

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पक्ति सख्या
बिग्हिया	व्यग्य	१२६	६
बिलम	विलम्ब	१५३	२
बिननीयार	रठने वाला	२८	२
बिसभोर	भूल जाना	३८	१२
बिसमाधल	विस्मित	३८	२४
बिसवना	भूलना, व्यतीत होना	२२६	२
बिनाधल	क्रुद्ध	३२	४
बिहान	सवेरा	१४२	३
बींसे	बीडा	१०	१
बीछन	चुनाव	७	८
बीछना	चुनना	२११	११
बींठा	घडा रखने की बिठई	२५५	४
बीनना	चुनना	२१६	६
बीरन	भाई	२९	५
बीरति	वृत्ति	४६	१
बीहरना	फटना	११२	१४
बुनवा	वृद	२८	४
बूकना	पीसना	५९	८
बेइलिया	बेला का वृक्ष	१६०	१
बेटवना	लडका	१२	१०
बेतवा	नदी विशेष	३४	१७
बेदनिया	कष्ट	३३	२
बेदिल	उदासीन	१३५	५
बेनिया	पखा	२१८	२२
बेरिया	बारी	९२	९
बेलतर	वृक्ष के नीचे	५	३

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
बेमाहना	खरीदना	१४९	१
बोरसी	अगीठी	२४	१२
	भ		
भगतिया	भक्तिन	१५८	१
भटन	भाट	१०	७
भइसल	अन्धेरा घर	१२२	८
भभूनि	भस्म	९०	१३
भयनवा	भानजा	३४	११
भाकर	गोशाला	१२७	१५
भाराहा	भार ढोने वाला	१४०	२
भावना	विचार	४	६
भिनुसार	सवेरा	८०	१
भिहिलाना	नष्ट होना	५४	१०
भइया	जमीन	२०७	२
भुभुत	भोगना	२६४	१३
भुवर	भूरा	१९३	६
भोजमार	भोजन शाला	२३२	३
	म		
मइल	मैला	२९	१६
मउगी	स्त्री	२३७	३
मउरि	सेहरा	७३	२
मचिया	छोटी खाट	२१	७
मटुक	बर्तन	२६	१
मदागिन	श्रेष्ठ	५२	५
मधुबन	वृन्दावन	२३	३
मनानति	मनाना	६३	६

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
मनुहारि	प्रार्थना	१०७	१
मरखौकी	मारने वाली	२४९	१
मरतोंगिन	जाति विशेष	१४०	१
माड़ो	मण्डप	७३	७
मानऊ	मनवाला	२१९	४
मायरि	माता	१३९	१
मायेनवा	माता	११७	१
माह	महीना	९०	१४
मिमिआ	मिम्याँ	२६	१०
मुनिया	लड़की	१९१	१२
मुसुकरि	मुसकराना	२९	१
मूसना	चुराना	१४	२
मेड़की	छोटा घर	१७२	९
मेराना	मिलाना	३७	६
मेहरि	स्त्री	२४५	३
मोजरि	मौल, मजरी	१३०	१
मोटरिया	गठरी	१३	११

य

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
यार	मित्र	२२४	३

र

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
रखवार	रक्षक	२३१	४
रचि	थोड़ी देर	६६	३
रतवन्ही	रात को न दिखाई पड़ना	१७४	६
रतिया	रात्रि	२६	६
रसना	चूना	१६०	१
रसिया	प्रेमी	१७५	१

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
रहतिया	रास्ता	१६५	१०
रहनि	एकान्त में	७	२५
रातुल	लाल	५१	२
रूनना	रूठना	३	१
रेहुवा	मछली	१	६

ल

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
लइया	निन्दा	७	३
लखरॉव	लक्षाराम, बगीचा	२३	४
लट	बाल	१३३	३
लडवनी	लडाने वाली	१३	२७
लबजी	झूठी	२७	२५
लरछा	गुच्छा	१७६	५
ललना	बच्चा	४९	५
लहुरा	छोटा	१३५	४
लाछ	लाख	४९	१२
लाड	प्यार	२०	७
लापरि	अचल	४५	२
लामी	लम्बी	२१८	१४
लाहारा	झोका	१२३	१
लाहाल	नखरा	५४	३
लांगा	नगा, नीच	७	४
लीली	बछेडा	१५५	७
लुगरी	फटी साडी	१७२	८
लुबिया	बकवादिनी	३८	४
लुलुही	केहुनी	१०	९
लूक	लू	२१७	१३

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
लूझी	उलझना	१९५	५
लेखे	समान, लिये	३१	५
लोवनी	नौकरानी	१०६	१
लोचन	सन्देश	७	१३
लोर	आँसू	१६५	६
लोढ़ना	चुनना, सेवना	६८	१

स

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
सजडतवा	पति	१३	५
सनेहरि	सहेली	१३१	२०
समतूर	जल्दी	६६	२
समोवना	सन्तोष देना	६९	१३
सवग	चारो ओर	३१	३
सरमउवा	सरसो	३८	१
सरिखवे	समान	१३७	८
सलाना	छीलना	६३	२
सलेहरि	सहेली	२६	६
सवति	सपत्नी	१५	९
सवनइया	सावन की हवा	१	१
सहत	सस्ता	२७	११
सहेजना	ठीक करना	८८	६
सँगरना	सजाना	१३१	७
सँचना	एकत्रित करना	१२४	१०
सँवारना	सुन्दर बनाना	८७	१४
साई	बयाना	१०१	२
साटी	डण्डा	१४२	२
साध	श्रद्धा, इच्छा	६	६

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
सान मारना	इशारा करना	२३७	३
सानाजाय	नोई	११९	९
सार	श्यालक, साला	१०७	५
सालना	दुःख होना	७	२९
सिरहाना	चारपाई का सिर का भाग	१४	३
सींकि	हल्की वस्तु	७१	१
सीझना	पकना	१३६	२२
सुकवा	शुक्र तारा	८०	१
सुकवार	कोमल	२४	२
सुनरी	सुन्दरी	५९	१
सुनुगना	आग का धीरे धीरे जलना	२४	१२
सुपुली	छोटा सूप	२९	३
सुरहिया	सुरभी गाय	५७	५
सुहइया	स्त्री	५	१६
सुहवा	स्त्री	५७	१
सूतना	सोना	३७	११
सूल	कष्ट, दर्द दुःख	७	२८
सेवइत	सेवा करने वाला	६६	१०
से हो	वह	२४	६
सोहरना	लटकना	१००	१
सकर	चीनी, शक्कर	१५५	१
संकट	दुःख	१९	४

ह

शब्द	शब्दार्थ	गीत संख्या	पंक्ति संख्या
हकारना	पुकारना	१०	२

शब्द	अर्थ	पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या
[illegible]	[illegible]	२८१	२
[illegible]	[illegible]	५४	७
[illegible]	[illegible]	३०	५
[illegible]	[illegible]	३८	३
[illegible]	[illegible]	७१	३
[illegible]	[illegible]	८२	८
[illegible]	[illegible]	५६	२
[illegible]	[illegible]	७२	५
[illegible]	[illegible]	३८	६
[illegible]	[illegible]	१६२	१
[illegible]	[illegible]	२४०	८
[illegible]	[illegible]	१८८	९
[illegible]	[illegible]	७८	३
[illegible]	[illegible]	३६	६

परिशिष्ट (ख)

अनुक्रमणी

(प्रत्येक गीत की प्रथम पंक्ति)

गीत	गीत प्रकार
ए राम जोंहि वन सिरिजे ना ...	जतसार
ए राम तनवा म गवना रे ...	जतसार
ए राम देनवा बाराना तिनुरिया	जतसार
एह पार गोनाघाट आह पार मड़िया	भजन
एह पार गंगा ए हरि जी ओह पार जमुना	जतसार
ओ	
ओठे सुपाले रउ सुपाले मोरे बाला ...	[illegible]
ओरि नोनर उपजेला नानानागा छल्ला बंधन रे करे	गवना
क	
कउने बिरईनिहा ... ए रामा	बिरहा
कथि के उ जे सिनना रे कथि के ...	बैं० पनिहारिन
कथि बिनु सुन भइली बगिया	शीतला
कलकत्ता तू जनि जा राजा हमार दिन रहने नगी	झूमर
कलकत्ता बाजार में मोर अँगुठी गिरे रे	झूमर
कवन सुपवा चढ़इबो छठिय मइया	छठी माता
कवन आम पीयर कवन आम हरियर	विवाह
कवन गरहनवा बाबा सोम्ही लागेला	(मनिहा)
कवन गरहनवा बाबा सांझही लागेला	विवाह
कवन नगरिया चनन उपजेला	विवाह
कवन राम के ऊँची चउपरिया	सोहर
कवनी सुहइया सुत कातेली मल आरेली	जनेऊ
कवन बरने तोर घोड़वा ए सीतलि	शीतला
कहवहि उ जे अइले रे बरुवा	जनेउ
काँचहि बाँस के बसुलिया हो	बैं० पनिहारिन
काँचहि बाँस के बँहगिया	छठीमाता
का देखि के मन भइले हो दीवाना	भजन

गीत	गीत भेद
ठुमुकि ठुमुकि जानकी नाचलु दशरथजी अँगनवा	भजन
डिहवा डिहवा पुकारे डिहवरवा	बिरहा
ढुनुमुनु ढुनुमुनु कवन देई हाथ कंडलिया लेले हो	सोहर
त	
तमुवाँ गिराइ कहाँ जइब हो कहो आपन ठेकान	(भूमिका)
नर बहे गंगा ने जमुना ऊपर मधुपीपरि हो	सोहर
तलवा झुरइले कँवल कुम्हिलइले	(भूमिका)
तिसिया के तेलवा के भगवति मथवा रे बन्धवलो	जतसार
तुम्हें कोई ले ना जाई	झूमर
तुहू त जइब ए वएकल देस परदेसवा ए राम	जतसार
तोरा संगे ना जइबो तोरा संगे ना जइबो	झूमर
तोरे कारन बदनाम रे सँवलिया	झूमर
द	
दही बेचे चलली गोवालिनि	सोहर
दही बेचे चलली गोवालिनि	(भूमिका)
दाल भात खइबू की पूड़ी मँगादी	झूमर
दिल दरिया समुन्दरो डूघा	(भूमिका)
दुवरा भूलीए भूली बाबा जे रोवेले	(भूमिका)
देविया देविया पुकारे देवि सारदा	बिरहा
देहु न मैया रे कँगही कटोरिया हो ना	(भूमिका) जतसार
दोदरा मठिया हाने बरि बरि	(भूमिका)
ध	
धनि धनि रे पुरुष तोरि भागि करकसा नारि मिली	(भूमिका)
धुरिया लगावें धरि माहावा कहालें	बिरहा
न	
नइहरवा में ठंडी बयार ससुरवा में ना जाऊँ हो	झूमर

गीत	गीत भेद
नदिया के तीरे कवन बाबू बछरु चरावेला	वै० परिहास
नदिया के तीरे दुई पेड़ रे बाटे	विवाह
नदिया के तीरे माली फुलवरिया	विवाह
नदिया तक हरीजी साथे चली	झूमर
नन्द दुआरे कीरतन होला	सोहर
नव दुअरिया नव खम्भा गड़ावे रे	जनेऊ
नाही तुहु ननदी नून तेल छेकलू	(भूमिका)
ना जाने यार झूलनी मोर काहाँ गिरा	झूमर
नाही विरहा कर खेती भइया	विरहा
निहुरलि आँगनि बहारेलाँ कवन देई	वै० परिहास
निहुरलि निहुरलि भउजी अँगना बहरली हो	जतसार
नीमिया की डाढी मइया लावेली हिलोरवा	शीतला

प

पच पच पानवा के बिरवा लँवगिया के मुसुकरि रे	सोहर
पटुका पसारि भीखि माँगेली बालाकवा के माई	(भूमिका)
पनवा छेवडि छेवडि मजिया बनवलो	जतसार
पनवा अइसन हम पातरि कसइलि अइसन डुर डुर हो	भूमिका
पहिला महीना जब चढले ए पिया	खेलवना
पहिली इयारी रसोइया में लागे	झूमर
पहिले ही चिट्ठी चाचा भेयो	झूमर
पानवा अइसनि हम पातरि	सोहर
पानी के पियासल हरिनवा जमुनवा घाटे हो जाय	(भूमिका)
पियवा जे चलेला उतर बनिजरिया	झूमर
पिया पिया कहत पीअरि भइली देहिया	विरहा
पिसना के परिकल मुसरिया तुपरिया	विरहा
पियवा चलेले परदेस मदिल मोर चुई रही	जतसार

गीत	गीत भेद
पियवा चलला परदेस सन्त सुग ले के गयो	कहरवार
पीपरपात पुलुइयनि डोले नदियन बहेला सेवार ए	विवाह
पुरइन बिनवेली एकल राम के	बिरहा
पूरुब जइह राजा पछिम जइह	झूमर
प्रथम मास असाढ़ सखि हो गरजि गरजि के सुनाई	बारहमासा
प्रथम मास असाढ़ हे सखि ! साजि चलल	बारहमासा
फ	
फूल लोढ़ें चलली गउरा आही फुलवारी	शिव-विवाह
फूल लोढ़ें चलली सीता अइसन सुनरी	विवाह
ब	
बइठलि ना जे ले बटमोहिया गोरिया	बिरहा
बइद हकीमवा बुलाबो कोई गुइयाँ	(भूमिका)
बगलर में गोरिया अकलर चलली	बिरहा
बड नीक लागेला गइया के गएरिया	बिरहा
बदनामी सहरिया में ना रहना	झूमर
बनवारी हो हमरा के लरिका भतार	पूर्वी
बनि बनि आवति नारि जानि गहे मयन हो	सोहर
बने बने गइया चरावेले कन्हइया	बिरहा
बने बने गइया चरावेले कन्हइया	(भूमिका)
बर खोजू बर खोजू बरखोजू रे बाबा	विवाह
बरहो बरिस पर अइले, अँगना में ठाट भइले	खेलवना
बरिसहु ए देव बरिसहु मोरा नाही मन भावेला हो	सोहर
बरिसहु अहो ए देव आधी धरीरे पहर राती	बारहमासा
बलमुआ नइहरवा छोड़ा दिया रे	झूमर
बहे पुरवइया भइली जम्हु अइया	बिरहा
बाजन बाजेला बनहि बीखे अजोधा में तड़पेला हो	सोहर

गीत	गीत भेद
सुन सुन लोकनी सुनहु जेठ भाई	गवना
सुनिले कन्हैया हमरो योगी भइले	सोहर
सुनु देवरनिया रे सुनु रे छोटनिया	(भूमिका)
सुन हो नखि हमतो अदालत करबो	झूमर
सुरहिया गाइ के दुधवा रे दुधवा	विवाह
सूतल रहलो ओसरवा हो गुरुजी दिहले जगाई	भजन
सूतल रहलो ओसरवा हो गुरु जी दिहले जगाई	(भूमिका)
सूतल रहलो रे अटरिया सपन एक देखिले हो	सोहर
सोनवा अइसन पीयरि रे-पातर कइ दिहल	झूमर
सोने के खरउवाँ राजा रामचन्द्र आमामे अरज करे हो	सोहर
सोने के खरउवाँ राजा रामचन्द्र ठाढ बाडे मौह आँगना	भजन
सोने के खाटी आँगन मे डासी	वैवाहिक परिहास
सोने के थारी मे जेवना परोसलो, जेवना ना जेवे अलवेला	झूमर
सोने के थारी मे जेवना परोसलो, जेवना ना जेवे मोर	झूमर
सोने के थारी मे जवना परोसलो, जेवना ना जेवे	कजली
सोने के थारी में जेवना परोसलो, जेवना ना जेवे सखिया साझे भये	कजली
सोने के थारी मे जेवना परोसलो, जेवना ना जेवें हरिमोरा चलेत बाँगाला	कजली
ह	
हथवा मे डारेले बरउवा रमरेखवा	विरहा
हमरो देविया सुखइली रे मइया	विरहा
हहर झहर रे करे गांगा जमुना रे पनिया	विवाह
होत भिनुसारावा मुरुगवा बोल्निया बोलेले होकी	शीतला

कुल गीत सख्या ३०५

परिशिष्ट (ग)

पठनीय सामग्री

भोजपुरी लोक-गीतों तथा भोजपुरी-भाषा और साहित्य के संबंध में निम्नलिखित पुस्तकों तथा लेखों को पढ़ना चाहिए।

(क) ग्रन्थ—(गीत संग्रह)

१ प० रामनरेश त्रिपाठी—कविता कौमुदी भाग ५ (ग्राम गीत)

२ डा० कृष्णदेव उपाध्याय—भोजपुरी ग्राम-गीत भाग २ (हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)

३ कुमार दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह—भोजपुरी लोक-गीत में करुण रस, (हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)

४ डब्लू० जी० आर्चर—भोजपुरी ग्राम-गीत (बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना)

५ देवेन्द्र सत्यार्थी—फूला फूले आधी रात, इसमें भोजपुरी के दो चार गीत संगृहीत हैं।

(ख) ग्रन्थ—(आलोचनात्मक)

६. डा० कृष्णदेव उपाध्याय—भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन (हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)

७ डा० कृष्णदेव उपाध्याय—भोजपुरी लोकवार्ता (फोकलोर) का अध्ययन

८ डा० उदयनारायण तिवारी—ओरिजिन एण्ड डेवलपमेण्ट आफ भोजपुरी लैंग्वेज

९ डा० विश्वनाथ प्रसाद—भोजपुरी फानिटिक्स (भोजपुरी का ध्वनि शास्त्र)

१० डा० कृष्णदेव उपाध्याय—भोजपुरी भाषा और साहित्य

(ग) लेख—(अंग्रेजी)

सुप्रसिद्ध भाषा-शास्त्री सर जार्ज ग्रियर्सन ने गत शताब्दी में अनेक भोजपुरी लोक-गीतों को अंग्रेजी की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किया था जिनकी संक्षिप्त सूची इस प्रकार है—

१ दि साङ्ग आफ आल्हाज मैरेज (इण्डियन एन्टीक्वेरी सन् १८८५ पृ० २०९-२२७)

२ सम बिहारी फोक सॉंग्स (जरनल आफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी भाग १६ सन् १८८४)

३ सम भोजपुरी फोक सॉंग्स (जरनल आफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी भाग १८ सन् १८८६ पृ० २०७-२३५)

४ फोक लोर फ्राम इस्टर्न गोरखपुर—ह्यू ज फ्रेजर—सम्पादक डॉ० ग्रियर्सन। (ज० रा० ए० सो० भाग ५२ सन् १८८३ पृ० १-३२)

५. बैसवाडी फोक सॉंग्स (जनरल आफ दि एशियाटिक सोसाइटी आफ बङ्गाल भाग ५३ सन् १८८४ पृ० २३८)

६. दि सॉंग्स आफ विजयमल (ज० ए० सो० ब० भाग ५३ सन् १८८४ पृ० ९४-)

७. टू वर्शन्स आफ दि सॉंग आफ गोपीचन्द (ज० ए० सो० ब० भाग ५४ सन् १८८५ पृ० ३५-)

८ सेलेक्टेड स्पेसिमेन आफ दि बिहारी लेंग्वेज—दि भोजपुरी डाइलेक्ट—दि गीत नयकवा बनजारा।
(जे० डी० एम० जी० सन् १८८५ पृ० ४६८-५०९)

९ दि पापुलर लिटरेचर आफ नार्दर्न इण्डिया (बुलेटिन आफ दि स्कूल आफ ओरियण्टल स्टडीज, लण्दन, भाग १ खण्ड ३ सन् १९२० ई० पृ० ८७)

लेख—हिन्दी

१० डा० उदयनारायण तिवारी—भोजपुरी लोकोक्तियाँ (हिन्दुस्तानी पत्रिका, प्रयाग, अप्रैल १६३६ पृ० १५६-२१६ तथा जुलाई १६३६ पृ० २४५-२६०)

११ वही—भोजपुरी मुहावरे (हिन्दुस्तानी पत्रिका, प्रयाग, अप्रेल सन् १६४० पृ० १६७-१६० अक्टूबर १६४० सन् पृ० ३६७-४४७ जनवरी सन् १६४१ पृ० ४६-१२०)

१२ भोजपुरी पहेलियाँ—लेखक वही (हिन्दुस्तानी पत्रिका, प्रयाग अक्टूबर-दिसम्बर सन् १६४२ पृ० २६७-२८७)

१३ डा० कृष्णदेव उपाध्याय—भोजपुरी लोकगीतो में कवित्व। (हिन्दुस्तानी पत्रिका, प्रयाग)

१४ दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह—भोजपुरी लोक गीतोमे गीरी का स्थान। (नागरी प्रचारिणी पत्रिका, काशी)

१५ गणेश चौबे—भोजपुरी लोक-गीतो में कला। (जनपद, काशी)

१६ डा० कृष्णदेव उपाध्याय—भोजपुरी लोक-गीतो में 'दिव्य' की प्रथा। (सम्मेलन पत्रिका, प्रयाग—लोक सस्कृति अक न० २०१० वि०)

१७ वही—भोजपुरी लोकगीत (जनपद, काशी म० २०१० वि०)

१८ वही—भोजपुरी के लोककवि—भिखारी ('भोजपुरी' आरा) स० २०१० वि०

१९ वही—भोजपुरी लोकगीतो की स्वरलिपि ('भोजपुरी' आरा, लोकसाहित्य अक स० २०१० वि०)